प्रकाशक :
मन्त्री अखिल भारत सर्व-सेवा-संघ,
राजघाट काशी

पहली बार : ३
अक्तूबर, १९६१
मूल्य : दो रुपये

मुद्रक
ओमप्रकाश कपूर,
ज्ञानमण्डल लिमिटेड वाराणसी (बनारस) ५८८८-१८

प्रकाशकीय

कश्मीर की पद-यात्रा पूरी करने के बाद पंजाब में लौटने पर पूज्य बाबा का ध्यान इन्दौर नगर पर गया। रानी अहिल्याबाई के इन्दौर से उन्हें बहुत आशा बँधी। यह देश का मध्यवर्ती केन्द्र तो है ही, वहाँ मातृ-शक्ति के जागरण की भी बहुत सम्भावना दिखाई दी। बाबा ने २४ जुलाई '६० को शान्त-मौन वातावरण में इन्दौर नगरी में प्रवेश किया और पहली बार २५ अगस्त तक अर्थात् पूरे एक महीने तक तथा बाद में सितम्बर के अन्त में कुछ दिनों तक अपनी अमृत-वाणी से इन्दौर को 'सर्वोदय-नगर' बनाने की दिशा में विविध आयोजनों द्वारा जन-जागृति का महान् कार्य किया। वहीं 'पाखाना-आन्दोलन' का सूत्रपात हुआ। 'विसर्जन आश्रम' की स्थापना हुई। नगर-आयोजन के सन्दर्भ में 'शुचिता से आत्मदर्शन' का भान कराया। कस्तूरबाग्राम की बहनों के बीच मातृ-शक्ति के विकास-क्रम को ओजस्वी भाषा में प्रस्तुत किया। इतना अधिक समय बाबा ने अपनी सम्पूर्ण यात्रा में किसी और नगर को नहीं दिया और यह सद्भाग्य इन्दौर का ही रहा। सत्य में यह सचमुच इन्द्रपुरी हो रही है। सर्वोदय-नगर बनकर ही उसका यह नाम सार्थक होगा।

यह पुस्तक बहुत पहले ही प्रकाशित हो जानी चाहिए थी किन्तु खेद है कि अनेक कारणों से पाठकों को बाबा की इस प्रेरक वाणी से वंचित रहना पड़ा। बहन कुसुम देशपांडे ने इस पुस्तक की सामग्री संकलित और सम्पादित करके दी, इसके लिए सर्व सेवा संघ प्रकाशन उनका आभारी है।

आशा है यह 'नगर-अभियान' पुस्तक पाठकों को देश के नगरों को सर्वोदय नगर बनाने की दिशा में मार्गदर्शक, प्रेरक और व्यावहारिक दिशादर्शक प्रतीत होगी।

०

अ नु क्र म

परिशिष्ट

o

नगर-अभियान

'सर्वेषाम् अविरोधेन'

भारतीय सभ्यता का सर्वोत्तम अंश इन्दौर में प्रकट

एक पवित्र रमणीय स्मरण इन्दौर के साथ जुड़ा हुआ है महारानी अहिल्यादेवी का। मुझे प्रेरणा हुई कि क्या इन्दौर में भारतीय सभ्यता का सर्वोत्तम अंश प्रकट हो सकता है? इन्दौर भारत के बीच मध्य स्थान में है। आप जानते हैं कि जब बीमार मरने के करीब होता है तो उसका शरीर ठंडा पड़ जाता है हाथ, पाँव और आखिर के हिस्से ठंडे पड़ जाते हैं। फिर भी बीच में हृदय-स्थान में गरमी रहती है। तो मैंने सोचा कि भारतीय संस्कृति का सर्वोत्तम दर्शन यहाँ हो सकता है। इसलिए यहाँ जो काम होगा वह भारत में चारों ओर फैलेगा। यह बात सच्चा है कि यहाँ एक जमाने में बहुत अच्छा काम हुआ था और बाद में बुरे परिणाम भी हुए, जो भारत में चारों ओर हुए हैं।

मुझे यहाँ किसने खींचा?

भारतीय संस्कृति का सर्वोत्तम अंश 'महिमा' शब्द में है। यह अद्भुत शब्द है। उसकी बराबरी का शब्द—दस-बीस भाषाएँ मैं जानता हूँ उनमें से किसी भाषा में नहीं है। महिमा माने बड़ी, लेकिन 'महिमा' माने 'महान्' है। भारतीय संस्कृति का मुख्य स्थान मातृशक्ति है और वह इन्दौर में प्रकट हो सकती है। भारत के इतिहास में इसकी कोई तुलना नहीं कि जिस प्रेम और मातृ-वात्सल्य का दर्शन अहिल्याबाई के दिल में हुआ। वह राज्यकर्त्री थीं लेकिन धार्मिक और ईश्वरनिष्ठ थीं। ऐसी मिसालें दुनिया के किसी इतिहास में बहुत ज्यादा नहीं हैं। यहाँ की हवा में यह जो चीज है, उसने मुझे खींच लिया। आपके प्रेम ने भी

मुझे सौंपा। मेरा ख्याल है, यहाँ मध्यस्थान में भारतीय संस्कृति का सर्वोत्तम अंश मिल सकेगा।

दुनिया की पहली मिसाल

अभी आपने पढ़ा होगा कि श्री लंका में एक महिला प्रधान मन्त्री चुनी गयीं। उनके पति मारे गये। उस घटना के तुरन्त बाद वह अगर चुनी जातीं तब तो पति की महिमा से वह चुनी गयी हैं ऐसा माना होता। लेकिन उसके बाद तो वहाँ काफी अन्धाधुन्ध कारोबार चला। और जिस पक्ष से वह चुनकर आयीं उसे बीच में बहुत ज्यादा मत नहीं मिले थे। लेकिन इस महिला की पुरुषार्थ-शक्ति से उस पक्ष की उन्नति हुई। शायद दुनिया में यह पहली मिसाल है। अब स्त्री-शक्ति के दिन आये हैं, इसका यह पूर्व चिह्न है।

मातृशक्ति : एक विशेष शक्ति

स्त्री-शक्ति से मेरा मतलब यह नहीं कि पुरुष-शक्ति से कोई भिन्न शक्ति है। स्त्री शक्ति याने शान्त शक्ति, अहिंसा शक्ति। ऐसे अहिंसक पुरुष भी हुए हैं और निर्दय निष्ठुर स्त्रियाँ भी हुई हैं। यह दया और प्रेम का गुण किसी एक जाति की बपौती नहीं है। फिर भी मातृ-शक्ति एक विशेष शक्ति है। अब नये जमाने में पुरुषों की बराबरी स्त्रियाँ करें, यह विचार चल रहा है। पचास साल पहले इंग्लैण्ड में इस विषय पर लड़ाई चली। पत्नी और पति, माता और बेटे, बहनें और भाई, लड़कियाँ और पिता इनके बीच लड़ाई चली। बहनों ने कहा कि हमें मतदान का हक मिलना चाहिए। उनके पहले वहाँ स्त्रियों को मतदान का अधिकार नहीं था। लेकिन आज यहाँ यह विचार चला है कि स्त्रियाँ पुरुषों की बराबरी करें। हमारे यहाँ यह कोई चीज ही नहीं है। हमारे ध्यान में स्त्री का दर्जा आध्यात्मिक दृष्टि से नीचे हो सकता है। हमारे यहाँ स्मृति ने यह प्रथम आज्ञा दी है: 'मातृदेवो भव पितृदेवो भव आचार्यदेवो भव'। मनु महाराज ने एक हिसाब ही पेश किया है। 'उपाध्यायान् दशाचार्य'

—दस उपाध्याय के बराबर ही एक आचार्य होगा। 'आचार्याणाम् शतं पिता'—सौ आचार्य के बराबर एक पिता। 'सहस्रं तु पितृन्माता गौरवेणातिरिच्यते'—हजार पिताओं से एक माता गौरवमयी श्रेष्ठ है। यह यहाँ की समाज-रचना में मूल बात है। मातृस्थान को परम स्थान दिया है। मातृ-शक्ति, स्त्री-शक्ति, सेवा-शक्ति इन्दौर में बन सकती है, इन्दौर के जरिये भारत में और भारत के जरिये दुनिया में।

सर्वोदय-पात्र और शान्ति-सेना

भूदान ग्रामदान का काम तो चाल से चल रहा है। लेकिन स्त्रियों के लिए खास काम मेरे पास नहीं था। क्योंकि मिल्कियत तो सब पुरुषों के हाथ में रहती है। यह ठीक है कि कहीं-कहीं स्त्रियों ने आग्रह किया है, तो पुरुषों ने दान दिया है। इस तरह का श्रेय स्त्रियों ने दिया है। सैकड़ों स्त्रियों ने पैदल चलकर प्रचार का भी काम किया है। लेकिन मिल्कियत पुरुषों के हाथ में रहती है। दान-पत्र पुरुषों के नाम से भरे जाते हैं। स्त्रियों के लिए एक कार्य होना चाहिए और जब से मुझे शान्ति-सेना और सर्वोदय-पात्र सूझा तब से स्त्रियों के लिए द्वार खुल गया; जैसे सन्तों ने मुक्ति-मार्ग खोल दिया। शान्ति-सेना का काम भी उनके लायक है। उसमें वे अफसर, नेता हो सकती हैं। उनके पीछे-पीछे पुरुष उस काम में आयेंगे—मार्गदर्शन स्त्रियों का रहेगा। स्त्री-शक्ति इस काम में लगे। यह भक्ति-सेना शान्ति-सेना भारत में काम करेगी। दिन-ब-दिन वह इस काम में अधिक लगेगी ऐसी मैं उम्मीद करता हूँ।

अभी तक मैंने अपने हृदय को बहुत ही बन्द रखा। नहीं तो दिल में तीव्र वेदना हो रही थी। असम और बंगाल के बीच भाषा का झगड़ा चला। एक तरह से लड़ाई ही चली, ऐसा कहना चाहिए। क्योंकि हजारों लोग शरणार्थी हुए। मुझे बहुत ही तीव्र वेदना हो रही है। मैं सोचता था कि शान्ति-सेना की कितनी आवश्यकता थी। मैं तो यहाँ तक कहता हूँ कि अगर दो-चार माह इसी में मर जाते, तो मैं

जायगा। शान्ति-सेना की ताकत बढ़नी चाहिए और ऐसे मौके पर शान्ति-सेना बहुत कुछ कर सकती है। एक मौका मिलते ही सब काम हो सकता है।

पूछा जाता है कि इन्दौर में क्या कार्यक्रम होगा—सर्वोदयनगर आप किस तरह बनायेंगे? मैं कहता हूँ कि धीरे धीरे सब कुछ आयगा। भगवान् की कृपा होगी तो आपको प्रेरणा मिलेगी। आपमें से हरएक सोचे कि मैं मालव का नागरिक हूँ। एक जमाना था कि उज्जैन में अक्षांश-रेखांश के लिए वहाँ मध्यबिन्दु माना गया और वहाँ सारी दुनिया का ज्योतिष-शास्त्र चला। दुनिया का मध्यबिन्दु उज्जैन माना गया। आज यह स्थान दुनिया का मध्यबिन्दु होगा, जहाँ से शान्ति का प्रकाश दुनिया में फैलेगा। इसलिए हम दिल उदार बनायें, अपने नगर का सेवा का और दुनिया का कुछ-न-कुछ काम करें, सेवा में योगदान दें ऐसा निश्चय आप करें। भगवान् ने चाहा तो यहाँ से रोशनी फैलेगी।

प्रेमयोग और अविरोध

हमारा मूल मन्त्र होगा—प्रेमयोग। उसके लिए हमारे दिल में प्रेम हो और हमारा काम पूर्ण अविरोध से हो। 'सर्वेषाम् अविरोधेन'—सबका अविरोध व सबका सहयोग प्राप्त करके हम काम करें। आज मैंने देखा कि माताएँ छोटे-छोटे बच्चों को लेकर कितने प्यार से खड़ी थीं। ऐसा दृश्य चमत्कार जिसने देखा है उसका दिल पत्थर जैसे रहेगा—वह नरम ही हो जायगा।

भिण्ड-मुरैना में एक बड़ा काम हुआ। लेकिन कोई ताकत मैंने अपने में ऐसी नहीं देखी कि जिसका असर उन बागियों के दिल पर हो सके। मैंने पहले ही कहा था कि भगवान् जो चाहता है वही होगा। इसकी मिसाल भिण्ड-मुरैना की घटना है। मेरे शब्द में भगवान् ने ऐसी ताकत भर दी जिसने उनके दिलों को छुआ। तब से मैं बिल्कुल निश्चिन्त हो गया। अब मैं यह सोचता हूँ कि लोग कहते हैं कि बाबा में साधुओं का हृदय

परिवर्तन किया तो मुझे यह लगता है कि मैंने कुछ नहीं किया भगवान् ने जो चाहा, वही हुआ। मैं अपने को नीच-से-नीच मानता हूं। वैसे कई अच्छे भी गुण मुझमें हैं जिनके कारण यह सेवा चल रही है। लेकिन नम्रता का गुण मैं अपने में देखता नहीं था। उस घटना के बाद मैं अत्यन्त नम्र हो गया हूँ, धन्य हो गया हूँ। तुकाराम महाराज का एक वचन है : 'विरोधाचे मज न साहवे वचन'—मुझे विरोध का वचन सहन नहीं होता है।

इन दिनों दुनिया में एक तत्वज्ञान चला है—'संघर्ष का'। मैंने बहुत पढ़ा और सुना भी है लेकिन यह भारत के अनुकूल नहीं है। इसके बदले मंथन का तत्वज्ञान होना चाहिए। आज घर्षण की नहीं मंथन की जरूरत है। मंथन से मक्खन निर्माण होता है, घर्षण से अग्नि निर्माण होती है, जो जला सकती है। इसलिए मैं मंथन को अच्छा समझता हूँ—तत्वज्ञान बनाने के लिए। इससे बुद्धि में सार-असार की परीक्षा होती है। लेकिन उससे भी उत्तम विचार है 'सर्वेषाम् अविरोधेन'। इसलिए यहाँ जो भी काम हो उसमें किसीके भी दिल को क्या भी न दुखाया जाय। आदि मध्य और अन्त में सतत यह चिन्ता रखनी होगी कि हम प्यार से काम करें। कोई हमारे काम में सहयोग नहीं देता तो यह मानना चाहिए कि यह केवल आज का ही सहयोग नहीं है कल तो उसका सहयोग ही है। उसके पास दुबारा पहुँचने का मौका हमें मिलता है। भगवान् के मंदिर में बार-बार हम जाते हैं, तो हमें आनन्द होता है। जिसने सहयोग नहीं दिया उसकी मन में भी निन्दा न करें यह सवाल कार्यकर्ताओं को रखना होगा।

मैं अखबारवालों को यह कहना चाहता हूँ कि अखबार इस जमाने की बड़ी शक्ति है। अखबारों ने मुझे आज तक काफी सहयोग दिया है। जान-बूझकर विचारों को गलत नहीं छापा है। मेरी अखबारवालों से प्रार्थना है कि वे इस काम की टीका करें, अनुकूल-प्रतिकूल टीका करें आपको जैसा दिखता है, वैसा लिखें; लेकिन प्रेम और सत्य रखें।

आज की सबसे बड़ी जरूरत—एकता

इस वक्त हिन्दुस्तान में सबसे ज्यादा जरूरत एकता की है। आप जानते हैं कि पाकिस्तान और हिन्दुस्तान के बीच जैसा प्रेमभाव बनना चाहिए था, वैसा नहीं बना है। देश के अन्दर कई मसले हैं। उधर चीन के साथ संघर्ष होने जा रहा है इसलिए एकता की बहुत जरूरत है। हम सारे भारतवासी एक हैं दुनिया को एक करने के लिए। दुनिया को तोड़ने के लिए नहीं। हम भारत की सेवा करेंगे लेकिन इन्दौर के जरिये करेंगे। हमारा महामंत्र होगा 'जय जगत्'। सेवा भारत की करेंगे। हाथ से काम इन्दौर में होगा। मंत्र होगा 'जय जगत्'। इस तरह हम एक होकर काम करेंगे। सर्वोदय का काम इसी तरह होगा।

क्रान्ति कब होगी ?

हमारा कार्यक्रम ऐसा होगा जिसमें ज्यादा-से-ज्यादा लोगों का सहयोग होगा। बहुत ऊँचा कार्यक्रम लें और उसमें दस-बीस-तीस ही लोगों का सहयोग हो इतना ऊँचा कार्यक्रम हम न लें। थोड़ा-सा कार्यक्रम हो पर उसमें सौ प्रतिशत लोग सहयोग दें, ऐसा होना चाहिए। कार्यक्रम की योग्यता का निर्णय इस पर से होता है कि कितने हाथ और कितने दिल उसमें जुड़े हैं। कहने में खुशी होती है कि यहाँ १ हजार घरों में सर्वोदय-पात्र रखे गये हैं। लेकिन भगवान् को खुशी तब होगी और क्रान्ति भी तभी होगी जब ८ हजार घरों में सर्वोदय-पात्र रखे जायेंगे। गोकुल में भगवान् ने अपनी उँगली गोवर्धन पर्वत पर तब लगायी जब गोकुल के हर बच्चे और बहन ने अपनी लाठी लगायी। जब हम सब मिलकर काम करते हैं, तब उसमें भगवान् भी मदद करता है।

हिन्दुस्तान में हमारा समझाने की शक्ति अगर होती, तो अब तक हिन्दुस्तान के घर-घर में सर्वोदय-पात्र रखा जाता। राष्ट्रपति राजेन्द्रप्रसाद ने अपने घर में सर्वोदय पात्र रखा है यह खबर पढ़ते ही दूसरे दिन भारत के हर गाँव में घर-घर में सर्वोदय-पात्र रखा जाता। आज भी यह ही

सकता है। दिनभर सब प्रचार हो और ग्राम को इन्दौर के घर-घर में सर्वोदय-पात्र रख दिया जाय। अगर हिंसा में दण्ड की शक्ति काम करती है तो अहिंसा में उससे ज्यादा काम हमारे से होना चाहिए। अयूब पाकिस्तान में आये और पाकिस्तान की सारी पार्टियाँ उसी दिन खतम हुई। यह दण्ड-शक्ति से हुआ है। ऐसा ही अहिंसा में हमारे से काम होता तो अहिंसा की ताकत बढ़ती। जिस दिन आपने खबर सुनी कि राष्ट्रपति ने अपने घर में सर्वोदय-पात्र रखा है तो उसके दूसरे ही दिन सारे भारत में सर्वोदय-पात्र रख दिये जाते, तो कुल दुनिया को हम दिखा सकते कि भारत क्या चीज है। ऐसा एक दृश्य अगर भारत में दिख पड़े, तो फिर भारत की ओर कोई टेढ़ी नजर से देख ही न सकेगा। एक ही दिन में सारे भारत में सर्वोदय-पात्र रखे जाते तो एक बहुत बड़ी शक्ति पैदा होती। मैं यह अतिशयोक्ति नहीं कर रहा हूँ। आपको इसका अनुभव आयेगा। मैंने कहा मुट्ठीभर अनाज और क्षणभर शान्ति! यह इतना आसान नहीं है। भारत के कुछ घरों में और कुछ गाँवों में पहुँचना भी इतना आसान नहीं है। जिस तरह हम सारे भारत में दिवाली एक ही दिन मनाते हैं, जैसे लोगों ने सर्वसम्मति से इस विचार को माना है उसी तरह से राष्ट्रीयता का भारत को एक करने का, यह विचार हमारे सामने है। यह काम सर्वोदय-पात्र के जरिये ही सिद्ध हो सकेगा।

पहला काम : स्वच्छ इंदौर

मैं इस नगरी से सेवकों की माँग कर रहा हूँ। जीवनभर काम देनेवाले सेवकों की मेरी माँग है। छोटा-सा काम उन्हें पहले दिया है, वह सारे मिलकर पाँच-सात दिन करेंगे और इसकी बुनियाद पर सारे इन्दौरवाले करेंगे। वह काम कौनसा होगा—भगवद्गीता में कहा है :

> 'शुचौ देशे प्रतिष्ठाप्य स्थिरमासनमात्मनः।
> नात्युच्छ्रितं नातिनीचं ·· ·· ···· ·'

अपनी जगह स्वच्छ पवित्र रहे देश को स्वच्छ बनाना होगा, निर्मल पवित्र बनाना होगा। इसलिए हमने छोटा-सा काम लिया है—स्वच्छ इन्दौर। इसके बाद स्वच्छ भारत। स्वच्छ इन्दौर के काम में सब बच्चे, बड़े सब सहयोग देंगे। दूसरा काम होगा, भारत का शासन स्थिर हो यानी हम सब एक हों। भारत की एकता को मजबूत कर सकें। भेदभाव मत हो, ऐसी एकता के आधार पर हम काम करेंगे। हम सारे एक हैं यह दिखाने के लिए सर्वोदय-पात्र हम घर-घर में रखेंगे। दूसरी बात, हम दिल से एक बनें। भारत और दुनिया एक हो ऐसा हम चाहेंगे।

यह प्रारंभ का मेरा मांगलिक होगा मंगल प्रवचन। और मैं आपको अत्यन्त भक्तिभाव से प्रणाम करता हूँ। ● ● ●

इन्दौर के फ्रंट से वापस लौटना नहीं २.

कश्मीर में दस साल से फौज खड़ी है

इस साल चार महीने मैंने कश्मीर में बिताये। उसका मेरे चिन्तन पर बहुत असर हुआ है। कश्मीर में मैंने देखा ६ हजार सैनिक खड़े हैं। सारे भारत से आये हुए हैं। सब जमातों के, धर्म के, कौमों के और सब भाषा के। दस साल से वे वहाँ खड़े हैं, पहाड़ों पर चौकियाँ बनी हैं, टेण्ट में रहते हैं। कुछ लोग पहाड़ों की चोटियों पर, कुछ नीचे भी खड़े हैं। इसी तरह से सामने भी (पाकिस्तान में) ७ हजार की सेना टेण्टों में पड़ी है। रोज व्यायाम करते हैं खेलते हैं, कुछ थोड़ा पढ़ते भी होंगे। कश्मीर में फौजी भाइयों से मेरा परिचय हुआ उससे मेरा उनके प्रति आदर बढ़ा। इसके पहले भाइयों के साथ इतना मेरा सम्बन्ध नहीं आया था। उनमें काफी बुद्धिमान्, कल्पनावान्, श्रद्धावान्, धार्मिक लोग हैं। और ऐसी भावना से वे वहाँ खड़े हैं कि एक काम मिला है इसलिए वहाँ खड़े रहना है।

अहिंसा की अव्यक्त शक्ति की खोज

यह देखकर मेरे मन में बहुत विचार आये। मैंने सोचा किसी एक स्थान पर जरूरत पड़ने पर हजारों की संख्या में सेना को खड़ी कर सकते हैं, यह एक हिंसा की ताकत है। उसी प्रकार की शक्ति अहिंसा जब तक नहीं दिखायेगी तब तक राज्य हिंसा का होगा अहिंसा का नहीं। तब तक अहिंसा दासी रहेगी। इस विचार ने मेरे मन पर बहुत असर किया। अहिंसा की शक्ति संख्या पर निर्भर नहीं है अन्तःशुद्धि पर निर्भर है। जैसे एटम बम की इम्पर्सनल ताकत बनी उसी तरह से अहिंसा में भी इम्पर्सनल कैरेक्टर हासिल करना होगा। तभी अहिंसा-शक्ति

ताकत होगी। अगर घर बैठे-बैठे सारी दुनिया को खतम करने की ताकत मनुष्य के हाथ में आयी है, वैसे ही घर बैठे-बैठे सारी दुनिया को बचाने की ताकत मनुष्य के हाथ में आ सकती है। वह जो अहिंसा की ताकत होगी वह अव्यक्त शक्ति है। उसकी खोज करनी चाहिए। वह तब तक नहीं होगी जब तक मन से परे होकर हम चिंतन नहीं कर सकते।

आज की हालत में अलग-अलग मध्यबिंदु पर लड़ाई हो रही है। ५-६ माह पहले असम के कार्यकर्ता मिले थे। उन्होंने कहा कि लखीमपुर जिला हम सघन क्षेत्र के तौर पर लेंगे जिसमें शोषण-रहित, शासनमुक्त समाज का काम करेंगे। मैंने कहा ठीक है; लेकिन आपको शहर भी लेना चाहिए। तो उन लोगों ने गौहाटी शहर चुन लिया था। उस मसले को चार-छह माह हो रहे हैं लेकिन आज हम क्या देखते हैं कि उसी जगह पर दंगा-फसाद हुआ है। लेकिन वहाँ शान्ति-सैनिकों का काम हुआ हो, ऐसा सुनने को नहीं मिला है।

इस तरह जगह-जगह अशांति होती है, इसे हम बिल्कुल मिटाना चाहते हैं। उसके लिए मैं हमेशा कहा करता हूँ कि हमें आध्यात्मिक शक्ति की खोज करनी होगी। आज तो वह नहीं बनी है। जहाँ-जहाँ अशांति के मौके हम देखते हैं वहाँ-वहाँ जाकर हम उसे फैलने न दें, ऐसे काम के लिए दस-बीस लोगों को भेज सकते हैं जो मर-मिटने के लिए राजी हैं। ऐसे लोगों को दो-चार माह की आशा होती है और वे वहाँ जाकर काम करते हैं। ऐसी भी शक्ति होनी चाहिए। यह मेरा विचार-चक्र चला।

यहीं मरना है, यों सोचकर काम करना है

इस प्रान्त में मैंने देखा कि यहाँ कार्यकर्ता बिखरे हुए हैं। ऐसे बिखरे हुए कार्यकर्ता जहाँ हैं वहाँ शक्ति निर्माण नहीं होती है तो क्या मोहरहित होकर ५-६ कार्यकर्ता एक जगह काम करके देखें, जैसे कश्मीर प्रश्न पर

कायम के लिए हमारी सेना खड़ी है। राधाभाई सरगुजा में काम कर रहे थे। मोह के लायक ही काम उनके लिए वहाँ था। लेकिन मैंने उन्हें सलाह दी कि वे वह काम छोड़कर इन्दौर आयें तो अच्छा। उनका वहाँ का काम चाहे लोगों पर असर डालनेवाला न हो, लेकिन उनको वहाँ फँसाने के लायक था। लेकिन वह छोड़कर वे यहाँ आये, एक सिपाही के नाते और इन्दौर फ्रण्ट पर जब से वे आये हैं, वे सोचते हैं कि यहाँ के लोग कब यह काम हाथ में लेंगे। कब उनकी मुक्ति होगी! कश्मीर वाले यह नहीं सोचते हैं कि कश्मीर के लोग कब उनका काम हाथ में लेंगे और कब उनका छुटकारा होगा। हिन्दुस्तान के लोग अनेक जन्मों में मानते हैं बड़े धीरजवाले हैं इसलिए वे आपकी परीक्षा करकर लेंगे। आपके मरने के बाद धीरे धीरे वे सोचेंगे। मुमकिन है, न भी सोचें। लेकिन हमें क्या करना है यह हमें सोचना चाहिए। हमें कल का चिन्तन नहीं करना है। यह बात ठीक है कि यहाँ स्थानीय कार्यकर्ता नहीं मिलते हैं तो हमारे तरीके में गलती है या नहीं इसका संशोधन हो। लेकिन हमें यह नहीं सोचना चाहिए कि यहाँ के लोग कब काम में आयेंगे और हम कब छूटेंगे। इस तरह का ख्याल आप न रखिये। हमें तो यहीं मरना है यह सोचकर ही यहाँ काम करना है।

दुनिया अहिंसा की तरफ आ रही है

मैं वेदान्ती हूँ आपको आशावाद नहीं सिखा रहा हूँ। लेकिन वास्तविक तथ्य क्या है इसकी ओर आपका ध्यान खींचना चाहता हूँ। कुल दुनिया आज अहिंसा की तरफ आ रही है। सब अहिंसा की तरफ आ रहे हैं। कोई दो मील पर आया है कोई चार मील पर, कोई दस मील पर पहुँचा है कोई इससे पचीस मील के फासले पर भी है; लेकिन उनका मुँह हमारी तरफ है। सब अहिंसा की तरफ ही आ रहे हैं। इसलिए हमारा काम होने ही वाला है ऐसा जरूर उत्साह अगर आपमें नहीं होगा तो आप नहीं टिकेंगे और आपसे यह काम बननेवाला नहीं है।

रखनी होगी, अपने-अपने घर की, आसपास की जगह साफ रखने के लिए लोगों को बार-बार समझाना होगा। ये तो छोटी-छोटी चीजें हो गयीं, लेकिन गरीबों को गन्दगी की आदत-सी हो गयी है। योगशास्त्र में आया है कि मनुष्य में जब स्वच्छता की भावना पैदा होती है, तब उसे अपने शरीर के लिए वैराग्य उत्पन्न होता है। शौच-भावना का उत्कर्ष होता है, तब ऐसी स्थिति होती है।

स्वच्छता की अलग-अलग कल्पनाएँ

अलग-अलग प्रान्त में स्वच्छता की अलग-अलग कल्पना होती है। वे एक-दूसरे पर टीका भी करते हैं। महाराष्ट्र के लोग पानी बरतन को मुँह लगाकर पीते हैं तो उत्तर हिन्दुस्तान के लोग उन पर टीका करते हैं और उधर हिन्दुस्तान में मिट्टी के कुल्हड़ का उपयोग करते हैं, जिसका उपयोग करने के बाद फेंक देते हैं। ठीक भी है। इससे जूठा नहीं होता। हमारे आश्रम में लोहे की फूँकनी थी। एक दफा पंडित मालवीयजी हमारे आश्रम में आये। उन्होंने देखा लोग फूँकनी का उपयोग करके चूल्हे के पास बैठे थे। मुँह की वायु से अग्नि भड़कती थी। पंडित मालवीयजी को यह सब बुरा लगा। वे कहने लगे यह तो गन्दगी है। पंखे का उपयोग करना चाहिए। उनके लिए हमारे मन में आदरभाव था पूज्यभाव था तो हमने उनकी सूचना के मुताबिक पंखा शुरू कर दिया लेकिन हमने कहा कि यह गंदगी नहीं है। हमारे मुँह की वायु तो है, लेकिन अग्नि उसे शुद्ध कर देती है। तो स्वच्छता की कल्पना अलग अलग होती है।

वह मस्ती और आनन्द

सेनापति बापट मुझे पवनार में मिले थे। उन्होंने कई प्रकार की बातें कीं। गीता का अर्थ अहिंसा के विचार का विकास इत्यादि चर्चा की। उसके बाद मैंने पूछा कि आपका सफाई का काम कैसा चलता है। उन्होंने जवाब दिया बहुत अच्छा चलता है। अभी मुझे एक सहयोगी

मिला है। मैंने सोचा कि तीस साल का भाई शायद, जिसमें एक सहयोगी मिला और इस मन के गड्ढे को खुशी हो रही है। मैंने पूछा, कौन है यह सहयोगी? तो बोले, 'एक ठेलागाड़ी'। उन्हें उसमें बिलकुल आनन्द था। तपस्या चल रही है ऐसा उनको भास ही होता था। उनकी यह मस्ती और आनन्द देखकर मैं मुग्ध हो गया।

सारी दुनिया भगवान् और मैं एक सेवक

पवनार में कोदियाबाबा भंगी का काम करते थे। उस वक्त मैं जेल में था। छूटने के बाद मैंने उनसे पूछा : आपका काम कैसे चल रहा है? उन्होंने कहा कि "पहले कुछ साथी थे, बाद में वे छूट गये और अब मैं अकेला हूँ। जब साथी थे तब ऐसा लगता था सत्संग हो रहा है। लेकिन अब जब मैं अकेला हूँ तब भगवान् की सेवा में मैं लगा हूँ, मैं भक्त हूँ, सारी दुनिया भगवान् है ऐसा महसूस करता हूँ।" यह है बादशाही और अन्दर की मस्ती। आध्यात्मिकरूपी हम देखें, तो दूसरा ही दृश्य देखने को मिलेगा। लेकिन उन्होंने कहा : पहले सत्संग चलता था अब भक्ति चल रही है।

जितनी भक्ति, उतना असर

इसी मस्ती में हम भी घूम रहे हैं और काम कर रहे हैं। इन्दौर पर हमारा क्या असर होगा, यह हमारी भक्ति कितनी है इस पर निर्भर है।

मैं कर्मकाण्ड करना नहीं चाहता

इन दिनों एक बात मेरे मन में बहुत दफा आती है। मैं किसी चीज का कर्मकाण्ड नहीं करना चाहता हूँ। साबरमती में बापू रोज कातने का आग्रह रखते थे। मैं रोज कातता था लेकिन रोज कातने का महत्त्व मैं नहीं मानता था। बाद में मैं पवनार गया, वहाँ भी मेरा रोज का कातना जारी था। उस वक्त बापू ने पत्र लिखा था कि "तू रोज कातता तो है

वैसी शंका, वैसा फल

कुछ लोग कहते हैं, सर्वोत्तम-पात्र तो रखे जा रहे हैं लेकिन वे आगे टिकेंगे या नहीं कह नहीं सकते हैं। अब वैसी शंका हमेशा रहा करेगी। कुरान में आया है 'पुण्य करो, तो स्वर्ग पाओगे', लेकिन ये शंका करनेवाले लोग पुण्य कर भी लेंगे, स्वर्ग प्राप्त भी करेंगे; लेकिन मन में शंका करेंगे कि क्या यह सचमुच स्वर्ग है? शायद यह स्वर्ग नहीं ही है। इस तरह शंकावाद रहेगा तो काम नहीं बनेगा। अगर हम अपने मन में शंका ही रखा करेंगे, तो वैसा ही फल पायेंगे।

हमें आशावादी रहना चाहिए

मानव में रजोगुण प्रधान है, देवयोनि में सत्त्वगुण प्रधान है और पशुयोनि में तमोगुण प्रधान है। रजोगुण का लक्षण यह है कि वह स्थिर नहीं, चंचल है। इस तरह मानव-स्वभाव की तरफ देखो तो यही सोचना होगा कि काम तो ईश्वर ही करायेगा, हम क्या करानेवाले हैं? नौ साल से बाबा एक विश्वास लेकर घूम रहा है लेकिन फिर भी उसका क्या भरोसा है? क्या विश्वास है कि वह दसवाँ साल पूरा करेगा? अगर रजोगुण जोर करेगा तो हवाई जहाज से दुनिया की सैर करेगा और तमोगुण जोर करेगा, तो किसी आश्रम में बैठ जायगा। फिर लोग कहेंगे कि नौ साल की यात्रा होने पर भी बाबा का चित्त आखिर ही रहा इसलिए दस साल पूरे होने दो फिर बोलो कि बाबा सतत यात्रा कर रहा है। सार यह है कि मनुष्य का भरोसा नहीं है। वह तो आखिर है, रजोगुणी है; लेकिन जिस किसीको यह खयाल आया कि यह काम ईश्वर करा रहा है उसे विश्वास, अविश्वास की परवाह नहीं रहेगी। वह अपना काम करता ही रहेगा। कौन-सी ऐसी चीज है जो हमें अनुकूल है और इस ओर खींच रही है? वो चीज अन्दर पड़ी है। और अगर जनता की बात देखनी है तो जनता तो बिलकुल जगन्नाथ के समान है। हम जैसा काम करेंगे

आशावादी रहना चाहिए। जो काम आज नहीं हुआ, वह कल होगा, ऐसी आशा मन में रखनी चाहिए।

किसीका विरोध आप न करें

तीसरी बात हमें किसीका विरोध नहीं करना है। हरएक के कहने में सत्य का अंश होता है। हमारी पचासों बातें हैं उसमें से उसे एक अच्छी जमती हो और बाकी गलत जमती हों तो भी हमें ५१ में से उस एक बात को ढूंढ़ना चाहिए और उसे पकड़े रहना चाहिए, तो वह हमें अनुकूल होगा। एक विभाग में जो बात सिद्ध होती है वह दूसरे में होती ही है। उसे सिद्ध करने के लिए पचास विभाग देने की जरूरत नहीं है। मैंने कुछ थोड़ा-सा मैंने देखा उस पर से मैं कहता हूँ कि यहाँ की हवा आपके काम के लिए अनुकूल है। इसलिए यहाँ काम करने के लिए हमने जो चिंतन किया है उसके लिए हमें बल मिलता है। यह स्थान ऐतिहासिक है। इसके अलावा यह बात मैंने पहले से ही बतायी है कि हर शहर में करीब-करीब राजनीति के पचड़े पड़े हैं। मैं यहाँ के लोगों से पूछता हूँ कि इन्दौर की कोटि के दूसरे जो शहर हैं उनसे यहाँ राजनीति के झमेले कुछ कम हैं या नहीं? तो कहते हैं जी हाँ। इसलिए आप किसीके विरोध में न पड़ें और राजनीति के झमेले में पड़े हुए लोग आपके पास जितने अंश में आते हैं जितनी अनुकूलता उनके लिए वे इस काम में देखते हैं उतना उनको नजदीक आने दीजिये।

काम विविधतारूप लेकिन सातत्य हो

यहाँ सफाई-काम करने की बात है। वह रोचक, विविधमय है। बात आसान करो तो आसान है मुश्किल करो तो मुश्किल है। आसान इसलिए है कि स्वच्छता समझाने पर कोई भी उसे मानेगा लेकिन उसमें सातत्य का सवाल आता है। स्वच्छता एक बेसिक चीज है इसमें तालीम का सवाल है। अपने देश में स्वच्छता का संस्कार ही नहीं है। तालीम देकर लोगों को सफाई बनाना है। नालियाँ साफ

रखनी होगी, अपने-अपने घर की, पाखाना की जगह साफ रखने के लिए लोगों को बार-बार समझाना होगा। ये तो छोटी-छोटी चीजें हो गयीं, लेकिन गलीवों को गन्दगी की आदत-सी हो गयी है। योगशास्त्र में आया है कि मनुष्य में जब स्वच्छता की भावना पैदा होती है, तब उसे अपने शरीर के लिए वैराग्य उत्पन्न होता है। शौच-भावना का उत्कर्ष होता है, तब ऐसी स्थिति होती है।

स्वच्छता की अलग-अलग कल्पनाएँ

अलग-अलग प्रान्त में स्वच्छता की अलग-अलग कल्पना होती है। वे एक-दूसरे पर टीका भी करते हैं। महाराष्ट्र के लोग पानी बरतन को मुँह लगाकर पीते हैं तो उत्तर हिन्दुस्तान के लोग उन पर टीका करते हैं और उत्तर हिन्दुस्तान में मिट्टी के कुल्हड़ का उपयोग करते हैं, जिसका उपयोग करने के बाद फेंक देते हैं। ठीक भी है। इससे बड़ा नहीं होता। हमारे आश्रम में लोहे की फूँकनी थी। एक दफा पंडित मालवीयजी हमारे आश्रम में आये। उन्होंने देखा लोग फूँकनी का उपयोग करके चूल्हे के पास बैठे थे। मुँह की वायु से अग्नि भड़कती थी। पंडित मालवीयजी को यह सब बड़ा लगा। वे कहने लगे यह तो गन्दगी है। पंखे का उपयोग करना चाहिए। उनके लिए हमारे मन में आदरभाव था पूज्यभाव था तो हमने उनकी सूचना के मुताबिक पंखा शुरू कर दिया लेकिन हमने कहा कि यह गंदगी नहीं है। हमारे मुँह की वायु तो है लेकिन अग्नि उसे शुद्ध देती है। तो स्वच्छता की कल्पना अलग-अलग होती है।

वह मस्ती और आनन्द

सेनापति बापट मुझे पवनार में मिले थे। उन्होंने कई प्रकार की बातें कीं। गीता का अर्थ अहिंसा के विचार का विकास इत्यादि चर्चा की। उसके बाद मैंने पूछा कि आपका सफाई का काम कैसा चलता है। उन्होंने जवाब दिया बहुत अच्छा चलता है। अभी मुझे एक सहयोगी

भिन्न है। मैंने सोचा कि तीस साल का बना" घर, जिसमें एक सहयोगी मित्र और इस भले मानस को खुशी हो रही है। मैंने पूछा कौन है वह सहयोगी? तो बोले, 'एक टट्टी-गाड़ी'। उन्हें उसमें बिलकुल आनन्द था। तसला चलाया जा रहा है ऐसा उनको मालूम ही होता था। उनकी वह मस्ती और आनन्द देखकर मैं खुश हो गया।

सारी दुनिया भगवान् और मैं एक सेवक

पवनार में कोटियाबाबा भंगी का काम करते थे। उस वक्त मैं जेल में था। छूटने के बाद मैंने उनसे पूछा : आपका काम कैसे चल रहा है? उन्होंने कहा कि "पहले कुछ साथी थे, बाद में वे छूट गये और अब मैं अकेला हूँ। जब साथी थे तब ऐसा लगता था सत्संग हो रहा है। लेकिन अब जब मैं अकेला हूँ तब भगवान् की सेवा में मैं लगा हूँ, मैं भक्त हूँ, सारी दुनिया भगवान् है ऐसा महसूस करता हूँ।" यह है बाहर की और अन्दर की मस्ती। मार्क्सवादी हम देखें, तो दूसरा ही दृश्य देखने को मिलेगा। लेकिन उन्होंने कहा : पहले सत्संग चलता था अब भक्ति चल रही है।

जितनी भक्ति, उतना असर

इसी मस्ती में हम भी घूम रहे हैं और काम कर रहे हैं। इन्दौर पर हमारा क्या असर होगा यह हमारी भक्ति कितनी है, इस पर निर्भर है।

मैं कर्मकाण्ड करना नहीं चाहता

इन दिनों एक बात मेरे मन में बहुत दफा आती है। मैं किसी चीज का कर्मकाण्ड नहीं करना चाहता हूँ। साबरमती में बापू रोज कातने का आग्रह रखते थे। मैं रोज कातता था लेकिन रोज कातने का महत्त्व मैं नहीं मानता था। बाद में मैं पवनार गया वहाँ भी मेरा रोज का कातना जारी था। उस वक्त बापू ने पत्र लिखा था कि "तू रोज कातता तो है

लेकिन रोज कातने पर मेरा विश्वास नहीं यह मेरी कमी है।" मुझे लगा कि यह ठीक नहीं इतनी उनकी 'कमी' बोलना ठीक नहीं। इसलिए मैंने उन्हें लिख दिया था कि मैं बारह साल लगातार कातूँगा। उसके बाद मैं कई बार बीमार भी पड़ा लेकिन एक भी दिन मेरा धागा नहीं गया। बाद में वे मुझसे मिले तो उन्होंने पूछा। तो मैंने कहा कि मैं रोज कातता हूँ। कहने का मेरा मतलब यह है कि मैं कर्मकाण्ड नहीं चाहता।

अपने को ऊँचा न मानें

पुराने और नये कार्यकर्ताओं में बहुत फर्क है। फर्क होना भी चाहिए। लेकिन उसमें यह ख्याल रखना चाहिए कि कोई अपने को दूसरे से ऊँचा न माने। काठियावाड़ में किसीने मुझसे पूछा कि क्या शान्ति-सैनिक बीड़ी पी सकता है? मैंने कहा शान्ति-सैनिक की जो शर्त है उसमें अगर यह नहीं है तो वह बीड़ी पीयेगा। पर उन्होंने मुझे कहा कि लोगों पर उसका असर बहुत खराब होगा। मैंने कहा कि यह तो वह देखेगा। अगर उसको शान्ति के काम में इंटरेस्ट है तो वह यह सोचेगा कि अगर बीड़ी पीने का खराब असर होता है, तो बीड़ी नहीं पीना चाहिए। शान्ति-सैना सिर्फ हिन्दुस्तान के लिए नहीं—अमेरिका में भी बनानी है। इसलिए किसी चीज का कर्मकाण्ड मत बनाइए। हम कर्म-काण्ड करते हैं और सेल्फ राइचेस (Self Righteous) बनते हैं। यथाभर सफाई का काम करेंगे। कर्मकाण्ड के तौर पर बँधा हुआ काम नहीं करेंगे और किसीने काम नहीं किया तो हम उसे भी बुरा नहीं मानेंगे। लेकिन अपने को भी ऊँचा नहीं मानेंगे।

इन्दौर —कार्यकर्ताओं से
१७-८-६

सबर-धीरज का फल मीठा २

जनता के सामने ऐसी बातें रखनी चाहिए, जिससे कि जनता को प्रेरणा मिले। उसमें अतिशयोक्ति न हो। लेकिन सत्य हो। उस विषय पर चर्चा करनी है तो साथियों में जरूर करें। लेकिन जनता बिलकुल बालक है जैसे बच्चे को चमचे से दूध पिलाना पड़ता है उसी तरह जनता के सामने कोई भी चीज रखते समय बहुत सोच विचारकर रखनी चाहिए।

जोश के साथ होश हो

हम अविरोध से काम करना चाहते हैं। मुमकिन है कि यह चीज जवानों को न जँचे। जवान उतावले होते हैं। उनके अन्दर उफान है, तूफान है, जोश है लेकिन मैं हमेशा कहता हूँ जोश के साथ होश होना चाहिए। जोश हो और होश न हो तो इंजन जोर से दौड़ेगा। सामने पुल टूटा है तो गाड़ी खड़ी हो जायगी और खतम हो जायगी। जोश है प्राण शक्ति और होश है बुद्धि-शक्ति। मनुष्य को मार्ग दिखानेवाली बुद्धि-शक्ति है। प्राण-शक्ति शरीर को चलना देती है। लेकिन साथ-साथ बुद्धि शक्ति भी होनी चाहिए। और एक बात ध्यान में रखनी होगी कि कोई भी मसला खड़ा होता है तो असीम चिन्तन की जरूरत है। शायद जवानों को यह भी नहीं जँचेगा। पर वे देखेंगे कि असीम चिन्तन से ही काम होगा। असीम से हवा बदलेगी और देखते-देखते सब लोगों का सम्पाय आपको हासिल होगा।

उनकी बुद्धि, हमारी शक्ति

ऐसे कार्यकर्ता हम चाहते हैं जो अपनी अपनी जगह पर होंगे लेकिन उन सबको एक दिशा मिलनी चाहिए। उस दिशा में वे चलें।

हरएक के लिए जरूरी है कि वे जो दिशा तय करें उसका अनुकरण करें। गांधीजी के साथ चरखा संघ की चर्चा चलती थी। ऐसी एक चर्चा में मैं नहीं था लेकिन वे मुझे पूछा करते थे। जो कुछ प्रस्ताव करते थे, मेरे साथ उनकी चर्चा होती थी। एक बार ऐसा हुआ कि उन्होंने जो प्रस्ताव पास किया वह जमनालालजी को बिल्कुल ही पसन्द नहीं था और उस प्रस्ताव में बापू की ही कुछ सूचनाएँ थीं। जब उन लोगों को बापू की बातें नहीं जँचीं तो वे मेरे पास आये थे। मेरे विचार बापू के नजदीक के ही थे। बापू ने ही उन लोगों को मेरे पास भेजा था। मैंने उन लोगों से कहा कि दो बातें हो सकती हैं। एक तो हम सारे आयोजन करें और बापू अमल करें। जहाँ मतभेद होते हैं, वहाँ ऐसा ही करना चाहिए। या दूसरी बात यह हो सकती है कि बापू आयोजन करें और हम अमल करें। उन्होंने सत्य का अध्ययन किया है। अन्दर से उनको एक Inspiration है। इसलिए हमारा प्लान मजबूत बनेगा और वे बूढ़े हैं शरीर से कमजोर हैं इसलिए वे अमल करेंगे तो कमजोर का अमल होगा। इसलिए बेहतर तो यह है कि वे प्लान करें और हम उसका अमल करें। बापू आज हमारे पास हैं तो बहुत बड़ी पूँजी हमारे पास है। वह प्रतिभा क्षीण हो रही है इसलिए उसका पूरा लाभ उठाना चाहिए।

मेरी अपनी लिपि

जब हम स्कूल में पढ़ते थे तब क्लास में हमारे मास्टर साहब ने Dictation दिया था। सब लड़के लिख रहे थे। शिक्षक ने देखा। मैं नहीं लिख रहा था। बाद में शिक्षक ने मुझे लिखा हुआ पढ़ने के लिए कहा तो हाथ में नोट बुक लेकर जैसे याद था वैसे पढ़ा। शिक्षक ने कहा कि जरा मुझे दिखाना। मैंने उनसे कहा कि यह लिपि दूसरी है आप नहीं पढ़ पायेंगे। आप दूसरे लड़कों से पढ़वाइये। मेरे नजदीक के लड़के को शिक्षक ने खड़ा किया लेकिन पाया कि वह नहीं पढ़ सका।

धनुष और बाण

शायद, हरएक की ताकत अलग-अलग होती है, इसलिए हम अमल करें और बड़े लोग ध्यान करें। आज बूढ़े लोग हमारे पास हैं, तो बड़ी दौलत हमारे हाथ में है। इस तरह से पुरानी पीढ़ी और नयी पीढ़ी के बीच का सम्बन्ध रहेगा, उसीसे आज का काम बनेगा। जहाँ बूढ़े और जवान एक साथ काम करते हैं वहाँ मैं अक्सर कहता हूँ कि जवानों को चाहिए कि वे बूढ़ों का मार्गदर्शन और आशीर्वाद हासिल करें। उनकी सलाह हम लें तो कुछ तो काम उनके हाथ में पड़ा, ऐसा माना जायगा। उनका शरीर कमजोर है, इसलिए अमल करने का काम जवान करेंगे। जो बूढ़े लोग हैं वे धनुष के समान होते हैं और जवान बाण के समान। दोनों में से एक न हो तो काम नहीं चलेगा।

उनके आशीर्वाद लें

बूढ़ों के पास ही विचार होते हैं, ऐसा नहीं है। विचार तो जवानों के पास भी होते हैं, लेकिन कभी-कभी जवानों के पास होश की कमी होती है। उत्साह तो बहुत होता है। लेकिन सिर्फ उत्साह का उपयोग करके बात की जाय तो काम बिगड़ सकता है। फिर वहाँ जवान लोग बेकार बनते हैं। वहाँ रस का काम नहीं बन पाता। पुरानी पीढ़ी के कमजोर होने पर भी उनके आशीर्वाद हमारे काम में लाभदायक हैं। उनकी सलाह लेकर हम आगे बढ़ सकते हैं और आगे चलकर पुरानी पीढ़ी के लोग एक दिन मरनेवाले ही हैं और सारा काम जवानों के हाथों में आनेवाला है और सब लोगों का मौका मिलनेवाला है। इधर की समस्या ही ऐसी है कि पुराने लोग का वह उम्र ढल रही है पर अलग बात है कि बड़ों को समझना चाहिए कि सब लोगों को मौका देने के लिए आज जिस पद पर वे हैं उसे छोड़ दें। लेकिन वह बातों में ये न। ठीक है। मगर मैं कहता हूँ कि उनका स्थान भरने के लिए जवान सामने आने ही चाहिए।

शहर नसीब आजमायें

भूदान-यात्रा शुरू की तो सब काम छूट गये। यात्रा छोड़कर तो मैं कहीं नहीं जा सकता था। लेकिन यात्रा में भी सर्वोदय-सम्मेलन हर साल मेरे पास होता रहा। इस साल मैंने जाहिर किया कि मैं अज्ञात यात्रा शुरू करनेवाला हूँ। सर्वोदय सम्मेलन में मैं नहीं आऊँगा और इस साल का सर्वोदय-सम्मेलन मेरे पास नहीं हुआ। उसके बाद मेरी ज्ञात यात्रा शुरू हुई। लेकिन अब इन्दौर के बाद परिपूर्ण रूप से अज्ञात यात्रा होगी। पंजाब में ही अज्ञात यात्रा शुरू हुई थी लेकिन मन में इन्दौर था। इसलिए मैं इधर आया और आते हुए भिण्ड-मुरैना में भी काम हुआ। इन्दौर का पुराना संकल्प था, इसलिए हमारी अज्ञात यात्रा स्थगित हुई है। हमें लगा कि इन्दौर में अपना नसीब क्या देखें। शहर में आज तक कोई काम नहीं हुआ था। वर्षों में मैं था लेकिन वर्धा शहर में ताकत नहीं लगायी थी। उस वक्त ग्राम संयोजन, खादी-ग्रामोद्योग आदि काम में लगा था और मेरा ध्यान गाँव की तरफ था। इन्दौर एक मध्यवर्ती स्थान होने के कारण इसे मैंने चुना। इसके आगे हमारा काम अज्ञात में होगा और जैसे ईश्वर ने चाहा वैसे ही होता आया है और आगे भी होगा।

एक सुझाव

मैंने कस्तूरबावालों को कहा है कि देखिये आपने नियम बना लिया है कि गाँव में काम करेंगे लेकिन फिर भी आपको इन्दौर का अध्ययन करना चाहिए। इसलिए नहीं कि मैं आ रहा हूँ बल्कि इसलिए कि आप यहाँ है और आप यहाँ है इसलिए भी मैं यहाँ आया हूँ। देहातों में भी आप काम जरूर करें लेकिन जिन गाँवों में आप काम करेंगी उन गाँवों पर इन्दौर शहर का असर होगा। चार लाख का शहर है और उसके आस पास तीन लाख की जनता देहातों में है। और यह तीन लाख की जनता चार लाख की सेवा में है। दूध की मक्खन लेकर गाँव के लोग रोजमर्रा

प्यार की बातें ४

शासन-विहीन अनुशासन

हर धर्म के लोग अपने-अपने उत्सव मनाते हैं। क्रिसमस के दिन कुछ ईसाई उत्सव मनायेंगे, रामनवमी के दिन कुछ हिन्दू राम-जन्म का उत्सव मनायेंगे, भजन उपवासादि करेंगे। इसमें कोई जबरदस्ती नहीं है, इसके पीछे कोई दंड नहीं है। अगर यह काम नहीं करेंगे तो सजा होगी ऐसी कोई बात नहीं है। लेकिन इसमें उनको अन्तःसमाधान मिलता है। बहुत सारे हिन्दुस्तान के लोग नहाये बिना दोपहर को खाना नहीं खाते। एक धार्मिक नियम के तौर पर वे यह मानते हैं। कोई धर्मग्रन्थ का जप करते हैं, कोई विष्णु-सहस्रनाम का जप करते हैं—इन विधि-विधानों का पालन मनुष्य अपनी इच्छा से करता है। लेकिन ये लोग बिना शासन के यह सब काम करते आये हैं। बिना शासन के अनुशासन की यह शक्ति धर्मात्माओं ने सिखायी। अब हमें यह शक्ति व्यावहारिक और आध्यात्मिक क्षेत्र में प्रकट करनी है। फलाना काम करने से परलोक में लाभ मिलेगा या हानि होगी, यह पारलौकिक आध्यात्मिक विचार अब नहीं चलेगी। इहलोक में ही हम स्वर्ग ला सकते हैं या नरक ला सकते हैं। हमारी कृति का फल यहीं का यहीं मिलनेवाला है, यह समझना होगा। शास्त्र में कहा है कि पाप और पुण्य थोड़ा किया तो उसका फल मरने पर मिलता है। लेकिन उत्कट पाप और उत्कट पुण्य का फल यहीं इसी दुनिया में मिलता है। हमने अधिक खा लिया तो नतीजा यहीं भुगतना होगा, मरने पर नहीं।

धरती पर स्वर्ग उतार सकते हैं

अगर हम इन्दौर को स्वच्छ साफ करेंगे तो हमें अच्छे विचार

भुगतेंगे। अगर हम हिंसा करेंगे क्रोध करेंगे तो यहीं-का-यहीं नरक का अनुभव होगा। प्रेम और करुणा करेंगे तो यहीं स्वर्ग का अनुभव होगा। ऐहिक अध्यात्म और पारलौकिक अध्यात्म का विचार हिन्दुस्तान में चलता है। हिन्दुस्तान के लोग भौतिक विचार नहीं करते हैं लेकिन पारलौकिक अध्यात्म पर उनकी श्रद्धा अधिक है। खासकर बहनों में ज्यादा है। हम चाहते हैं कि ऐसी बहनें सामने आयें जो समाज को यह विचार सिखायें कि हम इहलोक में स्वर्ग ला सकते हैं। इसके लिए हमें लोगों की अपनी शक्ति स्वतंत्र प्रकट हो ऐसा काम करना चाहिए। धर्मवालों ने एक चीज बतायी उसे सभी लोग करते हैं। सरकार टैक्स लेती है तो हम प्रतिशत तो घटाने की कोशिश करते हैं लेकिन कानून से समय होता है तो तुरन्त दे देते हैं। इसमें करुणा की बात नहीं है। लेकिन प्रेम से और विचार से काम होगा तो करुणा का राज होगा। अगर हमें ताकत से काम लेना है तो डर और असहिष्णुता की चलेगी। इन दोनों में भी झगड़ा है। तो जिसकी दण्डशक्ति है उसका चलेगा। इस शक्ति से अगर काम करना है तो ध्यान में रखना होगा कि हमें उसको शुद्ध बनाना होगा।

इन्सान यह पराक्रम दिखा दे

लोग कभी कभी हमसे कहते हैं कि प्रेम शक्ति से काम हो यह विचार बहुत अच्छा है। पर इसमें ज्यादा एम्फेसिस 'शासन' पर है। मैं कहता हूँ कि 'शासन अच्छा' मत कहिये। आखिर शासन अच्छा है या नहीं, हम उस काम के लायक हैं या नहीं, यह देखना है। हमारे लिए यह जरूरी है और हम उसके पालन के लिए प्रयत्न हैं।

महाभारत युद्ध का भी कहें तो यह गलत भेद गया तो एक सिद्ध के लाने पर यह काम हो जायगा। यहाँ अस्सी हजार यति हैं। मान लो ऐसे अस्सी हजार सर्वोदय-यात्रियों की स्थापना होती है तो एक सिद्ध के रूप पर सर्वोदय के विचार के लिए सेना भी समर्थ है

यह प्रकट हो जायगा। हम विश्वास करते हैं कि यहाँ जनता की ऐसी तैयारी है।

मैं चाहता हूँ कि इन्दौर का प्रत्येक विभाग दे और शान्ति-सेना के लिए प्रतिज्ञा करे। दुनिया में इस वक्त बाहरी ताकत की जरूरत नहीं है अन्दरूनी ताकत की जरूरत है। बाहर के शासन की जरूरत नहीं है अन्दर के शासन की ताकत हम दिखा दें यह जरूरी है।

बापू ने राह दिखायी थी

बापू ने यह दिशा दिखायी थी। उन्होंने जाहिर किया था कि ६ अप्रैल या १३ अप्रैल के दिन २४ घण्टे का फाका कुल लोग करें ताकि हमारे विचार माननेवाले कितने लोग हैं इसका अन्दाजा लगेगा। लाखों लोगों ने फाका किया लेकिन हिन्दुस्तान के हर व्यक्ति ने किया, ऐसा नहीं हुआ। वैसे एक दिन का एकादशी का उपवास हिन्दुस्तान के लोगों को मालूम है लेकिन बापू ने चौबीस घण्टों का उपवास सुझाया था। जब आज शाम को हम खाना खाते हैं तो कल शाम को हम दूसरा खाना खायेंगे। लोग विनोद करने लगे बारह घण्टे तो हम रोज ही उपवास करते हैं। चौबीस घण्टों का उपवास अपने देश में नहीं था। लेकिन जैसे बापू ने सुझाया था कि एक दिन सब लोग जमा कर और तय करें कि उस दिन शाम का खायेंगे और चौबीस घण्टे के बाद दूसरा खाना खायेंगे। यह जनता का प्रोटेस्ट के तौर पर यह काम होता। हिन्दुस्तान के कुल लोग यह काम करते तो मैं आपसे कहना चाहता हूँ सन् १९२१ से 'क्विट इण्डिया' के आन्दोलन तक १९४२ तक स्वराज्य के लिए हमें रुकना नहीं पड़ता। सन् १९२१ में ही स्वराज्य हो जाता। कुल लोग — बाद बीमार हों, बच्चे हों — सब यह उपवास करते, तो उस दिन एकदम से स्वराज्य मिलता।

इन्दौर सबके लिए प्रतिमा हो सकता है

लेकिन अगर इन्दौर के अन्दर हजार घरों में सर्वोदय पात्रों की

स्थापना होती है, यह छोटा-सा काम सब लोग करते हैं, तो सारा इन्दौर एक विचार पर आया, एक काम में सबकी एक राय बनी, ऐसा होगा और सर्वोदय का राज्य होगा। उसके लिए इन्दौर एक स्फूर्ति का स्थान होगा, सबके लिए प्रतिमा होगा। फिर ऐसा ही काम गाँवों में भी हो सकता है, जगह जगह ऐसा काम हो सकता है। लेकिन किसी एक को यह करके दिखाना होगा।

वेदान्त में कहानी है, शेर का बच्चा भेड़ों के साथ पाला गया था। वह उनके साथ ही रहता था, घूमता था और दूध पीता था। एक दिन जंगल से एक शेर आया और वह एक भेड़ को ले गया। तो यह शेर का बच्चा देखने लगा। उसने देखा कि मैं भी तो उसी शक्ल का हूँ। तो फिर उसने भी भेड़ खाना शुरू किया। उसने देखा कि सामने जो शेर है उसका रूप मेरे जैसा ही है, तो उसके ध्यान में आया 'सोऽहम्'—वह मैं हूँ। मैं भेड़ नहीं हूँ। इस तरह परमेश्वर काम करता है। जो काम इंदौर में होता है, उसका असर दूसरे शहर पर होगा। अगर इंदौर में काम हुआ तो कहना पड़ेगा 'सोऽहम्'। जैसे उस शेर के ध्यान में आया, वैसे सब शहरों के ध्यान में आयेगा। आज उनकी पहचान नहीं है। पहचान बाद में ध्यान में आयेगा। 'तद् पश्यत तद् भवत तदासीत्'—उसने देखा और वह वैसा बना। यानी उसने पहचाना, हम वैसे ही हैं। इंदौर का स्वरूप दूसरे शहर देखेंगे तो वह अपना स्वरूप पहचानेंगे। इसलिए इंदौर में काम होता है तो दूसरे शहरों में काम होगा।

इंदौर को स्वच्छ बनाने की बात है। हमारी देह रोज गन्दी होती है। इसे हम रोज साफ करते हैं, थकते नहीं हैं। हम शरीर को कहते हैं कि मैं रोज तुझे साफ करूँगा और वह कहता है कि मैं रोज गन्दा बनूँगा। लेकिन कौन हारता है? शरीर की और हमारी कुश्ती चलती है। अगर एक भी दिन मैं उसे साफ नहीं करता हूँ, तो वह गंदा बनता है। एक दिन आदमी मर जाता है तो उस लाश को भी जलाते हैं। यह एक तरह से देह का मल ही है। उसको जलाकर फेंकते हैं। आदमी जब तक जिन्दा है

तब तक वह कहता है कि मैं बराबर देह को स्वच्छ रखूँगा। जब आदमी मर जाता है तब उसकी स्वच्छता के व्रत की पूर्ति हम उसकी लाश को नहलाकर करते हैं। हम अत्यन्त निर्मल हैं, नहीं तो यह बुद्धि हमें नहीं होती कि अपने जिस्म को हम हमेशा साफ रखें। अस्वच्छता हमें प्रिय नहीं है। बिल्कुल अपढ़ असंस्कृत, जंगली मनुष्य के सामने दो तरह का पानी रखा जाय—एक गन्दा और एक साफ तो वह साफ ही पानी पीयेगा। इन्सान अन्दर से स्वच्छ है शरीर के साथ वह नहीं है वह अन्दर से ही स्वच्छ है। इसलिए हम चाहते हैं कि इन्दौर स्वच्छ बने तो फिर अच्छे विचार इन्दौर को सूझेंगे।

अलग रहोगे, तो सड़ जायेंगे

आप सब लोग सर्वोदय-पात्र रखनेवाले मित्र हैं। मानो आप पत्ती हैं और सारा समाज वृक्ष है। उसको हरा बनाना है। अगर ऐसा नहीं हुआ और ऐसे चन्द लोग अलग होंगे तो अलग पड़ा हुआ हरा कूड़ा हो जायगा और कूड़ा बनते-बनते वह सड़ जायगा उसमें कीड़े पड़ेंगे। हिन्दुस्तान में यही हुआ। समाज से कुछ लोग अलग रहे। हम संन्यासी हैं हममें वैराग्य है तो हम समाज से अलग रहेंगे तो वही में कीड़े पड़े। मीठा वैराग्य नहीं रहा सड़ा वैराग्य बना। क्योंकि वह समाज से अलग पड़ा। उनका लाभ समाज को नहीं मिला समाज का लाभ उनको नहीं मिला। दोनों एक-दूसरे से वंचित रह गये। इनका स्पर्श उनको नहीं हुआ और उनका इनको नहीं हुआ। उनके ज्ञान का लाभ समाज को नहीं हुआ और समाज के प्रेम का स्पर्श इनको नहीं हुआ। सांसारिक लोग बहुत ऊँचाई पर नहीं होते हैं। वह गिरते हैं तो थोड़ा कुछ नीचे गिरेंगे लेकिन ज्ञानी अगर गिरते हैं तो पाँच सौ फुट ऊपर से गिरेंगे। इसलिए उन्हें बहुत ज्यादा तकलीफ होती है। ऐसी छोटी सी जमात लोगों से अलग नहीं रहनी चाहिए। हम ब्राह्मण हैं हम ज्ञानी हैं यह कहते कहते हम अलग पड़ जायेंगे तो हम सड़ जायेंगे। हमारा समाज को लाभ नहीं होगा और समाज का लाभ हमें नहीं मिलेगा।

आप 'लोक-बन्धु' बनें

हम लोगों में जाते हैं तो लोगों को यह एहसास होना चाहिए कि यह हमारा सच्चा सेवक है। इसलिए सर्वोदय-पात्र के काम के साथ-साथ मौके पर जो सेवा हम उनकी कर सकते हैं वह सेवा हमें करनी चाहिए। आपमें से एक-एक व्यक्ति हर पचीस घर में 'लोक बंधु' हो जाय। आपका और उनका प्रेम-संबंध बने। कहीं कोई बीमार हुआ तो उसकी सेवा में आप गये सहानुभूति दिखायी, तो उसको समाधान मिलेगा। हमें सर्वोदय-मित्र इकट्ठे करने हैं तो हिसाब लिया जायगा कि हमने कितने मित्रों को इकट्ठा किया, कितना अनाज इकट्ठा किया वगैरह। लेकिन मुख्य और महत्त्व की बात यह है कि हमने पचीस घरों के साथ प्रेम-सम्बन्ध बनाया। इस दृष्टि से इस काम की ओर देखेंगे तो बड़ा ही उम्दा काम है।

आज इस प्यार की भूख समाज को है। इसलिए भिण्ड और मुरैना में जो काम हुआ उसका बोलबाला इतना हुआ। मगर वह काम हजार साल पहले हुआ होता तो इतना बोलबाला न हुआ होता। आज तो विदेशी अखबारों में भी इसकी चर्चा हुई। वह एक सत्कार्य हुआ। इसलिए उसकी चर्चा सबब हुई। दरअसल कार्यक्रम ऐसा होना चाहिए, जो सबके दिल को स्पर्श करता है।

सच्ची सर्वोदय-मित्र

इसमें बहन बहुत ज्यादा काम कर सकती हैं। बहनों के हृदय में प्यार होता है। मेरी माँ कितना काम करती थी! घर में ज्यादा नौकर नहीं रखे थे। सुबह चार बजे उठती थी और दिनभर काम में रहती थी। वह जितना काम घर में करती थी उतना मुझसे नहीं बनता। कहीं कोई बहन हमारे मुहल्ले में बीमार हो जाती तो मेरी माँ रसोई बनाने के लिए वहाँ चली जाती थी। इस तरह महीनेभर में दो चार घरों में रसोई बनाने का काम वह करती थी। वह सुबह उठकर पहले हमारे घर की

रसोई बनाकर रखती थी और फिर दूसरों के घर में दस बजे जाकर रसोई बनाती थी। एक दफा मैंने विनोद किया। उसका मुझ पर बहुत प्यार और विश्वास था। मैंने कहा : "माँ, तू तो स्वार्थी है। पहले अपने घर की रसोई बनाती है और बाद में दूसरों की।" तो उसने कहा : "तुम मूर्ख हो समझते नहीं। अगर उनके घर की रसोई मैं पहले बनाकर रखूँ, वे खायेंगे तो दस बजे तो ठंडी रसोई खानी होगी। इस वास्ते पहले मैं अपना खाना बनाती हूँ और उनका बाद में। ताकि उनको गरम-गरम रसोई खाने को मिले।" इस तरह उसने मुझे समझाया। वह सच्ची सर्वोदय-निष्ठ थी। उसकी सुगन्ध आसपास फैली थी। जब उसकी मृत्यु हुई तो कितने ही लोगों ने कहा कि एक 'महान् योगिनी' की मृत्यु हुई। उसको ख्याल में रखकर ही मैंने 'गीता-प्रवचन' लिखा है। मैंने उसमें लिखा है कि ऐसी कितनी ही माताएँ होंगी, जो आगे बढ़ी होंगी और ऐसे योगी अहंकार में फँसे होंगे।

इन्दौर —गुजरात कॉलेज में सर्वोदय-मित्रों से
२१-७-६

सर्वोदय का सामर्थ्य

(सभा के समय रिमझिम बारिश हो रही थी)

बारिश की एक बूँद कितनी छोटी-सी होती है। किसी घर में नल होता है तो उसकी धार बहुत बड़ी होती है। बच्चों को पूछें कि बारिश की धार बड़ी कि नल की ? तो वह जवाब देता है कि बारिश की। नल की धार एक ही जगह पानी देती है। जहाँ नल है वहीं वह खूब पानी देता है उसकी ताकत जगह है। और यह बूँद-बूँद के रूप में हर जगह पहुँचती है इसलिए यह नारायण-स्वरूप है। यह नल ही है। वह चाहे बहुत बड़ा हो तो भी वह एक बड़ा जीवात्मा है और ये बूँद-बूँद नारायण हैं। कुल जमीन को पाँच मिनट में बारिश तर कर देती है। नल के पानी में और इसमें इतना अन्तर है। हिसाब करेंगे तो ध्यान में आयेगा कि बारिश की बूँद में ताकत ज्यादा है क्योंकि वह सार्वजनिक है। वह सब दूर पड़ती है। एक ही नलम में सारा हिन्दुस्तान तर हो जाता है। यह जो सामर्थ्य है वह सर्वोदय का सामर्थ्य है।

सर्वोदय माने सबका उदय। जब सब लोग उसके लिए कोशिश करते हैं तब वह होता है। किसी एक भाई को आपने दान दिया तो आपका उदय हो गया। किसीने अच्छा काम किया तो उसका उदय हो गया। लेकिन जब सब लोग करेंगे जब सब लोग सत्कार्य करेंगे तब सर्वोदय होगा। जब कुल परिवार के लोग काम करेंगे तो परिवार का उदय होगा। इसके लिए एक-एक बूँद बहुत ज्यादा नहीं बहुत ज्यादा की अपेक्षा नहीं है। थोड़ा-थोड़ा ही काम करें तो सब मिलकर सर्वोदय होता है। छोटा-सा कार्यक्रम हो और सब लोग उसे करें तो सर्वोदय होता है।

'सह वीर्यं करवावहै'—हम सब एकत्र पराक्रम करें। हम सब वीर्य करें पराक्रम करें तो एक साथ होता है उतना करें। इसमें सब मिलकर तप करते हैं तो बहुत बड़ा काम होता है।

सामूहिक साधना में नारायण प्रकट होता है

भक्ति-मार्ग में एक सुन्दर वाक्य है : 'नाहं वसामि वैकुण्ठे'—भगवान् विष्णु कहते हैं कि मैं वैकुण्ठ में नहीं रहता हमेशा मैं वहीं रहूँ, ऐसी गारण्टी नहीं दे सकता। 'योगिनां हृदये नहि'—कोई योगी एकान्त में गुफा में बैठा है उसके हृदय में भी मैं नहीं रहता। जो योगी ध्यानावस्थित है जिस से ध्यान करता है वहाँ भी मैं हाजिर रहूँगा यह निश्चित नहीं है। रवि सूर्यनारायण की प्रार्थना है। सूर्यबिंब के बीच नारायण है लेकिन नारायण कह रहे हैं मैं सूर्यनारायण में हूँ ऐसी अपेक्षा होती है लेकिन न योगी के हृदय में, न सूर्यनारायण में न वैकुण्ठ में रहने की मैं गारण्टी देता हूँ। 'मद्भक्ता यत्र गायन्ति तत्र तिष्ठामि नारद।' —जहाँ मेरे भक्त इकट्ठे होकर नामस्मरण कर रहे हैं वहाँ मैं जाता हूँ। जहाँ कुल समूह है वहाँ नारायण है। इसलिए छोटी-सी भी कमी न हो, लेकिन कुल समूह जब एक साधना करता है तो वहाँ नारायण प्रकट होते हैं। उसमें व्यक्तिगत अहंकार नहीं रहता है। मैं योगी हूँ, मेरे ध्यान में भगवान् आते हैं ऐसा कहने का मौका नहीं रहता। और ऐसा अहंकार हो गया तो खतम है। भगवान् दुबारा वहाँ आते ही नहीं चले जाते हैं। मतलब व्यक्तिगत साधना में हम दूसरे से अलग पड़ जाते हैं।

मैं बंगाल में विष्णुपुर गया था। वहाँ रामकृष्ण परमहंस को प्रथम समाधि लगी थी। उस तालाब के किनारे पैदल यात्रा में मैं पहुँचा था। उस दिन सभा के सामने मैंने कहा कि जो समाधि रामकृष्ण परमहंस ने बहुत तपस्या करके प्राप्त की वह अब हमें सामूहिक बनानी है। समाधि का अंश दूसरे को हासिल नहीं होने देंगे आप ही हासिल करेंगे—आदि

व्याधि, उपाधि आप ही हासिल करेंगे, यह विचार मुक्ति-मार्ग के खिलाफ जा रहा है।

भक्त प्रह्लाद, ईसा, बुद्ध और गांधी की भाषा

भक्त प्रह्लाद के सामने नरसिंह खड़े हो गये तो लक्ष्मी भी डर गयी। नारद मुनि की भी वीणा रुक गयी। लेकिन प्रह्लाद सामने खड़ा है और कहता है 'यह तेरा अत्यन्त भयानक चेहरा देखकर मुझे जरा भी डर महसूस नहीं हो रहा है।" तो भगवान् बोले : "हे वत्स तू वर माँग। तुम्हें मुक्ति भी मिल सकती है। प्रह्लाद बोला : 'नैतो विहाय कृपणान् विमुमुक्षु एकः। —मैं अकेला मुक्त नहीं होना चाहता हूँ। 'एतां कृपणान् विहाय'—इन दुखियों को छोड़कर। 'प्रायेण देवमुनयः स्वविमुक्तिकामाः'—बहुत सारे सत' की मुक्ति चाहनेवाले हैं लेकिन मैं स्व विमुक्ति नहीं चाहता क्योंकि इन दुखियों को छोड़कर मैं मुक्त होना नहीं चाहता। एक सर्वोत्तम ऊँचा और बहुत ही दुर्लभ विचार भक्त प्रह्लाद ने प्रकट किया। महात्मा गांधीजी को नाराज होकर कुछ लोगों ने कहा था 'आप कृपा कर हिमालय चले जाइये।" ऐसा कहनेवाले लोगों को गांधीजी के कुछ विचार नहीं जँचे थे। तब गांधीजी ने कहा अगर आप लोग हिमालय जायेंगे तो मैं आपके पीछे-पीछे हिमालय जाऊँगा। आप यहाँ रहते हैं तो आपका भला नहीं रहेगा। ईसा को कहा गया कि "तुम ऐसे 'unclean' लोगों में क्या रहते हो?' तो वह बोला कि "मैं ऐसों के लिए ही पैदा हुआ हूँ, तो इन्हीं में रहूँगा।" यही भाषा बुद्ध भगवान् बोले थे और यही भाषा महात्मा गांधी बोले हैं। यही भाषा भारत की सबसे आखिरी भाषा है। इससे बढ़कर दूसरी महासना नहीं है।

इस बार में मैं आपसे एक छोटा-सा काम चाहता हूँ और वह यह कि प्रथम घर घर में सर्वोदय-पात्र रखे जायँ। इसका उपयोग शान्ति-सेना के काम के लिए किया जायगा।

परखे हुए शांति-सैनिक बाहर क्यों न जायें ?

शांति-सेना हमेशा के लिए सेवा-सेना भक्ति-सेना होगी। अशांति के मौके पर वह अपना सिर झुका देगी और शांति स्थापित करने का काम करेगी।

उनकी अपेक्षा

पाँच साल पहले मैं जगन्नाथपुरी जा रहा था। तब बंगाल के मान्यों ने मुझे कहा : "चैतन्य महाप्रभु जगन्नाथ के दर्शन के लिए इसी रास्ते से गये थे।" मेरी यात्रा से उन्हें चैतन्य महाप्रभु की यात्रा की याद आयी। मैंने उसका अर्थ यह किया कि मानो वे कह रहे हैं 'अनुरूप तुम्हें ऐसा बनना है।' *ऐसी अपेक्षा वे मुझसे रखते हैं। दूसरी बात वे यह बताते* थे कि यह रास्ता अहिल्यादेवी ने बनाया है। मुझे ताज्जुब हुआ कहाँ अहिल्यादेवी और कहाँ बंगाल! वैद्यनाथधाम से लेकर पुरी तक उसने रास्ता बनाया और पैसा कहाँ से लिया? होल्कर स्टेट का। *लेकिन किसीने ऐसी शिकायत नहीं की कि हमारी स्टेट का पैसा दूसरी* स्टेट में क्यों खर्च हो! कितनी उदार दृष्टि थी! दिमाग अलग नहीं था दिल भी छोटा नहीं था! क्या आज कोई ऐसी बात के लिए तैयार होगा? नहीं! हर कोई यही कहेगा कि हमारे लिए ही हमारा पैसा खर्च होना चाहिए। यह जो अखिल भारतीय दृष्टि थी वह हमने खोयी है। इसलिए शांति-सेना की यह दिव्य भव्य योजना है और हमने कहा कि परखे हुए सैनिक बाहर जायेंगे। यह तो इन्दुपुर है चन्द्रपुर है। यहाँ से जो प्रकाश फैलेगा वह सौम्य होगा। चंद्र की शीतलता और चंद्र का प्रकाश जहाँ इकट्ठा होगा वहाँ शांति-सेना होगी। इतनी बातें हम करते हैं तो इन्दौर की ताकत प्रकट होगी।

इन्दौर —गुजराती कॉलेज के मैदान में आम-सभा
२६-७-'६०

सावधान रहना होगा

अपने कार्यकर्ता, जिन्हें हम एक साथ रखते हैं और जिनको एक ही काम करना है उनके रहन-सहन में फर्क होता है, इसलिए साम्य की दृष्टि से कुछ लोगों को असन्तोष होता है। यह मानस-शास्त्र का महत्त्व-पूर्ण विषय है। यह काम करने का साम्य लाने का हमारा उद्देश्य क्या है इसका जिक्र यहाँ की परसों की सभा में किया था। हमने कहा था कि करुणामूलक साम्य ही शाश्वत होगा वही टिकनेवाला होगा। मत्सर-रूप साम्य नहीं टिकेगा। हम ऊपर न देखें किसीका मत्सर न करें, नीचे देखें और हमसे जो दुःखी हैं उनकी मदद के लिए दौड़ें। यह बात अगर हमारे ध्यान में नहीं आयेगी तो आपका यह आन्दोलन देखते-देखते कम्युनिज्म का रूप लेगा और मामला खतम का। उनकी शक्ति आपके पास नहीं है। वे तो कुछ-न-कुछ कर पायेंगे क्योंकि वे हिंसा की ताकत में मानते हैं आप नहीं मानते हैं। आपने मत्सर का रास्ता ले लिया तो दोनों बाजू से आप बेकार साबित होंगे। वे जो काम कर सकते हैं वह आप नहीं कर सकते हैं। उनकी हिंसा की ताकत है। आप हिंसा की ताकतें बढ़ाना नहीं चाहते हैं लेकिन परस्पर द्वेष और मनमुटाव रहा तो हम कहीं के नहीं रहेंगे। इसलिए हमारे कार्यकर्ताओं को यह सूझ ही जाना चाहिए कि हमारे रहन-सहन में भेद है।

मुख्य चीज़ अनासक्ति है

अपरिग्रह का विचार हमें उस-उस व्यक्ति के विचार पर छोड़ देना चाहिए। अपरिग्रह की कोई ऐसी हद नहीं है। वह ऐसी चीज़ है जो स्थिर हो सकती है लेकिन वह मर्यादित नहीं है। एक प्राचीन शब्द का

मैंने उपयोग किया। यह मानना चाहिए कि जिसमें पूर्ण आसक्ति है, वह अपरिग्रही होकर भी परिग्रही है। अगर अनासक्ति है तो परिग्रही होते हुए भी वह अपरिग्रही है। भगवान् विष्णु के पास लक्ष्मी होते हुए भी वे अपरिग्रही माने गये। इसका कारण यही है कि वे अत्यंत अनासक्त हैं। इसलिए हमें यह समस्या छोड़ ही देना चाहिए। जिसे जो विचार मान्य है और उतना वह प्रामाणिकता से मानकर उस मुताबिक काम करता है तो उसमें हमें सन्तोष मानना चाहिए। धीरे-धीरे अपरिग्रह की ओर बढ़िये। आपकी मानसिक स्थिति ऐसी नहीं दीखती है कि आप बहुत ज्यादा परिग्रह चाहते हैं। अपनी-अपनी मर्यादा ध्यान में रखकर हरएक को इसके बारे में सोचना चाहिए। एक संन्यासी सब कुछ छोड़ बैठा था। उसके पास पानी के लिए एक तुम्बी थी। नदी के पास से जा रहा था। उसने देखा एक कुत्ता उसके पीछे से वहाँ आया और झट पानी पीकर चला गया। वह सोचने लगा कि अपरिग्रही कौन है! यह कुत्ता मेरे पीछे से आया और झट पानी पीकर चला भी गया। मैं पीछे रह गया। आखिर उस संन्यासी ने कहा कि मुझे संन्यास की दीक्षा देनेवाला यह कुत्ता मिला है। हम तो यह तुम्बी भी नहीं छोड़ सकते हैं। यह सोचकर उसने वह तुम्बी फेंक दी।

हम दूसरों के काजी न बनें

हम सद्गुण के विचार के बदले में बाहरी चीज पर ज्यादा जोर देते हैं। इसमें रेजिमेंटेशन नहीं होना चाहिए। हमारे कुछ खादी के कार्यकर्ता डेढ़ सौ रुपये तनख्वाह लेते हैं। उनका परिवार कुछ बड़ा है, उनको ज्यादा जरूरत है। जिनको ज्यादा मिलता है उनको सोचना चाहिए कि अगर हम अपना कम कर सकते हैं तो थोड़ा कम करें और उनको दें। ऐसी सूचना हम दे सकते हैं। इस हालत में अगर हम एक-दूसरे को यह कहें कि "हमें कम मिलता है आप ज्यादा लेते हैं"—इस तरह हम एक-दूसरे का मत्सर करने लगे तो यह बिलकुल एक बुरा चक्र है, जो

हमको दीन बनाता है। उस मनुष्य का धीरे धीरे विकास होगा जो यह सोचता है कि मेरे पास परिग्रह ज्यादा है और वह निश्चित ही परिग्रह कम करेगा। कई दफा आपको अनुभव हुआ होगा कि ऐसे लोग, जिनके बारे में आप सोचते हैं कि वे ज्यादा परिग्रही हैं वे मौके पर अपने-आपको कस लेते हैं। लेकिन हम दूसरे के काजी न बनें। जरा उपेक्षा छोड़ दें। वह शख्स बहुत ज्यादा ऐशआराम नहीं करता। इस वास्ते थोड़ा-सा हममें फर्क है तो वह ठीक ही है। बल्कि वह हमारे समाज की शोभा है ऐसा हमें सोचना चाहिए। इससे हमारा दिल उदार बनेगा। न्यायी दृष्टि से हमें इसका विचार करना चाहिए। आध्यात्मिक दृष्टि से हम सोचते हैं तो भी हमें इसी तरह से सोचना होगा कि हम दूसरे के काजी न बनें।

कुछ लोग अपना बचा हुआ समय इस काम में देते हैं और समाज पर उनका बोझ नहीं पड़ता है। ऐसे कार्यकर्ताओं का एक वर्ग बनता है। बाकी शान्ति-सैनिक बनें और उनके लिए हम ही इन्तजाम करें यह तो एकदम बननेवाली बात नहीं है। इन्हें हम आनररी वर्कर्स कहते हैं। वैसे आनररी शब्द बड़ा डिस्-आनररी है। क्योंकि उसमें ऐसे लोग कभी-कभी काम भी नहीं करते हैं। बापूजी ने एक काम किया था। कुछ लोग अपने को स्पेशियल मानते हैं। काम तो नहीं करते हैं, लेकिन सामान्य कार्यकर्ताओं से अपने को अलग मानते हैं। उन्होंने अपनी तनख्वाह स्वयं बंद कर दी और सिर्फ तीस रुपये तनख्वाह माँगी और घर पर जाकर कहा कि मेरा खर्चा अलग रखो। इसलिए आनररी की जो बात है उसमें हमें यह सोचना चाहिए कि ऐसे लोग काम करते हैं तो हमारा आनर है नहीं करते हैं तो डिस-आनर नहीं है। जो शख्स जितना काम करता है उतना सन्तोष हमें मान लेना चाहिए।

पण्डित नेहरू शान्ति-सैनिक बनें

शान्ति-सेना को सर्वोदय-पात्र के आधार पर काम करना चाहिए। शान्ति-सेना में हमने कोई शर्त नहीं रखी है। कोई भी आ सकता है।

आश्रम के प्रभाकरजी पण्डित नेहरू के पास गये थे और पण्डित नेहरू को उन्होंने शान्ति-सेना का प्रतिज्ञापत्रक बताया तो पण्डितजी ने उनसे पूछा कि क्या आप मुझे शान्ति-सेना के लायक मानते हैं ? प्रभाकरजी ने कहा : जी हाँ, क्यों नहीं ? पण्डितजी ने उस पर अपना हस्ताक्षर कर दिया। अब यह लेकर प्रभाकरजी आश्रम में घूमते हैं और बताते हैं कि पण्डित नेहरू हमारी शान्ति-सेना में शामिल हुए हैं। अगर प्रभाकरजी उनको यह कहते कि हम आपको योग्य नहीं मानते आप एक स्टेट के मुखिया हैं और स्टेट हिंसा पर खड़ी है तो पण्डित नेहरू कहते कि ठीक है, मैं इस पर हस्ताक्षर नहीं करूँगा। लेकिन प्रभाकरजी ने उनको कहा कि 'हम आपको इसके योग्य मानते हैं।" उनकी एक हस्ती है, पद में रहकर भी उनकी पक्षातीत भूमिका है। इसलिए उन्होंने हस्ताक्षर कर दिये। उसमें मैं उनका बहुत गौरव मानता हूँ। वे हमारे शान्ति-सैनिक हैं।

खादी-काम करनेवाले सब शान्ति-सैनिक

मैंने तो खादीवालों से यहाँ तक कहा है कि मैं आप सबको शान्ति-सैनिक ही मानता हूँ। आप शान्ति-सैनिक हैं ही। अगर आप शान्ति-सैनिक नहीं हैं तो आप मुझे कह दीजिये कि आप शान्ति-सैनिक नहीं हैं। यह कहने का काम आपका होगा। बिहार में सीतामढ़ी में जब अशान्ति हुई थी तब खादी समिति ने वहाँ शान्ति का काम किया था। वैद्यनाथबाबू ने खादी समितिवालों को लिखा तो खादी समितिवाले अपना काम छोड़कर वहाँ पहुँचे और मिश्रित लोगों के बीच जाकर वे अपना काम करते रहे। मौके पर वे दौड़ आये।

आज देश की इतनी तैयारी हो गयी है कि मर-मिटने के लिए हम तैयार हैं यह कहकर शान्ति-सेना में नाम देनेवाले हजार से ऊपर लोग हो गये हैं। अब यह बात है कि वह भिन्न-भिन्न कोटि के लोग हैं। लेकिन हम उनको भिन्न-भिन्न कोटि में न रखें। कोई बड़ा है कोई

बोया है ऐसा न कीजिये। अलग-अलग स्वर हैं और हमारा एक संगीत है—ऐसा समझें।

साथियों के दोषों को ढाँकना चाहिए

हम अपने साथियों के दोषों को ढँकेंगे तो हमारी सारी सेना मजबूत बनेगी। हम सामूहिक ढंग से नहीं सोचते। यह अब हमें सोचना होगा। और जितना जो मनुष्य काम करता है उतना हमें सन्तोष मानना चाहिए। कुछ-का-कुछ उसका विचार हमारे ढाँचे में नहीं बैठता है फिर भी उसे हमें 'एक्सेप्ट' करना चाहिए। इसलिए हमने निश्चय-पत्र में यह रखा है कि जिसकी भूमिका पक्षातीत है (चाहे वह पक्षमुक्त न हो) वह शान्ति-सैनिक बन सकता है। लेकिन इतना हमने कहा तो भी ज्यादा लोग उसमें आये हैं ऐसा नहीं है। इसका परिणाम इतना ही हुआ है कि हमारे गोकुलभाई (राजस्थान) इसमें आये। गोकुलभाई के लिए यह सहूलियत हो गयी। उनका कांग्रेस से थोड़ा प्रेम-सम्बन्ध है और उसे वे काटना नहीं चाहते हैं। लेकिन जो है वह ठीक ही है। वे बाकी का सारा काम आपका ही करते हैं। इसलिए हम सब लोग एक ही हैं ऐसा हमें सोचना चाहिए। नहीं तो एक-दूसरे की न्यूनता दिखाकर हम छेद बनेंगे। हिन्दुस्तान में जाति और जमात बनाने का बहुत जल्दी सकता है। थोड़े में ही जाति बना लेते हैं। ऐसा हमारे काम में न हो।

प्रश्न : सृष्टि में आसुरी और दैवी सम्पत्ति है। आसुरी सम्पत्ति का निष्कासन सर्वोदय में कैसा होगा?

उत्तर : दैवी सम्पत्ति से होगा। दो सम्पत्तियाँ आपस-आपस में लड़ रही हैं और सर्वोदय अलग चीज है ऐसा नहीं। आसुरी सम्पत्ति का फाउंडेशन नहीं है वह टिक ही नहीं सकती है। वह अभावात्मक है। लेकिन वह इसलिए टिकती है जब कि किसी-न-किसी गुण का उसे आधार मिलता है। कत्ल करना ठीक है ऐसा कोई भी नहीं कहता; लेकिन धर्म के लिए कत्ल कर सकते हैं ऐसा माननेवाले भी लोग हैं। गोरक्षा में कत्ल का काम

किया, वह गीता के आधार पर किया हिन्दू-धर्म की रक्षा के लिए किया। हिन्दू-धर्म का नुकसान गांधीजी कर रहे हैं ऐसी उसकी भावना थी इसलिए उसने वह काम किया। अब गांधीजी भी गीता को मानते थे। दोनों को एक ही किताब का आधार था। इसलिए आसुरी सम्पत्ति स्वयमेव नहीं टिकती है। जैसे छाया किसी चीज के आधार पर होती है, वैसे दोष के आधार पर कुछ गुण होते हैं। मेरे जैसा मनुष्य संकल्प करता है, तो उसके संकल्प में एक शक्ति होती है। लेकिन कभी कोई दुराग्रही होता है तो उसके संकल्प में भी उसके दुराग्रह की शक्ति रहती है। उस दुर्गुण को आधार मिलता है इसलिए वह टिकता है। वह स्वयमेव टिकनेवाला नहीं है। सर्वोदय को दोनों से अलग न माना जाय।

किसीने सवाल पूछा कि सर्वोदय में दुर्जन शामिल होते हैं तो क्या करना चाहिए? इसका उत्तर सीधा है कि दुर्जन के आने पर अपनी सज्जनता बढ़ानी चाहिए। अब कहते हैं कि काँटे से काँटा निकालना चाहिए। दुर्जनता पर विश्वास बहुत भयानक है। काँटे की उपमा अच्छी है कि काँटा एक वनस्पति है और उसी प्रकार दूसरी वनस्पति हम होते हैं तो वह काँटा निकलता है। लेकिन वह उपमा ही है। इसे कैसे लागू करें? अगर सामनेवाला मनुष्य काँटा है तो मैं भी काँटा बनूं यह नहीं चलेगा।

मेरे एक मित्र हमेशा कहते थे कि तुम गरीब हो, तो तुम्हें सब तक चौफ देते हैं इसलिए साँप के समान एकदम मत काटो लेकिन फूँक मारते जाओ। अपनी आत्म-रक्षा के लिए थोड़ा तेज बनो। मेरी माँ हमेशा कहती थी कि 'मऊ ग्राऊ को कोल कोपरानें खणतात।' मनुष्य जब बहुत नरम बनता है तो लोग उसका गलत लाभ उठाते हैं। लेकिन अपना काम मिजाज से तो नहीं होगा। वह अक्कल से ही होगा। कोई बुरा बर्ताव करता है तो हमें भी बुद्धिमत्ता से पेश आना चाहिए, वह मामला ही होनी नहीं चाहिए। दुर्जनता का मुकाबला दुर्जनता से करना धर्म कर नहीं होगा। उसमें से बहुत बड़ा पाप पैदा होगा।

मजहब और धर्म

इन दिनों में एक बात हमेशा जोर देकर कह रहा हूँ। कश्मीर से ही मैंने कहना शुरू किया है कि मजहबों को जाना है। मैं यहाँ 'धर्म' शब्द का उपयोग नहीं करता हूँ। क्योंकि 'धर्म' पूर्ण अर्थ का शब्द है। धर्म वह चीज है, जिसके पालने के लिए हमने देह धारण की है। 'धारणात् धर्मः' और मजहब याने धार्मिक पंथ। ये सारे मजहब एक जमाने में लोगों को इकट्ठा करते थे। जो समाज व्यक्ति-व्यक्ति में बिखरा था, उनका समाज बनाने में इन मजहबों ने एक जमाने में मदद दी। आज हम सारी दुनिया को एक करने की बात करते हैं। लेकिन आज ये पंथ तोड़नेवाले साबित हुए हैं। शैव और वैष्णव हिन्दू और मुस्लिम इस तरह टुकड़े-टुकड़े आज हो गये। संग्रह के ख्याल से जिन पंथों ने एक जमाने में काम किया था वे ही पंथ आज तोड़ने का काम कर रहे हैं। इसलिए इन पंथों को आज बिदा करना है और उनकी जगह अध्यात्म को लाना है। भगवद्गीता में कहा है कि सब धर्म छोड़कर भगवान् के शरण जाना चाहिए। उसका अर्थ यही है कि ये जो छोटे-छोटे धर्म हैं हमने माना है कि पितृधर्म, मातृधर्म इन छोटे-छोटे धर्मों को छोड़कर भगवान् के शरण जाना है। इस सिलसिले में एक भाई ने हमसे कहा कि घर का मोह छोड़ो और दूसरे मोह में फँसो। ऐसा ही इसका मतलब हुआ। मैंने कहा मालूम नहीं यह मोह है कि कर्तव्य। लेकिन मुमकिन है यह मोह है पर क्या करना चाहिए? तो उसने लिखा कि यहीं एक बहन है उसकी शरण जाओ तो दुनिया को मुक्ति मिलेगी। उस पर मैंने लिखा कि वह बहन नहीं थी तब दुनिया का क्या हुआ था?

भगवान को फिक्र है

हर कोई मुझे पूछता है कि आज आप हैं तो ठीक है लेकिन आपके जाने के बाद क्या होगा? मैं कहता हूँ कि इसकी फिक्र तो भगवान् को है ऐसा अनुभव नहीं आता है कि मनुष्य की अनुपस्थिति में कहीं विचार

उपस्थित रहा है। अगर मनुष्य की अनुपस्थिति में उसका विचार ज्यादा असर करनेवाला होता, तो दूसरी बात है। ऐसा परिपूर्ण व्यक्ति, जो ईश्वर के समान हो ऐसा नहीं हो सकता। लेकिन 'इसकी शरण आओ, उसकी शरण आओ' ऐसे अपने-अपने आग्रह गुरु के आग्रह छोड़ने चाहिए। ये जो तरह-तरह के मत और आग्रह हैं इनसे विग्रह पैदा होता है। हम सब एक आत्मा हैं ऐसी अनुभूति जिस काम में आती है, उसके अनुसार हम काम करते चले जायेंगे तो अच्छा है। हम सब एक हैं, हममें कोई भेद नहीं है यह अध्यात्म है, स्प्रिचुअलिज्म है। जो अलग-अलग विधि के जाल हैं जो अलग अलग पंथ हैं उनमें जो अच्छी चीज है, वह लें। विधि के जाल तोड़ें। जमाना बदल रहा है।

सियासत आउट ऑफ डेट

इसलिए मजहबों को जाना है और स्प्रिचुअलिज्म को आना है, जो जोड़नेवाली है। उसी तरह से तोड़नेवाली सियासत को जाना है और उसकी जगह सायंस को आना है। आज तो देशाभिमान भी व्यक्तिगत अभिमान का रूप बन गया है। कश्मीर में जब हम गये तब वहाँ के लोग हमेशा बताया करते थे कि देखिये बाबा उस सिरे पर दुश्मन खड़ा है इतना एरिया हमारा है और उसके बाद दुश्मन का। फिर एक व्याख्यान में हमने वहाँ कहा कि 'भाई दुश्मन दुश्मन मत कहा करो उन्हें आप पड़ोसी कहिये। यह नेशनलिज्म टुकड़े करने लगा है। सारी दुनिया को एक बनाने की बात यहाँ आयी वहाँ देशाभिमान आउट आफ डेट हो गया यह सियासत आउट आफ डेट हो गयी इसलिए मैंने कहना शुरू किया है कि सियासत को जाना है, सायंस को आना है, मजहबों को जाना है और ब्रह्म-विद्या को आना है।

इन्दौर —कार्यकर्ताओं से
१९-८-६

इस देश में दस हजार साल से एक संस्कृति चली आ रही है। उसका हमारे चित्त पर जोरदार असर हुआ है। उसे हममें से कोई भी टाल नहीं सकता। हमने एक जगह कहा था कि हमारा दिल पुराने संस्कारों से भरा हुआ होना चाहिए और दिमाग पुराने संस्कारों से दबा हुआ नहीं होना चाहिए। दिल की जड़ें होनी चाहिए पुरानी संस्कृति में लेकिन दिमाग खुला रहना चाहिए।

दिमाग मध्य-युग में

हिन्दुस्तान में कई लोग ऐसे हैं जिनका दिल पुराने संस्कारों से लबरेज है, भरा हुआ है लेकिन दिमाग पुराने संस्कारों से अलग नहीं है। इसलिए वे जन्म मरण आदि में भी श्रद्धा रखकर काम करते हैं। भगवान् के लिए कुछ-न-कुछ श्रद्धा है, भक्ति है, परलोक के लिए श्रद्धा है, पुनर्जन्म के लिए श्रद्धा है। ये सब अपनी संस्कृति की देनें हैं। यदि उनसे भरा हुआ हमारा दिल है तो बहुत अच्छी बात है; लेकिन दिमाग साफ नहीं, पुराने ख्यालों से दबा हुआ है। जाति-भेद, छुआछूत इत्यादि काल्पनिक गलत ख्यालों से भरा हुआ है। पुराने जमाने में कुछ वीर पुरुष हो गये तो उस मध्ययुग में ही हमारा दिमाग काम करता है। बीच के काल में हिन्दू-मुसलमानों के झगड़े हुए, तो आज भी हम अपने दिमाग को उन विचारों में जकड़े हुए हैं। विज्ञान का जमाना आया है, यह हम भूलते हैं। मध्ययुग में दिमाग रखते हैं; लेकिन अब हमें अपना दिमाग पुरानी संस्कृति से बचा हुआ रखना चाहिए। साइंस बढ़ रहा है तो कौन-सी बातें काम करेंगी, यह सोचना है। इसके आगे हम विषमतावाले काम कर सकते हैं।

यह अजब बात है कि नये ढंग से सोचनेवाले भी कभी-कभी अपना कर्मकांड बना लेते हैं। कुछ लोग ऐसे हैं, जिनका कहना है कि जो मार्क्स ने कहा वही होगा। दिमाग खुला रखनेवाले, नये जमाने के साथ रहनेवाले ऐसे नये सिरे से सोचनेवाले कांग्रेस में और पी. एस. पी. में भी हैं, लेकिन फिर भी उनके दिल पुरानी संस्कृति से भरे हुए हैं। इसलिए यहाँ की संस्कृति की ताकतें उन्हें प्रेरणा नहीं देती हैं। गीता जयन्ती पर तो उनको प्रेरणा नहीं मिलती, लेकिन मजदूर-दिन पर प्रेरणा मिलती है। उस पर श्रद्धा नहीं रही है। उनके लिए रूस और चीन का नया सम्प्रदाय बनेगा। पुरानी संस्कृति से उनका दिमाग कटा हुआ रहेगा। इसलिए उनका चिंतन एकांगी बन जाता है।

हमारा न्यारा रास्ता

कुछ लोग ऐसे होते हैं जिनका दिल पुरानी संस्कृति से मुतासिर है और दिमाग खुला नहीं है। नये विचार दिमाग पर हावी नहीं हुए हैं और दिल पुरानी संस्कृति से भरा हुआ है और कुछ लोगों के दिमाग नये विचार के प्रति खुले हैं लेकिन दिल में पुरानी संस्कृति के सरमाये से रहित हैं। ऐसे दो टुकड़े हुए हैं। दोनों यह काम करने के लिए नाकामयाब हुए हैं। इसलिए हमको तीसरे लोग ढूँढ़ने होंगे, लेकिन यह भी हमारा काम रहेगा कि ये दो जमातें—एक वो कि दिमाग से आधुनिक विचारों से दूर हैं लेकिन जिनका दिल पुरानी संस्कृति के पास है और दूसरे ऐसे लोग जिनके दिल और दिमाग पुरानी संस्कृति से भरे हुए हैं। इन दोनों को समझाना होगा कि तुम्हारा चिन्तन सदोषपूर्ण है उसे बदलना होगा। इस जमाने के लायक चिन्तन तुम्हारा नहीं हो रहा है। उसका परिणाम यह होता है कि पुरानी संस्कृति की ताकत आपको नहीं मिलती है। हमारा दिल पुराने जमाने के साथ जुड़ा हुआ होना चाहिए और दिमाग उन्नत बना हुआ। नहीं तो किया-कराया सब खत्म जायगा।

पुराने आधार पर नये विचार की कलम लगाइये

एक भाई ने हमारे पास आकर कहा कि अब मरने को जी चाहता है, नये लोग क्या-क्या करते हैं समझ में नहीं आता। हमारी आँखें मिट जायें तो अच्छा। जो चल रहा है, उससे धर्म नहीं टिकनेवाला है। श्रद्धा खतम हो रही है। मैं पूछना चाहता हूँ आपसे कि अगर श्रद्धा खतम हो रही है तो बाबा को पचास लाख एकड़ जमीन कैसे मिल गयी? इसलिए मैं यह नहीं मानता कि श्रद्धा की कोई कमी है। हम दकियानूसी न बनें। हमें यह करना चाहिए कि पुराने संस्कार नये विचारों के साथ जोड़ दें। नहीं तो मुट्ठीभर अनाज डालने की यह चीज नये विचारवालों को नहीं सूझेगी। पुराने विचारवालों को सूझेगी। पुराने जमानेवालों को यह सूझेगा कि यहाँ गोग्रास के लिए कुछ देना चाहिए। पक्षियों को कुछ देना चाहिए, लूला-लँगड़ा कोई हो तो उसे देना चाहिए यानी जिसे हम 'दया' कहते हैं वह वैसे एक छोटी-सी चीज है लेकिन जिसके बिना भी इन्सान इन्सान नहीं कहलायेगा वह चीज उनको पसन्द है। हमारे यहाँ आस-पास के भूखे लोगों को खिलाना है यह बात पुराने जमाने में सोचनेवाले जल्दी समझते हैं। लेकिन उसे नये विचार के साथ जोड़ना चाहिए। इसलिए उन्हें यह सिखाना है कि आपके घर में यदि ५ लोग हैं तो मैं छठा हूँ। मैं गरीब समाज का प्रतिनिधि हूँ। तो एक हिस्सा छठा हिस्सा समाज के गरीब के लिए देना चाहिए। यह करुणा का विचार सिखाना होगा।

विचार का मूल उद्गम-स्थान मानव-चित्त

एक ही व्यक्ति को विचार सूझता है फिर समाज उसको उठाता है। हिन्दुस्तान के इतिहास में ही नहीं दुनिया के इतिहास में यह देखा गया है कि एक आदमी ने विचार शुरू किया ईसामसीह, मोहम्मद इस तरह एक-एक के मन में धर्म-विचार आया और बाद में समाज ने

उसे उठाता। विचार अच्छा होते हुए भी कभी-कभी फैलने में देर लगती है। लेकिन विचार कभी व्यर्थ नहीं जाता।

बच्चा तो जाता है और बच्चे अरसे के बाद मिलता है तो बच्चा माँ को भूल जाता है, लेकिन माँ बच्चे को नहीं भूलती, वह उसको बराबर जानती है। इसी तरह से लोगों को यह पहचान होनी चाहिए कि वह हमारा सेवक है। वह हमारे काम पर निर्भर है।

बच्चा नहीं क्रान्ति करती है

यहाँ हमने शान्ति-सेना की बात की है। सर्वोदय-पात्र रखने के लिए हम कहते हैं। मान लीजिये ८ हजार घरों में सर्वोदय-पात्र की स्थापना होती है और वे ३६५ दिन तक नियमित चलते हैं। उनसे जो सम्पत्ति हासिल होगी वह जबरदस्ती से हासिल की हुई न होगी। वैसे यहाँ करोड़ों रुपयों की सम्पत्ति है। अगर हम कोशिश करें तो ५ दिन में २ लाख रुपये प्राप्त कर सकते थे। लेकिन यह हम नहीं चाहते। हम चाहते हैं कि रोज-रोज समाज के लिए मुट्ठीभर अनाज देने की आदत लोगों को होनी चाहिए। सर्वोदय-पात्र सर्वोदय-विचार के लिए लोक सम्मति है, ऐसा हम मानते हैं। यह पुराने जमाने का संस्कार नहीं है। पुराने विचारवालों को यह सूझता नहीं। यह शान्ति का काम होगा। लेकिन सर्वोदय-पात्रों का काम तब होगा जब पुराना संस्कार और नया विचार दोनों जुड़ जायेंगे। इसी तरह से क्रान्ति होती है।

भारत का भूमि की विशेषता

क्रान्ति की एक मिसाल यह है कि दुनिया में मांसाहार-परित्याग का विचार कुछ स्थानों में शुरू हुआ। अमेरिका में शाकाहार के होटल खुल रहे हैं। यह चीज दूसरे देशों में क्रान्तिकारी हो सकती है किन्तु भारत ने तो यह विचार पहले से ही कबूल किया है। दूसरी मिसाल यह है कि यह देश बहुत विशाल है और यहाँ अलग-अलग मुख्तलिफ जबानें बोलनेवाले लोग हैं। भारत में दूसरी-तीसरी भाषा है लेकिन मुख्य

वाहिल्स की भाषा चीनी है। उसी तरह रूस में भी विकसित भाषा एक ही है और वह है रूसी। योरप में अनेक विकसित भाषाएँ हैं लेकिन उनके अलग-अलग देश बने हैं। हमारे यहाँ एक महान् प्रयोग हुआ है। अलग-अलग जबानों के अलग-अलग प्रान्तों में और एक ही देश में इतनी सारी भाषाएँ चलती हैं। यह हिन्दुस्तान की एक ताकत है। इसीलिए इस भूमि से महान् विचार निकले हैं। सर्वोदय का महान् विचार इसी भूमि से निकला है।

पूरा छोड़ेंगे नहीं, सँभालेंगे

इस विचार को लोक-सम्मति मिले। घर-घर में लोग सर्वोदय-पात्र रखें और यह तय करें कि दिये बगैर हम खायेंगे नहीं। छोटी-सी चीज अगर सब लोग करते हैं तो बहुत बड़ी ताकत बनती है। सर्वोदय समुद्र है। उसमें सब तरह की नदियाँ मिलेंगी। कोई भी नदी कभी भी समुद्र से मुखालिफत नहीं करती है। हम अपने हाथ में राज्य नहीं लेना चाहते राज्य तो उनके हाथ में और हमारे कब्जे में रहेगा। नैतिक दबाव को कोई टाल नहीं सकता। हम लोकमत तैयार करते हैं। अभी हम भिण्ड मुरैना में गये थे। लोगों में इतना उत्साह था कि वह सारा देश दुश्मन इलाका था। किसीकी मजाल नहीं थी कि कोई विरोध करे। पुलिस का भी हमें वहाँ योग मिला। जब भले ही पुलिस विरोध करती हो लेकिन उस वक्त तो सहयोग मिला। लोकशाही में सरकार लोकमत को टाल नहीं सकती। इसलिए राज किसीके भी हाथ में हो लेकिन हमारे कब्जे में रहेगा। इसलिए हमने कहा कि विष्णु को हम सीधा नहीं पकड़ेंगे चिमटे से पकड़ेंगे।

आज की सियासत हमें कहाँ ले जानेवाली है इस पर हम सोचेंगे, तो ध्यान में आयेगा कि चीन में चाऊ एन लाई का और पाकिस्तान में अयूब का राज है यह इसीका नतीजा है। नाम है जम्हूरियत का लेकिन आज जिस ढंग से वह चल रही है देखते-देखते उसका स्वरूप

अफसरशाही में बदल सकता है। अलग-अलग पार्टियों के बीच झगड़े होते हैं लेकिन एक पार्टी के अन्दर-अन्दर ही अलग-अलग गुट हैं। नाम तो लोकशाही का लेकिन अगर आप देखें तो चंद लोगों की चलती है, लोकमत का ख्याल ही नहीं आता है। बम्बई-राज्य में शराबबन्दी है और गोवधबन्दी नहीं है। बिहार में शराबबन्दी नहीं है गोकुशी बन्द है। क्या दो प्रान्तों के लोकमत में इतना अन्तर हो सकता है? क्या बम्बई के लोग शराबबन्दी चाहते हैं और बिहार के लोग शराब की गंगा बहती रहे ऐसा चाहते हैं? जनता का कोई ताल्लुक नहीं। उस-उस प्रदेश के मुख्य मन्त्री की मरजी जैसे काम करेगी, वैसा होगा। बम्बई-राज्य में जब मुरारजी भाई थे तब वहाँ फैमिली प्लानिंग की बात नहीं चलती थी लेकिन आज वहाँ क्या है? जब मैं वहाँ घूम रहा था, तब देखा एक प्राइमरी स्कूल में परिवार-नियोजन का चित्र टँगा था। बच्चे वह चित्र देखेंगे, तो उन पर क्या असर होगा? इसमें हम कोई अक्ल नहीं देखते। ऐसे चित्र जिनमें बच्चे रो रहे हैं माँ को तकलीफ हो रही है, वह देखकर मुझे बहुत दुःख हुआ। फैमिली प्लानिंग वहाँ जुल्म स्पीड से चल रहा है। मुखियों के हाथ में सारी बागडोर है और जैसा वे सोचेंगे वैसा ही कारोबार चलेगा। नाम लोकशाही का है रूप दूसरा है। ऐसे लोकशाही का रूपान्तर देखते-देखते अफसरशाही में होने में देर नहीं लगेगी। सर्वोदय के जरिये हम यह प्रयोग कर रहे हैं कि आज की सियासत का स्वरूप बदले जिसे हम लोकनीति कहते हैं वह आये। लोगों के हाथ में राज आयेगा और आज का राज जनता-परायण होगा। कोई टैक्स न्यारा नहीं आयगा उससे जनता मुक्त होगी और जैसे मैंने अभी कहा आप शहर का दान देंगे।

इन्दौर
२०-७-६

—वैष्णव हाईस्कूल में
सर्वोदय-मित्रों के बीच

हम उनसे अधिक दूर देख सकते हैं ८

स्वातंत्र्य के बाद देश को बनाने में योग देना हरएक का फर्ज

अपने देश में स्वराज्य-प्राप्ति के बाद लोगों के मन में कुछ पराधीनता सी दीखती है। देश स्वाधीन हुआ, हम आजाद हुए, तो हरएक नागरिक को महसूस होना चाहिए कि अब हम देश को अच्छा बनाने के लिए अपनी ताकत लगा सकते हैं। सरकार से कुछ मदद भी मिल सकती है लेकिन उस मदद की हम जरूरत नहीं है। हम अपनी शक्ति से काम कर सकते हैं। इस प्रकार का उत्साह आत्मविश्वास तो नागरिकों में होना चाहिए था उसके बजाय आज हर बात में सरकार पर अवलम्बित रहने की आदत लोगों में हो गयी है। अगर सरकार अच्छा काम करती है और करती भी है तो हम उसकी स्तुति करते हैं और कोई गलत काम करती है तो हम उसकी निन्दा करते हैं। सरकार की निन्दा और स्तुति करना यही हमारा धन्धा हो गया है। परिणामस्वरूप इस देश में नागरिक शक्ति प्रकट नहीं हो रही है। उसमें किसका कितना दोष है यह काम मैं नहीं करना चाहता। इसमें सबका दोष है यह मैं मानता हूँ और आपको भी मानना चाहिए कि आपका इसमें दोष है और दूसरे का भी दोष हो सकता है। दोष-वितरण से दोष निरसन नहीं होता है—वितरण होता है। अपने को छोड़कर दूसरे को मैं दोष का दान देता हूँ और वे मुझे उसका प्रदान वापस दिया हैं इस तरह से दान और प्रदान चला तो भी दोष कायम रहता है। यह आज सब दूर चल रहा है।

पक्षवाले पुरोहित की भूमिका में

मुख्तलिफ पक्षों के लोग चुनाव में खड़े होकर लोगों से यही कहते हैं

आप हमें वोट दीजिये तो हम अच्छा कारोबार करेंगे और आपको सुखी बनायेंगे। वे आपको सुखी बनाने का जिम्मा लेते हैं। लेकिन मैं यह नहीं करता हूँ। समझाते हैं कि आपका सुख और दुःख आप पर निर्भर है। इस तरह आत्मोद्धार का विचार नहीं समझाते हैं। जैसे पुराने पुरोहित कहते हैं कि हमें आप दक्षिणा दीजिये तो आपको स्वर्ग मिलेगा। कुछ लोग विश्वास करते हैं—आज भी करते हैं।

तमिलनाड में हम एक गाँव में गये थे। वहाँ लोगों से पूछा कि क्या इलेक्शन के लिए वहाँ लोग आये थे? तो लोगों ने बताया कि जी हाँ, अभी कुछ लोग आये थे और पाँच साल पहले भी आये थे। सभा में बहनें ज्यादा थीं। उनसे मैं बात करता था। बहनों से हमने पूछा तो बोलीं हमारे यहाँ तीन-तीन पेटियाँ आयी थीं और गाँववालों ने तीनों पेटियों में अपने मत—परचे डाले। किसीने इस पेटी में डाला किसीने उस पेटी में। लेकिन हमारा कुछ भी काम नहीं बना। उन्होंने समझा, तीन-तीन देवता हैं—एक भगवान् विष्णु देवता शंकर देवता ब्रह्मदेव देवता। तीनों देवता को प्रसन्न करने के लिए तीनों में परचे डाले। यह काम नहीं करता तो वह करेगा वह नहीं करता तो तीसरा करेगा। लेकिन तीनों में से एक भी देवता हम पर प्रसन्न नहीं हुए, ऐसा वहाँ की बहनों ने कहा।

सर्वोदयवालों के लिए भी लोग यही समझते हैं कि बाबा यहाँ आयेगा और अपने साथियों को लेकर आयेगा और इन्दौर को सर्वोदय नगर बना देगा। यदि यह समझा है तो आपने अवश्य धोखा खाया है। यदि आपने ऐसी आशा रखी है कि बाबा खुद तो पैदल यात्रा करता है लेकिन हमें विमान में बैठाकर स्वर्ग में ले जायगा तो मैं आत्मविश्वास के साथ कहूँगा कि मैं आपकी आशा भंग करूँगा। आपकी आशा भंग करने की ताकत मैं रखता हूँ। मेरे आने से यदि आपका उत्साह बढ़ता है और आप काम में लगते हैं तो काम होगा। आपने अगर यह तय किया कि देखें, बाबा क्या करता है तो आप यही देखेंगे कि बाबा पूरी तरह से

पेश हुआ है। उद्धरेद् आत्मना आत्मानम्। भगवद्गीता ने स्पष्ट कर दिया। अपना उद्धार आपको करना होगा। बाबा काम करेगा, तो बाबा का उद्धार होगा। सर्वोदय नहीं होगा—बाबा-उदय होगा। अगर बाबा उदय होता है, तो बाबा-अस्त भी होगा। जहाँ सूर्य का उदय-अस्त होता है तो बाबा तो एक व्यक्ति है उसका भी अस्त होगा। इसलिए हम सबको कोशिश करनी चाहिए।

भगवान के सेक्रेटरियट में गलतियाँ ?

भगवान् सबको थोड़ी-थोड़ी शक्ति देता है। शक्ति का वितरण कर वह शान्त सो रहा है महान् क्षीरसमुद्र में एक कोने में योगनिद्रा में भोगशय्या पर सो रहा है। वह शेषशायी है। उसने कानून बना दिया है—कर्म और उसका फल। इन्तजाम बना दिया—आम की गुठली बोओगे तो आम पाओगे। बबूल का बीज बोओगे तो बबूल पाओगे। एक कानून बनाया और हरएक को बुद्धि बाँट दी। कुत्ते के सामने बिल्ली को खड़ा किया। दोनों को अपने अपने लायक बुद्धि दे दी। इस तरह हरएक को उसने बुद्धि दी और अपने पास भी शेष रखी। यह नहीं कि सब बाँटकर खाली हो गया। उसके पास बहुत बड़ा खजाना है। स्पेशल खजाना है। सबको थोड़ा-थोड़ा बाँट दिया। यह नहीं किया होता और सब बुद्धि अपने पास रखी होती तो कठिन प्रसंग आने पर बिल्ली उसे टेलीग्राम भेजती कि थोड़ी बुद्धि भेज दो और वह भेज देता। इस तरह से उसका सेक्रेटरियट (Secretariat) चलता तो वह पसीना-पसीना हो जाता। हमारे मामूली मिनिस्टर्स भी दौड़ते हैं, तो हवाई जहाज के बिना नहीं दौड़ते हैं। वह बिचारा हरएक के पास बुद्धि पहुँचाते-पहुँचाते कहाँ-कहाँ दौड़ता ! उसके डिपार्टमेण्ट में कई गलतियाँ होतीं। हरएक को उसकी बुद्धि दे दी। आपको भी दी है।

जेब गड्ढ और बैंक की बुद्धि

मान लीजिये, कुछ पैसा आपने रख लिया जेब में। कुछ पैसे आपने

रख लिये ट्रंक में और कुछ पैसे रख लिये बैंक में। कुछ तो बुद्धि भगवान् ने आपको दे दी वह आपके जेब में पड़ी है चाहे अब उसका इस्तेमाल करो। कुछ सामूहिक बुद्धि मानव-समाज को हासिल हुई है वह ट्रंक में पड़ी है। उसका हिस्सा आपको जरूरत पड़ने पर मिल सकता है। जेब का पैसा खर्च हुआ तो ट्रंक का पैसा आप इस्तेमाल करेंगे। व्यक्तिगत तौर पर जो पैसा है वह अपने जेब में है। कुछ बुद्धि भगवान् ने अपने पास रखी है माने वह आपकी बैंक है। बैंक में आपका ही पैसा है—माँगो तो मिलेगा, नहीं माँगो तो नहीं मिलेगा। जरूरत न हो और माँगो तो नहीं मिलेगा। जब दोनों बुद्धि—व्यक्तिगत और सामूहिक—खर्च हो गयी, तो बैंक से आप माँग सकते हैं। सामाजिक बुद्धि और व्यक्तिगत बुद्धि खतम हुई तो भगवान् ने आपको बुद्धि दे दी।

टूटने के मौके पर भगवान् मदद करता है

यही है ज्ञान-मार्ग—यही है भक्ति-मार्ग—यही है कर्म-मार्ग। अपनी बुद्धि का इस्तेमाल हम करें, यह है कर्म-मार्ग। आप सामाजिक बुद्धि का उपयोग करके काम करेंगे वह है ज्ञान-मार्ग और भगवान् की बुद्धि का उपयोग करेंगे—वह है भक्ति-मार्ग। हमारी बुद्धि का यथाशक्ति और यथामति उपयोग करके फिर हम भगवान् से माँग कर सकते हैं। लेकिन पहले हमारी शक्ति का हमें उपयोग करना है। हम हिन्दुस्तान में क्या करते हैं? कर्म-मार्ग और ज्ञान-मार्ग का उपयोग नहीं करते। भक्ति से ही भगवान् की मदद मिलेगी ऐसा सोचते हैं। इसलिए पूजा-आरती करते हैं और आशा रखते हैं कि भगवान् मदद करेगा। भगवान् कहता है कि अपनी बुद्धि का उपयोग न करो तो मुझसे आशा मत रखो। भक्ति का स्थान कहाँ है—जहाँ मनुष्य की शक्ति और कर्म शक्ति दोनों खतम होती है याने दोनों का उपयोग पूरा पूरा कर लेते हैं। और खतम होने के पहले आप भगवान् से मदद माँगते हैं। ऐसे टूटने के मौके पर भगवान मदद देता है।

द्रौपदी की भगवान् से अपील

आपने सुनी होगी द्रौपदी-वस्त्र-हरण की कहानी। धर्मराज—युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन सब बैठे हैं। भगवान् राह देख रहे हैं कि सब अपनी कर्म-शक्ति और ज्ञान-शक्ति का उपयोग करेंगे। द्रौपदी ने पहले पांडवों से अपील की और फिर भीष्म, द्रोण आदि से अपील की। फिर कौरवों से अपील की। कुछ नहीं बना और आखिर कहा: "हे नाथ, हे माधव" याने आखिर में भगवान् को अपील की। ऐसी ही गजेन्द्रमोक्ष की कहानी है। मगर ने गजेन्द्र को पकड़ लिया और गजेन्द्र ने अपनी पूरी ताकत लगायी। उसके बावजूद भी उसने देखा अपनी ताकत काम नहीं दे रही है।

आखिर तेरा सहारा

अपनी ताकत यह शब्द अज्ञान का है। व्यावहारिक शब्द है। व्यावहारिक मनुष्यों के सामने मैं व्यावहारिक मनुष्य, व्यावहारिक शब्द बोल रहा हूँ। अपनी ताकत कहाँ? भगवान् की दी हुई ताकत थी, उसके बाप की ताकत तो नहीं थी। वह भगवान् की दी हुई थी। इसलिए मैंने कहा कि उसने अपनी शक्ति का उपयोग कर लिया और देखा कि कुछ नहीं हो रहा है तो भगवान् का स्मरण किया। भगवान् लक्ष्मी को छोड़कर और गरुड़ को छोड़कर दौड़े आये। शक्ति का इस्तेमाल होने पर भक्ति का अवसर आया। हमारी शक्ति और हमारी बुद्धि है क्या! वह तो भगवान् की दी हुई है। उसका हम पूरा उपयोग करें तो साबित कर सकते हैं कि हम उसके पुत्र हैं और फिर प्यार से माँग करें, तो मिल सकता है। भगवान् कब देर करते नहीं। देखने के बाद देगा, पहले कैसे देगा!

इन्दौर का मसला दुनिया से जुदा नहीं

इस तरह मैं मानता हूँ अपना जो काम है—देश का और दुनिया का वह आपसे और मुझसे पूरा पहचाना नहीं है। आज दुनिया के

कई मसले हैं। इन्दौर के भी मसले हैं, इन्दौर दुनिया से अलग हुआ अलग टुकड़ा नहीं है। आप अपना जीवन देखें। यह घड़ी, यह मेरा चश्मा, फाउंटेनपेन यह कहाँ से आया? तरह-तरह की चीजें दुनिया भर की हम इस्तेमाल करते हैं। अगर स्वदेशी धर्म का आत्यंतिक अर्थ लगाकर उन चीजों का हम बहिष्कार करें, तो वह पुरानी बीती हुई दुनिया का आदमी साबित होगा। पुराणपुरुष होगा। हमारा कपड़ा और हमारा अनाज हम तैयार करें यह ठीक है लेकिन हर चीज हम पैदा करें, तो फिर पिछली हुई दुनिया में वापस जाना चाहें तो जायें—यह नामुमकिन है।

ईश्वर ने चाहा तो पृथ्वी को डुबो सकता है

अगर ईश्वर चाहे तो यह भी हो सकता है। माने यह हो सकता है कि दुनिया में आज भी थोड़े जंगली प्रदेश हैं जहाँ मानव बिलकुल पुरानी जंगली हालत में है। उनको कायम रखकर बाकी पृथ्वी को आज के बढ़े हुए विज्ञान के साथ ईश्वर डुबो दे—एक जलप्रलय कर दे, तो जो बचेंगे, वे फिर से नयी दुनिया बसायेंगे और वे कहानियाँ सुनेंगे कि ऐसे बड़े-बड़े देवता हो गये जो हवाई जहाज में बैठते थे।

लाओत्से के जमाने में

आपको शायद मालूम है कि चीन में एक महान् तत्त्वज्ञानी हो गया—लाओत्से। एक ही ग्रंथ उसने लिखा है लोगों ने उससे लिखवाया है। २५ साल पहले का ग्रंथ है। उसमें आदर्श समाज-रचना का वर्णन है। एक गाँव था। वह सब तरह से संतुष्ट था आत्मनिर्भर था। रात को लोग बड़े मजे में सोते थे लेकिन उनको पता चलता था कि मील-दो मील की दूरी पर दूसरी बस्ती होनी चाहिए। जैसे कोलंबस को अन्दाज लगा था कि समुद्र के उस पार हिन्दुस्तान होगा। वैसे उस आदर्श गाँववालों को यह पता कुत्ते की आवाज से मिला कि उस तरफ कोई गाँव होगा। पर उस गाँव में जाने का उनको मौका ही नहीं मिला था—मरण

ही नहीं पड़ी थी। गीता की भाषा में आत्मसन्तोष व संतुष्टात्मत्व कार्य न दिखते। अत्यन्त परिपूर्ण गाँव था। उसे दूसरे गाँव में जाने की न जरूरत थी और न इच्छा। कुत्ते के भूँकने से उनको पता चलता था। इस प्रकार का आदर्श ग्राम क्या आप कबूल करेंगे? यह नामुमकिन है।

कोशिश करने पर भी इन्दौर बच नहीं सकेगा

इन्दौर का जो भी मसला है, वह दुनिया के मसलों के साथ जुड़ा हुआ है। दुनिया में जो शस्त्रास्त्र ईजाद हुए हैं वे भस्मासुर के दर्शन करा रहे हैं। मानव-बुद्धि को यह वरदान मिला—एटम बम और हाइड्रोजन बम का—मैक्सिमम वेपन का जो वरदान हासिल हुआ है भगवान् संहारक महादेव की कृपा से यह वरदान मनुष्य को ही खतम कर सकता है। ऐसी स्थिति में आज ही अगर कहीं ऐसा भयानक काण्ड शुरू हो गया तो उसका असर चाहे इन्दौर कितनी ही बचने की कोशिश करेगा तो भी इन्दौर पर उसका असर होगा ही। वह रुक नहीं जा सकता। इसलिए हम इन्दौर का मसला अलग मानकर हल करेंगे, तो गलत होगा।

सर्वोदयनगर बनाने में अपनी-अपनी शक्ति का योगदान दें

इन्दौर के काम में आप सबको मिलकर अपनी-अपनी ताकत लगानी चाहिए। आपने पढ़ी होगी 'सप्तशती'—महिषासुरमर्दिनी की कहानी। महिषासुर के त्रास से जब सब त्रस्त हो गये तब वे देवता के पास गये। देवता ने अपने में कोई शक्ति महसूस नहीं की। महिषासुर का निर्मूलन हम कर सकते हैं ऐसा विश्वास उनको नहीं था। आखिर वे दैवी शक्ति के पास गये। उनसे याचना की तो देवी ने उनको कहा कि आप सब अपनी-अपनी पावर डेलिगेट कीजिये। तो महादेव ने अपना त्रिशूल उनको दे दिया। भगवान् विष्णु ने अपना सुदर्शन दे दिया। इस तरह से हरएक देवता ने अपने शस्त्र से उस देवी को सज्जित किया और फिर

उस देवी ने महिषासुर का मर्दन किया। इस तरह अपना-अपना शक्ति दान आप करेंगे तब काम होगा। शक्तिदेवता जिसे हम कहते हैं वह अन्य देवता से भिन्न नहीं है। वह अनेक देवता के समूहस्वरूप में से पैदा होनेवाली देवी है—उसका नाम है शक्ति। इसलिए आपका थोड़ा थोड़ा अंश मिलेगा तब शक्ति बनेगी। इन्दौर को सर्वोदयनगर बनाने के लिए आपको अपनी शक्ति का योगदान करना चाहिए।

नियमितता का गुण सिखाया डरपोकपन का दोष प्रविष्ट किया

दूसरी बात यह है कि इन्दौर का काम करने के लिए जो भी कदम आप उठायेंगे वह छोटा-सा क्यों न हो उसमें सारी दुनिया के लिए सोचना होगा। माता-पिता लड़के से कहते हैं कि स्कूल में नियमित जाओ और लड़का नियमित जाने से इनकार करता है। माता पिता ने उसे समझाया गुरु ने समझाया लेकिन कई कारणों से लड़का स्कूल में देरी से पहुँचता है। रास्ते में वह कहीं तमाशा देखता है, तो उसे देखने के लिए रुक जाता है। पिता उसे रोज पीटते हैं। लड़का बोलता है: "मुझे मत मारो मत पीटो। अब मैं ऐसी गलती कभी नहीं करूँगा।" दूसरे दिन से मान लीजिये—लड़का स्कूल में जाने लगा तो आपने उसे नियमितता का गुण सिखाया और दूसरा डरपोकपन का दोष आपने उसमें प्रविष्ट कर दिया। किसीके मारने-पीटने पर डरता है। बाद माता-पिता से डरता है और उनकी बात मान लेता है। कल अगर पुलिस पीटेगी, तो पुलिस की बात वह मानेगा। परसों कोई चोर आयेगा और गले का अलंकार माँगेगा तो डरकर वह अलंकार निकालकर दे देगा। आपने उसे डरना सिखाया है। मातृदेवता और पितृदेवता ने उसे सिखाया कि जो शरीर को पीड़ा दे, उसके वश होना चाहिए और शरीर की रक्षा करनी चाहिए—डरना चाहिए। नियमितता के गुण के साथ आपने उसे डरपोक बनने का दोष सिखाया। निर्भयता यह एक बहुत बड़ा गुण है। अगर आप उसे निर्भय बनाते तो आपने ठीक ही काम

किया, लेकिन आपने उसे डरना सिखाया तो आपने थोड़ा हासिल किया और ज्यादा गँवाया।

लड़के डरपोक बनेंगे तो देश गुलाम बनेगा

ऐसे लड़के आपने तैयार किये जो देह से डरते हैं तो आखिरी तौर पर हिन्दुस्तान गुलाम बनेगा, इसमें शक नहीं है। आज नहीं, कल वह जरूर गुलाम बनेगा हमारी इच्छा से बनेगा। क्योंकि हमने अपने हाथों बच्चों को डरपोक बनाया है। माता-पिता ने मरघट तालीम देकर बच्चों को डरपोक बनाया तो देश अवश्य ही गुलाम बनेगा। इसमें किसीको भी कोई शक नहीं होगा। अपनी समस्या का हल करने के लिए दंड आदि बल का उपयोग किया तो समस्या ऊपर-ऊपर से हल हुए हैं ऐसा दिखाई देगा। गाँव में स्वच्छता फैलाने के लिए कानून बनाया तो कानून के भय से स्वच्छता होगी। आपने कानून बनाया कि खादी नहीं पहनोगे तो दंड होगा। वह बात मानी और लोगों ने खादी पहनी, तो क्या वह खादी होगी—वह भयखादी होगी। जबरदस्ती से, दंड से खादी खादी नहीं रही तो खादी नहीं बन सकती है। इसमें खादी का गुण नहीं। दंड-शक्ति से खादी बनने का एक प्रयोग कांग्रेसवालों ने किया भी था। खादी का लिबास नहीं पहनोगे, तो कांग्रेस के एक्टिव मेम्बर नहीं बन सकते इसलिए एकाध कुरता रखते हैं खादी का और खास मौके पर पहनते हैं बाकी अपना आराम। इससे गुण-संवर्धन कैसे होगा? वह खादी नहीं हो सकती है। लंरुय के लिए खादी पहनेंगे और घर पर जाकर पटक देंगे।

यहाँ जो काम करना चाहते हैं, चाहे वह सर्वोत्तम का हो या स्वच्छता का काम मैं वह पसंद नहीं करूँगा कि उसमें दंड-शक्ति का उपयोग किया जाय। उससे स्वच्छता का गुण आयेगा तो भी दंड के भय से समाज भयभीत बनेगा। एक बाजू यदि वह भयभीत बनता है और दूसरी बाजू स्वच्छ तो हमने पाया नहीं। छोटा गुण पाया और बड़ा गुण खोया। गुणों में भी एक तरतमभाव होता है।

'पाण्डवानां धनञ्जयः' क्यों ?

भगवान् कृष्ण ने गीता में विभूति बतायी है—पर्वतों में हिमालय इत्यादि कहते कहते 'पाण्डवानां धनञ्जयः' कहा है । पाण्डवों में धनंजय की क्या बात है ? युधिष्ठिर क्यों नहीं कहा ? क्या सुननेवाला धनंजय था इसलिए भगवान् ने उसकी खुशामद की जरूरत समझी ? पाण्डवों में तो युधिष्ठिर श्रेष्ठ है । महाभारत में यह दिखाया है कि अकेला युधिष्ठिर और उसका कुत्ता, वह दो ही टिके हैं । व्यास भगवान् ने एक विलक्षण दृश्य बताया है । हिमालय पर जाते-जाते द्रौपदी गिर पड़ी । भीम अर्जुन नकुल सहदेव एक के बाद एक गिर गये । अकेला युधिष्ठिर बचा इसलिए वह श्रेष्ठ है ऐसा व्यास भगवान् ने बताया है । इस पर भी भगवान् गीता में कह रहे हैं 'पाण्डवानां धनञ्जयः' उसका कारण क्या है ? यही है कि अर्जुन निर्भय था । निर्भयता के गुण को भगवान् पहला दर्जा देते हैं—'अभयम्' । इसलिए जहाँ दैवी शक्ति का वर्णन आया है वहाँ पहला स्थान निर्भयता को दिया है । गुणगणना में दैवी सम्पत्ति के २६ गुण हैं । इनमें पहले तीन गुण 'अभयं सत्त्वसंशुद्धिर्ज्ञानयोग' हैं वे जो तीन गुण हैं उनमें अभय को पहला स्थान दिया । ज्ञानयोग माने बुद्धि में पूर्ण निर्णय सत्त्वसंशुद्धि माने चित्तशुद्धि और अभय ये सर्वश्रेष्ठ गुण हैं । बाकी के गुण माने उसीकी तफसील है । पहले तीन गुण में अभय याने अर्जुन का नाम । सत्त्वसंशुद्धि माने युधिष्ठिर का नाम । ज्ञानयोग याने भगवान् कृष्ण का नाम । इन तीन महापुरुषों के ये द्योतक हैं । सबसे श्रेष्ठ गुण अभय को माना । अभय को खोकर काम करें तो काम तो होता है लेकिन भय रहता है अभय नहीं रहता ।

यदि मैं अर्थ-मन्त्री होता

सरकार के जरिये कुछ काम होते हैं । उसमें सरकार का लाभ होता है । सरकार को हम टैक्स नहीं देंगे तो क्या होगा ? दण्ड होगा, सजा होगी, जेल होगी गिरफ्तारी होगी । याने देना ही पड़ेगा । मान लीजिये

पदीभार के लिए मेरे हाथ में आपने राज्य-कारोबार सौंपा, तो मैं मेरा बजट जाहिर करूँगा टैक्स नहीं बैठाऊँगा। आज दुनिया टैक्स से तंग है। सरकार को बोझ दे रही है। लेकिन मैं अपना बजट लोगों के सामने रखूँगा उस पर लोगों की टीका सुनूँगा और वह दुरुस्त करके फिर से प्रहसन बजट रखूँगा। इतना खर्च सेना के लिए, इतना खर्च तालीम के लिए और फिर जनता को कहूँगा अब आप दान दीजिये। दान का पैमाना आपको हम सुझाते हैं। करोड़वाला इतना दे, लाखवाला इतना दे, दस हजारवाला इतना दे, एक हजारवाला इतना दे। जितना आप दान देंगे उतना हम खर्च करेंगे। क्या सरकार को हिन्दुस्तान में दान नहीं मिलेगा? इसका उत्तर अगर 'हाँ' में है तो हिन्दुस्तान में स्वराज्य है। अगर 'ना' में है तो मैं जाहिर करता हूँ कि हिन्दुस्तान में गुलामी है। यह मेरा 'आइडीयलिज्म' है चाहे आप अव्यावहारिक मानें।

आपने सरकार पर अगर भरोसा रखा, तो वह आपके सामने बजट रखेगी और आपकी टीका सुन दुरुस्त करके फिर से आपके सामने रखती है और उसके लिए आपसे पैसे माँगे जाते हैं। जितने पैसे माँगे उससे ज्यादा आ गये तब सरकार को जाहिर करना पड़ेगा कि हमने जो १ अगस्त की तारीख जाहिर की थी लेकिन हमारे पास ज्यादा पैसा आ गया इसलिए २८ जुलाई के बाद कोई पैसा न दें। आपने अगर ऐसी हालत बनायी तो हिन्दुस्तान में स्वराज्य है। अब यह हो सकेगा? टैक्स कुछ भी नहीं—कुल टैक्स बन्द हुए, इसकी वजह से सरकार की जो मिनिस्ट्रियल होती है कुल खतम हो गयी। आपका सरकार पर विश्वास भी है। आपने बाबा को दान दिया याने एक व्यक्ति को दान दिया करीब २ करोड़ रुपयों का दान दिया। अब अकेला व्यक्ति कितना भी ऊँचा हो सरकार उससे बहुत ऊँची है। आपने सरकार को ज्यादा-से ज्यादा विश्वास रखकर चुना है तो आप सरकार को दान क्यों नहीं देंगे? लेकिन आपका उन पर भरोसा नहीं है कि अगर आप उनको देते हैं तो उसका अच्छा उपयोग किया जायगा।

और उनको भी आप पर भरोसा नहीं कि आप देंगे या नहीं। इसलिए टैक्स के नाम से लिया जायगा और लिया जायगा। यह जब तक दुनिया में चलेगा तब तक सच्चे अर्थ में दुनिया में आजादी नहीं है, यह हमें समझना चाहिए।

चण्डी पर अनन्य भक्ति और विश्वास

इन्दौर को सर्वोदयनगर बनाना है। इसमें हम दण्ड-शक्ति कहीं भी लाना नहीं चाहते हैं। हम विश्वास-शक्ति को जरा टटोलें। क्या हमारा ऐसा विश्वास है कि दण्ड-शक्ति के बिना काम होगा? बच्चे को हमने समझाया प्यार से समझाया दूसरे के जरिये समझाया। लेकिन नहीं समझते हैं तो क्या करना? एक तमाचा मारना चाहिए! यानी हमारा अन्तिम विश्वास अमिट विश्वास हिंसा पर है। कभी विष्णु काम करेगा तो हम खुशी हैं। कभी रामजी काम करेंगे तो खुशी है। कभी कृष्ण काम करेंगे, तो खुशी है। लेकिन ये तीनों काम नहीं करेंगे, तो चण्डी काम करेगी ही। यह अनन्यसाधारण भक्ति और विश्वास चण्डी पर है। हम बात करते हैं अहिंसा की लेकिन पहले कभी यह नहीं देखा कि पहला तमाचा मारा नहीं समझा तो प्रेम से समझाया फिर भी काम नहीं हुआ तो बहुत ज्यादा प्यार से समझाया और आखिर नहीं समझा तो अपना बलिदान देने को तैयार होना । ऐसी विश्वास की परम्परा चण्डी से कुछ अलग आप रखते हैं—इस जमाने के लायक बात है ऐसा होगा।

असफल प्रयोग

प्रेम से काम नहीं हुआ तो दण्ड-शक्ति से होगा ही—ऐसा आज आप मानते हैं तो मैं आपको कहना चाहता हूँ कि वह नहीं हुआ। पाँच-पाँच हजार साल से सतत मानव दण्ड देता आया है। फिर भी मानव का प्रयोग फेल ही रहा है। अगर आज तक काम नहीं हुआ तो और दण्ड देना है क्या? इस प्रयोग को आगे चलाना है क्या? दण्ड

धर्मम्—यह उस जमाने के जमानेवाले लोगों ने कहा था कि दण्ड माने धर्म। उस जमाने में दण्ड को धर्म माना है तो उसकी आसुरी शक्ति बन चुकी। उस हालत में आज भी अगर हमने दण्ड को धर्म माना है, तो हमें समझना चाहिए कि हम पुराने जमाने के खंडहर हैं।

गुरु की कसौटी

लोग हमसे पूछते हैं कि कृष्ण ने काम किया, रामजी ने काम किया हृदय-परिवर्तन करने में वे असमर्थ साबित हुए, तो आपकी क्या चलेगी? मैं कहता हूँ उस जमाने में रामजी की नहीं चली और कृष्णजी की नहीं चली, इसलिए आज के जमाने में आपकी और हमारी चलेगी। इसलिए कि उनके कन्धे पर हम खड़े हैं, उनके बच्चे हम हैं उनके कन्धे पर खड़े होकर उनसे दूर देख सकते हैं। इसलिए ज्यादा देखते हैं यह हमारा दावा है। शिष्य अगर कमजोर रहा तो उसका गुरु नाकामयाब कहा जायगा। मेरी बुद्धि कमजोर होगी तो मेरा गुरु बेकार साबित होगा। ऐसा होना चाहिए कि मेरा शिष्य सर्वोत्तम है। मेरी बुद्धि करोड़ की है मेरे शिष्य की लाख होगी और उसके शिष्य की हजार होगी तो क्या गुरु की योग्यता मानी जायगी? इस तरह कृष्णदास के समान शिष्य का पतन होते-होते, हमारी अक्ल कम होते-होते हम कमजोर होंगे तो वे बेकार साबित होंगे। इसलिए उनकी अक्ल हम सीखते हैं और उनसे दूर देखते हैं।

भगवान् बार-बार फेल हो रहे हैं

मैं विनोद में कभी-कभी कहता हूँ कि गीता में भगवान् ने कहा: "धर्म-संस्थापना के लिए हम बार-बार अवतार लेंगे"। कभी कोई विद्यार्थी बार-बार मैट्रिक की परीक्षा देता है। अगर वह ८वीं दफा मैट्रिक को बैठता है तो जाहिर है कि ७ दफा वह पहले फेल हुआ है। वैसे भगवान् बार बार अवतार लेते हैं तो स्पष्ट है कि भगवान् बार-बार फेल हो रहे हैं। याने भगवान् यह जाहिर कर चुके हैं कि धर्म-संस्थापना के काम में फेल हो चुके हैं। आपको क्या भगवान् को फिर से फेल कराना है कि पास

कराना है! इसलिए ऐसा काम करना चाहिए, जिससे आज के जमाने का समाधान होगा।

मनुष्य, बाँसुरी और करुणा

आखिर, एक-एक प्रयोग एक-एक जमाने में चले। रामजी ने बंसी नहीं बजायी, कृष्ण ने बंसी बजायी। यह नहीं सोचा कि हमारी बंसी से क्या होगा। रामजी ने तो नहीं बजायी थी। कृष्ण ने बंसी बजायी और गोपाल कृष्ण-गोपाल कृष्ण उसका नाम चला। हिन्दुस्तान ने आज तक एक ही सेवक देखा अत्यन्त नम्र और सूक्ष्म। कृष्ण की महिमा हम आपको क्या सुनायें! आज के जमाने में भी महापुरुष हो गये। महात्मा गांधी अपने आश्रम में झाड़ू लगाते थे गन्दे-से-गन्दे काम उन्होंने किये, लेकिन किसीने उनके पास जाकर उनसे कभी यह नहीं कहा कि बापू, आप जरा मेरे कमरे में झाड़ू लगाइये। वैसे बापू सदा तैयार थे और झाड़ू लगाते भी थे। लेकिन क्या किसीने कभी उनको ऐसा कहा? एक दबदबा था—रोब था। लेकिन अर्जुन भगवान् को कहता है कि तुम मेरे घोड़े की चाकरी करो। कहाँ अर्जुन और कहाँ कृष्ण! दोनों में कहाँ समानता है! विश्व-रूप-दर्शन देखकर तो अर्जुन को रोना पड़ा और उसने कहा कि "क्या मैंने तेरा अपराध किया है।" वही अर्जुन कृष्ण को काम बतलाता है। शाम के समय युद्ध बन्द होता था। अर्जुन क्षत्रिय था, लेकिन वह संध्योपासना के लिए चला जाता था और भगवान् कृष्ण उनके घोड़ों को धोने के लिए ले जाते थे—घोड़ों का खरहरा करते थे। ऐसा असामान्य सेवक हिन्दुस्तान में हो गया। रामजी से बढ़कर हिन्दुस्तान में स्वामी नहीं हुआ। 'राजा राम-राजा राम' लोग कहते हैं। वह ऐसा स्वामी था कि उसने हरएक से काम लिया। बन्दरों से भी काम लिया। बन्दरों का अजीब काम था। तुलसीदासजी वर्णन करते हैं: 'प्रभु तरुतर कपि डार पर ते किये आपु समान।' ऐसे बेवकूफ सेवक थे कि नम्रता नहीं जानते थे और पेड़ पर बैठते थे अक्ल नहीं थी कि स्वामी कहाँ बैठे हैं हमें कहाँ बैठना चाहिए। स्वामी पेड़ के नीचे बैठे थे और वे बन्दर पेड़ के ऊपर अध्यक्ष की जगह बैठे

हैं। लेकिन 'ते किये आप समान प्रभु ने उनको अपने समान बनाया। तुलसीदासजी कहते हैं रामजी से बढ़कर साहिब नहीं हुआ, आदर्श स्वामी रामजी हो गये आदर्श सेवक कृष्ण हो गये। जो काम रामजी ने किया, वह कृष्ण ने नहीं किया। रामजी ने धनुष्य उठाया कृष्ण ने बाँसुरी बजायी और शीलरूप आया—उसने मौन लिया। गौतम बुद्ध ने मौन लिया। उसने न बाँसुरी बजायी और न बाण उठाया—उसका मौन बाण और उसने 'करुणा' शब्द लिया।

दण्ड-शक्ति से नहीं, प्रेम-शक्ति से काम करेंगे

इस तरह से पुराने जमाने में जो प्रयोग हुए, उनका काम लेकर हमें आगे बढ़ना है। लोग दलीलें करते हैं कि आज की परिस्थिति बदली है। रामजी के जमाने में धनुष्य था आपके हाथ में तो कुछ भी नहीं है। लेकिन हमें समझना चाहिए कि जमाना बदला है। हिंसा के प्रयोग हम आज भी चलायेंगे तो अहिंसा-शक्ति नहीं बढ़ेगी। अगर आप यह नहीं समझते हैं तो इसका मतलब यही हुआ कि आपके पास जो ज्वार है वह आप खाना नहीं चाहते हैं और जो गेहूँ आपके हाथ में नहीं है, वह आप खाना चाहते हैं। मतलब यही हुआ कि धोखा करके आपको मर जाना है। सारांश आप दुनिया की परिस्थिति देखते हुए जो भी काम हम इन्दौर में करने जायेंगे, दण्ड-शक्ति से नहीं प्रेम से सबके सहयोग से हमें करना होगा।

स्वच्छता स्वयमेव क्रान्ति

आज एक भाई से बात हो रही थी। वे कह रहे थे कि हम स्वच्छता के काम में क्रान्ति नहीं समझते। जब सब लोग इसे चाहेंगे और निगम की जरूरत नहीं रहेगी तब क्रान्ति होगी। लेकिन स्वच्छता स्वयमेव क्रान्ति नहीं है। हम सब लोग स्वच्छता का काम करेंगे और निगम खत्म समाप्त होगा वह होगा तब होगा। वेद भी हम समाप्त करते हैं तो निगम की क्या बात है। यह वेदान्त है। हिन्दुस्तान में जो धर्म का विचार है, वह

इतना निर्मम है कि किसी चीज की उसे समझ नहीं परवाह नहीं। 'वेदमपि संन्यसेत्'—आखिर वेद को भी परखना चाहिए। क्या ऐसा किसीने कहा है? आखिर कुरान को परखना चाहिए, बाइबिल को परखना चाहिए, क्या ऐसा कोई कहता है? कोई नहीं कहता। हिन्दुस्तान में ही यह वैदिक धर्म निकला, जो कहता है कि आखिर में वेद को भी परख देना चाहिए—निर्मम होना चाहिए। लेकिन वह आखिर में आज हो नहीं। आराम से सोना है लेकिन खाने के बाद या खाने से पहले? खाने से पहले सोओगे, तो आराम नहीं मिलेगा। नियम खतम होगा, तब क्रान्ति होगी, ऐसा सोचते हैं; लेकिन जरा अक्ल और आगे बढ़ाओ तो ध्यान में आयेगा कि आखिर में शरीर ही खतम होगा तभी क्रान्ति होगी।

मेरी राय में जहाँ तक हिन्दुस्तान का ताल्लुक है सभ्यता सम्यक् क्रान्ति है। हम इतने संस्कारहीन हो गये हैं कि हम उसकी जरूरत है। क्रान्ति का मतलब है—मूल्य-परिवर्तन। आज यहाँ हालत ऐसी है कि सभ्यता का मूल्य स्थापित ही नहीं हुआ है। पुष्कर में लोग स्नान के लिए जाते हैं। जो जाता वह गोता लगाता है और मुक्ति पाता है। मैं वहाँ गया था लेकिन सारी श्रद्धा इकट्ठा करके ही मैं उसमें गोता नहीं लगा सका। वहाँ इतना गन्दा पानी था कि मुझे वह जँचा ही नहीं। ऐसे गलत मूल्य यदि यहाँ हैं तो हमारा कर्तव्य उन्हें हटाना है। उसके लिए एक कार्यक्रम लिया जाता है वह सम्यक् क्रान्ति है। सारांश, जो गलत मूल्य हैं उन्हें हटाना है। उसके परिणामस्वरूप दूसरे क्षेत्र में भी क्रान्ति होगी यह अलग बात है। इसलिए पहला कदम समझकर हमें यह काम करना होगा। 'ॐ सह नाववतु। सह नौ भुनक्तु। सह वीर्यं करवावहै। तेजस्विनावधीतमस्तु। मा विद्विषावहै। ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।

इन्दौर
१०-७-६

मैत्री विहार ९

यही एकमात्र मार्ग

समाज में काम करने के दो तरीके, दो मार्ग होते हैं। एक मार्ग है—ऊपरवालों की तरफ देखकर संघर्ष की भावना और बल से अपनी ताकत से उनको एक स्तर पर लाना। इसमें मत्सर की भावना होती है। दूसरा मार्ग है—अपने से नीचेवालों की तरफ देखकर जो ज्यादा दुःखी हैं, उनके पास मदद के लिए पहुंचना—जैसे पानी नीचे की तरफ दौड़ता है, वैसे हर कोई अपने से ज्यादा दुःखी की ओर दौड़ा जाय। दरअसल यह दूसरा मार्ग नहीं बल्कि यही एकमात्र सही मार्ग है। बाकी सब अमार्ग हैं। इससे समाज में जो समत्व आयेगा वह करुणामूलक ही होगा।

'बहुजनसुखाय बहुजनहिताय'

करुणा एक बड़ा गुण है। महात्मा गौतम बुद्ध ने हिन्दुस्तान में बल्कि हम कह सकते हैं कि सारे एशिया में—सारी दुनिया में प्रथम बार स्पष्ट शब्दों में अपने शिष्यों को कहा : आपको लोगों के बीच जाकर 'बहुजनसुखाय-बहुजनहिताय' कोशिश करनी चाहिए। भिक्षु की व्याख्या करते हुए उनके विहार को उन्होंने 'मैत्री-विहार' नाम दिया। सबको समान भूमिका में लाने का नाम है—मैत्री। मैत्री में ऊंच-नीच को स्थान नहीं है। चाहे मित्रों में योग्यता का फरक हो लेकिन वे एक-दूसरे को पूरक मानते हैं—समान होते हैं। मित्र परस्पर मित्र होते हैं। यह नाता बाप और बेटे के बीच नहीं हो सकता है। बाप और बेटे परस्पर बाप और बेटे नहीं हो सकते। उसमें बाप बाप ही होगा और बेटा बेटा ही होगा। मित्र परस्पर मित्र हो सकते हैं। यह एक ऐसा नाता है जिसमें दोनों समान भूमिका पर आते हैं। उसे पाली भाषा में 'मेत्ता-विहार'

नाम दिया है। यह कोई नयी बात है ऐसा नहीं। वेद में भी मंत्र आया है। उसे लिया और उसका एक व्यापक आन्दोलन बनाया और यह चीज फैलाने के लिए महात्मा गौतम बुद्ध ने राजगद्दी छोड़ करके अपना सारा जीवन उसमें दे दिया। वेद में मंत्र आता है :

मित्रस्य मा चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम्।
मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे॥

—मित्र की नजर से हम सब लोगों की ओर देखें और सब लोग मेरी तरफ मित्र की तरह देखें। दोनों की नजर मैत्री की होनी चाहिए। यह वेद भगवान् ने बताया है। हिन्दुस्तान में पहली बार 'मैत्री' शब्द का उच्चारण वेद भगवान् ने किया है। उसकी मिसाल सूर्यनारायण हैं। विश्वामित्र ऋषि का मंत्र है जिसमें सूर्य को मित्र कहा है।

हर कोई कह रहा है कि मेरे घर में सूर्य है, मेरी तरफ सूर्य देख रहा है। सबके साथ समान मैत्री करनेवाले सूर्यनारायण को आदर्श मित्र मान कर उसको ही 'मित्र' संज्ञा दी गयी है। यह वैदिक भाषा है। पारसी भाषा में भी सूर्य को मित्र शब्द है। दूसरी भाषा में नहीं है। अगरचे सूर्य जितनी मैत्री अपने देश में पैदा करता है और आनन्ददायी होता है, उससे बहुत ज्यादा आनन्ददायी योरप में होता है। हमें तो कभी उसका ताप भी होता है वैसे वहाँ नहीं होता है। फिर भी उनकी भाषा में सूर्यनारायण के लिए मित्र शब्द नहीं है—यह हिन्दुस्तान में ही है। सब पर समान प्यार करनेवाले मित्र! इसमें एक प्रतिभा है—एक दर्शन है।

भगवान् गौतम बुद्ध ने हिन्दुस्तान में पहली बार निकला हुआ बहुत पुराना शब्द ले लिया—'मैत्री' और उसका आन्दोलन उठाया। उसके लिए एक छोटी-सी चीज उन्होंने उठा ली। हिन्दुस्तान में उन दिनों बकरे का बलिदान भगवान् के नाम से होता था। हम जो चीज खाते हैं वह भगवान् को अर्पण करके खाते हैं। आज भी दुनिया में यह होता है, इसमें कोई विशेष बात नहीं है। हम केवल खाते हैं, तो वह

भी भगवान् को अर्पण करते हैं। लेकिन भगवान् न केला खाता है न दूध पीता है न गोश्त खाता है। हमारा भगवान् ऐसा है जो न खाता है और न पीता है। वह तो अमृत देखकर, उसका साक्षी होकर, सदा होकर तृप्त होता है। इसलिए उसे केला समर्पण करना जितनी मूर्खता है उतना ही गोश्त समर्पण करना मूर्खता है। मूर्खता के खयाल से दोनों बराबर हैं। लेकिन हम भक्तों का हम मूर्खों का मतिभ्रम है और वह हम प्रकट करते हैं। गौतम बुद्ध के जमाने में हिन्दुस्थान में मांसाहार चलता था तो वे गोश्त भगवान् को अर्पण करते थे। आज भी मुसलमानों में मांसाहार होता है। हिन्दुस्थान में देवी-देवताओं के सामने बलि देते और गोश्त समर्पण किया जाता था। इसलिए वह चीज लेकर गौतम बुद्ध लोगों के पास गये और कहा कि तुम भगवान् के नाम पर वह मत करो। यह गलत है। उन्होंने शब्द मैत्री दिया और काम करुणा का दिया। मैं दूसरे पर करुणा करूँगा ऐसी भावना नहीं ऐसा सोचा मैं करूँगा तो उसमें एक प्रकार की अहंकार की बू आयेगी। अपने से कोई नीच है और उस पर मैं करुणा करूँगा। जैसे अंग्रेजी में कहता है—"सर्विस आफ दी पूअर" याने हम उस 'पूअर' से अलग रह गये। उसमें सेवा का अहंकार होता है हम कौन करुणा करनेवाले! हम उनसे अलग नहीं हैं। हम सब समान हैं मित्र हैं। भगवान् ने गीता में दोनों शब्द इकट्ठे किये हैं—'मैत्रः करुण एव च'। इस तरह से अपने यहाँ भगवान् गौतम बुद्ध ने और उसके भी पहले वैदिक ऋषियों ने और कृष्ण भगवान् ने मैत्री शब्द का उच्चारण किया है।

समान है या समाधान है

यहाँ आपने मजदूरों के लिए घर बनाये हैं अच्छा इन्तजाम किया है यह देखने के लिए महादेवी देवी गयी थीं। और उन्होंने वह सारा देखा और सहज पूछ लिया कि "क्या सबके लिए समान घर हैं?" तो उनको बताया गया है कि 'हाँ'। इसका मतलब यह हुआ कि मानो ही

अच्छे घर हों तो भी अगर समान हैं तो समाधान होता है। इस युग की यह माँग है कि समत्व आये। यह युग भूखा है, प्यासा है—समानता का। जब इतनी भूख है, तो समत्व आकर ही रहेगा। अब यह किस रास्ते से आये यह सवाल है जिससे आने पर वह स्थिर होगा, मंगलदायी होगा, कल्याणदायी होगा और समाधानकारक होगा। वह रास्ता करुणा का होगा। उसीसे जो साम्य आयेगा वह टिकेगा।

सरकार के काम में समृद्धि की दृष्टि प्रधान

हमने सुना है कि यहाँ मजदूरों के लिए अच्छा इन्तजाम होने जा रहा है लेकिन ऐसे भी मजदूर हैं जिनके लिए इन्तजाम नहीं है। मुमकिन है उसका काम पड़ती हो—होगा धीरे धीरे। सवाल यह है कि अच्छा काम होने पर भी दिल पूछता है कि क्या सबके लिए समान है? अपने यहाँ सरकार की ओर से जो काम हो रहा है उसमें दर्शन दूसरा है। दृष्टि करुणा की नहीं समृद्धि की है। देश में समृद्धि आनी चाहिए, उत्पादन बढ़ना चाहिए। अमेरिका इंग्लैण्ड समृद्ध हैं अपना देश भी समृद्ध बने। उत्पादन खूब बढ़े यह दृष्टि है। उसमें करुणा आ जाय तो आ जाय; लेकिन करुणा की दृष्टि उसमें प्रधान नहीं है। देश समृद्ध बने यही दृष्टि है। जो पंचवर्षायोजना प्लान बना है उसमें न समता की दृष्टि है और न करुणा की दृष्टि है। समृद्धि बढ़े और दौलत बढ़े देश का उत्पादन बढ़े, यह उसमें मुख्य दृष्टि है।

बीच में चट्टान पानी को रोकती है

देश का उत्पादन भी जरूर बढ़े। आहार आदि कम हो तो आपस आपस में कशमकश होगी। इसलिए अन्न वगैरह बढ़े इसमें कोई शक नहीं। लेकिन सिर्फ उत्पादन बढ़े इस ख्याल से कार्यक्रम बनाया जाय है तो क्या जो बिलकुल नीचे के स्तर पर हैं उन्हें आपकी मदद मिलती है? तो उत्तर दिया जाता है जिसे मैंने नाम दिया है Theory of Percolation माने ऊपर से नीचे तक मदद आती रहेगी तो कुछ न

कुछ नीचे मिलेगा; लेकिन जो बिलकुल नीचे के स्तर पर हैं उन्हें मदद मिलती ही है ऐसा नहीं। देश में अगर उत्पादन बढ़ा तो सबको समान मदद मिलेगी ऐसी बात नहीं हो सकती है। थोड़ा उत्पादन बढ़ा तो मजदूरों को ज्यादा मजदूरी मिलेगी। उनका स्तर स्वयमेव थोड़ा ऊपर होगा। लेकिन बात ऐसी है कि हिन्दुस्तान में हिमालय से ऊपर से जो पानी आता है वह कुछ तो बह जाता है और कुछ थोड़ा सा जमीन में जाता है और बीच में एक ऐसी चट्टान आती है कि नीचे पानी जाता ही नहीं। हिन्दुस्तान में जातिभेदयुक्त समाज बना है लेकिन मूल में भेद की दृष्टि नहीं थी। समान भूमिका थी। एक वर्ण-व्यवस्था थी लेकिन धीरे-धीरे उच्च-नीचता आयी और उसमें जाति-भेद बने। फलाना काम फलानी जाति का ऐसा तय हो गया और कामों में ये काम उच्च और ये काम नीच ऐसा हुआ और उसमें भी फिर दर्जे बढ़ते गये। ऐसे समाज में उत्पादन बढ़ता है तो स्वयमेव Percolate होकर पानी नीचे जायगा ऐसा हो ही नहीं सकता। बीच में कई चट्टानें आयेंगी और पानी को नीचे जाने से रोकेंगी।

समत्व के तरफ जाना है तो दिशा करुणा की हो

यह बात हमारी प्लानिंग कमीशन से हुई थी। सन् १९ १ में देहली में पहली मर्तबा नेहरूजी के निमन्त्रण से गये थे—तब यह बात हुई थी। अभी हम जब पंजाब में घूम रहे थे तब प्लानिंग कमीशन के मार्गों से जब बात हुई तब मैंने कहा कि मुझे ऐसा लगता है कि आपकी वह Theory of Percolation है। उन लोगों ने कहा कि आपकी बात ठीक है। आज जो चल रहा है उससे वे लोग भी बहुत ज्यादा सन्तुष्ट नहीं थे। कुल मिलाकर बात ऐसी है कि हमारा प्लानिंग में करुणा लाया है, न समत्व की तरफ ही ले जा रहा है। ऐसा हो तो योगशास्त्र में जो शब्द है— विवेकनिम्नं कैवल्यप्राग्भारं चित्तम्। याने मोक्ष की तरफ जाना है तो विवेक की दिशा में जाना होगा। थोड़ी कहीं

जाता है। मोक्ष की तरफ जाता है। लेकिन कहाँ से जाना होगा—विवेक की दिशा में। जैसे पानी निचान की तरफ जाते-जाते समुद्र की तरफ जाता है वैसे योगी विवेक की तरफ जाते-जाते कैवल्य में पहुँचेगा। वैसे ही हम करुणा की तरफ जाते-जाते समत्व में पहुँचेंगे। योगशास्त्र की भाषा में बोलें तो समाज-रचना ऐसी होनी चाहिए— करुणाभिमुखं साम्यमाम्नातम्। करुणा की दिशा हो और समत्व की तरफ जा रहे हों ऐसा होना चाहिए। अब यह प्रक्रिया न करुणा की तरफ जा रहा है और न समत्व की तरफ। मतलब इसमें उत्पादन बढ़े जिससे गुलामी हो यह दृष्टि है। वेलफेयर स्टेट में यही होता है।

यह दुर्दैवी योग

लोगों में इनीशियेटिव कैसे आये? हम भक्तजन हमेशा बोलते थे कि भगवान् को हम समर्पण करना है। आज सभी समाज में सरकार को समर्पण करने की बात चलती है। यह समर्पण योग—दुर्दैवी योग है। हम पावर डेलीगेट करते हैं। हमारे लिए सब कुछ आप करें यह लोगों की भावना सरकार के लिए है। हमारे लिए मरने का काम भी आप करें, इतना नहीं कहते हैं—इतना ही बाकी है। अगर ऐसा लोग कहते, तो यह प्रतिनिधि करेंगे और फिर इतनी सेवा करने के लिए वे तैयार नहीं होंगे। भगवान् को आप भगवान् बनाते हैं—सर्वेश बनाते हैं। अब कितना भी किसीका दिमाग बड़ा हो चाहे पचास दिमाग इकट्ठा हों; फिर भी वह भगवान् कैसे बनेगा? इसलिए आप चुन-चुनकर लोगों को दें तो भी उनका दिमाग यह नहीं कर सकेगा कि वे सब लोग कर सकते हैं। पहला 'कम्युनिटी प्रोजेक्ट' या पंचवर्षीय योजना। उसमें यह तय किया गया था कि पहले ५-६ प्रोजेक्ट बनायेंगे और फिर आखिर सारे भारत में फैलायेंगे। लेकिन यह पाया गया कि सारे भारत में नहीं बना सकते हैं तो आखिर राष्ट्रीय सेवा विस्तार शुरू हुआ। लेकिन कुछ काम हम डेवलपमेण्ट—विकास—करते हैं तो बाकी हम पर ताकते रहते हैं।

जनता सुप्त शक्तिशून्य बन गयी है

दक्षिण के लोगों का आक्षेप ही है कि जो भी योजना बनायी जाती है उत्तर हिन्दुस्तान में बनायी जाती है दक्षिण के लोगों के लिए नहीं बनायी जाती है। तो उनको उत्तर दिया गया था कि दक्षिण भारत में नदियाँ नहीं हैं तो हम क्या करें। अखिल भारत की सरकार होकर हम ऐसा उत्तर नहीं दे सकते हैं। सरकार की पर्जन्य की तरह वृत्ति होनी चाहिए, सबको समान पानी मिलना चाहिए। लेकिन होता यह है कि जिस क्षेत्र में विशेष प्रभावशाली लोग होते हैं वहाँ काम शुरू हो जाता है। बिहार में हम गये तो कुछ जगह लोगों ने ऐसी शिकायत की थी कि हमारे प्रतिनिधि कमजोर हैं इसलिए हमारे यहाँ ब्लाक नहीं बन पाये। ज्यादा ताकतवान प्रतिनिधि हो तो अपने क्षेत्र में वह Block वगैरह करा लेता है और ऐसा भाग दूसरों के मत्सर के लिए कारण होता है। ऐसा एक ही विकसित विभाग हो तो वह आसपास के कमजोर क्षेत्रों का शोषण करता है। इसलिए सरकार का काम नहीं होता है। कुछ भारत में जहाँ-जहाँ लोग initiative लेंगे वहाँ-वहाँ हम काम करेंगे और वहाँ-वहाँ हम Project खड़े करेंगे। आज क्या होता है—हिंदुस्तान का नकशा हमें दिखाते हैं और कहते हैं कि यहाँ एक प्रोजेक्ट बना है वहाँ एक प्रोजेक्ट बना है। बीच में जगह छोड़ी है और फिर एक प्रोजेक्ट बना है। इस तरह जगह छोड़कर प्रोजेक्ट बना है, तो वह नकशा कैसे दिखता है। जैसे शरीर पर चेचक हुआ हो तो कहीं-कहीं फोड़ा दीखता है। वैसे कहीं फोड़ा और कहीं खाड़ा। इसका मतलब यह हुआ कि विषमता बढ़ती जाती है और उत्पादन बढ़ाने में हम कमी हैं तो अमेरिका जैसा हम करेंगे ? फिर अमेरिका को यह कहना होगा कि आप हमारे गुरु हैं और हम आपके पीछे आपके गये-बीते शिष्य जाते रहेंगे। आज अमेरिका जो कर रही है वही अगर हिन्दुस्तान करेगा तो आज अमेरिका जहाँ पहुँची है, वहीं हिन्दुस्तान पहुँचेगा। मतलब हिंसा और डर आयेगा।

दुनिया में आज नहीं हो रहा है। सब ताकत सरकार में देकर जनता खुद शक्तिशून्य हो गयी है।

यह काम मानव का नहीं है

इसलिए जगह-जगह हम जाते हैं। हमारी नजर जाती है कि लोगों की तरफ से क्या काम हो रहा है। आप सब लोग मजदूर हैं, लेकिन आपसे भी मैं यही कहूँगा कि आपको आपसे भी नीचे हैं—दुःखी हैं, वे इन्दौर में पड़े हैं उनका खयाल करना चाहिए। हमारा चिन्तन करुणा मूलक होना चाहिए। आप नीचे की श्रेणी के हैं लेकिन आपके भी नीचे की श्रेणी के लोग हैं। सिर्फ आर्थिक खयाल से ही नहीं सामाजिक खयाल से भी। मेहतर सबसे ज्यादा नीचे का माना गया है। दिल्ली में एक बार भंगियों की मीटिंग हो रही थी। हम भंगी-निवास में ठहरे थे। हम उस मीटिंग के अध्यक्ष थे। उस मीटिंग में बाबू जगजीवनरामजी बोले 'कोई भी नीच-से-नीच हो निष्काम भाव से करे, तो वह काम मानव-धर्म में आता है। यह भंगी का काम ही ऐसा है, जो मानव के लिए है ही नहीं। यह काम स्वयमेव अधर्म का है धर्म का नहीं है।" यों कहकर उन्होंने मुझे पूछा कि 'क्यों विनोबाजी मैं ठीक कह रहा हूँ?" मैंने कहा कि 'हाँ ठीक है।" तो फिर और उत्साह से उन्होंने आगे कहा कि "कोई भी काम ऐसा नहीं है जिसमें दूसरी जातियाँ शामिल न हुई हों। चमारी के काम में ब्राह्मण भी आते हैं। कई ब्राह्मण ऐसे हैं, जो मिलिटरी में गये हैं उनके हाथ में तलवार आयी है और दूसरे मनुष्यों को कत्ल करने तक के काम ब्राह्मणों ने किये हैं। इससे बदतर काम ब्राह्मण के लिए और क्या हो सकता है? सेना में ऊपर से नीचे तक ब्राह्मण लोग भी हैं लेकिन भंगी काम की उन्हींको मोनापली है। हर काम में काम्पीटिशन होती है लेकिन इस काम में नहीं होती है। मतलब सीधा यही हुआ कि यह काम मानव के लिए नहीं है। ऐसा काम हम उनसे ले रहे हैं और हम हमारा कर्तव्य क्या है यह नहीं सोचते हैं।

काम हमारा है वे कर रहे हैं

अप्पासाहब मुझे कह रहे थे कि जब वे सफाई के लिए जाते हैं, तब कुछ लोगों ने हमको कहा कि विनोबाजी के आगे भंगी का काम करते हैं। अप्पासाहब ने उन्हें समझाया कि भाई, यह भंगियों का काम नहीं है, यह हमारा ही काम है। हमारा मैला साफ करना हमारा ही काम है। काम हमारा ही है और वे कर रहे हैं। इसलिए हम हमारा काम ले रहे हैं ऐसा जवाब अप्पासाहब ने उनको दिया—जैसा कोई प्रोफेसर विद्यार्थी को समझाता है।

हम कितनी गलती कर रहे हैं!

जैसे बाल इन्चार्जी होती है टेंनिग इन्चार्जी होती है वैसे नहलान की इन्चार्जी हो काम या दाँत माँजने की इन्चार्जी हो जाय तो कितने ही लोगों को पूरे दिन की इम्प्लायमेन्ट मिलेगी। मान लीजिये कि एक मनुष्य के दाँत माँजने के लिए १ मिनट लगते हैं और एक मनुष्य को काम मिलता है तो ५ के पीछे एक याने १ करोड़ के लिए २ लाख व ४ करोड़ के लिए ८ लाख को इम्प्लायमेन्ट मिलेगी। Division of Labour होगा। तरह-तरह की इम्प्लायमेन्ट मुझे सूझती है और प्लानिंग कमीशन को नहीं सूझती। क्यों नाहक बेकारी-बेकारी चिल्लाते हैं! (इस विनोद पर सारी सभा खिलखिला उठी) हम इतने ऊँचे नहीं गये कि हमारे दात दूसरे साफ करें। वैसे ही मैला साफ करने का काम दूसरे को देना गलत है। लेकिन हमने यह काम भंगियों को दिया और फिर भी उनीको पतित माना। गन्द बोकर उनके हाथ में दिये और उनको पतित बनाया और हम समझते हैं कि हम ऊँचे हैं वे नीचे हैं यह बिल्कुल ही गलत बात है।

करुणा की गंगा को बहने दो

माता बच्चे का पाखाना उठाती है तो भी हमने उसे नीच नहीं माना है। 'मातृदेवो भव' कहते हैं। लेकिन आखिर में हमें यह करुणा

होगा कि पाखाना साफ करने का काम हमें करना होगा। यह निसर्ग है स्वाभाविक है—जैसे मेरी नींद आप तो नहीं सकते हैं, मेरा खाना आप खा नहीं सकते हैं, वैसे मेरा पाखाना साफ करने का काम मुझे ही करना चाहिए। कम-से-कम अपने परिवार का काम हम करें। ऐसी भावना हो जाय, तो नीचे का वर्ग जो हमने दबा रखा था, उसके लिए हमारे मन में करुणा पैदा होगी और एक दया नदी बहने लगेगी, तो दूसरे क्षेत्र में भी फैलेगी—बहने लगेगी।

कस्तूरबानगर (इन्दौर) —स्वागत-प्रवचन
२४-७-६

इंदौर स्त्री-शक्ति के विकास के लिए, उसका प्रयोग करने के लिए एक अच्छा स्थान हो सकता है ऐसी मेरी श्रद्धा है। इन्दौर में महिला समाज काफी शिक्षित है। महिलाओं का इतना बड़ा शिक्षित समाज मध्यप्रदेश में और दूसरी जगह नहीं है। दूसरे प्रदेशों में भी ऐसे थोड़े स्थान हैं जहाँ इतना शिक्षित महिला समाज है। यहाँ आप लोगों से हमने बहुत बड़ी अपेक्षा रखी है।

स्त्रियों का बहुत बड़ा जिम्मेदारी का काम घर में है। बच्चों की सेवा, उनका संगोपन, घर-संगोपन अतिथि-सेवा का काम यह उनकी पहली जिम्मेदारी है। उस जिम्मेदारी को बहन काफी अच्छी तरह से निभा रही हैं। सबका यह मानना है कि स्त्रियों का यह पहला काम है। उनका एक यह भी काम माना जाता है कि अपनी संस्कृति की सभ्यता को समाज के धर्म की रक्षा करना और शुद्ध रूप में उसे कायम रखना इन सबका रक्षण करना—यह जिम्मा पुरुषों का भी होना चाहिए, लेकिन हिन्दुस्तान में ज्यादा जिम्मेदारी स्त्रियों की मानी गयी है। लोकमान्य तिलक ने कहा था कि हिन्दुस्तान में निःसंशय स्त्रियों ने धर्म की रक्षा की है। इन दो जिम्मेदारियों के अलावा स्त्रियों की तीसरी जिम्मेदारी है पुरुषों के काम में योग देना। किसान की स्त्री उसके काम में मदद करती है बुनकर की स्त्री उसे मदद पहुँचाती है मेहतर की स्त्री उसकी मदद करती है—घर-काम के अलावा पुरुषों के काम में भी स्त्रियाँ मदद करती हैं।

एक बड़े काम की अपेक्षा

इन तीनों कामों के अतिरिक्त एक बहुत बड़ा काम स्त्रियों से चाहते

है वह यह कि पुरुषों का बिगाड़ा हुआ काम स्त्रियाँ उठा लें तो सारी दुनिया को एक राहत मिलेगी। इन पचीस साल के अन्दर-अन्दर जो महापुरुष हुए। जगह-जगह छोटी-छोटी लड़ाइयाँ चलती हैं। आये दिन अखबार में खबर आती है कशमकश की। जिस समाज-रचना को पुरुष नहीं सँभाल सके वह समाज-रचना बनाने की बात स्त्रियाँ सँभालें। इसके आगे आनेवाला समाज स्त्रियों से यही अपेक्षा रखेगा कि समाज की जो हालत पुरुषों ने बिगाड़ी है उसे स्त्रियाँ सँभालें और बागडोर अपने हाथ में लें। इसीलिए मैं शांति-सेना का काम करता हूँ। ऐसी स्त्रियाँ निकल सकती हैं चाहे उनकी संख्या छोटी हो। जहाँ भी दंगा फसाद का मौका हो वहाँ स्त्रियाँ पहुँच जायें और लड़नेवाले को शान्ति से रोकें। शान्ति-सेना का काम स्त्रियों को उठाना चाहिए। उनको राजनीति से मुक्त रहना चाहिए, अलग्न रहना चाहिए। राजनीति में तरह-तरह के झगड़े होते हैं। उसमें पुरुषों को फँसने दो लेकिन आपको बिलकुल अलिप्त रहना चाहिए। जहाँ आप रहती हैं, वहाँ के गाँव में या नगर शहर में रहती हों तो हर मुहल्ले में घर-घर जाकर परिचय रखें।

सर्वोदय-पात्र में पुराना संस्कार और नया विचार जुड़ा है

सर्वोदय-पात्र एक कायमी योजना है। इसे तो स्त्रियाँ अच्छी तरह कर सकती हैं। इसमें बच्चों की तालीम का एक बहुत बड़ा साधन है। अपने घर से मुट्ठीभर अनाज हम देते हैं तो यह प्रतिज्ञा भी होगी कि इस घर से किसी प्रकार की अशान्ति नहीं होगी। इस घर से कोई भी मनुष्य अशान्ति के काम में शामिल नहीं होगा। बच्चा भी सौ़ग्य कि खाने के पहले समाज के लिए देना है। इसमें पुराना संस्कार और नया विचार जुड़ा है। इसलिए वह शान्ति का प्रतीक है। इसके लिए बहुत काम करना होगा। तब हर घर में सर्वोदय-पात्र रखा जायगा।

अन्धकार का मुकाबला प्रकाश से

इसके अलावा महात्मा गांधी ने स्त्रियों को एक बहुत बड़ा कार्यक्रम

दिया था। उनके ज़माने में स्त्रियों ने काफी काम भी किया है। शराब बन्दी के सिलसिले में जब महात्मा गांधीजी के सामने सवाल आया कि शराब की दूकान में जो शराबखोर आते हैं उनको कौन रोके? यह काम करने के लिए वहाँ कौन जाय? तब महात्मा गांधी ने कहा कि इस काम के लिए स्त्रियाँ जायगी। सुननेवाले लोग ताज्जुब में पड़ गये। कहने लगे: "वह तो ऐसी जगह है जहाँ बदमाश आते हैं। वह मार्गों का मुकाबला कौन करेगा?" गांधीजी ने कहा: "अन्धकार का मुकाबला प्रकाश करेगा। स्त्रियाँ अपनी संस्कृति का सर्वोत्तम अंश हैं। इसलिए स्त्रियाँ ही इस काम के लिए जायँ, तो अच्छा होगा उसका असर होगा।" और देखा कि उस कार्यक्रम में स्त्रियों ने काफी काम किया और काफी मारों को शराब पीने से परावृत्त किया। उस समय तो पुलिस की लाठियाँ भी खानी पड़ी थीं। हिन्दुस्तान के इतिहास का यह एक बहुत बड़ा उज्ज्वल प्रकरण है।

स्वच्छता के बाद शराबबन्दी

यहाँ भी शराबखोरी चलती है। अब आप लोगों को देखना चाहिए कि यह कैसे बन्द हो। किसीने मुझे पूछा कि स्वच्छता के बाद आप कौन-सा प्रोग्राम देंगे? तो मैंने कहा था कि शराबबन्दी का बड़ा-बड़ा प्रोग्राम है वह लिया जा सकता है। स्वच्छता का काम जब पूरा होगा तब धीरे धीरे ऐसे काम भी हमारे सामने पेश होंगे लेकिन शराबबन्दी के काम में हमेशा भी है। उसमें राजनीति दाखिल हो सकती है। लेकिन हम उसे ऐसा रूप न दें। हम जगह-जगह इसके लिए लोकमत तैयार करें। लोकमत के बनने का उपयोग कर तो यह काम हो सकता है। मेरा मन ऐसा नहीं है कि एक प्रोग्राम पूरा होने के पहले दूसरा काम लें।

हमने स्वच्छ काशी का प्रोग्राम चलाया था। उस समय मैंने कहा था कि काशी में शराबबन्दी का आन्दोलन होना चाहिए और अगर किसी तरह से यह नहीं होता है तो शराबबन्दी के लिए हम सत्याग्रह

भी कर सकते हैं। वहाँ के जो मुख्य मन्त्री हैं उन्होंने मेरे ये शब्द सुनकर कहा कि ऐसी नौबत नहीं आयेगी। मेरी सांस्कृतिक वृत्ति यह बिल्कुल बरदाश्त नहीं करती कि हिन्दुस्तान में और उसमें भी काशी में शराब चले। इन्दौर का क्षेत्र महारानी अहिल्याबाई का क्षेत्र है। ऐसे क्षेत्र में शराब बिल्कुल बन्द होनी चाहिए। इन्दौरवालों को इसके सम्बन्ध में गम्भीरता से सोचना चाहिए।

सुग्रीव वचन भूल गया'

अक्सर देखा गया है कि लोग हमारे काम के लिए कभी 'ना' नहीं कहते। उनकी भावना अच्छी है। लेकिन हम 'तकाजा' करनेवाले लक्ष्मण भी खड़े करेंगे। रामजी किष्किन्धा पहुँचे, उस समय वहाँ सुग्रीव और बालि का झगड़ा चल रहा था। रामजी ने बालि के संकट से सुग्रीव की मुक्ति की और उसके बदले में सुग्रीव ने कबूल किया कि सीताजी की खोज के लिए वह सेना भेजेगा। रामजी ने अपने वचन के अनुसार दो दिन में काम सम्पन्न कर वचन का पालन किया। इसके बाद बारिश शुरू होने पर उनको रुकना पड़ा। वे शहर के बाहर खोपड़ी में आकर ठहरे और इधर सुग्रीव अपना वचन भूल गया। सेना भेजने का काम भूल ही गया। मन तो वह था लेकिन अब काम कल करेंगे परसों करेंगे इस तरह आगे के लिए टालता गया। आखिर भूल गया। रामजी ने देखा चार महीने हो गये सुग्रीव काम नहीं कर रहा है तो उन्होंने लक्ष्मण से कहा कि जरा देख तो क्या बात है? लक्ष्मण सुग्रीव पर बहुत नाराज हो गये और उन्होंने कहा: 'देख ही लूँगा।' उन्होंने चाप उठाया और चलने लगे। रामजी ने कहा कि "जरा शांति से काम लो।" लक्ष्मण जाने लगे तो हनुमान ने यह खबर सुग्रीव के पास पहुँचायी और कहा कि तू कैसा मूर्ख है? रामजी को तुमने वचन दिया और भूल गया?" घबड़ाकर सुग्रीव ने सेना भेजने की तैयारी की। लक्ष्मणजी वहाँ पहुँचे। उनकी आँख तेजस्वी थीं। वे अत्यन्त प्रेमी थे, नर्म दिल के

थे लेकिन उनके दिमाग में तकलिफा थी। उनका गुस्सा देखकर सुग्रीव ने हाथ जोड़कर कहा कि "आप तो भगवान् हैं अपराधी को क्षमा करना आपका धर्म है। इतने दिन मैं विषयासक्ति में फँसा रहा। लेकिन अब मैं जरूर वचन का पालन करूँगा।" रामजी ने देखा कि सुग्रीव ने सेना भेजी है तब वे शांत हो गये।

तकाजा करनेवाले लक्ष्मण चाहिए

रामजी को दिया हुआ वचन भी सुग्रीव को याद नहीं रहा, तो हम तो फिर पेड़ के पत्ते हैं कि लोगों ने जो वचन हमको दिये उन्हें वे याद रखेंगे। वे तो भूलेंगे ही। हिन्दुस्तान के लोग अच्छे काम के लिए कभी 'ना' नहीं कहते। लेकिन उसके पालन के लिए याद दिलाई करते हैं। इसलिए मैंने कहा कि तकाजा करनेवाले लक्ष्मण चाहिए। सर्वोदय में भी लक्ष्मण की जरूरत है। हिन्दुस्तान में लक्ष्मण-भक्ति कम है, सुग्रीव भक्ति ज्यादा। इसलिए ऐसा हो सकता है कि सर्वोदय-मित्र भी बीच-बीच में भूल जायें, तो हम उम्मीद करते हैं कि बहनों में से हमें ऐसे लक्ष्मण मिल जायें, जो तकाजा करके सर्वोदय-मित्रों को याद दिलायेंगी। यह काम बहनें कर सकती हैं। बहनों का एक गुण यह है कि वे एक बार पकड़ी हुई चीज कभी नहीं छोड़तीं। सुग्रीव जैसे भक्तों को समझाने का काम लक्ष्मण करेंगे। स्त्रियाँ लक्ष्मण बनेंगी, सुग्रीव-भक्तों को याद दिलायेंगी और बाकी सारी सेना होगी। इस तरह एक रामदीप नित्य इंदौर में खड़ा हो ऐसी हम उम्मीद करते हैं।

कस्तूरबाग्राम (इन्दौर) —स्त्रियों की सभा में
१०-८-६०

गांधी विचार का नमक खानेवाले ११

राज खुला

आज दुनिया में हिंसा का बोलबाला है। पुराने जमाने में हिंसा की मान्यता थी लेकिन आज हिंसा एक संहारक शक्ति बनी है। संरक्षण तो वह नहीं करती फिर भी आज हिंसा पर लोगों की श्रद्धा है। वह क्यों है—इसका राज जब मैं कश्मीर गया तब खुला। वहाँ सीमा पर पाकिस्तान की और हिंदुस्तान की सेना आमने-सामने खड़ी है। दोनों बाजू बेचारों की जमात खड़ी है। मैंने जब वह दृश्य देखा तब जो विचार मेरे दिमाग में आया वह पहले कभी नहीं आया था। जिसे वे लोग सीज फायर लाइन (Cease Fire Line) कहते हैं उसका मतलब है 'कीप रेडी फॉर फायर' (Keep ready for Fire) याने जिस क्षण हुक्म हुआ उस क्षण लड़ने के लिए तैयार रहने की वह लाइन है। इतना सारा खर्च हो रहा है और वे वहाँ खड़े हैं। उनकी एक श्रद्धा है—उन्हें एक हुक्म मिला है इसलिए वहाँ खड़े रहना है। इस तरह पूर्ण देशाभिमान से वे वहाँ खड़े हैं।

शांति के लिए उनके चरण-चिह्नों पर चलना होगा

हिंसा यह जो संगठित होने की ताकत सिखाती है उसमें आज भी लोगों को श्रद्धा है। हिंसा से रक्षण होता है, राहत मिलती है यह उन्हें मालूम है। अब यह पक्की बात है कि vested interest की बात होती है। लेकिन यह श्मशान की बात अलग है। शांति की स्थापना और समाज की रक्षा का जहाँ सवाल आता है, वहाँ हिंसा समाज को थोड़े में राहत दे सकती है। यह ताकत यदि अहिंसा सिखायेगी तो जो श्रद्धा आज

हिंसा में है वह नहीं रहेगी। अहिंसा अपना नूर बतावेगी तो अहिंसा पर भी श्रद्धा बैठेगी।

सन् १९४८ में प्रार्थना सभा में महात्मा गांधी परमेश्वर के पास पहुँच गये। उस समय मशहूर सेनापति जनरल मैकआर्थर ने कहा था : "शस्त्रों के जरिये हम चाहे जितना पराक्रम करें, लेकिन गांधीजी ने जो राह अपनायी थी वह अपनाये बिना दुनिया में शान्ति कभी नहीं होगी।" आप शायद नहीं जानते होंगे कि उसके बाद 'मैकआर्थर' पैसिफिस्ट यानी शान्तिवादी बन गये। कहने का तात्पर्य यह कि आज हिंसा करनेवाले सेनापति की भी हिंसा पर श्रद्धा नहीं है दूसरों की तो है ही नहीं।

हिंसा को माननेवाले बीते हुए जमाने के स्मारक

यह बात अलग है कि कोई हिंसा का गीता का आधार लेकर भ्रम से वे पुराने जमाने के स्मारक हैं। उनके साथ बहस नहीं करनी चाहिए। मैं भी उनके साथ बहस नहीं करता हूँ। वे कभी-कभी आते हैं और पूछते हैं कि क्या स्थितप्रज्ञ को हिंसा नहीं करनी चाहिए? मैं उनको जवाब देता हूँ कि भाई इस चर्चा का क्या उपयोग? न आप स्थितप्रज्ञ हैं और न मैं। लेकिन आज दुनिया का कोई भी सयाना आदमी हिंसा पर विश्वास नहीं करेगा और हिंसा में जो ताकत है संगठन करने की उस प्रकार की ताकत अहिंसा दिखायेगी तो अहिंसा के अनुकूल लोगों की वृद्धि हो जायगी और वे अहिंसा पर विश्वास और श्रद्धा करने लग जायेंगे।

हिंसा में व्यक्तियों का इकट्ठा करने की जो बात होती है वह अहिंसा में नहीं होती। अहिंसा में संख्या की नहीं गुणों की जरूरत है। यहाँ जो अत्यन्त गुणवान् होगा वह जो काम करेगा वह हिंसा नहीं करेगी। इसलिए दोनों में गुणात्मक फरक है। लेकिन कुछ छोटे-मोटे कामों में संख्या की जरूरत होती है। वह भी थोड़ी संख्या बहुत बड़ी नहीं। वे अगर १५ हजार भेजते हैं तो हमें २० भेजने की जरूरत होगी।

गांधी-विचार में माननेवालों का कर्तव्य

पर सवाल यह है कि संख्या कौन लाये कहाँ से लाये कौन आयेगा ? सेना में तो १८ २ की उम्रवाले भरती होते हैं जवान भरती होते हैं। अहिंसा में यह जरूरी नहीं है कि जवान ही आयेंगे। उसमें बूढ़े भी आ सकते हैं। बहन-भाई बच्चे तक भी आ सकते हैं। आन्तरिक गुणों का सवाल है। इसलिए इसमें बहुत से लोग आ सकते हैं। कौन आयेंगे ? मुझे लगा कि जो लोग गांधी विचार मानते हैं, *किस किसी क्षेत्र में काम करते हों उन्हें शान्ति-सैनिक होना ही चाहिए।* अगर वे शान्ति-सैनिक नहीं बनते हैं तो नमकहराम बनते हैं।

अब ये खादीवाले हैं। खादी इन्हें खिलाती-पिलाती है। इनका पोषण करती है रक्षण करती है। वे शान्ति-सैनिक नहीं बनते हैं तो इसका अब यह हुआ कि खादी इनका बचाव करती है लेकिन उसका बचाव वे नहीं करते। अब नयी तालीम का विचार है। उसमें हमारा टेकनिक क्या हो तन्त्र क्या सिखाया जाय, तन्त्र और मन्त्र की बहुत चर्चा चली। *नयी तालीम जीवन का मन्त्र है और चरखा वगैरह उसके यन्त्र हैं।* तन्त्र मन्त्र यन्त्र तीनों का काम लेकिन मन्त्र उसमें यह है कि जितने नयी तालीम का काम करनेवाले शिक्षक हैं वे पेरीपेटिकली, सहज ही शान्ति-सैनिक होने चाहिए। वे शान्ति-सैनिक नहीं बनते हैं, तो नमकहराम बनते हैं। याने अहिंसा उनका पालन कर रही है रक्षण कर रही है लेकिन अहिंसा का पालन और रक्षण करने के लिए हम तैयार नहीं हैं। शास्त्र में एक वचन है 'धर्मो रक्षति रक्षितः'। धर्म आपका रक्षण करेगा—अगर आप उसका रक्षण करेंगे। सत्य हमारा पालन करेगा अगर हम सत्य का पालन करेंगे। गाय हमें दूध देती है और हमारा पालन करती है लेकिन हम उसका पालन न करें, तो वह हमारा पालन कैसे करेगी ? यह जिम्मेवारी परस्पर पालन की है। नयी तालीम तब दिखेगी जब देश में शान्ति-सेना का काम नयी तालीम के शिक्षक उठायेंगे।

कस्तूरबावालों ने आज तक सेवक वेलफेयरवालों का काम करने में परोपकार किया है। लेकिन मैंने कहा, परोपकार तो करो; पर अपने लिए करना रखो। नहीं तो हम यहाँ टिक सकते। अगर हम नहीं टिकेंगे तो दूसरे को क्या ट्रेनिंग देंगे ? देश में अशान्ति हो गोली चले और अखबार में वही चर्चा चले और हम अपना काम करते रहें यह उचित नहीं है। हम सबको बाकायदा शान्ति-सैनिक होना चाहिए। उनकी संस्था की ओर से यह हुक्म होना चाहिए कि कहीं भी अगर अशान्ति होती है, आग भड़कती है तो उसके शमन के लिए दौड़ना चाहिए। समाज की शान्ति-स्थापना के लिए कुछ लोग नहीं जा सकते हैं तो थोड़े भेजें और कम-से-कम अपने क्षेत्र में तो शान्ति का काम करें।

हम यह काम नहीं करते हैं, तो 'नमकहराम' साबित होते हैं

यह काम हम नहीं करते हैं तो हम नमकहराम साबित होते हैं। इसे आप गाली मत मानिये। यह तो परमेश्वर है। आज मातृस्थान पर प्रहार हो रहा है अहिंसा माता है उस पर प्रहार हो रहा है खादी-वाले उसके प्यारे लड़के हैं नयी तालीम का काम करनेवाले भी उसके लड़के हैं। माता किसी एक बच्चे की तो नहीं होती इसलिए अहिंसा के बचाव की जिम्मेवारी किसी एक की नहीं हो सकती है। यह कोई नहीं कह सकता कि अहिंसा के बचाव करने की जिम्मेवारी सिर्फ नयी तालीम-वालों पर है। माता के बचाव करने की जिम्मेवारी उसके सब लड़कों पर होगी।

यह जो सिविल और मिलिटरी सर्विस का भेद है यह हिंसा में होता है। शिक्षक हिंसामूलक गवनमेंट के स्कूल में काम करते हैं। लेकिन शिक्षक जो काम करते हैं उन्हें यह नहीं कहा जा सकता कि तुम मिलिटरी में चलो। उनकी सिविल सर्विस मिलिटरी सर्विस नहीं होती। यह भेद अहिंसा में नहीं है। शान्ति की रक्षा की जिम्मेवारी हरएक पर आती है। जो अहिंसा में विश्वास करता है वह शान्ति-सैनिक होगा। अब यह बात

सकता है कि कुछ लोग ऐसे हों जो अपना काम करते हुए एक जगह रहें और मौके पर शान्ति के लिए दूसरे स्थान पर जायें और कुछ लोग रनिंग याने हमेशा के लिए शान्ति-सैनिक बने रहें। लेकिन यह तो नहीं हो सकता कि कुछ शान्ति-सैनिक हों और कुछ अशान्ति-सैनिक। आपकी ऐसी शक्ति को यह इजाजत देनी चाहिए और उत्तेजन देना चाहिए कि शान्ति की स्थापना करने के लिए, मौके पर मर-मिटने के लिए हम जायें। आज से तो कोई मर मिट नहीं सकता है, लेकिन इस विचार को उत्तेजन दें।

शान्ति-सैनिक के मरने से सर्वोदय यश

अनेक लोग मुझ पर आक्षेप करते हैं कि बाबा एक काम पूरा नहीं करता बीच ही में दूसरा उठा लेता है। मैं कहता हूँ हाँ भाई मैं अयशस्वी होना चाहता हूँ। मुझे थोड़ा यश मिल रहा है ऐसा मैं देखता हूँ, तो फौरन उस काम को छोड़ देता हूँ। इस तरह विनोद मैं करता हूँ, लेकिन उसमें तथ्य भी है। चार-पाँच महीने पहले असम के लोगों ने मुझे कहा था कि लखीमपुर जिले को हम सर्वोदय जिला बनायेंगे। वहाँ कुछ ग्रामदान हुए हैं इसलिए वहाँ हम काम करेंगे। हमने बहुत आनन्द प्रकट किया और साथ-साथ यह भी कहा कि यह तो ठीक है, लेकिन आपको एक शहर लेना चाहिए। क्योंकि शहर Nerve Centre होता है। उसका असर आसपास के देहातों पर होता है। कम-से-कम एक शहर और एक जिला इस काम के लिए लें तो अच्छा होगा। उन्होंने 'हाँ' कहा और गोहाटी शहर लेने की बात कही। पुष्प की बात है कि उसी शहर में ब" दंगे हुए और लोग शरणार्थी बने। ४ हजार लोग 'रिफ्यूजी' बने और उन्हें फिर से बसाने की बात होगी। वहाँ जो कुछ भी हुआ उसमें मुझे यह मालूम होता कि उसमें दो-चार शान्ति-सैनिक काम आते मरे और फिर भी अशान्ति वहाँ जारी रही तो भी बहुत उज्ज्वल यश सर्वोदय को मिलता आपको और मुझे मिलता।

नागपुर में चण्डी

आये दिन ऐसी घटनाएँ होती हैं। नागपुर में मराठीभाषी लोग हैं। लेकिन वे महाराष्ट्र से अपना एक अलग प्रान्त माँगते हैं। उसका आन्दोलन कर रहे हैं। उसके लिए उन्होंने एक चण्डी बनायी और उसके हाथ में एक भाला दिया। यह हिन्दू देवता की विडम्बना है। क्या आप ऐसा देवता बना सकते हैं? उसका एक शास्त्र है। राष्ट्रीय झण्डा कितना लम्बा-चौड़ा होना चाहिए, इसका भी एक शास्त्र है। लेकिन 'चण्डी' देवी बनायी जो मराठा जवान के छाती में भाला मार रही है यह कोई देवी है? यह धर्म की विडम्बना है। कोई भी धर्मशास्त्र अपने धर्म की ऐसी विडम्बना नहीं करता। अब तो उन्होंने उसका विसर्जन कर दिया है और जाहिर भी किया है कि इलेक्शन के जरिये वे अपनी माँग प्राप्त करेंगे। देर से ही क्यों न हो उन्हें यह अक्ल आयी यह खुशी की बात है।

आज देश में ऐसी स्फोटक परिस्थितियाँ हैं। उसके लिए मसले की जरूरत नहीं है। कहीं-न-कहीं कुछ निमित्त हो जाता है तो एकदम स्फोट प्रकट होता है। शान्ति-सेना की आज कितनी आवश्यकता है यह दिन-ब-दिन मैं महसूस कर रहा हूँ।

शान्ति-सेना के बिना भूदान का काम नहीं होगा

भूदान और ग्रामदान-कार्यकर्ताओं का शान्ति-सेना के बिना काम नहीं चलेगा। मालिक और मजदूर झगड़ते रहें, मालिक मारे जा रहे हों तो हममें और कम्युनिस्टों में क्या फरक रहेगा? हम प्रेम से मिल्कियत छुड़ाना चाहते हैं। हम प्रेम का नाम लेते हैं लेकिन जहाँ ऐसे मसले खड़े होते हैं वहाँ हम शान्ति को न बचायें और अपनी चमड़ी बचाते रहें तो हमें कोई दान नहीं देगा। आज की हालत में हम शान्ति करते हैं तो उन्हें विश्वास होगा और वे दान देंगे। उनके दिल में करुणा का स्पर्श होगा और वे समझेंगे कि ये हमारे प्यारे भाई हैं और इन्हें दान जरूर देना चाहिए।

कश्मीरघाटी में भी 'भूदान' की प्राप्ति

मैं जहाँ-जहाँ गया भूदान माँगा है। इसकी उत्तम मिसाल कश्मीर है। वहाँ मैं एक दर्शन के लिए गया था लेकिन वहाँ सब पार्टीवालों ने मेरे सामने दिल खोलकर बात की। उसके साथ-साथ मैंने दान भी माँगा। अगर कोई काम किये बिना मैं ऐसे ही दर्शन के लिए जाता, तो न मालूम वे लोग क्या-क्या प्रचार करते। वहाँ तो सरकार ने भूदान के लिए जितना हो सके, उतना प्रतिकूल वातावरण किया। वहाँ सीलिंग हो चुका था। लोगों से जमीन ले ली थी। उन्हें मुआवजा देने की जरूरत नहीं मानी गयी थी। ऐसी वहाँ की परिस्थिति थी। वहाँ की एक मीटिंग में तो मुझसे सीधा सवाल पूछा गया था कि क्या यह बात ठीक है। मैंने कहा कि यहाँ आने पर मैंने देखा कि लोगों से जमीन छीनी गयी है तो मुझे दो बातों की खुशी हुई : (१) यहाँ की सरकार की गरीबों के लिए सद्भावना है और गरीबों के लिए कुछ न कुछ करने की उसे प्रेरणा हुई है। (२) यहाँ के लोग बेवकूफ नहीं बने। उन्होंने अपने भाइयों में जमीन बाँट दी। भूदान के लिए जनता में अनुकूल वातावरण था। बिलकुल छोटे-छोटे दान-पत्र मुझे मिले हैं। एक-डेढ़ एकड़ जमीन के भी मिले हैं। १ १२ एकड़ जमीन के भी मिले हैं। हजारों दानपत्र मिले। वहाँ की सरकार को भूदान के लिए कानून भी बनाना पड़ा—जैसे दूसरे प्रान्तों में हुआ है और मुझे जमीन भी अच्छी मिली। जो खराब जमीन थी, वह तो सरकार के पास बची गयी अच्छी जमीन भाइयों में बँटी थी। हमें भी अच्छी जमीन मिली। वहाँ की सरकार ने सीलिंग बनाकर रही जमीन हमसे छुड़ा दी।

हमने भूदान का काम छोड़ा नहीं है। वही हमारा मुख्य विचार है। उसके बचाव के लिए ही शान्ति-सेना की जरूरत है।

नन्दानगर (इन्दौर) —मजदूरों के प्रतिनिधियों से

१४-८-६

कुछ सुझाव

१. नियमितता सधे : जिस दृष्टि से हमें काम करना है, उसके लिए हमें अधिक सोचना चाहिए। सर्वोदय-मित्रों को यह तय करना चाहिए कि हमारे काम में खण्ड न पड़े। दिक्कतें आ सकती हैं। फिर भी हमारी कोशिश रहे कि नियमितता का भंग न हो। अभी इसका अभ्यास नहीं है। यह धीरे-धीरे होगा।

२. काम बाँट लें : हमें काम बाँट लेना चाहिए। सात दिन में हम घर बाँट लें। दुबारा उसी घर में, ठीक उसी समय पर जायेंगे। हम 'वार' भी तय कर सकते हैं।

३. पत्रक चलें : हमारे काम की जानकारी आपस में कार्यकर्ताओं को हो, इसके लिए खानगी पत्रक चले। उसमें हमारे समाचार सबको मिलेंगे।

४. तकाजा। पूरा समय देनेवाले कार्यकर्ता सर्वोदय-मित्रों को जगाने का, उनके पीछे तकाजा लगाने का 'करमम' का काम करेंगे।

५. बालकृष्ण की सेवा : कुछ काम वानर-सेना भी करती है। कुछ होनहार गरीबों के लड़के जिनके पास फीस के लिए पैसे नहीं हैं उनको हम मदद दे सकते हैं। वे हमारा काम कर सकते हैं। ऐसे लड़कों को हमेशा सम्पर्क में रखना चाहिए। यह जो शिक्षा के क्षेत्र हैं उनमें हम उसे मुख्य समझकर काम करते हैं तो बालकृष्ण की सेवा होगी। हमारे देश में बालकृष्ण की सेवा बहुत बड़ी मानी गयी है। हमें उन 'बालकृष्णों' की उपेक्षा न करनी चाहिए।

इन्दौर
१९-७-६ —सर्वोदय-मित्रों से

हिन्दुस्तान में वैदिक धर्म ने व्यापारी समाज की एक प्रतिष्ठा मानी है। उनका एक स्वतन्त्र धर्म भी माना गया है। उनके सेवा के जो काम हैं उन्हें वे यदि निष्काम भाव से करेंगे तो मुक्ति के लिए उनको और कुछ नहीं करना पड़ेगा। अपने कर्म में वे रत रहेंगे और अपना उद्योग परमेश्वर को कृष्णार्पण भाव से अर्पण करते जायें तो वे मुक्ति के अधिकारी हो सकते हैं। वैदिक धर्म में जितनी प्रतिष्ठा व्यापारियों की है, और किसी धर्म में हमने नहीं देखी है।

व्यापारी कौम जाग जायगी तो सरकार से भी अधिक काम होगा क्योंकि सरकार अनेकों की बनी है और व्यापारी व्यक्तिगत तौर पर काम कर सकते हैं। इसलिए अच्छा काम होगा। संस्थाओं को एक कानून लागू होता है। उसके अनुसार संस्थाएँ चलती हैं। वैसे ही सरकार का है। इस वास्ते व्यापारियों की व्यक्तिगत तौर पर जो ताकत है वह बहुत ज्यादा है।

शेर को भी खिलाना और गाय को भी तो ताकत कैसे बनेगी ?

मैं व्यापारियों की तरफ देखता हूँ और मेरा अनुभव भी है कि बहुधा व्यापारियों पर दबाव डालने की अनेक कोशिशें होती हैं। अंग्रेजों को करोड़ों रुपयों की सम्पत्ति व्यापारियों ने दी है। अब व्यापारियों को ही देना चाहिए, ऐसा नहीं है; फिर भी वे देते हैं जो उन पर दबाव डालते हैं उनको देते हैं। गांधीजी आये तो गांधीजी के काम के लिए भी उन्होंने दिया। जिसकी कमेटी पैसा वे ले सकते हैं उनको वे देंगे। अगर कांग्रेस कमजोर हो जाय जैसे केरल में कम्युनिस्टों का राज हो गया तब कई व्यापारियों ने उनको मदद की। व्यापारियों पर राजनैतिक सत्ता

का जो दबाव पड़ता है, वह उन्हें कभी सहन नहीं करना चाहिए। लोगों की सेवा पक्षमुक्त तरीके से करनी चाहिए। यह व्यापारियों का बाना होना चाहिए। वे कुछ करते भी हैं लेकिन दबाव पड़ता है। इतना ही नहीं पक्षों की तरफ से वे लड़ भी होते हैं। मैं मानता हूँ कि देश को आज एक ऐसे समाज की जरूरत है जो इन सबसे अलग रहकर इन सबकी सेवा करता रहे।

व्यापारी के आवश्यक गुण

व्यापारी में सत्य-निष्ठा अवश्य होनी चाहिए। जो अपने वचन पर बिल्कुल पक्के हैं वचन को नहीं तोड़ते हैं वे उत्तम व्यापार करनेवाले होते हैं। इसलिए व्यापारी में सत्य-निष्ठा एक बहुत महत्त्वपूर्ण गुण होना चाहिए।

व्यापारियों को चाहिए कि वे किसी पक्ष का पक्षपात न करें। ठीक तोलकर काम करें। ठीक सौदा करें। जिसकी गरज है उसकी हम पूर्ति करें। हर कोई सब चीज पैदा नहीं कर सकता। हम समाज के सेवक हैं, तो सेवकों का पक्षमुक्त होना चाहिए। खास करके हममें दया होनी चाहिए, करुणा होनी चाहिए।

हिन्दुस्तान का व्यापारी दयालु है और एक गुण उनमें है। वे बहुत सादगी से रहते हैं। अब नये लड़के शायद सादगी से नहीं रहते होंगे लेकिन कुल मिलाकर व्यापारियों में सादगी है वे शौकीन नहीं हैं। अगर योरप और यहाँ का व्यापारी दोनों लखपति हों लेकिन हिन्दुस्तान का व्यापारी ज्यादा शौकीन नहीं होता है सादगी से रहता है। यह भी देखा गया है कि जिनके पास ज्यादा पैसा नहीं है वे ही लोग हिन्दुस्तान में ज्यादा शौकीन रहते हैं। हिन्दुस्तान के व्यापारियों में यह चीज नहीं है। वे उद्योगी हैं दयालु हैं और उनमें सादगी है।

पार्टीवालों के दबाव से करुणा का विचार दब जाता है

लेकिन वे दब्बू बनते हैं। राजनैतिक सत्ता का दबाव उन पर पड़ता

हिन्दुस्तान में वैदिक धर्म ने व्यापारी समाज की एक प्रतिष्ठा मानी है। उनका एक स्वतन्त्र धर्म भी माना गया है। उनके सेवा के जो काम हैं, उन्हें वे यदि निष्काम भाव से करेंगे तो मुक्ति के लिए उनको और कुछ नहीं करना पड़ेगा। अपने कार्य में वे रत रहेंगे और अपना उद्योग परमेश्वर को कृष्णार्पण भाव से अर्पण करते जायें तो वे मुक्ति के अधिकारी हो सकते हैं। वैदिक धर्म में जितनी प्रतिष्ठा व्यापारियों की है, और किसी धर्म में हमने नहीं देखी है।

व्यापारी कौम जाग जायगी तो सरकार से भी अधिक काम होगा; क्योंकि सरकार अनेकों की बनी है और व्यापारी व्यक्तिगत तौर पर काम कर सकते हैं। इसलिए अच्छा काम होगा। संस्थाओं को एक कानून लागू होता है। उसके अनुसार संस्थाएँ चलती हैं। वैसे ही सरकार का है। इस वास्ते व्यापारियों की व्यक्तिगत तौर पर जो ताकत है, वह बहुत ज्यादा है।

शेर को भी खिलाना और गाय को भी तो ताकत कैसे बनेगी !

मैं व्यापारियों की तरफ देखता हूँ और मेरा अनुभव भी है कि बहुत व्यापारियों पर दबाव डालने की अनेक कोशिशें होती हैं। अंग्रेजों को लाखों रुपयों की सम्पत्ति व्यापारियों ने दी है। अब व्यापारियों को ही देना चाहिए ऐसा नहीं है; फिर भी वे देते हैं जो उन पर दबाव डाल हैं उनको देते हैं। गांधीजी आये तो गांधीजी के काम के लिए उन्होंने दिया। जिनकी चलेगी ऐसा वे देखते हैं उनको वे देंगे। क कांग्रेस कमजोर हो जाय जैसे केरल में कम्युनिस्टों का राज हो तब वहाँ व्यापारियों ने उनकी मदद की। व्यापारियों पर राजनैतिक

की कोई चिन्ता करने का कारण नहीं था। सार्वजनिक काम के लिए वे मुक्त थे। उन्होंने कहा कि भरवाले मुझे नहीं छोड़ते तो मेरे हाथ से देश की सेवा नहीं हो पाती। इसलिए मैं जो सेवा कर रहा हूँ, उसका श्रेय मेरे दूसरे भाइयों को है।

दो-तीन बात मैंने आपके सामने रखीं

१ राजनैतिक पक्ष का बेजा दबाव आप सहन न करें।

२. आपमें से एक को व्यापार-व्यवहार से मुक्त रखकर सार्वजनिक सेवा में आना चाहिए।

३ आपके घर में जितने लोग हैं उनमें मेरा एक नाम रखिये। आपके कुटुम्ब में अगर सात लोग हैं जिनका आप पर भार है उनमें मैं आठवाँ हूँ। तो घर-खर्च से मुझे आठवाँ हिस्सा दीजियेगा। अगर नौ हैं तो मुझे दसवाँ हिस्सा मिले। वह सर्वोदय के काम में खर्च होगा।

४ आपको यह विचार जँचा हो तो अपने दूसरे भाइयों को यह विचार समझाना आपका कर्तव्य है।

व्यास की स्थूल भूतदया

कॉलेज चलाने से, अस्पताल खोलने से सेवा होती है ऐसा नहीं। हम कॉलेज चलायें और उसमें असली ज्ञान विद्यार्थियों को न मिलता हो बेकारी बढ़ाने का काम उससे बढ़ता हो तो वह सेवा नहीं होगी। अस्पताल हो लेकिन उसमें दया-भाव न हो तो अस्पताल से सेवा नहीं होगी। इंग्लैण्ड में नर्स उत्तम सेवा करती हैं और जो पेशंट होता है उसको घर के समान मानसिक आराम मिलता है। इस तरह से अगर पेशंट उत्तम सेवा भी पायेगा तो वह असली सेवा होगी। लेकिन आज अस्पताल में ऐसा नहीं हो रहा है और वह करने की सरकार में सामर्थ्य नहीं है। हम कॉलेज चलाते हैं और बेकारों की जमात पैदा होती है। नौकरी के लिए ही लड़के पढ़ते हैं। इसलिए उससे भी सेवा नहीं होती है। सेवा तो तब होगी जब नीचे का तबका ऊपर उठेगा और लोगों

की तरफ से काम होगा। आज वह नहीं दीखता है। आज जो दीखती है, वह स्थूल मूर्खता, जिसके कोई मानी नहीं हैं।

शिक्षा-विभाग स्वतन्त्र हो

सरकार के हाथ में शिक्षा-विभाग नहीं होना चाहिए। लोगों की तरफ से शिक्षण-संस्था चलनी चाहिए। हमारे पास कुछ बच्चे थे। उनको हमने ऐसी तालीम दी कि वे दूसरे स्कूल में नहीं गये, न उनका उधर जाने का आकर्षण रहा। उनको हमने गीता, उपनिषद् आदि सिखाया उद्योग की तालीम दी। अब वे आज सब-के-सब सार्वजनिक सेवा में लगे हैं। बहुत बड़ी कमाई तो उनकी नहीं है थोड़ी है। इस तरह से आप भी बच्चों को तालीम देंगे, तो उसमें सरकार के Recognition की कोई जरूरत नहीं रहेगी। रवीन्द्रनाथ ठाकुर का स्कूल है। वह पहले स्वतन्त्र चलता था। लेकिन आज वहाँ सरकारी डिग्री देने के सिवा दूसरा कार्यक्रम नहीं है। महात्मा मुंशीराम ने एक स्वतन्त्र संस्था बनायी थी। लेकिन वहाँ भी आज एक सरकारी युनिवर्सिटी बन गयी। जिन्होंने स्वतन्त्र आश्रम चलाया था स्वतन्त्र संस्थाएँ चलायी थीं आज उन संस्थाओं में और सरकार की संस्थाओं में फर्क नहीं रहा है। इसलिए ऐसी संस्थाओं में व्यापारी मदद करते हैं तो इसमें व्यापारी कुछ अच्छा काम करते हैं या उनके हाथों से सेवा होती है, ऐसा मैं नहीं मानता हूँ।

आज व्यापारी शराब की मिल खोलता है 'शराब' का सेवन बढ़ रहा है, उससे लोग बीमार होते हैं तो अस्पताल में जाते हैं। भगवान् ने मनुष्य को रोग के साथ दवा भी दी। इसलिए शराब का प्रचार करनेवाला व्यापारी ऊपर दवाखाना भी खोलता है। लड़ाई में जख्मी सिपाही की सेवा के लिए दयार्द्र डाक्टर जाते हैं। उनकी वह दया लड़ाई को तो नहीं रोकती है। वह दया रानी नहीं है दासी है और शक्ति रानी है हिंसा रानी है। हम चाहते हैं कि करुणा और दया का राज हो, वह रानी बने। लेकिन आज जो दया चल रही है वह जैसे भोजन में रुचि के लिए नमक या चटनी मिलती है वैसी ही दया आज समाज में चलती

है। इसलिए अगर अकाल को बन्द करना है, तो कस्बा का राज बनाना होगा।

इसलिए कम्युनी सिपाहियों की मदद करनेवाली दया, असफल खोलनेवाली दया आज काम की नहीं है। व्यापारियों की मदद हम इसमें नहीं चाहते। उनकी मदद इसमें हो कि अकाल और सिपाहियों का कत्ल कैसे बन्द हो, सिपाही कैसे कम्युनी न हों। यही क्रान्ति-काम है, यही बुनियादी चीज है। ऐसी बुनियादी चीज हम व्यापारियों से चाहते हैं।

सरकार को मदद दें, पार्टी को नहीं

आपने कहा कि सरकार में जो पार्टी मुख्य है उसकी बात आपको माननी पड़ती है। सरकार अलग चीज है और पार्टी अलग है। सरकार को आप जरूर मदद करें। सरकार ने जो टैक्स बैठाया है वह आप जरूर दें। उसे आप न टालें। लेकिन पक्ष का दबाव आप पर नहीं होना चाहिए। उसके दबाव में आपको नहीं आना चाहिए। क्या आपकी सेना कांग्रेस पक्ष में है? नहीं है। फिर भी वह सरकार की ओर से लड़ती है। जब मैं कश्मीर गया था तब फौज के सामने बोलने का मुझे वहाँ मौका मिला। जो लोग विरोधी पार्टी के हैं या किसी भी पार्टी के हैं उनको वहाँ बोलने का मौका नहीं मिलता। मेरा मामला इसलिए मुझे वह मौका मिला। क्योंकि उन लोगों ने मुझे कहा कि आप तो नान-पार्टीमैन हैं पोलिटिकल पार्टी से परे हैं। आपकी सेना कांग्रेस में नहीं है आपक स्वीकार मूल में चाहे किसी भी पार्टी के हों स्वीकार बनने के बाद किसी भी पार्टी के नहीं रहते हैं। सब सरकारी नौकर किसी भी पार्टी में नहीं होते। आपका राष्ट्रपति पार्टी-मैन नहीं माना जाता है। इन सब लोगों को आम समाज की सेवा में लगना है। सरकार है तो वह सबकी है किसी एक पार्टी की नहीं हो सकती। इसलिए सरकार से असहयोग करने की बात मैं नहीं कर रहा हूँ। मेरा कहना यही है कि किसी पक्ष के दबाव में आपको नहीं आना चाहिए।

अब व्यापारी भी दूर-दृष्टि रखकर मदद करता है। वह देखता है कि अगर मैं मदद नहीं करता हूँ, तो मुझे लाइसेंस नहीं मिलेगा और कमाई ज्यादा नहीं होगी। इसमें आपको नुकसान भी भुगतना होगा। आपको सिद्धान्त पर डटे रहना चाहिए। व्यापारियों का एक समूह बनाना चाहिए और तय करना चाहिए कि हम किसीके दबाव में नहीं आयेंगे, प्रामाणिकता से काम करेंगे, उसमें चाहे हमें नुकसान हो। इस तरह आप करेंगे तो आपकी इज्जत बनेगी। अगर आप सही माने में दूर देखना चाहते हों तो इसीमें आपका लाभ है।

मेरे साथी मुझे कोसते हैं

मेरे साथी मुझे मूरख कहते हैं और कहते हैं कि तुम व्यापारियों के पास जाते हो, उनको कहते हो कि तुम दयालु हो और अगर अच्छा काम प्रामाणिकता से करोगे तो मोक्ष पाओगे, ऐसा कहकर उनको मोक्ष में ढकेलते हो; लेकिन कोई तुम्हारी बात सुनता है क्या? इस तरह मेरे साथी मुझे कोसते हैं। लेकिन मेरा विश्वास है कि आप लोग मेरा काम कर सकते हैं और हिन्दू धर्म ने जो अपेक्षा आपसे रखी है वह आप पूरी कर सकते हैं क्योंकि आप प्रामाणिकता से अपना काम करेंगे।

गांधीजी ने ट्रस्टीशिप की थियरी रखी थी। गांधीजी की इच्छा से और सम्मति से आठ-दस लोग बैठे और उस पर चर्चा करके एक ड्राफ्ट बनाया गया और उसके मुताबिक व्यापारी काम करें ऐसी बापू की इच्छा थी। लेकिन उसका क्या हुआ? प्यारेलालजी ने बड़े दुःख के साथ किताब में लिखा है कि वह ड्राफ्ट बिरलाजी के पास दिया गया था। उसके बाद क्या हुआ क्या बना वह कुछ भी मालूम नहीं है। याने वहीं वह बात खतम हो गयी। अगर आप लोग वह ट्रस्टीशिप का ड्राफ्ट लेकर कुछ काम करना चाहते हैं और ऐसे आठ-दस व्यापारी ही निकलते हैं तो मैं इसे ईश्वरीय संकेत समझकर आगे काम करूँगा। मुझे पहले दिन जब जमीन मिली थी उसे ईश्वर का इशारा समझकर ही मैंने आगे काम चलाया। वैसे यहाँ भी मैं काम करूँगा।

सरकार पर दूसरी संस्कृति का भी असर

आप गो-सेवा की बात करते हैं। मैं कहता हूँ कि अगर आपको ट्रैक्टर चलाना है तो आपको बैलों को खाना पड़ेगा। बंजर जमीन को ठीक करने के लिए ट्रैक्टर का उपयोग मैं समझ सकता हूँ। अमेरिकावाले अलग्रवाले हैं। वे बैलों को खाते हैं इसलिए ट्रैक्टर का उपयोग भी करते हैं। यहाँ तो हमें बैलों को खाना नहीं है। हमारी संस्कृति में यह नहीं आता है। फिर भी सरकार ट्रैक्टर को मदद देती है। सरकार सबकी प्रतिनिधि है। उसे मैं दोष नहीं देता। सरकार खादी को भी मदद देती है और मिल को भी। वैकपानी के तेल को भी मदद करती है और मिल के तेल को भी मदद करती है। सरकार का हृदय मारवाड़ी है। वह अगर पूर्ण रूप से गांधी-विचार की ही होती तो अच्छा बात है। लेकिन सरकार पर दूसरी संस्कृति का भी असर है। बहुत बड़ी जमात यह है और तरह-तरह के विचार के लोग उसमें हैं। फिर भी मेरा कहना है कि गो-सेवा सिर्फ बातों से नहीं होगी। उसके लिए काम करना होगा। गो-सदन खोलने होंगे और गाय की चिन्ता करनी होगी।

दूसरों के बच्चों का भी सोचें

एक बात मैंने देखी है कि बीड़ी का व्यापार करनेवाला व्यापारी इस बात की चिन्ता करता है कि मेरा लड़का बीड़ी न पीये। इसलिए बच्चे को वह दूसरी जगह रखता है। हम लोग जैसा खाते हैं उसके अनुसार बुद्धि बनती है। उसका असर बुद्धि पर होता है। आप गोश्त खाना नहीं चाहते हैं तो रुपादार हाउस भी आपको नहीं चलाने चाहिए। अगर हम चाहते हैं कि हमारा बच्चा बीड़ी न पीये गोश्त न खाये तो हमें सोचना चाहिए कि दूसरे भी अपने बच्चों के बारे में यही सोचते होंगे। इसलिए ऐसी चीजों का व्यापार नहीं करना चाहिए।

गांधीजी की अपेक्षा इन्दौर के व्यापारी पूरी करें

अगर आप अपनी इज्जत कायम रखना चाहते हों तो आपको

आत्मविश्वास से और ठीक सोच-विचार करके काम करना चाहिए। आप मेरे इस काम में योग दें और जैसे मैंने ग्रामदान और भूदान का काम उठाया है, वैसे आप लोग सम्पत्ति-दान का काम इन्दौर में उठा लीजिये और ट्रस्टीशिप की जो अपेक्षा गांधीजी आप लोगों से रखते थे उसको पूरी करने का आप सोचिये। इन्दौर में ही उसका आरम्भ हो जाय, ऐसा मैं चाहूँगा।

इन्दौर —व्यापारियों से
११-८-६

मूल्य बदलने पर सर्वोदय तथा क्रांति होगी

सर्वोदय के मानी अनेक होते हैं। हमने सर्वोदय होटल भी देखा है। उस होटल-मालिक से मैंने पूछा कि इसका अर्थ क्या है? उसने बताया कि इस होटल में सब तरह के लोग आते हैं किसीको रुकावट नहीं है। सबका हम स्वागत करते हैं। यह एक छोटी-सी चीज है। लेकिन बड़ी सूक्ष्म चीज है। सर्वोदय के मानी है सबका भला। इसी उद्देश से सब काम किया जाय। लेकिन असली सर्वोदय तो तब होगा जब मूल्य परिवर्तन होता है मूल्य बदलते हैं। एक भाई हमसे कहते थे कि जब हजारों लोग मिलकर काम करेंगे तभी क्रांति होगी। मैंने कहा हजारों ने तो काम भी किया है, लाखों ने पाप भी कमाये हैं आये दिन यह हो रहा है। इसलिए जिसमें हजारों लोग काम करते हैं वह क्रान्ति नहीं। क्रान्ति में तो दिल बदलता है मूल्य बदलते हैं।

आदमी मर जाते हैं तो हम लोग उसकी लाश जलाते हैं और जो राख होती है वह नदी में बहाते हैं। इलाहाबाद के संगम में हिन्दुस्तान भर के लोगों की हड्डियाँ पहुँची हैं। यह गलत बात है। यहाँ तक कि महात्मा गांधीजी की भी अस्थियाँ नदियों में विसर्जित की गयीं। यह भी गलत बात है। हम लाश को जला दें और उसकी राख गड्ढे में डालें अस्थियाँ भी गड्ढे में डालें उस पर मिट्टी डाली जाय और वहाँ एक पौधा लगाया जाय यही करना चाहिए। अपना शरीर पंचभूतों का बना हुआ है। शरीर में जो पानी है वह पानी पानी में मिल जाय हवा है वह हवा में मिल जाय मिट्टी है वह मिट्टी में मिल जाय, ऐसा होना चाहिए। यूरोप के लोग धीरे धीरे यह सोचने लगे हैं कि मरे हुए की लाश जलानी चाहिए। इस विचार को लेकर उधर आन्दोलन चला है। लेकिन

जलने के बाद भी अस्थियाँ या राख पानी में न डाली जाय। हर बात में पुरानी बात आगे चलाना अच्छा नहीं है।

काशी में गंगा-स्नान नहीं किया

गंगा सबसे पवित्र नदी है। आठ साल पहले मैं दो महीना काशी में रहा और वहाँ स्वच्छ काशी आन्दोलन चलाया। इतने दिन वहाँ निवास हुआ, उसमें एक दिन भी मैंने गंगा-स्नान नहीं किया। बारिश के दिन थे और दुनियाभर की गन्दगी गंगा नदी में बहायी गयी थी। लोग कहते थे कि गंगा में स्नान करने से मुक्ति मिलती है। मैंने कहा इतनी सस्ती मुक्ति मुझे नहीं चाहिए। अगर एक बार स्नान करने से मुक्ति मिलती है तो गंगा के पानी में मछलियाँ चौबीसों घंटे रहती हैं उनको तो मुक्ति मिली ही होगी।

एक तारीख से यहाँ सफाई-सप्ताह मनाने जा रहे हैं। अगर ब्राह्मण यह कहेंगे कि सफाई करना हमारा काम नहीं है यहाँ को सफाई करनी चाहिए, तो उन्हें समझना चाहिए कि आज के जमाने में अपने विचार बदलने होंगे। आज हरएक को सफाई करनी चाहिए। इस तरह मूल्य बदलेंगे तभी क्रान्ति होगी। इस काम के लिए पाँच लोग तैयार होंगे, तो भी वह क्रान्ति होगी। इसमें संख्या का सवाल नहीं है।

लोगों के जीवन में कृष्णार्पण आ जाय

महाराष्ट्र में नामदेव एक बहुत बड़े सन्त हो गये। उनके पिताजी हमेशा मंदिर में पूजा करते थे। जैसे कबीर के वचन हजार गाये जाते हैं, वैसे महाराष्ट्र में और पंजाब में भी उनके भजन गाये जाते हैं। एक दिन नामदेव के पिताजी गैरहाजिर थे तो पूजा करने का काम नामदेव ने किया। नामदेव ने भगवान् की पूजा करके आखिर में भगवान् की मूर्ति के सामने नैवेद्य रखा और भगवान् से कहने लगे कि यह दूध की कटोरी जो मैंने तुम्हारे सामने रखी है वह दूध तुम्हें पीना होगा। यह कहकर नामदेव भगवान् की राह देखते रह गये। उन्होंने तय किया कि भगवान्

को समर्पण किया हुआ दूध वे स्वयं जब तक नहीं पीयेंगे तब तक मैं यहाँ से नहीं हटूँगा। नामदेव का हठ था। आखिर भगवान् पिघल गये और नामदेव पर प्रसन्न होकर वह दूध पी गये। हम भगवान् के पास जाते हैं और कहते हैं "हे भगवन् यह तुझे समर्पित है।" हमारा समर्पित किया हुआ नैवेद्य यदि भगवान् खाता जायगा तो कल से हमारा समर्पण बन्द हो जायगा। हम न खानेवाले भगवान् को समर्पण करते हैं। यह नाममात्र का समर्पण है। कोई काम की चीज नहीं है। हम चाहते हैं कि लोगों के जीवन में यह कृष्णार्पण आ जाय। सर्वोदय-पात्र में मुट्ठीभर अनाज डालने की बात हम करते हैं और कहते हैं कि यह शान्ति के लिए वोट है सम्मति-दान है।

आपकी मदद से सर्वोदयनगर बनेगा

यह स्थान जाने 'क्लाथ मार्केट' है। यहाँ व्यापारी रहते हैं। मैं व्यापारियों से कहना चाहता हूँ कि आपको अपने घर में सर्वोदय-पात्र रखना ही चाहिए, लेकिन आपकी सम्पत्ति का एक हिस्सा सर्वोदय के काम के लिए देना चाहिए। आपकी मदद मिलेगी तो इंदौर सर्वोदय नगर बनेगा नहीं तो नहीं बनेगा।

व्यापारी कहते हैं कि हमने आज तक काफी दान दिया है—कॉलेज बनाये हैं अस्पताल खोले हैं। लेकिन अब उनको समझना चाहिए कि आज कॉलेज खोलने का मतलब हुआ बेकारी के लिए कारखाना खोल दिया। इससे दुनियावी क्रान्ति का काम नहीं होता है। हम चाहते हैं आप क्रान्ति-कार्य में मदद दें।

इन्दौर —पीयरचंद चौक में
१-८-१

गोस्वामी तुलसीदासजी ने भक्त की महिमा का वर्णन 'विनय-पत्रिका' में किया है। दुनिया में सब लोग अपने सुख या अपनी भलाई की इच्छा रखते हैं। अपने स्वजनों का भला चाहनेवाले भी सब लोग हैं। अपने सारे परिवार अथवा पक्ष इनका भला चाहनेवाले भी कोई-कोई लोग होते हैं। अनेक जाति वर्ग और पंथ इसीसे बनते हैं। लेकिन तुलसीदासजी कहते हैं ये समझी आप ही ऐसे हैं जो सबका भला चाहते हैं। सबका भला चाहते हैं तो उसके लिए सब भेदों को हमें भूलना चाहिए।

एक दिन एक छोटे बच्चे को लेकर उसका बाप आया। वह चाहता था कि बच्चा बाबा के पास जाय। लेकिन वह बच्चा बाबा की दाढ़ी देखकर रोने लगा। ला आफ असोसियेशन होता है। उसने दाढ़ी कभी देखी नहीं थी कम-से-कम उसके माँ-बाप को दाढ़ी होती तो उस पवित्र दाढ़ी को वह देखता और फिर वह बाबा के पास आने से न डरता। लेकिन न उसकी मा को दाढ़ी थी न बाप को। उसका रोना बन्द नहीं हुआ तो आखिर एक आम मैंने उसके हाथ में दिया। तब उसे यकीन हो गया कि बाबा अपना भला चाहता है और उसका रोना बन्द हो गया।

व्यापक दृष्टिवालों के लिए शायद शंका नहीं होगी

शुकदेव घर-बार छोड़कर निकले तो व्यासजी को भी मोह हुआ और वे चिल्लाये : "हे पुत्र " उसका जवाब शुकदेव ने नहीं दिया वे नहीं बोले। भागवत में यह कहानी आती है कि शुकदेव की ओर से पेड़ों ने जवाब दिया। जो सर्वभूतों के साथ एकरूप होता है उसके लिए पेड़ भी बोलते हैं। ऐसा जो शख्स है उसे हमारे नमस्कार हैं। पर व्यापकता

दृष्टि में आ जाय और दिल में पैठ जाय तो शायद उसके लिए किसीको शंका नहीं होगी। 'गुणनिधान यह विद्‌विधाम जग सूझत-सूझत सूझे।' यह चैतन्य का विकास है। एकदम समझ में कैसे आयेगा? समझते समझते धीरे धीरे समझ में आयेगा।

सर्वोदय सौ प्रतिशत यश की आशा का अधिकारी

सर्वोदय-पात्र का हमने एक चिह्न बनाया है। सर्वोदय-पात्र इन्दौर के हर घर में होगा तो इन्दौर का वोट सर्वोदय को हासिल है ऐसा हम समझेंगे। बारह हजार घरों में अब तक हुआ है। हम चाहते हैं कि इन्दौर के कुल अस्सी हजार घरों में सर्वोदय-पात्र रख जायें। अगर एक भी घर सर्वोदय-पात्र के बिना न रहे तो बहुत बड़ी बात होगी। भगवान् कृष्ण का भी दुश्मन था। रामजी का भी वैरी था। बुद्ध भगवान् को कत्ल करने की कोशिश की गयी थी। ईसा को सूली पर चढ़ाया गया था। महात्मा गांधी पर गोली चलायी। सुकरात को जहर पिलाया गया था। जरथुस्त्र का कत्ल करने की कोशिश की गयी। इस तरह उस उस जमाने के महापुरुषों का विरोध करनेवाले तो निकले ही थे। तो हम किस बल से आशा करते हैं कि सर्वोदय को ही कुल वोट मिलें? जो बात महान् सन्तों से भी नहीं बनी वह हम करते हैं उसका कारण क्या है?

आज दुनिया 'शान्ति शान्ति' कर रही है। आपको इसकी अनुभूति नहीं आती होगी लेकिन जिन लोगों ने भुगता है वे अच्छा जानते हैं। हिरोशिमा पर बहुत बड़ा बम पड़ा था इसलिए वे जानते हैं कि लड़ाई क्या होती है। आप लोग अखबार की बात पर्यालोचन करते हैं, आपको अनुभव नहीं है। और उन लोगों को इस बात का अनुभव है, मालूम है कि लड़ाई के नतीजे क्या होते हैं। जापान में किन किसानों ने कहा था कि भाई इसके आगे आनेवाले जमाने में तुम्हारी कृपाण नहीं चलेगी। इसके आगे तो विश्व (कृपा) चलेगी। यह बम पुराना हो गया है इसलिए अब प्रेम चलाओ। जापान में कितनी बड़ी ताकत थी। पर

द्वापर में तो उसने अमेरिका पर सितम गुजारा। अमेरिका बहुत समृद्ध देश था। लेकिन जापान की मन्द दिन थकी। वह बरमा तक इण्डिया तक आया था। अब वह सब दूर फैलेगा ऐसे आसार दीखने लगे। तब तक अमेरिका कहता रहा कि तुम बच्चाओ तुम्हारी बात। बकासुर ने भीम को मुक्के मारे थे तब भीम ने कहा था ठीक है मारो मैं क्या खाकर ला रहा हूँ, इसे खतम करने के बाद देखूँगा। ऐसे ही अमेरिका ने पहले जापान को आगे बढ़ने दिया और फिर एक ऐसा बम जापान में डाला कि उस तरह का कोई बम आज तक दुनिया ने नहीं देखा था। जैसे भूकम्प में होता था, वैसा ही हुआ। सारे मकान गिर गये। लाख-डेढ़ लाख लोग या तो खतम हुए या जख्मी हुए। जब प्रथम यह संहार हुआ एटम का पहला अवतार हुआ तब फौरन जापान शरण गया। उसकी बहादुरी खतम हुई। अब उसका जो उत्साह था वह कहाँ गया? लेकिन ऐसा देखा कि जिसके पास ज्यादा शक्तिशाली शस्त्र हैं उनको लोग शरण जाते थे। यह तो पन्द्रह साल पहले की बात है।

विज्ञान और अध्यात्म हमें मदद दे रहा है

लेकिन आज उस एटम बम से हजारगुनी ताकतवाला बम बना है। अब आप क्या करते हैं? क्या आप हिंसा से बचेंगे? और चालीस करोड़ लोग आप मर जायेंगे? यह तो नामुमकिन है। अब हमें ऐसी ताकत हासिल होगी अनदेखी ताकत, जो इस बम के साथ मुकाबला करेगी। इसलिए जो काम ईसा मसीह, महात्मा गांधी पूरी नहीं कर सके, वह हम पूरे कर सकेंगे। हमारी योग्यता नहीं है लेकिन वे नाकामयाब हुए और हम कामयाब होंगे इसलिए कि साइंस की ताकत हमें मदद दे रही है। साइंस बढ़ रहा है और वह अध्यात्म की मांग कर रहा है।

सब सर्वोदय-मित्र हैं

अभी यहाँ कहा गया कि जो सर्वोदय-मित्र हैं वे खड़े हो जायें। जो खड़े हुए हैं वे सर्वोदय-मित्र हैं तो क्या बाकी सर्वोदय के शत्रु हैं?

कल आप कहेंगे कि जो सज्जन हैं, वे खड़े हो जायें, तो क्या बाकी सारे दुर्जन हैं? ऐसा ही अर्थ होगा। इसलिए जब लोग समझेंगे कि जितने लोग यहाँ आये हैं, हम सब सर्वोदय-मित्र हैं, तब काम होगा।

अब यह काम मेरे रहते यहाँ होगा या बाद में होगा, मालूम नहीं। अगर आप चाहें तो दो दिन में होगा, नहीं तो युग-युग में भी नहीं होगा। आपने अगर तय किया है कि बाबा का काम यहाँ नहीं होना चाहिए, तो नहीं होगा। 'आत्मा सत्यसंकल्पः'। इसलिए आप जैसा संकल्प करते हैं वैसा होगा। लेकिन दोनों हालतों में मैं यह समझूँगा कि भगवान् की इच्छा है। उसने चाहा, इसलिए यह काम हुआ। और अगर काम नहीं हुआ तो मैं यही कहूँगा कि उसने नहीं चाहा, इसलिए यहाँ काम नहीं हुआ। दोनों हालतों में मैं भगवान् को धन्यवाद दूँगा और यहाँ से चला जाऊँगा।

इन्दौर —ब्राह्मण-सभा में सर्वोदय-मित्रों से

११-८-६०

इस नगर में हम बहुत उत्साह देख रहे हैं। इतना उत्साह जहाँ है वहाँ यह मानना कि इसका कोई मूल्य नहीं है इससे कुछ नहीं निकलेगा। यह मानसशास्त्र को न समझने जैसी बात है। उत्साह का उपयोग तब होता है जब उसके साथ धृति होती है।

तीनों गुणों का चक्र चलता है

जीवन में उत्साह होता है उत्साह के आधार पर जीवन खड़ा है। लेकिन उत्साह की शक्ति का काम तब होगा जब उसके साथ धृति होगी। इसलिए गीता ने सात्त्विक कर्ता का लक्षण बताया है: 'धृत्युत्साह-समन्वितः कर्ता सात्त्विक उच्यते'। जैसे पक्षी दो पंखों के साथ उड़ता है वैसे धृत्युत्साह याने धृति और उत्साह जहाँ होते हैं वहाँ सात्त्विक कर्ता निर्माण होता है। उत्साह का भी उपयोग है। उसके साथ धृति याने धीरज चाहिए। उत्साह का यह जो आना-जाना चलता है वह इसलिए होता है कि सत्त्व-रज-तम तीनों गुण प्रकृति में हैं वे आते-जाते हैं। सुबह उठते हैं परमेश्वर का ध्यान करते हैं तब सत्त्वगुण काम करता है। दिनभर काम करते हैं तब रजोगुण काम करता है। रात भ[र] का[म] किया तो आलस्य आता है। फिर तमोगुण काम करता है। दिन में भी खाने से मनुष्य में आलस्य आता है। दोपहर में भी कभी-कभी तमोगुण काम करता है। इस तरह से गुणों का चक्र चलता है। 'चक्रगुणाश्रयम्'। मैं भी कोशिश करता हूँ कि दिनभर उत्साह कायम रहे फिर भी बहुत थोड़ा ही रहो लेकिन कुछ समय ऐसा रहता है जब उत्साह की कमी महसूस करता हूँ। इसलिए मैंने मेरा खाना छह हिस्सों में बाँट लिया है। इसमें आध्यात्मिक दृष्टि है। पेट पर भार नहीं होता और शरीर में उत्साह ऐसा

होता है कि किसी भी समय दो चार, छह मील चल सकता हूँ। उत्साह को हमेशा बनाये रखना यह बहुत बड़ा आध्यात्मिक विषय है।

बूढ़ों को उत्साह जवानों को धीरज

उत्साह को बनाये रखना धृति से कायम होता है। अभी आज रास्ते में हमने पढ़ा एक जगह पर लिखा था 'तरुण उत्साही मंडल'। हमने कहा तरुणों में उत्साह होता ही है इसलिए तरुण धीर मंडल बनाओ। तरुणों को धीरज रखना चाहिए। वे हर काम में रुचि और शांति रखेंगे। बूढ़ों में उत्साह कम होता है और धीरज होता है, इसलिए 'वृद्ध उत्साही मंडल' बनाना चाहिए। बूढ़ों को उत्साह और तरुणों को धीरज सम्पादन करना है।

हम लोगों में उत्साह नहीं रहेगा तो जनता में वह कैसे आयेगा? आपके और हमारे शरीर में ९८ डिग्री उष्णता है। सूर्यनारायण यह सोचे कि मेरे शरीर में भी मैं ९८ डिग्री उष्णता रखूँगा तो हम सब लोग ठण्डे पड़ जायेंगे। सूर्यनारायण बहुत बड़ी उष्णता रखता है इसीलिए हममें ९८ डिग्री उष्णता है। कार्यकर्ता जब परिपूर्ण उत्साह से भरे हुए रहेंगे तभी लोगों में उत्साह बना रहेगा।

सर्वोदय-पात्र में सुपारी

सर्वोदय-पात्र में एक नया पैसा भी डाल सकते हैं। देहात में अनाज की बात हम करते हैं और शहर में एक नया पैसा डालने के लिए कहते हैं। यह छोटे-से-छोटा सिक्का है। उससे बहुत बड़ी रकम तो नहीं मिलनेवाली है। हमें सर्वोदय-पात्र के जरिये धन-संग्रह नहीं करना है। धन संग्रह इससे भी होगा लेकिन वह बहुत थोड़ा होगा; दूसरे काम से धन संग्रह हो सकता है। इससे तो हमें लोगों की सम्मति हासिल करनी है शान्ति के लिए वोट हासिल करते हैं। हम कारवार की तरफ थे—दक्षिण में। वहाँ सुपारी के पेड़ थे। हमने वहाँ कहा था कि सर्वोदय-पात्र में एक सुपारी रोज डाला करो। लेकिन लोगों ने हमें बताया कि न

दिनों एक नये पैसे से एक सुपारी ज्यादा मंहगी है। सुपारी का उपयोग हम खाने में तो नहीं करेंगे। वह सेवा लगेगी।

हमें धन की जरूरत नहीं

बम्बई के एक भाई ने हमसे कहा था कि हम एक रुपया डालेंगे। मैंने कहा मैं इसे लेने के लिए राजी हूँ। बशर्ते कि आप इसे सम्पत्ति-दान न मानें और आपको मुझे संपत्ति-दान प्राप्त करने का अधिकार रहेगा। चवन्नी भी डालनी है तो डालिये। लेकिन हम तो एक नये पैसे की बात करेंगे। हमें धन की जरूरत नहीं है। धन हासिल करने के दूसरे तरीके हैं।

इन्दौर —सर्वोदय-मित्रों से

१०-८-१

मातृभाषा में बोलने का ऐसा अवसर कदाचित् ही आता है। जैसे आपको मातृभाषा में व्याख्यान सुनने में आनन्द आता है वैसे ही मेरे लिए भी उसमें बोलना आनन्द का अवसर है। मातृभाषा सदैव मधुर होती है क्योंकि माता ही मधुर होती है। किन्तु अपने प्रदेश के बाहर वह और अधिक मधुर मालूम पड़ती है। चारों ओर से इसकी ध्वनियाँ आ रही हैं ऐसे समय मातृभाषा की ध्वनि आकर्षक मालूम पड़ती है। इसलिए इसमें जैसे आपको आनन्द हो रहा है वैसे मुझे भी हो रहा है।

ज्ञानदेव की मराठी मिट नहीं सकती

अभी बताया गया कि इस प्रदेश में अनेक कठिनाइयों से आपकी सेवा चल रही है। लेकिन मातृभाषा में शिक्षा की कोई सुविधा नहीं है। मुझे इसकी चिन्ता नहीं है। कारण जिस भाषा में ज्ञानदेव बोला वह कभी मिट नहीं सकती। व्यवस्था रहे या न रहे वह घर-घर बोली ही जायगी।

माझा मराठाचि बोलु कौतुकें। परी अमृतातेंही पैजा जिंके।
ऐसी अक्षरें रसिकें। मेळवीन ॥

यह प्रतिज्ञा कर ज्ञानदेव ने अमृत की गंगा बहायी।

आप यहाँ व्याख्यान करते हैं। वेद परम्परा है। लेकिन ज्ञानदेव एक कदम आगे बढ़कर कहते हैं :

वेद सम्पन्न होय ठाईं परी कृपण ऐसा आन नाहीं।
जो कानीं लागला तिहीं वर्णांचिये ॥

पुराने जमाने की कमी पूरी करने के लिए ज्ञानेश्वरी ने अवतार लिया

और उसने स्त्री, वैश्य एवं शूद्रों के लिए भक्ति द्वारा मुक्ति का मार्ग प्रशस्त किया। इसके लिए व्यास ने बड़ी ही करुणा के साथ प्रयत्न किया। फिर वही संस्कृत वाणी ज्ञानदेव मराठी में लाये और ऐसी सुन्दर रचना की कि गीता का कोई भी भाष्य उठाइये उसमें ज्ञान-चिन्तन की चर्चा होगी; लेकिन वह ग्रन्थ आम जनता के लिए नहीं होगा। किन्तु ज्ञानदेव ने आम जनता के लिए धर्मग्रन्थ दिया। ज्ञानदेव ने यही लिखा

> जिवदुवा तुम्हीं केलें। धर्मकीर्तन हे सिद्धी नेलें।
> वैसे माझी की करवे। पाईक पण॥

भगवन् आपने ही अपनी कृपा से आखिर मेरा यह धर्म-कीर्तन सिद्धि तक पहुँचा दिया और इसमें मैं सेवकमात्र ही बाकी रहा। 'ज्ञानेश्वरी' मराठीभाषियों का धर्मग्रंथ है। इसलिए उन्होंने 'मैं सेवक बना' इस तरह कृतज्ञता के उद्गार व्यक्त किये।

निरपेक्ष भाव से फल की आशा छोड़कर कर्म करें

कुरान में पैगम्बर ने कहा है कि हर जमात के लिए भगवान् ने सन्देशवाहक (दूत) पैगम्बर भेजे हैं और अरबी भाषा के लिए स्वयं मैं आया हूँ। मैं सोचता रहा कि अगर परमात्मा ने हर जमात के लिए सन्देशवाहक भेजा है तो मराठी भाषा-भाषियों के लिए किसे भेजा? विचार करने पर मैं पहचान गया। जान गया कि मराठीभाषियों को साहित्य-ग्रन्थ भक्ति-ग्रन्थ या दार्शनिक-ग्रन्थ नहीं बल्कि धर्म-ग्रन्थ देने के लिए भगवान् ने जो सन्देशवाहक भेजा वह ज्ञानेश्वर महाराज हैं और वह ग्रन्थ उनके द्वारा लिखी गयी 'ज्ञानेश्वरी' ही है। उसी दृष्टि से मैं उसे देखने लगा तो मुझे दीख पड़ा कि उसमें उन्होंने स्वयं ही यह कहा है।

> म्हणोनि फळी आस। सांडोनि देह संग।
> कर्में करावी हा सांग। विरोध माझा॥

माने मेरा आपको यह सन्देश है कि फलनिरपेक्ष भावना से फल की

माया छोड़कर कर्मयोग करते रहें। इसीलिए मैं कहता हूँ कि यह माया कहीं भी दबायी नहीं जा सकती, अतः आपको किसी भी तरह की शिकायत करने की जरूरत नहीं। घर-घर हम यह माया सीखें पढ़ें। अपने-अपने घरों में ही उसकी पाठशालाएँ चलायें।

आपने इस प्रान्त में तीन-चार सौ वर्षों से सेवा अवश्य की लेकिन उस सेवा में सत्ता भी थी। अहिल्यादेवी ही एक ऐसी महान् साध्वी उत्पन्न हुईं जिन्होंने सत्ता और सेवा का भेद मिटाकर अपना सारा खजाना भारत की सेवा के लिए खुला किया। मैं हिन्दुस्तान में जहाँ-जहाँ गया, लोगों ने मुझे बताया कि अहिल्यादेवी ने यह रास्ता, यह घाट या यह मन्दिर बनवाया, यह अन्नछत्र चालू करवाया, यह जीर्णोद्धार करवाया और आपके इन्दौर की ही रकम से यह सब किया। आज अगर एक प्रान्त का पैसा दूसरे प्रान्त में लगाने का प्रश्न उठता है तो लोगों के प्राण घबड़ाने लगते हैं। लेकिन अहिल्यादेवी उदारता के साथ यहाँ का पैसा भारत में अन्यत्र खर्च कर डालती थीं। यह उनकी कितनी विशाल उदार बुद्धि है। उन्होंने सत्ता और सेवा का भेद मिटा दिया।

दूध में शक्कर बनकर रहिये

मेरी आपसे यही सलाह है कि अब हम लोग सेवा ही करें, सत्ता की बात छोड़ दें। महाराष्ट्र में हमारा जो राज्य है वह काफी है। यहाँ वालों के मुख से ये ही उद्गार निकलने चाहिए कि ये मराठीभाषी सेवा ही करना जानते हैं। इन्हें मेवा नहीं, सेवा ही मीठी लगती है। ये नाम के भूखे नहीं हैं। जैसे किसीसे पूछा जाय कि "आप सुबह नाश्ते में क्या लेते हैं?" तो वह कहता है : "मैं दूध ही पीता हूँ।" उस दूध में शक्कर घुलमिल रहती है पर वह यह नहीं कहता कि मैं सुबह दूध शक्कर लेता हूँ। वह शक्कर का नाम नहीं लेता, यद्यपि यही शक्कर दूध में मिठास ला रही है। ठीक इसी तरह मराठी लोग शक्कर का मालक (अभिमान) छोड़ और दूसरों को दूध का मालक बनने दें। नाम दूध का ही होगा पर उसमें

मिठास आवेगी शक्कर से ही। मुँह में शक्कर की ही मिठास होगी दूध का स्वाद कम होगा; पर नाम दूध का ही होगा। इस तरह शक्कर बनकर आप लोग यहाँ रहें तभी आपके हाथों अन्यत्र शुद्ध, स्वच्छ निर्मल धर्म का उदय होगा।

सत्य एक ही है

मुझे बड़ा ही आनन्द हुआ कि यहाँ वेदमन्त्र गाये गये। उनमें एक मंत्र यह भी कहा गया कि 'एकं सद् विप्राः बहुधा वदन्ति'। सत्य एक ही है उसके अनेकविध नाम दिये जाते हैं। उपासक अपनी अपनी रुचि के अनुसार नाम देते हैं। एक ही व्यक्ति को कोई बाबा, तो कोई बापू कहते हैं। उसीको कोई काका कोई मामा कोई भाई, तो कोई दादा कहता है। इसी तरह सत्य एक ही है पर विभिन्न धर्मों ने उसे अनेक नाम दिये हैं। हिन्दू ईसाई पारसी आदि अनेक धर्म हैं। वे ही उन्हें तरह-तरह के नाम देते हैं। कोई पानी कहे या कोई उदक। कोई नीर कहे या कोई 'वाटर'। वस्तु एक ही है।

भाषाएँ अनेक हैं और भाषाओं के झगड़े चलते हैं। अन्यत्र भाषाओं के झगड़े चले तो वहाँ केवल वाद-विवाद ही हुआ। लेकिन आसाम में सिर्फ झगड़े ही नहीं हुए, बल्कि उसके लिए मार-काट, दंगा-फसाद भी किया गया दो-तीन हजार घरों को आग लगा दी। तीस-चालीस हजार लोग शरणार्थी बने। यह सारा उस भाषा के अभिमान से ही हुआ।

परमात्मा ने मनुष्य को वाणी दी है भाषा नहीं

मनुष्य को परमात्मा ने भाषा नहीं वाणी दी है। अरविन्द घोष पहले ६ वर्ष हिन्दुस्तान में रहे लेकिन उस बीच भी उनके पिता ने उनके लिए अंग्रेजी शिक्षक रखा था। फिर वे इंग्लैण्ड गये। वहाँ जाने पर वे पाश्चात्य पाठ पढ़ गये कि बंगला भूल गये। फिर अंग्रेजी, फ्रेन्च, ग्रीक, लैटिन आदि भाषाएँ सीखे। अगर भगवान् ने बंगाली भाषा दी होती तो उसे वे कभी न भूलते। इस तरह स्पष्ट है कि भगवान् मराठी गुजराती बंगला

आदि कोई भाषा नहीं रहता बाकी ही रहता है। अपनी भाषा का प्रेम अवश्य रखिये पर उसका अभिमान न रखिये। प्रेम से उपासना और सेवा होती है तो अभिमान से विरोध और झगड़े पैदा होते हैं। ज्ञानेश्वरी पढ़िये, गीता-प्रवचन आप लोग पढ़ते हैं आपके बच्चे गाते हैं तो इस भाषा का रत्तीभर भी भय नहीं है ऐसा न समझिये। अब आप हिन्दी अच्छी तरह सीखें। धापाइपे धरधरपि। दोनों भाषाएँ अच्छी आने से दो-दो शक्तियाँ हाथ में आ जाती हैं। हम मराठी भाषा के साथ हिन्दी भी सीख लें तो उससे कोई नुकसान न होगा। हमें ऐसा प्रयत्न करना चाहिए, नाम की तनिक भी इच्छा न रहे।

'सहचित्त' से दुनिया बचेगी

अभी यहाँ एक मंत्र कहा गया : 'सहचित्तमेषाम्'। सबका सह-चित्त हो यही काम गत वर्षों से मैं कर रहा हूँ। इसकी प्रतिध्वनि हिन्दुस्तान और उसके बाहर भी गूँज उठी है। हमारे देश में इसकी बहुत जरूरत है। वैसे बहुत से अच्छे-अच्छे विचार अनेकों को सूझते हैं : 'पिण्डे पिण्डे मतिर्भिन्ना'। ये अच्छे ही हैं। मानो एक-दूसरे के विचारों का दोष छोड़कर गुण ले सकते हैं। बुरे विचारों के भी दोष छोड़कर गुण ले सकते हैं। इस तरह गुण-संग्रह और दोष-निरसन हो सकता है। पर सब होने के लिए एक बात करनी होगी। हरएक का अलग-अलग विचार सूझता और प्रेरणाएँ होती हैं। यह अच्छा है फिर भी सूत्रे मणिगणा इव सबको गूँथनेवाला एक धागा होना चाहिए और सबका सह-चित्त बनना चाहिए। तभी भारत का बचाव हो सकता है उदय हो सकता है और दुनिया भी बच सकती है। नहीं तो दुनिया का भी भला नहीं है। आज अमेरिका और रूस सह-जीवन और सह-अस्तित्व की भाषा बोलने लगे हैं। यह पहला कदम है प्रारम्भ है। इसमें वृद्धि होनी चाहिए और हम सबको सह-चित्त होना चाहिए।

हिन्दुस्तान में अनेक धर्म अनेक सम्प्रदायों के लोग साथ और एक

साथ यहाँ रहे—सह-अस्तित्व शुरू हुआ। अगला कदम सह-चित्त होने का है और वह होना ही चाहिए। यह वेद की १० हजार वर्ष से माँग है। इसके लिए उसने स्वतन्त्र शब्द बनाया : सहचित्तमेषाम्। 'समानीव आकूतिः समाना हृदयानि वः। समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति॥' यहाँ उसने 'समान-समान' शब्द का प्रयोग किया गया। हमारा मन समान रहे यह भी कहा गया। लेकिन जब 'चित्त' शब्द आया तो 'सहचित्त' ही कहा। आज इसी सहचित्त की भारत को सारी दुनिया को और मानव-समाज को अत्यन्त आवश्यकता है।

इसके लिए हम प्रयत्न करना चाहिए। अगर करते हैं तो सारी दुनिया को प्रकाश प्राप्त होगा।

हम तत्त्वतः मूलतः और स्वरूपतः भीतर से एक हैं यह दर्शन हममें निष्ठा के साथ होना चाहिए। महाराष्ट्र में हम लोग इसे 'अद्वैत' कहते हैं। बहुतों की धारणा है कि द्वैत याने 'झगड़ा'। लेकिन यह सही नहीं है। द्वैत भी बहुत ऊँचा है पर अद्वैत उससे भी ऊँचा है। द्वैत में यह भूमिका रहती है कि मैं एक भक्त हूँ और बाकी सारे भगवान् हैं—सारी दुनिया परमेश्वर है। इन पशु-पक्षी आदि जो कुछ भी हमारे सामने दिखाई पड़ता है सारी भगवान् की मूर्तियाँ हैं। सारा जगत् स्वामी है और मैं सेवक हूँ। इस तरह स्वामी और सेवकभाव इसमें रहता है। द्वैत का अर्थ है—दुनिया में तीसरी बात है ही नहीं। एक मैं भक्त और दूसरा है मेरा प्रभु मेरा स्वामी। वह सेव्य और मैं सेवक हूँ। इतनी उदात्त भूमिका द्वैत में है। किन्तु उससे आगे की भूमिका यह है कि ये सेव्य और सेवक कहाँ थे? हम सब एक ही हैं। इस अद्वैत भूमिका का आधार हमारे महाराष्ट्र को प्राप्त हुआ। शंकराचार्य के विचार का प्रचार यहाँ हुआ। उपनिषदें फैल गयीं। गीता पर अप्रतिम भाष्य लिखकर ज्ञानदेव ने महाराष्ट्र में अद्वैत की भूमिका कायम कर दी।

इसीलिए महाराष्ट्रीय लोगों को दुनिया की सेवा के निमित्त कहीं भी जाने के लिए कभी भी किसी तरह का संकोच मालूम नहीं

पड़ा। भविष्य में भी उसे यह नहीं मालूम होना चाहिए। दुनिया की सेवा करने के लिए हिन्दुस्तान से कौन-कौन निकले, इस पर जब मैं गौर करता हूँ तो मुझे दीख पड़ता है कि दूसरों की तरह महाराष्ट्र से भी ऐसे सेवक निकल पड़े हैं। इसका एकमात्र कारण यही है कि ज्ञानदेव ने अद्वैत का विचार घर-घर पहुँचाया है। उन्होंने ब्रह्मविद्या का सुकाल (सम्पन्नता) करने की प्रतिज्ञा ही की थी

दुणे मराठियेचिया नगरी। ब्रह्मविद्येचा सुकाळ करी॥

ज्ञानदेव ने हमें ऐसी भूमिका दी। अद्वैत हम सबका धर्म है। छोटी-मोटी उपासना के भेद हमारे धर्म नहीं उन पर हमारा आग्रह नहीं। इसलिए सबका चित्त एक होना चाहिए और एकमात्र अद्वैत ही हमारा धर्म है—तो सबको मूलभूत (बुनियादी) मदद मिलेगी और सह-चित्त होने के लिए अधिक देर न लगेगी। आज हमें इसकी अत्यन्त आवश्यकता है। दूसरी बात जिसे अंग्रेजी में 'कामन प्रोग्राम' कहते हैं और जो शब्द हिन्दुस्तान की आज की राजनीति में रूढ़ हो गया है वह यह कि जिसमें जरूरी एकता है मतभेद नहीं, ऐसा एक कार्यक्रम हमें अपनाना चाहिए। उसमें सभी अपने-अपने मतभेद भूलकर काम में लग जायँ। इस दिशा में मेरा प्रयत्न चल रहा है।

कभी-कभी इस तरह का काम करनेवाला व्यक्ति सबका प्रिय होने के स्थान पर सबके लिए शंकास्पद भी हो सकता है। हैदराबाद राज्य के करीमनगर जिले में भूदान के लिए हम लोग घूम रहे थे। उस समय भूदान का विचार मालूम होने के कारण हमसे कम्युनिस्ट लोग भी पूछते थे। यह देखकर कांग्रेसवाले कहने लगे कि कम्युनिस्टों ने बाबा को पकड़ लिया और अब वे अपने कार्यक्रम के लिए उनका उपयोग करेंगे। तेलंगाना में मैं गया तो वहाँ उनको कुछ स्पष्ट भी ऐसी बात मेरे मुँह से निकली नहीं थी। इस पर वहाँ के लोग कहने लगे कि बाबा कांग्रेस का एजेंट है। आगे महाराष्ट्र में गया तो यहाँ कम्युनिस्टों के

बारे में बोलने के अनेक अवसर आये। तब बहाँवाले कहने लगे कि यह कांग्रेस की सुन्दी आलोचना करता है यह ठीक नहीं। यह आदमी अच्छा है पर कांग्रेस की सुन्दी आलोचना करनेवाला है, इस पर भी शंका उनके मन में आयी। उत्तर प्रदेश के जौनपुर जिले में आर० एस० एस० और जनसंघ के लोग मेरे साथ थे तो वहाँवालों को लगा कि ये जनसंघवाले बाबा को उठा ले गये। यानी सबकी शंकाओं का पात्र मैं बना। सबको एक करने में अगर इस तरह मेरा पैर फिसल जाय तो मैं चारों खाने चित हो गया यही कहना पड़ेगा।

मुझे आपसे यही कहना है कि आप यह हृदय चीरकर देखिये कि इसमें क्या है? इसे 'सद्‌विचार' चाहिए, दूसरा-तीसरा कुछ नहीं। हमें साधारण मतभेदों को मिटा देना है।

किरपान नहीं करुणा चलेगी

हमारी कमाई में कुछ दम नहीं है। कमाई का उपयोग उत्पादन के काम में किया जाय तो काम चलता है। लेकिन अगर उसका लड़ने में उपयोग किया जाय तो कुछ भी मूल्य न होगा। मैं पंजाब गया था। वहाँ हर सिक्ख कमर में किरपान लटकाता था। मैंने उन्हें बताया कि आज के युग में किरपान का रत्तीभर भी उपयोग नहीं। आज कम्पन करुणा की है। शिवाजी ने धर्म-रक्षा और स्वराज्य के लिए किले बनवाये। आज अगर हम वैसे किले बनवाने चलें, तो उन पर आकाश से आसमानुक्त जल्दी बम गिरेंगे। कम्पन स्थूल अनुकरण की नहीं गुणों के अनुकरण की है।

समता और शान्ति से विश्व का नेतृत्व प्राप्त होगा

आज हमारी कमाई में शक्ति नहीं दीखती। वह अमेरिका और रूस में दीख रही है। उनका अनुकरण करेंगे तो क्या हम उनके हाथ गुलाम बनकर रहना चाहते हैं? लेकिन अगर निर्भय शक्ति रखना चाहते हैं तो हम यह करना होगा कि प्रलयकाल में भी मार्कण्डेय ने तैरकर

ऐसा ही हो। जैसे एच्' + ओ = पानी, वैसे ही त + म = जीवन है। हम सब ऐसा जीवन बनायें। परम मंगल काम के लिए ही हमारा अवतार है। ऐसा समझने का कोई कारण ही नहीं कि सिर्फ राम, कृष्ण के ही अवतार होते हैं। इस परम मंगलमय कार्य के अधिकारी हम भी हैं ऐसा समझकर हम काम करें तो पुण्य और प्रकाश फैलेगा और प्रचंड शक्ति निर्माण होगी। हम सेवा ही करें हमें नाम की जरूरत नहीं। इस प्रकार हमें सेवा करनी चाहिए। और जो सेवा मिले उसे भगवान् को अर्पण करें। सब मंगल हो सबको शुभ बुद्धि मंगल बुद्धि प्राप्त हो।

रामबाग वीणाश्रम इन्दौर —मूल मराठी से

१८ १

"हम भगवान् के प्यारे हैं, हमारा स्वदेश त्रिभुवन है और वहीं हम रहते हैं।'

अमुचा स्वदेश । भुवनत्रयामध्यें वास ।
माधवदासाची वाकडी । कधी वाटें हे कौतिकी ॥

कहता है हमारा घर सारा त्रिभुवन है। रहता था देहू में लिखता था मराठी भाषा। दूसरा-तीसरा कुछ देखा नहीं फिर भी भाषा कैसी करती ! अमुचा स्वदेश, भुवनत्रयामध्यें वास। इतनी व्यापक बुद्धि जिस समाज को सन्तों ने दी वह समाज सारे विश्व का ही विचार करेगा, कभी भी संकुचित नहीं रह सकता।

सबका मिलकर 'महाराष्ट्र'

हम अपने नाम पर ही गौर करें—'महाराष्ट्र'। सभी राष्ट्रों का समूह। संस्कृत में 'गुर्जरेषु' 'बंगेषु' इस तरह बहुवचन का प्रयोग करना पड़ता है। लेकिन महाराष्ट्र के लिए 'महाराष्ट्रेषु' नहीं कहना पड़ता। आप सभी यहाँ वेदाभ्यास करते हैं संस्कृत का व्याकरण जानते ही हैं। महाराष्ट्र के लिए 'महाराष्ट्रे' ऐसा एकवचनान्त ही प्रयोग होता है। इस तरह सबका मिलकर यह एक महाराष्ट्र है। हम सेवा करें और यह सब सहन करने के लिए ही है, ऐसा समझें।

हम सेवा ही करें, नाम की जरूरत नहीं

भागवत में ब्राह्मण कैसा हो इस विषय में कहा गया है, लेकिन वह सभी को लागू होता है। यहाँ ब्रह्मविद्या का रसायन तैयार हुआ है वहाँ यह विचार समझ में आना ही चाहिए कि

ब्राह्मणस्य हि देहोऽयं क्षुद्रकामाय नेष्यते ।
कृच्छ्राय तपसे चेह प्रेत्यानन्तसुखाय च ॥

यह देह इस भोग के लिए नहीं मिला बल्कि त्याग के लिए ही मिला है। जीवन में कम-से-कम भोग हो। तं + म = जीवन जीवन का स्वरूप

वैसे ही किसी एक व्यक्तिविशेष को महत्त्व देकर काम नहीं करना चाहिए।

आज समाज को सख्य भक्ति की भूख है। एक ज़माना था जब समाज में स्वामि-भक्ति चलती थी। आज तो वह नहीं चलेगी।

मेजर जनरल यदुनाथसिंह

वैसे मैं खास कुछ काम नहीं करता। मेरा कुल-का-कुल काम मेरे साथी ही करते हैं। कल मैंने खबर सुनी—मेजर जनरल यदुनाथसिंह 'हार्टफेल' होने से चले गये। अक्सर मुझे मृत्यु का सदमा नहीं पहुँचता लेकिन कल सदमा पहुँचा। भिंड-मुरैना का सारा-का-सारा काम उनके आधार पर खड़ा था। वहाँ उन्होंने बहुत घना पराक्रम किया, भारी मेहनत की। सतरह-पत्तर से एक योजना बनायी, हिम्मत के साथ काम किया।

हमारी ताकत कुछ कम हुई

मृत्यु का शोक करने की ज़रूरत नहीं होती। मैं मानता हूँ कि उन्होंने शरीर से जितना काम किया, उससे ज़्यादा काम उनकी आत्मा करेगी। मुझे सदमा नहीं पहुँचना चाहिए, लेकिन कल मुझे लगा कि हमारी ताकत कुछ कम हुई है।

मैंने देखा है कि एक साल से वे कोशिश कर रहे थे। कश्मीर में वे हमारे साथ थे। वे न होते तो भिण्ड मुरैना का काम हरगिज़ नहीं हो सकता था। अक्सर काम तो भगवान् ही करता है, लेकिन वे न होते तो वहाँ हमारा प्रवेश शायद हो ही नहीं सकता था।

हम सब साथी हैं

इसलिए हमारा नेता कोई नहीं है। हम सब साथी हैं, भागीदार हैं, सहकारी हैं, ऐसी भावना से काम करना चाहिए। अलग-अलग मनुष्यों में अलग-अलग गुण होते हैं। हमने जो काम उठाया, उसमें अनेकविध गुणों की ज़रूरत पड़ेगी। इसमें एक महाभारत है। रामायण में राम प्रधान

'सख्य भक्ति' का जमाना · १८

आजकल राजनैतिक पार्टी के झगड़े जगह-जगह तोड़ने का काम करते हैं। अभी असम से एक पत्र आया है जिसमें लिखा है कि असम में दरअसल भाषा का झगड़ा नहीं है यह राजनैतिक पार्टियों का झगड़ा है।

सर्वोदय के काम में झगड़ों को स्थान नहीं

जो काम स्वराज्य के पहले हमने किये थे, वे फिर से शुरू करने होंगे। क्योंकि यह तोड़ने का काम याने स्वराज्य खोने का काम है। हमें उस काम में दिलचस्पी ज्यादा है जो काम जोड़ता है। तोड़नेवाला जो काम है उसमें दो भाग करके तोड़ते हैं—मालिक विरुद्ध नौकर, शहर वाले विरुद्ध गाँववाले मकानवाले विरुद्ध किरायेदार, शिक्षक विरुद्ध विद्यार्थी। इनके अपने-अपने संगठन होते हैं और उन संगठनों से तमाम तोड़ने का काम होता है। गांधीजी ने खूब कोशिश की इसलिए थोड़ी एकता आयी। फिर भी पाकिस्तान बन ही गया। जिधर-तिधर दंगा का वातावरण हुआ लोग पस्तहिम्मत हो गये मायूसी छा गयी। गांधीजी ने हरिजनों के लिए भी खूब कोशिश की लेकिन वे भी इस काम में सफल नहीं हो सके। गांधीजी की कोशिश के बावजूद भी आज स्वराज्य में हम देखते हैं पंजाब में सिख और हिन्दुओं का झगड़ा चल रहा है। तमिलनाड में भी 'द्रविड़ कड़गम' अपना अलग राज्य होना चाहिए, ऐसा कह रहे हैं। असम में भी कौमीवाद सामने आ रहा है। मतलब स्वराज्य की दृष्टि से हम एक होना चाहिए। यह ध्यान में नहीं आता है इसलिए झगड़े चलते हैं। यह झगड़े इन्दौर में कम-से-कम दीखते हैं, और जो भी थोड़े हैं उनको सर्वोदय के काम में बिलकुल स्थान नहीं देना चाहिए।

समझाना है—मतलब तरह-तरह के काम हैं और विविध गुणों की जरूरत है। इस काम में अनेकविध गुणों का समुच्चय होता है। इसलिए हमारे काम में अनसेवकत्व गणसेवकत्व चाहिए।

घड़ी के पुर्जे

इसमें जितने लोग आयेंगे उनका हरएक का अपना-अपना स्थान होगा। जैसे सूक्ष्मयन्त्र में घड़ी में अनेक पुर्जे होते हैं। एक भी पुर्जा अगर कमजोर होता है तो घड़ी बन्द हो जाती है काम करने से इनकार कर देती है। वहाँ यन्त्र का एक-दूसरे के साथ इतना नजदीक का सम्बन्ध है वहाँ ऐसा ही होता है।

यहाँ आपने इन्दौर को 'सर्वोदय-नगर' बनाने की बात की वहाँ तो अनेकों की अनेक गुणों लोगों की जरूरत है।

इन्दौर —नरहरी कोठारी-बालोद्यान में
१ ८ ९ सर्वोदय-मित्रों से

है। वाल्मीकि को जरा शंका हुई कि कान भेद है। इसलिए उसने 'मैं रामचरित लिख रहा हूँ' ऐसा नहीं लिखा, 'मैं सीतारामचरित लिख रहा हूँ' ऐसा लिखा है। फिर भी रामायण में दो-तीन ही व्यक्ति ऐसे दिखा सकते हैं लेकिन महाभारत में भीष्म, कर्ण, द्रोण, भीम, अर्जुन, युधिष्ठिर, द्रौपदी अपने-अपने हिसाब से अद्वितीय हैं। इसलिए वह महाभारत है। रामायण के समान वह एकायन नहीं है। उसमें अनेकों के अनेक गुण हैं।

गणेश और गुणेश

काम का पैमाना छोटा होता है तो उसमें एक ही गुण की जरूरत होती है लेकिन जहाँ काम व्यापक होता है, वहाँ गणसेवकत्व चाहिए, गुणसम्पन्नता ही वहाँ काम करेगी। जो गणेश होते हैं, वे गुणेश भी होते हैं। संत रामदास ने मराठी में लिखा है: 'गणाधीश जो ईश सर्वांगुणांचा' यानी ऐसा गण जिसमें सब गुण हैं, सब गुणों का समावेश जिसमें हुआ है।

पंचायतन

हमारा काम इतना व्यापक है कि उसमें स्त्री-पुरुष, हरिजन, मुसलमान, हमारे व्यापारी, वैद्य, वकील, शिक्षक, विद्यार्थी ऐसे अनेक तबकों के लोगों की जरूरत है। और जहाँ ऐसे अनेक लोग सामने आते हैं, वहाँ 'पंचायतन' बनता है। फौज में कमांडर का महत्त्व होता है, वहाँ एकांगी काम होता है, इसलिए वहाँ भेदल नहीं रह सकता।

विविध काम, विविध गुण

हमारे काम में सर्वविध काम हैं, इसलिए सर्वविध गुणों की जरूरत है, उसमें अनेकों की जरूरत है। मिसाल के तौर पर कहूँ, तो 'भूमि-क्रान्ति' का सामाजिक बन्धारा है, इसके लिए विविध गुणों की जरूरत है। सफाई का काम है, उसमें दूसरे गुणों की जरूरत होगी। समाज में रोगी को बीमार

एक ऐसी कौम है जो 'जय जगत्' का मन्त्र एकदम उठा सकती है और जहाँ भी जाती है वहाँ प्यार में अपना स्थान बना लेती है। कुशलता से नम्रता से प्रवेश करने की शक्ति इस कौम में है। यह सब देखकर मुझे बहुत खुशी हुई।

हम आप भाई-भाई

यह सब कहने का सार यह है कि आप और हम एक परिवार के भाई-भाई हैं। मेरा आपका कौटुम्बिक नाता है, ऐसा आपको मानना चाहिए।

नगर-निगम भी खुद एक समस्या है

आपने अपनी कुछ शिकायतें भी मेरे सामने पेश की हैं। उनमें अधिकतर वाजिब भी हैं। इन शिकायतों में से एक यह है कि यहाँ सारा गन्दगी का ढेर होता है, उसकी सफाई की आपने माँग की है। लेकिन ये जो सारे छोटे-छोटे मसले हैं, इन सबसे बहुत बड़ा मसला है, वह अगर हल हो जाय, तो ये छोटे मसले खुद ही हल हो जायेंगे। वह यह कि नगर-निगम भी खुद एक मसला है। जहाँ-जहाँ निगम बने हैं, वहाँ वे एक मसले ही हो गये हैं। कारण सियासी जमातें अपना-अपना गुट बनाकर उसमें प्रवेश करती हैं। और जहाँ नगर-निगम में सियासत का प्रवेश हुआ, वहाँ सेवा का काम खतम हो जाता है और आपस में रगड़न, एक-दूसरे को गाली देना तथा एक-दूसरे को गिराने का काम शुरू हो जाता है। परन्तु यह मसला हल हो जाना चाहिए। कम-से-कम इन्दौर में तो होना ही चाहिए।

निगम से सियासत हटे

आज नगर-निगमों में जो सियासत पैठ गयी है, वह हटनी चाहिए। नगर-निगम सेवा का एक स्थान माना जाना चाहिए। सेवा के ख्याल से ही लोग वहाँ जायँ, अपने-अपने विचार पेश करें और मिलकर एक समझकर बातें तय करें और जो तय करें उस पर अमल करें। सब

जब शरणार्थी भाई यहाँ आये तब उनकी समस्या विकट थी। उन दिनों लोगों में क्षोभ और गुस्सा भरा था, बदले की भावना थी अपनी सरकार के और मुसलमानों के खिलाफ। अब वह सब शान्त हो गया। यह पुरानी बात हो गयी; लेकिन एक जमाना जरूर था और वह स्वाभाविक ही था। बेचारे लूटे गये थे। सब के सब बेघरबार होकर यहाँ पहुँचे और उन्हें कैम्पों में रहना पड़ा।

अपने पुरुषार्थ से बस गये

फिर भी बहुत खुशी की बात है कि उन्होंने पुरुषार्थ का काम किया। जगह-जगह छोटी-छोटी दूकानें खोलीं। जो व्यापार के स्थान माने जाते थे जहाँ दूसरे व्यापारी अच्छा व्यापार करते थे वहाँ भी ये लोग पहुँचे और अपना व्यापार जमाया। क्योंकि इन्होंने कम-से-कम मुनाफा लिया, ज्यादा-से-ज्यादा मेहनत की और थोड़ी-सी पूँजी में काम चलाया। इस तरह हिन्दुस्तान में ये लोग अपने पुरुषार्थ से बस गये। फिर जो थोड़ी-बहुत मदद सरकार से मिलनी चाहिए थी वह भी मिली। तभी से इन भाइयों से मेरा प्रेम का सम्बन्ध रहा।

आज हिन्दुस्तान में सिर्फ १ लाख सिन्धी भाई हैं और उनके दो लाख घर हैं। पर सिन्धी 'गीता प्रवचन' की १५ हजार प्रतियाँ बिकी हैं। मैंने सिन्धी में उसकी प्रस्तावना भी लिखी है। उसमें मैंने लिखा है कि मैं सिन्धियों की सेवा तो नहीं कर पाया लेकिन अब इस 'गीता-प्रवचन' द्वारा मुझसे उनकी यह सेवा बन रही है इससे मुझे खुशी है। सिन्धी भाइयों में प्रान्तीय भावना तो है ही नहीं। वे अखिल भारत की भावना रखते हैं और दुनिया के सभी देशों में जाते हैं। यह आजकल

श्रेय यह करें कि इन भाइयों ने व्यापार तो अच्छा जमाया और व्यापार के जरिये जो सेवा होती है वह बन्द की। इसके अलावा नागरिक के नाते भी सिन्धी भाई खूब सेवा कर रहे हैं ऐसा सारे समाज को हम देखने को मिलना चाहिए। जो दूसरों की सेवा करता है वह धन्य होता है। फिर उसके हम गान गाते हैं।

नामों से बेहतर है, नम्बरों में मार्ग हों

कुँवरसिंह का गाना तो आपने यहाँ गाया और उनका नाम कॉलोनी में भी दे दिया। मन्दिर, मकान कालोनी आदि का ऐसे नाम रखना आज का बड़ा ही आसान तरीका है। इसमें कुछ भी देना नहीं पड़ता। काफी सस्ता सौदा आपने किया। दूसरे भी ऐसा ही करते हैं। महात्मा गांधी रोड, जवाहरलाल रोड सुभाष रोड तिलक रोड और भी ऐसे दस-बीस रोड मिलेंगे। इस तरह मनुष्यों के नाम लेकर मानो आपने थोड़े में अपना कर्तव्य पूरा कर दिया। भले ही उन रोडों पर उन महापुरुषों के अनुरूप काम हो या न हो। नाम दे दिया तो छुट्टी हो गयी। आदरभाव पूर्ण (प्रकट) हो गया तथा भाव भी विधिपूर्वक हो गया। उनके ऋण से मुक्त हो गये। लेकिन इस तरह के ख्याल से कोई लाभ नहीं। इस तरह से सारे नगर में भिन्न-भिन्न महापुरुषों के नाम रख दें, तो आगे और बड़े महापुरुष पैदा होंगे तब क्या करेंगे? तिलक रोड से महातिलक रोड रखना ही कर सकते हैं। आखिर आपके सामने कुछ न कुछ मार्ग पकड़ने का काम करने की बात आयेगी ही या कब तक इस प्रकार तरह तरह के नाम रखा करेंगे! मैं तो इससे बेहतर यह मानता हूँ कि रास्तों के नाम नम्बर में हों—रास्ता नम्बर एक, रास्ता नम्बर दो रास्ता नम्बर तीन। उसके अन्दर गली है तो गली नम्बर एक गली नम्बर दो इस तरह रखिये। रास्ते में गलियाँ पाँच हुई और उनमें मकान दो हुए और रूम पन्द्रह तो 'एक तीन एक पन्द्रह'। हो गया आपका पूरा पता। इसके सिवा कुछ भी पास में न हो तो काम अच्छा होगा। इस तरह

लोगों को तय करना चाहिए कि कम-से-कम ग्राम-पंचायत, तहसील-पंचायत, न्याय-पंचायत नगर-निगम सेवा के स्थान माने जायँ और वहाँ दलीय स्तर पर कोई चुनाव न हो। जो भी चुने जायँ सभी सर्वानुमति से काम करें और सिर्फ सेवा का काम करें।

अभी असम में काम बिगड़ा। कहा जाता है, भाषाओं का तनाव था। भाषाओं का तनाव तो क्या था, उसके पीछे और भी कई तनाव थे। उसमें पार्टियाँ भी कई थीं। जगह-जगह दीख पड़ता है कि जहाँ-जहाँ भी इस प्रकार की कोई भी शिकायत होती है उसके अन्दर पार्टियों का दखल होता है। एक बाजू एक पक्ष लेता है, तो दूसरी बाजू दूसरा, और झगड़ा चलता ही रहता है।

यहाँ के नागरिकों में सिन्धी भी नागरिक हैं। सियासत आपका एक कपड़ा है जिसे आपने पहना है। अगर आप उसे अच्छा समझते हैं, तो जरूर पहनिये लेकिन कितना भी अच्छा कपड़ा क्यों न हो, उसे पहनकर आप मन्दिर में नहीं जाते, उसे बाहर निकालकर ही जाते हैं। ठीक इसी तरह यह सियासत का कपड़ा बाहर रखकर हम सब लोग नगर निगम के अन्दर जाना मंजूर करेंगे। इससे बहुत-सी समस्याएँ हल होंगी, जिसमें आपकी भी समस्या सहज हल हो जायगी।

दूसरों की सेवा करनेवाला सन्त होता है

सिन्धी भाइयों ने काफी मुसीबतें सही हैं। फिर भी उन्होंने जगह जगह अपना स्थान बनाया और लोगों के दिल में प्यार भी पैदा किया। यह नहीं कि अपनी बात किसी पर लादी। लेकिन कुशलता से काम करके जगह जगह प्रेम हासिल किया। इस तरह यहाँ एक पूरी कौम की कौम आ गयी और उसने पूरे हिन्दुस्तान का प्रेम हासिल किया। यह बहुत बड़ी बात है। आज आपको सोचना यह चाहिए कि हम हिन्दुस्तान के नागरिक हैं और आगे जाकर हमें दुनिया के नागरिक बनना है। इसलिए आपकी तरफ से गाँव की ऐसी सुन्दर सेवा होनी चाहिए कि सब

लोग यह कहें कि इन भाइयों ने व्यापार तो अच्छा कमाया और व्यापार के जरिये भी सेवा होती है यह जरूर की। इसके अलावा नागरिक के नाते भी सिन्धी भाई खूब सेवा कर रहे हैं ऐसा सारे समाज को दृश्य देखने को मिलना चाहिए। जो दूसरों की सेवा करता है वह सन्त होता है। फिर उसके हम गाने गाते हैं।

नामों से बेहतर है, नम्बरों में मार्ग हों

कुँवरसिंह का गाना तो आपने यहाँ गाया और उनका नाम कॉलोनी को भी दे दिया। मन्दिर, मकान, कालोनी आदि का ऐसे नाम रखना आज का बड़ा ही आसान तरीका है। इसमें कुछ भी देना नहीं पड़ता। नाम रखना सस्ता सौदा आपने किया। दूसरे भी ऐसा ही करते हैं। महात्मा गांधी रोड, जवाहरलाल रोड, सुभाष रोड, तिलक रोड और भी ऐसे दस-बीस रोड मिलेंगे। इस तरह महापुरुषों के नाम लेकर मानो आपने थोड़े में अपना कर्तव्य पूरा कर दिया। भले ही उन रोडों पर उन महापुरुषों के अनुरूप काम हो या न हो। नाम दे दिया तो छुट्टी हो गयी। आदरभाव पूर्ण (पूरा) हो गया तथा श्राद्ध भी विधिपूर्वक हो गया। उनके ऋण से मुक्त हो गये। लेकिन इस तरह के नामों से कोई लाभ नहीं। इस तरह से सारे नगर में भिन्न-भिन्न महापुरुषों के नाम रख दें तो आगे और जो महापुरुष पैदा होंगे तब क्या करेंगे? तिलक रोड से महातिलक रोड रखना ही कर सकते हैं। आखिर आपके सामने कुछ न कुछ नाम परिवर्तन का काम करने की बात आयेगी ही, तो कब तक इस प्रकार तरह तरह के नाम रखा करेंगे? मैं तो इससे बेहतर यह मानता हूँ कि रास्तों के नाम नम्बर में हों—रास्ता नम्बर एक, रास्ता नम्बर दो, रास्ता नम्बर तीन। उसके अन्दर गली है तो गली नम्बर एक, गली नम्बर दो इस तरह रखिये। रास्ते में गलियाँ पाँच हुई चार उनमें मकान दो हुए और क्रम पन्द्रह तो 'एक तीन दो पन्द्रह' हो गया आपका पूरा पता। इसके लिए कुछ भी पास में न हो तो काम अच्छा रहेगा। इस तरह

सत्य के नाम से किया करते हैं। पत्थरों को, मकानों को और महापुरुषों के स्मरण के लिए हमें बिलकुल कुछ भी नहीं करना पड़ता, यह तो बिलकुल ठगबाजी है। ऐसा हम न करें और उनके जो गुण हैं उनका अनुकरण करें।

सिन्धी भाई सेवा अच्छी करते हैं। गुजराती भाई अच्छी सेवा करते हैं, मराठी लोग अच्छी सेवा करते हैं। होना तो यह चाहिए कि इस प्रान्त के या बाहर के जो लोग यहाँ आकर बसे हैं, वे अब यहाँ के हो गये हैं। इसलिए उन्हें अब यहाँ के बनकर दूसरे निवासियों की सेवा में घुल-मिल जाना चाहिए। एकरूप होने की कोशिश करनी चाहिए और सेवा के लिए सामने आना चाहिए।

सब घरों में सर्वोदय-पात्र हों

यहाँ सिन्धियों के जितने घर हैं उनमें १, २ घरों में तो सर्वोदय-पात्र होना ही चाहिए। 'गीता-प्रवचन' भी उतने ही होने चाहिए। उसके बाद आपमें से सेवा के लिए कुछ सेवक निकलने चाहिए, जिनमें कुछ पूरा समय देनेवाले हों। तीन-चार भाई इकट्ठे व्यापार कर रहे हैं, तो उनमें से एक को सेवा के लिए यह कहकर छोड़ दें कि हमने सेवा के लिए तुम्हें छोड़ दिया और तुम्हारा व्यवहार बाकी के सब भाई देख लेंगे।

आपकी कम्युनिटी छोटी-सी है। लेकिन जो छोटी कम्युनिटी होती है वह प्यारा काम करती है। छोटी होने के नाते वह ठोस होती है। फैली हुई कौम बड़ी तो होती है लेकिन फैली होने के कारण उसकी ताकत कम हो जाती है। आपको मालूम है कि हमारे कितने घर हैं। एक ठोस प्रेमभाव छोटी कौमों में होता है। इसलिए आपकी कौम की तरफ से चार-पाँच भाइयों की मैं माँग करता हूँ। ऐसे चार-पाँच भाई आप सेवा के लिए दे दें। उनका सारा इन्तजाम, उनका पुस्तक संघ या उनके घर चलाने का जो खर्च आवे वह आपकी कौम उठावे।

इन्दौर —सिन्धी कॉलोनी में
५-८-'६०

यह ज़माना विज्ञान का है। विज्ञान के ज़माने में देशों के बीच की रेखाएँ, सीमाएँ टिकनेवाली नहीं टूटनेवाली हैं। इसलिए हम कुल मानवता को अपने विचार में जितने ज़्यादा ग्रहण करें उतना ही अच्छा होगा। इस दृष्टि से विज्ञान की प्रगति के साथ-साथ आध्यात्मिक प्रगति भी होनी चाहिए।

'जय जगत्' ही हम और आपको मिलानेवाला समान तन्तु

विचार विकसित होने चाहिए। यही सोचकर 'जय जगत्' की भावना प्रसारित करने की कोशिश की गयी और आज एक हद तक भारत ने उसे ग्रहण कर लिया है। इसी तरह आप लोगों का जो विचार है वह अखिल विश्व के साथ सम्बन्ध रखनेवाला है। ये आपके और मेरे विचार के समान तन्तु हैं।

भविष्य में मज़हब टूटेंगे और रूहानियत आयेगी

आगे बननेवाली दुनिया में दो चीज़ें बिल्कुल ज़ाहिर हैं। वह यह कि मज़हब टूटनेवाला है। मज़हब का सारभूत अंश जिसे हम 'रूहानियत'—'आध्यात्मिकता' कहते हैं वह ज़ोरों के साथ आनेवाली है और आयेगी। भारत और दुनिया के दूसरे देशों में अध्यात्म विद्या बहुत पुराने ज़माने से चली आयी है। लेकिन वह विचार केवल कुछ लोगों का ही एक विचार बनकर रहा। आम जनता में उसका इतना ही असर हुआ कि थोड़ी-सी इज़्ज़त उसके लिए बनी। लोगों में आध्यात्मिकता की श्रद्धा रही। लेकिन असल तो मज़हब ही। इतना ही आज तक मज़हबों ने किया। लेकिन इसके आगे मज़हब चलाने में नाकाम साबित होनेवाले हैं। जिन

मजहबों ने चन्द लोगों को इकट्ठा किया, चन्द पंथों को इकट्ठा किया व ही कुल दुनिया को इकट्ठा करने में बाधक हो रहे हैं; क्योंकि ये बीच में एक दीवाल खड़ी करते हैं। हर मजहब हर पंथ अपने-अपने छोटे-छोटे नियमों के साथ बँधे हुए हैं। उनके जन्म मरण गृह्य, स्त्रियों के स्मरण आदि की विधियाँ और पारलौकिक ख्यालात भी तरह-तरह के होते हैं। ये सब तथाकथित लोगों ने बनाये और उन्हीं के आधार से कुछ जमातें इकट्ठी हुईं। आज वे जमातें परस्परविरोधी बनकर टकरा रही हैं। वे सब व्यापक होकर एक दुनिया, एक मानव बनायेंगी यह मुमकिन नहीं क्योंकि ये दीवारें एक पत्थर बन गयी हैं। अगर वे नहीं *मिटतीं*, तो *मानव को मिटना होगा*। इनसे झगड़े पैदा होंगे *संकुचित मन होगा*। उसके कारण जो भेद निर्माण होंगे वे विज्ञान के जमाने में नहीं टिकेंगे। उन भेदों के साथ मानव भी टिक नहीं सकता। इसलिए भविष्य में मनुष्य को अभेदबुद्धि की ओर बढ़ानेवाली आध्यात्मिकता ही आगे आयेगी। दुनिया पर उसीका जोरदार असर होगा और मजहब टूटेंगे।

सियासत जल्दी टूटनी चाहिए

दूसरी बात यह कि सियासत जल्द-से-जल्द टूटनी चाहिए। विज्ञान के जमाने में सियासत इतनी पुरानी हो गयी है कि अगर वह रहने का आग्रह करेगी तो दुनिया के बहुत से राष्ट्र सेना के कब्जे में हो जायँगे। सियासत के साथ छोटी-छोटी पार्टियाँ और उनके झगड़े दुनियाभर में चल रहे हैं। अल्पमत-बहुमत के वाद-विवाद चल रहे हैं। हिन्दुस्तान ही नहीं बल्कि दुनिया के दूसरे देशों में भी *'वेलफेयर स्टेट'* के *नाम पर* सारी सत्ता केन्द्रित करने की होड़ मचा चल पड़ी है पर भी गलत काम है। उससे चन्द लोगों के हाथ में इतनी सत्ता चली जाती है कि वे कितने ही बुद्धिमान् और हित चाहनेवाले क्यों न हों उनके हाथ से कुछ-न-कुछ अहित होने की ज्यादा सम्भावना है। ये केन्द्रीकरण करने तो जाते हैं पर हो जाता है 'एकत्रीकरण'। इससे लोगों की ताकत टूटती है। लोग

अपनी ताकत पैदा नहीं पाते और सारा दारोमदार सरकार पर रखते हैं। सरकार अच्छी रही तो बहुत अच्छा और बुरी रही, तो बुरा है ही।

पुराने बादशाहों से भी ज्यादा सत्ता

आज की लोकशाही में भी चन्द हाथों में सत्ता का केन्द्रीकरण हुआ है। उसका परिणाम पहले राजाओं के हाथों में जो सत्ता थी उससे भी ज्यादा बुरा हुआ है। राजाओं के हाथ में सत्ता सीमित थी उन्हें विज्ञान की कोई मदद नहीं मिलती थी। हमारी केन्द्रीय सरकार ने एक ही हुक्म से एक निश्चित तारीख को निश्चित समय पर केरल की सरकार को खतम कर दिया। अगर कोई पुरानी सरकार, पुराना राजा चाहता कि केरल में उसके किसी सरदार का राज्य छोड़ दिया जाय तो हुक्म देने में ही महीने लग जाते। फिर हुक्म के वहाँ पहुँचने और उसका उत्तर लिखकर आने में और छह महीने लग जाते। इस बीच न मालूम क्या क्या घटनाएँ होतीं और क्या-क्या बनता! इस वास्ते पुराने जमाने के राजा-महाराजाओं की केन्द्रीय सरकारों की ताकत से तुलना हो ही नहीं सकती। इनके हाथों में अपार ताकत आ गयी है। लोकतंत्र के नाम पर चंद लोगों के हाथ में पूरी-की-पूरी सत्ता आना बहुत बड़ी भयानक घटना है। इतनी बड़ी ताकत का ठीक ढंग से इस्तेमाल करना आसान नहीं होता। ऐसी हालत में लोगों में असंतोष फैलता है। इसीलिए पुरानी सियासत टूटनी चाहिए और उसके स्थान पर विश्वव्यापक लोकनीति आनी चाहिए।

एक किस्म की संस्था होगी उसमें कुछ नैतिक सत्ता रहेगी। दुनिया के अच्छे-से-अच्छे चिन्तनशील पुरुष (जो उसमें हों वे) वहाँ होंगे और उनकी तरफ से दुनियाभर के लोगों को नैतिक सलाह मिलेगी और ऐसे महान् पुरुषों की नैतिक सलाह लोग मानेंगे ही। दूसरी बाजू में ग्राम होंगे जहाँ सब लोग एक साथ बैठे हैं एक-दूसरे को जानते-पहचानते हैं समझते हैं, उनका एक-दूसरे का ताल्लुक बना हुआ है। सारा जीवन बना हुआ है। कोई कटा हुआ जीवन नहीं है। उस हालत में सब लोग एक साथ

विचार करके अपनी इच्छा से अपना माफिक नैतिक, सामाजिक, आर्थिक इस प्रकार का नियोजन करेंगे। उनका अपना पैटर्न होगा। ऐसे हरएक गाँव के अलग अलग पैटर्न होंगे, जो उन उन गाँवों में बने होंगे। उन सब स्वराज्यों का मेल करनेवाली मुख्य संस्था विश्व-संस्था होगी। बीच में जो संस्थाएँ रहेंगी जैसे प्रान्त-संस्था, राष्ट्र-संस्था आदि, वे जोड़नेवाली कड़ियाँ होंगी। इनकी इतनी ही कीमत रहेगी। इनके हाथ में कोआर्डिनेशन आदि जो काम रहता है उतना ही रहेगा। इस प्रकार दुनिया का काम आगे चलेगा और चलना चाहिए, तभी दुनिया टिक सकती।

मैं हिमाचल प्रदेश में घूमता था तो वहाँ के लोग मुझसे शिकायत करते थे कि *यहाँ तो कोई प्रान्तीय सरकार नहीं है।* यह दिल्ली से ही संचालित होता है यह बड़ी कमी है। मैंने पूछा : क्या राजनैतिक झगड़े यहाँ पंजाब से ज्यादा हैं या कम? उन्होंने कहा : बहुत ही कम हैं। मैंने कहा : यहाँ झगड़े इसलिए कम हैं कि यहाँ प्रान्तीय सरकार नहीं है। तो आपको विश्व के साथ जोड़नेवाली कड़ियों में से एक कड़ी कम हुई। यह आपके लिए अच्छा ही है। बल्कि आप गाँव-गाँव को मजबूत करें और ग्रामदानमूलक ग्राम-स्वराज्य की स्थापना करें। आज आपके लिए दो ही संस्थाएँ हैं : एक तो दिल्लीवाली संस्था और दूसरी विश्व-संस्था। बीच की संस्थाएँ जितनी टूटें, उतना अच्छा ही है। हाँ, आप अपने गाँवों को *मजबूत नहीं करते, उन्हें मजबूत रखना नहीं चाहते* तब तो अकेली दिल्ली की तरफ से सब लोगों का इन्तजाम नहीं हो सकेगा। इसलिए बीच में प्रान्तीय सरकार होनी ही चाहिए। फिर जिला-सरकार भी होनी चाहिए। अगर एक विश्व-संस्था है, दूसरी दिल्ली की संस्था है और फिर गाँव ही गाँव हैं और बीच में प्रान्तीय सरकार वगैरह है नहीं, तो एक-एक ग्राम का कारोबार दिल्लीवाली संस्था नहीं चला सकती। इस वास्ते गाँववालों को पूर्ण रूप से अपना विचार करने की जिम्मेदारी उठानी ही पड़ती है और ग्राम-संस्था बनती है। तब बीच की जिलावाली प्रान्तवाली कड़ी टूट सकती है दिल्लीवाली जिम्मेदारी रह जाय।

भविष्य में देश विश्व-संस्था के प्रान्त होंगे

हम जिसे अपना देश कहते हैं, आगे चलकर वह भिन्न होगा और भिन्न ही ढंग होगा। ये हिन्दुस्तान, चीन, इंग्लैण्ड, अफगानिस्तान आदि देश इस विश्व-संस्था के प्रान्त होंगे। आज चीन और हिन्दुस्तान का जो झगड़ा चल रहा है, उसमें कोई फर्क न होगा। लेकिन आगे जो समाज बननेवाला है, उसमें ये मामूली बातें होंगी। उस समय इसे अन्दरूनी झगड़ा मानकर हल करना होगा। बिलकुल अध्ययन-वृत्ति से चिन्तन कर इसका फैसला करनेवाली एक विश्व-संस्था होगी। तटस्थ संस्था होने के नाते वह जो निर्णय देगी, वह सभीको मान्य होगा।

ये सब बातें इस विज्ञान-युग में आगे के समाज में अनिवार्य हैं, अपरिहार्य हैं। इसमें अगर टिकनेवाली चीज है तो यह बाबा टिकेगा, क्योंकि वह रोज-रोज घूमता है और कोई टिकेगा तो रोटरी, बशर्ते कि ये रोटरीवाले अपने स्थान की चिन्ता करें और हवा में उड़ते न रहें, जमीन पर चलें, ग्रामों की रचना करें या इन्दौर में रहकर इन्दौर की सेवा में अपना समय लगायें। तभी यह रोटरी टिकेगी, नहीं तो हवाई रोटरी ही होगी। लोग मुझसे पूछते हैं कि जब कि ट्रेन, मोटर, हवाई जहाज चलते हैं, तो आप पैदल क्यों चलते हैं? मैं कहता हूँ, मैं हवाई जहाज में उड़ता, तो मुझे हवा मिलती, जमीन नहीं। इसलिए जमीन पर घूमता हूँ। रोटरीवालों की एक शाखा बर्लिन में, दूसरी पेरिस में, तीसरी टोकियो में है। मानो आकाश में उड़ गये हैं, जमीन पर पाँव नहीं हैं। इसलिए रोटरीवालों से मेरी प्रार्थना है कि टिकनेवाले आप और मैं हूँ। इसलिए आपकी और हमारी दोस्ती अच्छी है। लेकिन मैं तो जमीन पर काम करता हूँ, कृपा करके आप भी वैसे ही जमीन पर काम कीजिये और अपने मुहल्ले, शहर या गाँव, जहाँ आप रहते हैं, वहाँ की आसपास की जनता की सेवा में लगा दें। यह भी एक तरह से आपकी सेवा है।

इन्दौर —रोटरी क्लब के भाइयों से
५-८-६०

२

वेदान्त सिखाता है 'दशमस्त्वमसि'

वेदान्त की कहानी है। दस लड़के मुसाफिरी के लिए निकले। मुकाम पर पहुँचने के पहले कुछ पाँच-दस मील आगे-पीछे रह गये। अन्त में सब एक पड़ाव पर इकट्ठे हुए। गिनने लगे तो सबने नौ ही गिने। दसों ने प्रस्ताव रखा कि हम १० थे किन्तु अब एक गुम हो गया। वस्तुतः गिननेवाला दसवाँ रहता था जो अपने को गिनता ही न था। इसी तरह मनुष्य अपने को छोड़कर दुनिया का हिसाब करता है तो उसे दुनिया अधूरी अधूरी दिखती है।

नौ-दस साल पहले हैदराबाद स्टेट में हमको भूदान मिला। इस घटना को सब साथियों के सामने रखता, संस्थाओं से सलाह माँगता तो कोई भी इसे एक अव्यवहार्य कार्यक्रम ठहराने में देर न करता, किन्तु हमने किसीको भी न पूछकर दूसरे दिन से जमीन माँगना शुरू कर दिया। दूसरे दिन पड़ाव पर गाँववालों ने नाश्ते का इन्तजाम किया। मैंने उनसे कहा : मेरा नाश्ता तो दूसरा ही है। अब मुझे गरीबों के लिए जमीन मिलेगी, तो मेरा नाश्ता होगा। तुरन्त एक भाई ने २५ एकड़ जमीन दी। यों करते-करते शुरू हुआ तो इतने दिनों में ४-५ लाख एकड़ जमीन मिली। साइन्टिस्ट सारी दुनिया पर experiment करता है किन्तु स्वयं अछूता रह जाता है। आत्मा के ज्ञान के बिना कितने भी ज्ञान हासिल किये जायेंगे, वे सब ज्ञान नहीं होंगे। वेदान्त दसवाँ कौन है यह सिखाता है।

विद्या में प्राण नहीं तो सब बेकार

यहाँ पर प्रोफेसर भी हैं विद्यार्थी भी हैं। किन्तु विद्या का प्रकाश

नहीं है। बिजली आ चुकी है किन्तु बटन दबाने की तरकीब मालूम नहीं है, क्योंकि हमारी सारी विद्या प्राणहीन है। एक किस्सा है एक पण्डित था। किश्ती में बैठा। उसने मल्लाह से पूछा: "क्या गणित जानते हो?" मल्लाह ने जवाब दिया: "नहीं तो।" पण्डित ने कहा: "तुम्हारा चार आने जीवन व्यर्थ है। इतिहास नहीं जानते हो इसलिए आठ आने और ऐस्ट्रानामी नहीं जानते हो इसलिए बारह आने जीवन व्यर्थ है।" इतने में तूफान आया और किश्ती डूबने लगी तो मल्लाह ने पूछा: "महाराज, आप तैरना जानते हैं क्या?" पंडित के "ना" कहने पर उसने कहा "महाराज आप तैरना नहीं जानते हैं इसलिए आपका सोलह आने जीवन व्यर्थ है।" विद्याएँ चाहे जितनी हों, प्राण न हो तो सब बेकार है।

विद्यार्थी के सामने चारों दिशाएँ झुक जानी चाहिए

ऋग्वेद के दशम मंडल में एक सूक्त है। ऋषि की भाषा में विद्यार्थी घर आता है उस वक्त वह बोलता है

> मह्यं नमन्तां प्रदिशश्चतस्रः
> त्वयाध्यक्षेण पृतना जयेम।

चारों दिशाएँ मेरे सामने झुक जाएँ! किन्तु आज हमारा विद्यार्थी जाता है तो क्या चारों दिशाएँ झुकती हैं? कहीं कुत्ता भी इधर उधर भौंका करेगा, क्योंकि उसको आत्मविश्वास नहीं है। उसकी सारी विद्याएँ निस्तेज हैं। गणित, इतिहास आदि विद्या भी अच्छी है किन्तु उसमें प्राणविद्या नहीं है। कुछ शास्त्रियों ने पुरुषार्थ किया और प्राण चले गए।

विद्यार्थी और प्रोफेसर का पारस्परिक सम्बन्ध

प्रोफेसरों का कहना है कि आज की विद्या सब गलत है, उसमें संशोधन करें। उन्हें सर्वोत्तम विद्यार्थी का नमूना पेश करना है। उन्हें ज्ञाननिष्ठ होना चाहिए। प्रोफेसर में इतनी तमन्ना होनी चाहिए कि रात-दिन जब भी चाहें उनके पास विद्यार्थी पहुँच सकें। विद्यार्थियों को

महसूस होना चाहिए कि गुरु उनके लिए जी रहा है, जैसे बेटा महसूस करता है कि माँ उसके लिए जी रही है। ऐसा विद्यार्थियों और प्रोफेसरों के बीच अनन्य एकात्मकता का अनुभव होना चाहिए। प्रोफेसर सब काम हमारे लिए कर रहे हैं। पतिव्रता के लिए जैसे पति प्रमाण है वैसे ही प्रोफेसर के लिए विद्यार्थी प्रमाण होना चाहिए। विद्यार्थी सभ्य बनें उनमें आत्मसामर्थ्य कैसे आये ऐसी चिन्ता दिन-रात प्रोफेसर करेंगे तो प्रोफेसर इस देश को बनायेंगे।

पुराने जमाने में जो ज्ञान-प्रचार की शक्तियाँ हमारे पास थीं उससे कहीं अधिक व्यापक और असरकारक शक्तियाँ हमारे सामने में हैं। आप इस अवसर का महत्त्व समझ सकें तो नया भारत बनाने के लिए एक रसायन तैयार कर सकेंगे। ऐसा रसायन सर्वोदय-विचार में है, जिसमें आधुनिकतम विज्ञान का समावेश है।

इन्दौर —प्रोफेसरों के बीच
५-८ ६

बापू की अन्तिम इच्छा २२

बापू की कार्यकर्ताओं को संग्रह की दृष्टि

बापू ने विविध कामों के लिए विविध संस्थाएँ बनायी थीं। उनमें एक दृष्टि यह रखी थी कि उनमें काम करनेवालों को यदि एक काम में दिलचस्पी न हो, तो उसे दूसरे काम में लिया जा सकता है। कुछ लोग हरिजन-काम में लगे हुए थे। वे बापू के राजनैतिक विचारों में शामिल नहीं थे बल्कि इन विचारों का विरोध करते थे। ऐसे लोगों को हरिजन सेवक संघ में लिया गया। खादी के काम में भी ऐसे लोग आये जो छूत अछूत भेद मानते थे, पुराने विचारों में मानते थे। नयी तालीम में भी ऐसे लोग आये जो बापू का जीवन-विचार पसन्द नहीं करते थे शिक्षण-विचार में मानते थे। जो कि शिक्षण में निष्णात रहे थे, उनका उनमें लिया गया। इस तरह से अपने एक एक विचार के साथ भी जिनका ताल्लुक था उनका संग्रह करने की वृत्ति बापू की थी।

मैं उनके नजदीक रहा। कई प्रकार के कामों में वे मुझे पकड़ना चाहते थे और उनके साथ जोड़ना चाहते थे। लेकिन यह अच्छा बात है कि मैं उनकी पकड़ में नहीं आया। उन्होंने ग्रामोद्योग संघ का अध्यक्ष पद मुझ पर लादना चाहा। मैंने उनसे कहा कि आप मुझे मुक्त रहने दीजिये। आखिर उनको और मेरी जो बात हुई उसमें उन्होंने अपनी इच्छा प्रकट की थी। लेकिन उनकी यह एक खुसूसियत थी कि उन्होंने मुझ पर दबाव नहीं डाला। मैं मुक्त ही रहा। लेकिन फिर भी तालीमी संघ में एक सदस्य के तौर पर मैं था। उसमें से भी मैं छूटना चाहता था। मेरी बात मैंने उनके सामने प्रकट की कि मैं अहिंसा की खोज करना चाहता हूँ। इसलिए मैं मुक्त रहना चाहता हूँ। मुझे आप इसमें

से छोड़ दीजिये। उन्होंने मेरी बात मान ली। लेकिन कहा कि बीच बीच में तुम्हारी सलाह तो इनको मिलनी ही चाहिए। सन् १९४८ की यह बात है।

बापू ने कहा था

मेरे सामने सारी चीजें होती थीं और लोग भी जानते थे कि यह मनुष्य फलाने विचार का है। यह कट्टर है हमारी संस्था में नहीं आयेगा। लेकिन मैं यह देखता था कि जो मनुष्य बापू के एक विचार को नहीं मानता था वह दूसरा मानता था, इसलिए उसे उस काम में ले लिया जाता था। लोक-संग्रह की दृष्टि से इसमें कुछ हद तक लाभ मिला। लेकिन आगे नहीं मिला। जैसे एक अखंड कपड़ा हो और दूसरी बाजू उसके टुकड़े-टुकड़े पड़े हों ऐसा ही यह हुआ। अलग-अलग विचार के माननेवाले लोग अलग-अलग काम करते रहे। इसमें लाभ नहीं है यह विचार उनके दिमाग में आखिर-आखिर में आया। इसलिए वे इन सब संघों को एकत्र करके एक समग्र संघ मिलापी संघ बनाना चाहते थे। उन दिनों वे दिल्ली में थे और उस विचार के मुताबिक काम करने के लिए दिल्ली से सेवाग्राम आनेवाले थे। इतने में उनकी मृत्यु हो गयी।

'खयाली आदमी

उसके बाद हम सेवाग्राम गये। वहाँ हमने बहुत सोचा चर्चा हुई। लेकिन वहाँ कुछ बात नहीं बनी। उस समय मैं एक छोटा-सा सेवक था। देखा कि सबकी दृष्टि देखते अभी बात बननेवाली नहीं है। मैं उस समय अलग रहा। उन दिनों लोग मुझे खयाली आदमी मानते थे। जिस गुण को मैं मानता हूँ उसे तो उन्होंने अव्यवहार्य मान रखा था लेकिन 'अव्यवहार्य' में भगवान का लक्षण मानता हूँ। ईश्वर का लक्षण ही यह है। और यह अव्यवहार्य बनना मुझे अभी पूरा सधा नहीं है इसलिए मुझे जरा दुःख भी है। लेकिन जो कुछ भी मैं मानता आया था, मैंने उन लोगों के काम में दखल देना पसन्द नहीं किया। मैं छोटा

सेवक हूँ मुझे ज्यादा अनुभव नहीं है और वे सब लोग बरसों से राजनीति में काम करनेवाले थे। कई सालों से बापू के साथी थे। इसलिए उस वक्त मैं चुप रहा।

हरिजन-सेवक-संघ अछूता रहा है

उसके बाद भूदान का काम भगवान् ने उपस्थित किया। ईश्वर का इशारा समझकर मैंने उसे उठा लिया। लोगों की भावना इसके लिए तैयार करना चाहता था धीरे धीरे उन लोगों की स्थिति मेरी भावना समझने जैसी हो गयी और धीरे धीरे सर्व-सेवा-संघ बना और उसने इस काम को उठाया। आखिर मैं जब कश्मीर में घूम रहा था तब अ. भा. ग्रामोद्योगी संघ सर्व-सेवा-संघ में विलीन हुआ। बापू ने जिन संस्थाओं के नाम लिये थे उनमें हरिजन सेवक संघ भी था लेकिन वह इससे अछूता रहा। उसको इसमें आना चाहिए ऐसा मेरा कोई आग्रह नहीं है। वह इसमें घुसेगा या नहीं घुसेगा इसमें मुझे कोई दिलचस्पी नहीं है। मैंने यह सारा इसलिए कहा कि बापू की यह कल्पना थी यह विचार था कि कांग्रेस लोकसेवक संघ बने।

सर्व-सेवा-संघ की शक्ति का भान

कांग्रेस लोकसेवक संघ नहीं बनी और वे लोग इकट्ठे नहीं हुए। उस दिन मैंने कहा एक बहुत बड़ी बात बापू ने हमारे सामने रखी थी लेकिन हमने उसे नहीं समझा। बापू एक बहुत बड़े महात्मा थे। महात्मा की उपाधि उनके नाम के साथ जुड़ी हुई है। उनकी विशेषता यह थी कि इतनी दूरदृष्टि रखनेवाला पुरुष नहीं हुआ है। वे बहुत दूरदृष्टि रखते थे लेकिन जो विचार उन्होंने रखा वह नहीं हुआ। न कांग्रेस लोकसेवक संघ बनी, न दूसरे लोग इकट्ठे हुए। लेकिन अपना काम चला और अन्त में धीरे-धीरे सर्व-सेवा-संघ बन गया। उसकी शक्ति का भान तब हुआ जब येलवाल की बातचीत हुई और भिन्न-भिन्न राजनैतिक पार्टियों के नेता भिन्न भिन्न विचार रखनेवाले लोग एक स्थान पर

इकट्ठे हुए। दो दिन बैठक चली। भूदान और ग्रामदान के लिए सर्व-सम्मति से एक प्रस्ताव पास किया गया, जिसमें 'इस काम के लिए हमारा enthusiastic support है' ये शब्द रखे। विरोधी विचार रखनेवाले लोगों में भी इस विचार पर एकवाक्यता हुई। विरोधी विचार रखनेवालों में नेहरू व नम्बूदिरीपाद जैसे राजनैतिक नेता थे और दूसरे भी लोग थे। वे सब एक जगह आये। उसके लिए एक agreed programme बना। तब ध्यान में आया कि हमारा सर्व-सेवा-संघ का एक प्लेटफार्म बन सकता है।

शांति-काम में हम कामयाब नहीं हुए

इसके बाद एक code of conduct बने, जिसमें जैसे येलवाल में सब लोगों ने आकर प्रस्ताव पास किया वैसा कुछ तय हो कि देश में जो झगड़े चलते हैं वे नहीं होंगे। लेकिन यह बात नहीं बनी और जैसी एकवाक्यता येलवाल में मिली, वैसी इस काम में नहीं मिली। मुझे इस बार आश्चर्य नहीं हुआ, दुःख भी नहीं हुआ, क्योंकि जैसे भूदान के काम में हम कामयाबी हासिल हुए वैसे शांति के काम में हम कामयाब नहीं हो सके हैं।

देश में शान्ति की जिम्मेवारी हमारी है

हमें यह सोचना चाहिए और इस बात का ख्याल रखना चाहिए कि हम चाहे खादी के काम में लगे हों, ग्रामोद्योग के काम में लगे हों, भूदान के काम में लगे हों, जो भी रचनात्मक काम हम कर रहे हों, हम लोग सब गांधी विचार का नमक खा रहे हैं। इस वास्ते हम नमकहराम नहीं हो सकते। देश में शान्ति रखने की जिम्मेवारी हमारी है। देश में कहीं अशान्ति हुई तो हम सब उसमें कूद पड़ेंगे, ऐसा माना जाता है और हमसे अपेक्षा की जाती है। अगर हम यह कर सकते हैं तो हमारी आवाज में ताकत आती है और एक common code

of conduct ला सकते थे। लेकिन वह नहीं बना क्योंकि हमारी उतनी ताकत नहीं थी।

आप 'सेल्स' बनायें तो सबको प्रिय होंगे

मैं खादीवालों से पूछना चाहता हूँ कि सरकार आपकी करोड़ों रुपयों की मदद करती है तो गाँव-गाँव जाकर आप क्यों नहीं Cells बनाते ? मदद न मिले तो भी हम गिरेंगे नहीं खड़े रहेंगे। हमारे खादी के विचार के Cells तैयार हैं ऐसा होगा। कम्युनिस्टों ने Cells बनाये तो लोगों को अच्छा नहीं लगा, लेकिन अगर खादीवाले अपने Cells बनायेंगे तो सबको प्रिय होंगे। सबको अच्छा लगेगा। आपका प्रवेश एक लाख गाँवों में है ऐसा मुझे बताया गया। सारे भारत में ५ हजार कार्यकर्ता हैं। खादी ग्रामोद्योग कमीशन का इतने गाँवों के साथ सम्बन्ध है। सरकार की सामुदायिक विकास-योजना भी इतने गाँवों में नहीं है कांग्रेस का भी इतने गाँवों के साथ ऐसा जिन्दा ताल्लुक नहीं है। सरकार का तो सारे गाँवों को कवर करना है वह करेगी। लेकिन वह भी चाहती है कि आप भी पैठें उन गाँवों में व्यापक हों।

आपको तो मंगलाचरण मिला है

बेलगाम में यह प्रस्ताव पास हुआ कि कम्युनिटी प्रोजेक्ट और सर्व सेवा-संघ के कार्यकर्ताओं में सहयोग होगा। आपके लिए यह कितनी बड़ी बात है। कोई भी सरकार किसी प्राइवेट बॉडी को यह कहे कि आपका हमारे साथ रिश्ता है और अपनी संस्थाओं को हैसियत रखती है ऐसा कहीं बना है ? दिल्ली में यह तय हुआ कि कम्युनिटी प्रोजेक्ट के मकान जहाँ-जहाँ होंगे वहाँ-वहाँ खादी बनना चाहिए। और जब कभी शिविर होंगे तो एक-दूसरे को उसमें बुलाया जाए। इतना हुआ, तो देश में आपको यही आदेश मिला कि जितना कम्युनिटी प्रोजेक्ट फैला है उतना आप फैलिये यह एक मंगलाचरण मिला। इसका लाभ उठाना चाहिए।

कमान पक्की नहीं बनी थी

मैं आपसे पूछना चाहता हूँ कि अगर सरकार की मदद आपको जितनी आज मिलती है, उतनी नहीं मिली या बन्द हो जाय तो क्या आपकी खादी ज्यादा चलेगी ? तो मुझे जवाब मिलता है जी ना, इतनी नहीं चलेगी। मैंने कहा : कमान बनाते समय सपोर्ट के लिए ईंटें लगाते हैं। कमान पक्की बन जाने पर ईंटें हटा लेने से कमान अगर टूटती है तो मतलब यही हुआ कि कमान पक्की नहीं बनी थी। वहाँ ईंटें हटाने पर कमान बिलकुल स्थिर, मजबूत और पक्की रहनी चाहिए, वैसे ही मदद के अभाव में अगर हम पहले से कमजोर बनते हैं तो हमने कोई प्रगति नहीं की।

हम सरकार अपने कब्जे में रखना चाहते हैं

यह सब सुधर सकता है अगर हम खादी विचार के Cells बनाते हैं और एक लाख गाँवों में जन-सम्पर्क अच्छी तरह से रखते हैं। उन गाँवों में हम सर्वोदय विचार के लिए लोक-सम्मति प्राप्त करेंगे—सर्वोदय के लिए यह बोट होगा। हम इलेक्शन में तो नहीं जाना चाहते हैं लेकिन सरकार को हम अपने कब्जे में रखना चाहते हैं हाथ में लेना नहीं चाहते। अगर हम सरकार हाथ में लेंगे तो भार होगा। इसलिए करना यह चाहिए कि *सर्वोदय-विचार गाँव-गाँव में पहुँचा दें।* आगे में बामति आय। अपना कार्यभार खुद उठाना है यह जिम्मेवारी हमें महसूस करनी चाहिए। एक गाँव में औसत २५ सर्वोदय-पात्र रखे जायेंगे। यद्यपि यह असम्भव माना जायगा तो भी एक लाख गाँवों में कम-से-कम पचीस लाख सर्वोदय पात्र हो सकते हैं। फिर आप सरकारी मदद न लें तो भी ठीक है। और सरकार बदलनेवाली है। ऐसी परिस्थिति हो सकती है कि आनेवाली सरकार कोई दूसरे पक्ष की हो या दूसरे विचार की हो तो आपको मदद बन्द हो सकती है इसलिए Cells मजबूत हों ऐसा होना चाहिए।

सब मिलकर यहाँ ताकत लगायें

लोग मुझसे पूछते हैं कि आपने इन्दौर क्यों चुना? एक जवाब तो मैंने दे दिया कि मुझे 'इलहाम' हुआ है परन्तु आश्चर्य मुझे यह होता है कि इन्दौरवाले ही मुझसे पूछते हैं कि आपने इन्दौर क्यों चुना? अगर आगरेवाले पूछते तो मैं समझ सकता था। आपको सहज मदद मिल रही है इसमें आपको क्या उज्र है? यहाँ से सौ मील की दूरी पर महाराष्ट्र है सौ मील दूर राजस्थान है, गुजरात है, मध्यभारत में यह स्थान है। हवा-पानी अच्छा है आपकी सेवा के लिए इन्दुलाल है। यह बात सच्ची है कि यहाँ भी लोग मरते हैं लेकिन तुलनात्मक दृष्टि से देखा जाय तो यहाँ हवा अच्छी है और झगड़े कम हैं। दूसरी विशेषता यह है कि अहिल्याबाई के पुण्य का प्रभाव है और हमारा निष्कारण प्रेम है। महाराष्ट्र यहाँ आये हैं और भी हिन्दुस्तान से लोग आ सकते हैं। बिहार और गुजरात से आ सकते हैं। हरएक प्रान्त से दो-दो चार-चार लोग यहाँ आयें ताकि यहाँ के लोग खड़े होने चाहिए। गांधी निधि, कस्तूरबा ट्रस्ट, सर्व-सेवा-संघ सार्वजनिक इतने लोग तो यहाँ हैं ही। उनका यह काम उठा लेना चाहिए।

कस्तूरबा ट्रस्ट की बहनों की इन्दौर के काम में मदद

कस्तूरबा ट्रस्टवालों को मैं कहता हूँ आपने बहुत बड़ा निश्चय कर लिया है देहातों में काम करने का। लेकिन अगर इन्दौर का न होगा, अगर इन्दौर का मसला, तो आसपास के जो गाँव इन्दौर के असर में हैं उनमें आपके काम का असर पहुँचना बड़ा मुश्किल है। उनके ध्यान में यह बात आयी और चार-पाँच बहनें यहाँ काम करेंगी ऐसा तय हुआ है। यह सबसे अनुकूल स्थान है यह देखकर ही हमने इसे चुना है।

अलग-अलग शिकायतें बढ़ती हैं

मैं यहाँ के हरिजन सेवक संघ और दूसरी संस्थाओं को पूछता हूँ कि आपकी ताकत यहाँ क्यों नहीं लगनी चाहिए? वे कहते हैं कि हमारी

सारी ताकत हमारा जो मुख्य केन्द्र है—छतरपुर, उसमें लगती है। यह स्थान दूर एक कोने में है। यहाँ हरएक की खिचड़ी अलग-अलग पकती है। इन लोगों ने यह तय किया है कि एक जिले में १२ ग्राम-सेवा केन्द्र खोले करेंगे और उनको air conditioned बनायेंगे। सोचने की बात है कि सारे जिले की हवा और देश की हवा दूसरी होगी। उस हालत में उन गाँवों को आप कैसे बनायेंगे? उन गाँवों में जानेवाले सेवक मामूली होंगे। वे उन गाँवों में सर्वोदय का काम कैसे खड़ा करेंगे? कल विकासकर्मी अभ्यास करने, तो वे पूछने आये थे। वे तय करके गये थे कि एक स्थान पर तीन-चार-पाँच लोग रहेंगे वे एक-दूसरे को मदद करते रहेंगे और सोच-विचार करके काम करेंगे। लेकिन कुछ भी हुआ, कोई दिक्कत सामने आयी तो सलाह लेने के लिए किसी की तरफ देखना पड़ता है। यह दुःख की बात है। अब दुःख में भी मनोरंजन होता है।

आपस-आपस में सौहार्द हो

वे कहते हैं कि तीन-चार लोग एक साथ रहते हैं तो उनका आपस आपस में नहीं बनता है। मियाँ-बीबी का आपस-आपस में नहीं बनता है तो क्या वे तलाक लेते हैं? दूसरी दिक्कत यह बताते हैं कि कुछ श्रीमान लोग ऐसे होते हैं जिनके vested interest होते हैं उनको वे जीत नहीं सकते। और ऐसे श्रीमानों का सरकार पर प्रभाव रहता है। इन कार्यकर्ताओं का न सरकारी अधिकारियों पर कुछ असर पड़ता है जो इनके काम में दखल देते हैं न श्रीमान् लोगों पर असर पड़ता। तीसरी बात यह है कि इन कार्यकर्ताओं का आपस आपस में बनता नहीं है। तीनों बात सही हैं। इसलिए आपको एक सघन क्षेत्र की योजना बनानी चाहिए जिसमें आपके छोटे-छोटे कार्यकर्ता मिलकर काम करेंगे। ऐसा नहीं होना चाहिए कि एक जिले में एक कार्यकर्ता काम कर रहा है दूसरे जिले में दूसरा। आपके पास चन्द बल रहे हैं उनका इस्तेमाल की जरूरत नहीं उन्हें सघन क्षेत्र और बाकी सब ताकत

ग्राम-क्षेत्र में लगाइये। इस काम के लिए हरिजन सेवक संघ, गांधी निधि, कस्तूरबा ट्रस्ट सब इकट्ठा हो जायें तो अच्छा हो। आपस-आपस में आप यह तय कर सकते हैं कि एक माह में एक दफा इकट्ठा होंगे और चर्चा करेंगे।

हम सब सीख रहे हैं

आज मैं यहाँ हूँ तो मेरे पास रोज कार्यकर्ता इकट्ठा होते हैं। हर मोहल्ले में कमिटी की सभा होती है और रोजमर्रा के काम की चर्चा होती है। कल क्या हुआ, आज क्या करना है, इस तरह रोज का हिसाब देखें। इस तरह हमको चलेगा तो हमें तालीम मिलेगी। आज हमारी क्या तालीम है? इस तरह का अनुभव पहले हमें भी नहीं था। लेकिन कार्यकर्ताओं को मैं कहता हूँ कि आप यह भावना कायम रखिये कि हमें सबका सहयोग हासिल करना है और अविरोध से काम करना है। यह बात अच्छी है कि होता थोड़ा है, लेकिन उस का अनुभव होगा तब उसका काम बनेगा।

स्टालिनग्राड की कहानी आपको मालूम होगी। स्टालिन ने सोचा था कि एक tactical move होता है कि यहाँ से कभी पीछे नहीं हटेंगे और जर्मनी ने भी यह तय किया था कि हम इसे फतह करके रहेंगे। स्टालिनग्राड एक point of honour बन गया था। आखिर रूस की फतह हुई। तो आपके लिए इन्दौर एक स्टालिनग्राड है। इसमें आप अपनी पूरी ताकत लगाइये।

इन्दौर
१ ८ ६

—खादी-ग्रामोद्योग के
कार्यकर्ताओं से

उद्देश्य रखकर अगर कोई सेवा की जाती है, तो उसे सकाम सेवा कहते हैं। इस तरह की सेवा से न तो कार्य करनेवाले के चित्त की शुद्धि होती है और न समाज की। इसलिए आवश्यक है कि यहाँ निष्काम सेवा करने की प्रथा प्रचलित की जाय। अगर यह प्रथा नहीं पड़ी, तो भक्ति-मार्ग नहीं होगा एवं परमार्थ कुंठित हो जायगा। अतः जरूरी है कि इन्दौर नगर को बनाने में निष्काम सेवा का दर्शन हो।

संस्थाएँ छठा हिस्सा दें

सभी सार्वजनिक संस्थाओं के प्रतिनिधि एवं सामाजिक कार्यकर्ता यहाँ उपस्थित हैं। इन संस्थाओं से मैं प्रार्थना करूँगा कि इन्दौर में सर्वोदय-कार्य के लिए अपना छठा हिस्सा दें। आपकी संस्था में छह सदस्य हों तो एक सदस्य सर्वोदय के लिए दें एवं उसके योगक्षेम का खर्च आप स्वयं उठायें या उसका इन्तजाम करें। यह व्यक्ति आम जनता की सेवा करेगा तथा सर्वोदय का कार्य करता रहेगा। ऐसा व्यक्ति अखिलभारत सर्वोदय मण्डल के अन्तर्गत इन्दौर में ही सार्वजनिक सेवा करेगा।

प्रोफेसर लोग, वकील, व्यापारी आदि संस्थाएँ अपनी कुल सदस्यता का छठा हिस्सा सर्वोदय के लिए दें। मजदूर-संघ भी अपना हिस्सा दें। इस तरह सभी अपना-अपना हिस्सा दे देंगे तो काफी कार्य हो जायगा।

झगड़े अदालत में न जायें

अगर इन्दौर के सभी झगड़े कोर्टों में जाने बन्द हो जायें तो समझिये सर्वोदय हो गया। वकील व अन्य की एक सार्वजनिक समिति बनायी जाय जिसमें पूज्यनीय लोग तथा ऐसे व्यक्ति हों जिनके प्रति सबकी श्रद्धा हो। ऐसी समिति के पास सब झगड़े आने चाहिए।

वहाँ न्याय नहीं, समाधान किया जायगा। समाधान से किसीको भी असन्तोष नहीं रहेगा।

इस सुझाव को बहुत-से व्यक्ति अव्यावहारिक बतायेंगे। मेरे लिए यह माना गया है कि मैं अव्यावहारिक मनुष्य हूँ। किन्तु इस सुझाव से ऐसी व्यवस्था आयेगी यह मैं अधिकारपूर्वक कह सकता हूँ; क्योंकि यह सत्य है। सत्य का अभाव कभी नहीं हो सकता। इसके विपरीत यदि आप यह कहें कि ऐसी व्यवस्था कभी नहीं आ सकती तो मैं कहूँगा कि आपको यह कहने का अधिकार नहीं है। आप इस तरह से कहकर आगे आनेवाली पीढ़ी को अपनी अक्ल से बाँध रहे हैं जब कि इस वैज्ञानिक युग में आगे आनेवाली पीढ़ी आपकी अक्ल से बँधनेवाली नहीं है।

हिन्दुस्तान के लोग बड़े दूरदर्शी हैं। विदेश के एक राजदूत ने बताया कि बिहार के एक व्यापारी ने चन्द्रलोक में होटल बनाने के लिए अपनी सीट रिजर्व करवा ली है। आप इस पर हँस सकते हैं किन्तु समय दूर नहीं जब इन्दूर से चन्दूर और चन्दूर से इन्दूर 'इण्टरप्लेनेट' हवाई सर्विस चलेगी। इन्दूर का नाम चन्द्रमा से ही बना है।

काम-वासना को उत्तेजन देनेवाले प्रदर्शन बन्द हों

इन्दौरनगर के सम्बन्ध में मुझसे प्रश्न पूछे जाते हैं तथा कहा जाता है कि नगर के वेश्यालय बन्द होने चाहिए, सिनेमा बन्द होना चाहिए, ब्याजखोरी, सट्टाबाजारी व अन्य व्यसन नहीं रहने चाहिए। किन्तु मैं तो यह चाहता हूँ कि काम-वासना को उत्तेजन देनेवाले प्रदर्शन बन्द होने चाहिए। सबसे भयानक वेश्या वह है जो काम-वासना को उत्तेजित करती है वह चित्त में बैठती है। वेश्या तो एक बाहरी वस्तु है। किन्तु काम-वासनामय प्रदर्शन तो आन्तरिक बात है। वह प्रदर्शन मनुष्य के चित्त के अन्दर तक पहुँच जाता है। इसी तरह सिनेमा है। लोग अक्सर दो-दो बजे तक सिनेमा देखते हैं तथा दिल व दिमाग पर बुरा असर लेकर घर आते हैं। स्वप्नावस्था में भी चित्र का असर रहता है एवं आठ बजे जागकर उठते हैं। अगर लोग यह नियम ले लें कि वे रात्रि में ८ या

९ बजे सो हो जायेंगे तथा प्रातः ४ बजे उठ जायेंगे तो वे तमाम बुरी व अनैतिक झंझटों से छूट जायेंगे। इससे वे स्वस्थ भी बनेंगे।

आजकल सब कहते हैं कि कलियुग आ गया है, इसलिए तमाम बुराइयाँ फैल रही हैं। किन्तु मैं कहता हूँ कि क्या कलियुग में अच्छे मनुष्य नहीं होते हैं या त्रेता व द्वापर में बुराइयाँ नहीं थीं? कलियुग में भी रामकृष्ण परमहंस सरीखे व्यक्ति हुए, जब कि त्रेता में राम के समय रावण तथा द्वापर में कृष्ण के समय कंस सरीखे व्यक्ति हुए थे। युग तो हमारे साथ है। जैसा हम काम करेंगे वैसा युग बनेगा।

यहाँ हिंदू मुसलमान सिक्ख सब एक साथ बैठे हैं किन्तु जब भगवान् का प्रश्न आयेगा तो सब अलग-अलग हो जायेंगे। हिन्दू मन्दिर में जायगा मुसलमान मस्जिद में तथा सिक्ख गुरुद्वारे में। क्या भगवान् ऐसा है जो सबको अलग अलग करता है? मैं चाहता हूँ कि सब मिलकर काम करें। यह आपकी जिम्मेदारी है तथा मुझे एक हिस्से का दान मिलना चाहिए।

आलोचना में आनन्द

मुझे अक्सर लोग कहते हैं कि आपकी टीका करते हैं। मैं सब लोगों के सामने खड़ा हूँ। मेरा सारा जीवन लोगों के सामने खुला है, तो मेरी टीका कौन नहीं करेगा—टीका तो होनी ही चाहिए इसमें मुझे आनन्द भी आता है। स्तुति से आदमी गिर जाता है। मैं सब लोगों के सामने हूँ पचास-पचास साठ साठ लोग मेरे पास रहते हैं। अगर मैं हिमालय पर चला जाऊँ, तो फिर कोई टीका नहीं करेगा। इसलिए टीका से मुझे आनन्द आता है इसमें भी मजा है। टीका तो मैं भी करता हूँ—विचारों की टीका करता हूँ। जिन पर हमारा पूरा प्रेम होता है उसीका नाम लेकर टीका करते हैं। किन्तु टीका का उत्तर मैं नहीं देता। इससे तो समय जाता है तथा कुछ नतीजा नहीं निकलता।

इन्दौर
९-८-६१

यह सफाई-सप्ताह आपत्ति और बारिश के बावजूद भी अच्छी तरह संपन्न हुआ। संख्या का सवाल नहीं है फिर भी अपेक्षा से अधिक ही लोग आये और बहुत ही उत्साह से उन्होंने काम किया।

हमारा और निगम का कर्तव्य

नगर निगम की ओर से जो कुछ करवाना है या उसे जो कुछ करना है उसे अगर नहीं कर सके, तो हम ज्यादा सफल नहीं हो पायेंगे; क्योंकि इस काम में बारह आना मदद तो नगर निगम की होगी और हमारे हाथ में चार आने ही मदद है। लेकिन, घर के मालिक और घर में रहनेवाले वे सब मिलकर जितना काम हमारे द्वारा करने का है उतना हम करेंगे ही और हमें उतना करना ही है। हमारे कर्तव्य में हम जागरूक रहेंगे। लेकिन नगर-निगम भी ऐसी बेकनायम नहीं हो सकती है। इसलिए आधार देकर वे स्वस्थ नहीं बैठ सकते हैं उनको भी काम में लगना होगा।

प्रत्यक्ष काम में साक्षात्कार

जब हम खुद काम करते हैं तब एक तरह से साक्षात्कार होता है। पहले हम विचार करते हैं। पर प्रत्यक्ष काम में जो दर्शन होता है वह साक्षात्कार जैसा है। मैं पाखाना-सफाई के लिए गया था। वहाँ मैंने एकदम डिब्बा उठाया और बाल्टी में मैला डाला। डालने की तैयारी ही थी, तो नीचे से मैला गिरने लगा; क्योंकि उस डिब्बे का तलीया टूटा था। हमें बताया गया कि इस तरह मैला जब नीचे गिरता है तब भंगी उसे हाथ से उठाते हैं। अब हममें से कोई काम करने के लिए आते हैं तो

ऐसी गल्तियाँ बाहर आती हैं कि दिल्ले टूटे हैं, ठीक नहीं हैं। पर वे बेचारे काम करते रहते हैं। अपनी आवाज नहीं उठा सकते हैं। इसलिए साक्षात्कार के लिए भी बहुत जरूरी है कि हम खुद यह काम करें। ज्ञान एक बात है और प्रत्यक्ष काम दूसरी बात है।

मैंने इस विषय में टीका भी सुनी है कि कुछ लोगों ने ऐसा कहा है कि यह शख्स इतना विद्वान् और उत्तम ब्राह्मण होकर भी ऐसा गंदा काम करता है। आपको भी कुछ टीका सुनने को मिली होगी। मैंने तो यह काम पहले भी किया है इसलिए मैं जानता हूँ कि पहले से आज इस तरह की शिकायत कम होती है। लेकिन हमें यह समझना चाहिए कि आज धर्म को अधर्म माना गया है और अधर्म को धर्म। इसलिए यह विचार-क्रांति का सवाल है। इसमें पुराने मूल्य खतम करने की बात है।

मेहतरों का धंधा मिटे

बहनें और भाई जैसे अपने घर में सफाई करते हैं वैसा ही समाज के बाहर की सफाई का रस। बहनें तो पहले अपने घर की सफाई करके ही आगे बढ़ती हैं। वैसे ही उनको चाहिए कि अपना मुहल्ला साफ करने का जिम्मा वे उठायें। यह काम करते समय हमारे साथ मेहतर या मेहतरानी आते हैं तो अच्छा है। उनकी हम इज्जत करें। हम चाहते हैं कि उनका यह धंधा मिटे। उन लोगों को अच्छे औजार देने चाहिए। लेकिन जब तक उनका धंधा जारी है तब तक उनके साथ सज्जन लोग भी शरीक हों। सिर्फ तनख्वाह बढ़ाने से उनकी इज्जत नहीं बढ़ती है।

उनके मन में कभी-कभी यह आता होगा कि हमारे पूर्वजन्म के किसी पाप से हमें यह काम करना पड़ता है। उनके जीवन में प्रतिष्ठा आनी चाहिए, पर समाज रखकर आपको उनके साथ काम करना चाहिए। उनकी प्रतिष्ठा बढ़ेगी तो समाज की प्रतिष्ठा ही बढ़ेगी।

मानव की उन्नति के लिए यह बहुत ही जरूरी है। हमारी प्रतिष्ठा इसी तरह बढ़ी है।

हम स्वच्छ रहते हैं तो अपनी सुविधा की जिम्मेदारी हम नहीं उठाते हैं, यह हम मानते हैं। जैसे हम चाहते हैं कि सरकार सेना रखे। साथ ही रक्षण के काम की जिम्मेवारी से हम बचें। जीवन की जिम्मेवारियाँ हम टालना चाहते हैं। ऐसे विचार से हम डरपोक बनते हैं। इसलिए हमें भी अपने रक्षण की जिम्मेवारी उठानी चाहिए।

एक मिशनरी महारोगियों की सेवा बहुत प्यार से और निष्ठा से करता था। उसे महारोग हुआ। उसने समझा कि परमेश्वर की मुझ पर कृपा हुई। वह चाहता था कि मुझे ही उस रोग का अनुभव हो ताकि उन रोगियों के कष्ट का अनुभव मैं कर सकूं। प्रभु ने मुझ पर कृपा की है यह मुझे पूर्ण समाधान देगा। इसमें प्रेम और निर्भयता दोनों हैं और यह किये बिना नहीं होती।

कहने का मतलब यह है कि उस काम में यदि हम जाते हैं तो हमारी प्रतिष्ठा कम नहीं होती वरन् बढ़ती है।

सफाई का काम करने से हम स्वयं अपनी प्रतिष्ठा बढ़ाते हैं

एक भाई ने महात्मा गांधी पर व्याख्यान देते हुए कहा कि महात्मा गांधी ने तरह-तरह के शरीर-श्रम करके शरीर-श्रम की प्रतिष्ठा बढ़ायी। मैंने कहा कि उन्होंने शरीर श्रम की प्रतिष्ठा बढ़ायी कि स्वयं प्रतिष्ठा पायी! सत्य का आचरण कर सत्य की प्रतिष्ठा हमने बढ़ायी कि हमने प्रतिष्ठा पायी! अहिंसा का पालन करके अहिंसा की प्रतिष्ठा हमने बढ़ायी कि हमने प्रतिष्ठा पायी! ऐसे ही शरीर श्रम एक उच्च तत्त्व है। हममें इतनी प्रतिष्ठा नहीं है कि हम उन तत्त्वों में प्रतिष्ठा भरें। उन तत्त्वों में प्रतिष्ठा की कमी है इसलिए हम सफाई करें। हमें यह समझना चाहिए कि सफाई का काम करने से हम स्वयं अपनी प्रतिष्ठा बढ़ाते हैं।

भंगियों को हम समझायेंगे कि हम यह काम करते हैं। हमारा

मतलब यह नहीं कि आपकी तनख्वाह हम कम करना चाहते हैं या आपके धंधे में हम दखल देना चाहते हैं। बल्कि हम आपके काम में आपका साथ देना चाहते हैं, आपका काम हलका करना चाहते हैं।

खादी-ग्रामोद्योगवालों से हम यह सिफारिश करते हैं कि वे मेहतरों को अम्बर चरखे की तालीम दें। हम उनका काम करेंगे तो उनके पास समय बचेगा और उस वक्त मौका आयेगा कुशलतापूर्वक हमें यह करना होगा। मेहतरों के बच्चों को दूसरा काम हम देंगे तो दस-पाँच साल के अन्दर-अन्दर यह धंधा मिट जायगा, नहीं रहेगा।

इन्दौर —सफाई-सप्ताह-समाप्ति के अवसर पर
७-८-६

हम सबके प्रेम से बँधे हुए हैं

आज का रक्षा-बन्धन का दिन एक प्रेम का दिन माना जाता है। राखी हिन्दुस्तान की एक खास चीज है। यह प्रेम का धागा है। उससे एक-दूसरे के दिलों का सम्बन्ध जुड़ जाता है। आज हम जब यहाँ आ रहे थे, तब रास्ते में एक बहन ने हमारे हाथ में राखी बाँधी। हम सबके प्रेम से प्यार से पहले से ही बँधे हुए हैं। नौ साल से भारत में पैदल घूम रहे हैं। जहाँ भगवान् ले जाता है वहाँ जाता हूँ। प्रेम तो हमारे साथ निरन्तर चलता ही रहता है। जहाँ जाते हैं, प्रेम मिलता है; यही हमारी ताकत है। ऐसा न होता, तो शरीर में थकान आती। आज शरीर में थकान नहीं है। हम निरन्तर चलते रहे हैं। अगर चार पाँच आदमी बन जायें और कह दें कि मैं आगे नहीं बढ़ता हूँ तो हमारी यात्रा खतम हो जायगी।

परसों रातभर बारिश थी। सुबह हम उठे, तो भी बारिश हो रही थी। हमने चलने की तैयारी की। कुछ लोग कहने लगे आज सभा कैसे होगी? आज तो कोई नहीं आयेगा। हमने कहा कोई नहीं आयेगा तो चलेगा; लेकिन हम जरूर जायेंगे। उस दिन हमारी सभा में अस्सी लोग आये थे। आज तो यहाँ दो हजार लोग आये हैं। उस दिन छोटे-बड़े सब मिलकर अस्सी लोग थे लेकिन हमने उनको अस्सी हजार माना।

रास्ते में आते हुए हमने देखा एक जगह लिखा हुआ था कि 'अहिल्यादेवी की पुण्यभूमि विनोबा की कर्मभूमि बने'। मैं कहता हूँ कि विनोबा की नहीं आपकी कर्मभूमि बननी चाहिए। हमें यह सुना हो कि

इन्दौर के हर घर में सर्वोदय-पात्र की स्थापना हुई है, तो इन्दौर में प्रेम-शक्ति प्रकट होगी।

सुदामा के चावल

आपको मालूम है कि सुदामा को भगवान् के पास जाने की प्रेरणा उसकी पत्नी ने दी थी और उसको मुट्ठीभर चावल दिये थे। वे भगवान् के पास पहुँचे तो दरवाजे पर सिपाही खड़ा था। उसने सुदामा से कहा कि तुम्हारा अन्दर प्रवेश नहीं हो सकता। सुदामा ने कहा कि कृष्ण भगवान् को जाकर इतना कह दो कि तुम्हारा बचपन का साथी सुदामा आया है। यह सुनते ही भगवान् दौड़े आये और उन्होंने सुदामा को गले लगा लिया। रुक्मिणी माता देखती रह गयी। भगवान् ने सुदामा को अपने पास सिंहासन पर बैठाया और पूछा कि मेरे लिए क्या लाये हो? वह बेचारा गरीब था। फिर भी द्वारकानाथ ने उससे माँग ही लिया। सुदामा को संकोच हुआ तो भगवान् ने ही उसकी वह गठरी खोली और वह मुट्ठीभर चावल खाने लगे। रुक्मिणी माता ने कहा कि क्या आप सबको खायेंगे? मुझे भी मिलने चाहिए। अत्यन्त दरिद्री था सुदामा, लेकिन भगवान् ने प्रेम से उससे भी चावल माँगे और खाये।

हम चाहते हैं कि इन्दौर नगरी में शान्ति-सेना बने। यहाँ मजदूरों की बस्ती में भी हम कह रहे हैं कि शान्ति-सेना के लिए आप भी अपने घर में सर्वोदय-पात्र रखिये और मुट्ठीभर चावल उसमें डालिये। अपने पड़ोस में अगर कोई बहुत गरीब है तो उसे कहना चाहिए कि तुम भी अपने घर में सर्वोदय-पात्र रखो, तुम्हारे सर्वोदय-पात्र में हम चावल डालेंगे। तुम गरीब हो तो हम तुम्हें इतनी मदद जरूर देंगे। हर घर में सर्वोदय-पात्र होगा और एक-दूसरे को हम मदद करेंगे, तो भगवान् को यहाँ प्रसन्नता होगी। यह मजदूर बस्ती सुदामा की बस्ती है। यहाँ के चावल भगवान् को बड़े मीठे लगेंगे।

'मीरा के प्रभु गिरिधर नागर'

गोकुल में सात दिन मूसलाधार बारिश हुई। लोग भगवान् के पास

पहुँचे और कहने लगे कि अब क्या करेंगे ? बारिश से कैसे बचेंगे ? कृष्ण भगवान् ने कहा : करना क्या है ? उस पहाड़ को उठायेंगे। लोग कहने लगे यह असम्भवकार्य प्रोग्राम है। इतना बड़ा पहाड़ कैसे उठेगा ? भगवान् बोले : देखो, सब लोग हाथ लगाओ फिर पहाड़ उठता है कि नहीं, हम देखते। सबसे पहले बच्चे उठे बाद में बहनें और बूढ़े आये और सबके बाद जवान आये—इस तरह सबने अपनी-अपनी लाठी लगायी और उन्होंने देखा कि पहाड़ उठता है। पहले बच्चे गये, तो जवानों ने देखा कि बच्चे, बूढ़े और बहनें भी गयी हैं अब तो हमें जाना ही चाहिए। वे भी उसमें शामिल हो गये। इस तरह जब सब लोगों ने अपना-अपना हाथ लगाया तब भगवान् ने अपनी अँगुली लगायी। मीरा हमेशा नाम लेती है 'मीरा के प्रभु गिरिधर नागर'। भगवान् का नाम इसीसे गिरिधर हुआ है। उन्होंने गोवर्धन पर्वत को उठाया था।

भगवान कब राजी होंगे ?

इसका सार यही है कि भगवान् पहले यह देखते हैं कि समूह की शक्ति कब पैदा होती है ? वे तारक हैं लेकिन जब तक सबकी शक्ति और ताकत किसी काम में नहीं लगती है तब तक भगवान् उस काम में मदद नहीं देते। हमारा काम तो मेजारिटी से भी नहीं होनेवाला है। इन्दौर में अस्सी हजार घर हैं। मान लीजिये चालीस हजार घरों में सर्वोदय-पात्र रखे जाते हैं और आप यह समझें कि बाबा खुश हो जायगा तो बाबा बेचारा खुश भी हो जायगा। लेकिन इन्दौर पर भगवान् कब राजी होंगे ? जब इन्दौर में हर घर में सर्वोदय-पात्र होगा तब वे राजी होंगे और तभी इन्दौर का उत्थान होगा। इन्दौर नगरी का काम भगवान् करनेवाला है, वैसे दुनिया का काम भी भगवान् ही करनेवाला है। प्रचंड सामूहिक शक्ति जब प्रकट होती है तब उस पर मुहर लगाने के लिए भगवान् सामने आयेंगे और काम करेंगे।

भारत की संस्कृति में 'पंच बोले परमेश्वर' की बात है लेकिन इन दिनों इन लोगों ने तीन बोले परमेश्वर, चार बोले परमेश्वर प्रस्ताव पास ऐसी बात शुरू कर दी है। अपने देश में तो पाँच बोले परमेश्वर की बात चलती थी। पाँचों इकट्ठा होते हैं, तब भगवान् दाईद करता है। आज के दिन आप लोग यह संकल्प कीजिये कि हम हर घर में सर्वोदय पात्र रखेंगे।

प्रेम की रस्सी से बाँध दीजिये

हमें रास्ते में रोका गया और हाथ पकड़कर बहन ने राखी बाँधी तब हमने कहा कि हाँ भाई प्रेम की जबरदस्ती हो सकती है। आज का दिन ही ऐसा है। इसीलिए आज के दिन हम आपसे कह रहे हैं कि हर घर में आप सर्वोदय-पात्र रखिये तब ताकत बनेगी। जब तक हम सर्वोदय-पात्र में मुट्ठीभर अनाज नहीं डालते हैं तब तक हम खाने के अधिकारी नहीं हैं। समाज को दिये बिना खाने का अधिकार हमें नहीं है। बाबाभाई को आप इस प्रेम की रस्सी से बाँध दीजिये और कह दीजिये कि हमने अपने घर में सर्वोदय-पात्र रखे हैं उसके बाद आप ले जाइये।

भविष्य का समाज तुम्हारा है

आप लोग मजदूर हैं। भविष्य का समाज तुम्हारा है। अब तुम्हारे दिन आये हैं। तुम दुनिया का भार उठानेवाले हो। जैसे शेषनाग ने पृथ्वी को अपने सिर पर उठाया है वैसे तुम्हारे आधार पर सारा समाज खड़ा है। तुम्हारी आवाज हमेशा बुलन्द रहेगी। हमारे जैसे साथी तुम्हारी निरन्तर सेवा करेंगे। इसलिए मजदूरों को यह ध्यान में रखना चाहिए कि आप अपने दिन नजदीक आये हैं। इससे आपको खुशी होनी चाहिए।

इन्दौर
७-८ (

अँसुअन जल सींच-सींच प्रेम-बेल बोयी २६

यह बात बड़ी आनन्ददायी है। शायद यह पहला ही मौका है, जब कार्यकर्ता शहर की सेवा के लिए रोज सोचने के लिए बैठते हैं। लोक-सेवा को एक नित्य कार्य समझकर कोई पूरा समय देता है, कोई थोड़ा देता है, कोई आधा दे रहा है। आठ-नौ साल के आन्दोलन में यह पहला ही मौका है।

भक्ति की अपेक्षा अधिक फल मिला

आज तक इस आन्दोलन में जो कार्यकर्ता सतत इस काम में टिके हैं उनके मन में आत्मविश्वास है। इसके लिए यह सब जरूरी था कि एक के बाद एक हम काम लें। सबसे पहले विचार फैलाने का विचार प्रचार का काम हम करें। आज तक जितना काम हुआ है, वह अपनी शक्ति और ताकत के मुताबिक हमने किया है। हम ज्यादा मोह नहीं करते हैं फिर भी हमारी ताकत के हिसाब से अपने इस काम से हवा बहुत अच्छी बनी है और हमारी शक्ति ज्यादा बढ़ी है। भगवान् के सामने शिकायत करने का मौका अब हमारे लिए नहीं है कि हमने बहुत भक्ति की काम बहुत ज्यादा किया; लेकिन उसका फल कम मिला। बल्कि हम कहते हैं कि अपने काम की तुलना में हमने जितनी भक्ति की उससे ज्यादा फल हमें मिला है।

अब इस शहर में हमें काम करने का मौका मिला है। सब कार्यकर्ता इसमें जुटे हैं। मुमकिन है जो दर्शन हम चाहते हैं वह होगा। लेकिन सिर्फ हमारे विश्वास से काम नहीं होगा उसके लिए काम करना होगा।

भगवान् आपसे काम लेना चाहता है

इस काम के लिए सब लोगों का आशीर्वाद हमें हासिल है। किसी पार्टी का काम होने पर केवल चंद लोगों का आशीर्वाद मिलता है और चंद लोगों का विरोध भी हासिल होता है। किसी भी राजनैतिक पार्टी के लिए ऐसा ही होता है। लेकिन शान्ति-सेना ग्राम-स्वराज्य और सर्वोदय का काम अविरोध चल रहा है। उसे मदद मिले ऐसा करीब करीब सब लोग चाहते हैं। इसका मतलब यही है कि भगवान् आपसे काम लेना चाहते हैं। हमारे दिल में एक सद्भावना है। हमारे काम को सफलता मिलनी चाहिए, ऐसा सब लोग चाहते हैं। इसके मानी यह हैं कि भगवत्-प्रेरणा से हमारे लिए ही मानो यह काम उपस्थित हुआ है।

यह वैष्णवों की जमात

इस काम को करनेवाली जमात में किसीका कोई स्वार्थ नहीं है यह नहीं कि सब लोग निःस्वार्थी हैं। हम सब स्वार्थी भी हैं। लेकिन वह इसीलिए है कि हमारे काम को सफलता मिले। जो काम हम कर रहे हैं, उस काम में निष्कामता है। काम सफल हो, यह कामना है। इसलिए मैं इस जमात को वैष्णवों की जमात कहता हूँ। यह एक अभ्यास हमें हो रहा है—निष्काम कार्य का। यह अभ्यास करते-करते आनंद की अनुभूति होगी और धीरे धीरे हम लोग उसमें तन्मय हो जायेंगे। इसकी एक राह खुल गयी है, यह देखकर हमें खुशी होती है।

सर्वोदय-पात्र में रोज एक पत्थर

हरएक की बात सुनकर हम कुछ खोते नहीं हैं उनमें से कुछ-न कुछ हमें मिल ही जाता है। अभी आप लोगों ने अपने अनुभव में एक बात सुनायी कि जिस घर में रोज एक मुट्ठीभर डालने के लिए अनाज नहीं है या नया पैसा नहीं है ऐसे लोग सर्वोदय-पात्र में रोज एक पत्थर डालते हैं और महीने के अन्त में उन पत्थरों को गिनकर उतने पैसे दे

देते हैं। यह सुनकर हमें बहुत आनन्द हुआ। इसका सार यही है कि रोज हमें मान होना चाहिए कि हमें कुछ-न कुछ रोज देना है। महीने-भर की चीज है लेकिन रोज का स्मरण होना जरूरी है। अब पत्थर को हमने पैसे का प्रतिनिधि मान लिया, यह एक अच्छी चीज सूझी है। मैं रोज सोचता हूँ, लेकिन यह चीज मुझे कभी नहीं सूझी और इसका कभी खयाल नहीं हुआ कि हम सर्वोदय-पात्र में इस तरह से पत्थर डाल सकते हैं।

जब हम एक जगह सोचने के लिए बैठते हैं और हरएक के विचार सुनते हैं तो तरह तरह की कल्पनाएँ सुन सकते हैं। उस पर विचार कर सकते हैं इसीलिए समूह का महत्त्व है। समूह में हम एक-दूसरे के विचार सुनें, तो सबको श्रम मिलता है।

हम दूसरे के परीक्षक न बनें

कल्पना यह सर्वोदय-पात्र का काम करता है और दूसरी जगह स्वार्थ का काम करता है ऐसा सोचना हमारे अधिकार के बाहर की बात है। हम किसीके परीक्षक न बनें। वह निःस्वार्थ भाव से जितना काम करता है उतना हमें समाधान मान लेना चाहिए। हमें उसका परीक्षक नहीं होना चाहिए। हमारा यह एक ही जीवन नहीं है अनेक जन्मों का हमारा यह प्रवास है। इसलिए कोई दूसरा काम स्वार्थ रखकर करता है तो हमें उसके बारे में नहीं सोचना चाहिए। एक ही रास्ते से हम जा रहे हैं। उसमें कोई दो कदम आगे है कोई दो कदम पीछे है। नेता आगे है इसलिए पीछेवालों को आधार है, लेकिन नेता से भी अनुयायी का महत्त्व ज्यादा है। जब बात ऐसी है कि बाप का महत्त्व बेटे के लिए है और बेटे का बाप के लिए है। अगर बेटा मर गया तो बाप मर गया बाप बाप नहीं रहता है। इसलिए हमें एक-दूसरे के प्रति प्यार और स्नेह रखना चाहिए। हमें एक-दूसरे का आधार है यह मानना चाहिए और मिलकर काम करना चाहिए।

एक दोष-सातत्य का अभाव

हिन्दुस्तान में एक चीज की कमी है और उसके खिलाफ आज साईंस काम कर रहा है। हमारे यहाँ सातत्य-योग की कमी है। मध्ययुग में ही यह कमी आ गयी है। उसके कई कारण नजर आते हैं, लेकिन सतत काम करने का माद्दा हममें नहीं है। थोड़ा काम कीजिये लेकिन वह रोज कीजिये, तो धीरे-धीरे काम आगे बढ़ता जायगा। एक दम बहुत उत्साह और जोश से कुछ काम प्रारम्भ कर बन्द नहीं करना चाहिए। बाबा आया तो काम को बहुत चालना मिली। बाबा गया, तो काम ठंडा हो गया। इसलिए उस काम को चालना देने के लिए फिर से दूसरे को बुलाया गया और उसने काम को चालना दी ऐसा नहीं होना चाहिए। जैसे बीमार व्यक्ति को इंजेक्शन दे-देकर प्रेरणा देते हैं जिलाते हैं उसके शरीर में ताकत नहीं है। इसी तरह अपने देश की हालत हो रही है। इन दिनों यह दोष—सतत काम का अभाव देश के शरीर में फैला हुआ है। सरकारी सेवक जो काम करते हैं वे सतत काम में इसीलिए संलग्न हैं कि आखिर में उन्हें पेंशन का लोभ है, नहीं तो बीच में ही वे अपना काम छोड़ देते। जब जेल में हम लोग तीन तीन चार-चार साल काटते हैं, लेकिन बीच में ही छूटने का मौका आता तो अच्छा लगता। जेल से हमारा कुछ छुटकारा होगा। उसके लिए कुछ लोग ज्योतिषशास्त्र देखते थे और यह देखते थे कि शनि-मंगल की युति कब है हम कब छूट सकते हैं ऐसा देखते थे। माफी माँगकर जाने का सवाल ही नहीं उठता था इसलिए लाचार होकर रहते थे। लेकिन बिना लाचारी के हममें सातत्य रहना चाहिए।

हमने यह मंगलकार्य अपने हाथ में लिया है। इसमें हमारी कोई लाचारी नहीं है। उसमें हमें सतत डटे रहना चाहिए। हमारे देश में जो यह शक्ति नहीं है वह हमें लानी चाहिए। यहाँ सर्वोदय-मित्र और संयोजक बन रहे हैं यह अच्छी बात है। एक-एक गाँव में एक-एक दो-दो या चार

चार भी मिलकर काम कर सकते हैं। लेकिन हरएक को यह तय करना चाहिए कि थोड़ा भी क्यों न हो, लेकिन हम रोज सतत काम करें।

गेंद की गति प्रतिक्षण कम होती है

जिन्होंने शान्ति-सेना के लिए अपने नाम दिये हैं, उनको यह सोचना चाहिए कि वे भी करेंगे, चाहे थोड़ा ही क्यों न करें सतत करते रहेंगे। हिन्दुस्तान के स्वभाव में यह दोष है। इसके अलावा शरीर भी जड़ बन गया है। देह का स्वभाव ही है जड़ बनना। वह रोज गन्दा बनता है हम रोज उसे साफ करते हैं। वैसे ही यह जड़ बनता है जड़ बनना उसका स्वभाव है। इसलिए रोज इससे काम लेना चाहिए और चालना देनी चाहिए। हम गेंद आगे फेंकते हैं तो प्रतिक्षण उसकी गति कम होती जाती है। इसलिए हम फिर से पुनः पुनः उसे चालना देते हैं।

हम इन्दौर में ठहरे हैं, लेकिन यौड़े प्रतिदिन रोज चलते हैं। शरीर ढीला रहता है, इसलिए उसे व्यायाम रखना चाहिए। उससे हम रोज काम लेते हैं। पहले से ही हम भारत के लोग ढीले हैं ही। इसलिए हमें व्यायाम रखकर काम को चालना देते रहना चाहिए।

'टाइम्स ऑफ इण्डिया' कहता है

इन्दौर में इतनी ताकत लगी तो उसका क्या हुआ ऐसा लोग दया पूछेगा। ऐसा काम हम नहीं उठाते, तो ठीक ही था। लेकिन एक बार काम उठाया है अब वह काम नहीं बना दीखा पड़ेगा तो अच्छी बात नहीं होगी। आज ही हमने पढ़ा अखबार में, 'टाइम्स ऑफ इण्डिया' में कि "वसन्त ऋतु में जैसे नये-नये पत्ते आते हैं वैसे बाबा की बुद्धि को नयी-नयी Fancies और लहरें आती हैं। इसलिए बाबा नये नये विचार और नये-नये काम देश के सामने रख रहा है। अब बाबा इन्दौर में कहता है कि मेरे हाथ में अगर राज्य आयेगा तो मैं जनता पर टैक्स नहीं बिठाऊँगा दान माँगूगा। और लिखनेवाला लिखता है कि परमेश्वर की कृपा से बाबा के हाथ में राज्य नहीं है। बाबा को सम्पत्ति-दान का

अदालत में न जाना। हम शहर में जाते हैं, सर्वोदय-पात्र रखने की बात करते हैं। घर में सर्वोदय-पात्र रखा भी है वहाँ हम सर्वोदय-पात्र का अनाज इकट्ठा करने के लिए जाते हैं। जिस घर में सर्वोदय-पात्र रखा है, उस घर के भाई कहीं बाहर जा रहे हैं। उनसे हम पूछते हैं कि क्यों भाई आज ग्यारह बजे आप जल्दी-जल्दी बाहर कहाँ जा रहे हैं? वे कहेंगे : "कोर्ट में।" "कोर्ट में क्यों जा रहे हैं?" आपको उनसे पता चलेगा कि उनका भाई के साथ उनका कोई झगड़ा है। फिर आप उनको समझायेंगे क्या आपके गाँव में कोई ऐसे सज्जन पुरुष नहीं हैं जो आपके झगड़े का फैसला गाँव में ही देंगे? गाँव का झगड़ा गाँव के बाहर नहीं ले जाना चाहिए। इस तरह प्यार से आप उनको समझा सकते हैं और हो सके, तो झगड़े का निपटारा आपके सामने ही हो जायगा।

इसी तरह से दूसरा सर्वोदय-पात्र का काम आप ले सकते हैं तो उसके साथ-साथ सर्वोदय के कई काम आप कर सकते हैं। 'अँसुवन जल सींच-सींच प्रेम बेल बोयी'—सर्वोदय पात्र एक प्रेम-बीज है। जैसे आप गेहूँ का एक दाना बोते हैं तो उसके बदले में सौ गेहूँ के दाने पाते हैं। लेकिन प्रेम-बीज आप बोयेंगे तो आपको बेहिसाब मिलनेवाला है। सर्वोदय-पात्र का जैसा हिसाब है वैसे प्रेम-बीज का कोई हिसाब नहीं है। तो आप बेहिसाब पानेवाले हैं। इतनी श्रद्धा से आप काम करेंगे, तो आपको जरूर मिलेगा।

इन्दौर —इन्दौर नगर के सर्वोदय-मित्र

७-८-६० तथा कार्यकर्ताओं से

अनुभव है ही। फिर पर भी उसको अक्ल नहीं आयी तो क्या होगा! अशोक जैसे महान् राजा ने भी यह काम नहीं किया और टैक्स बैठाया। इसलिए कल्पना शक्ति की एक मर्यादा होनी चाहिए और हवा में घोड़े नहीं छोड़ने चाहिए। इस तरह उसमें लिखा है। अब उसकी कुछ बात सही है। लेकिन मुझे यह बात सूझती है दूसरे को नहीं सूझती तो मैं क्या करूँ? मैं कहता हूँ कि शान्ति-सेना के लिए इन्दौर के अस्सी हजार घरों में सर्वोदय-पात्र होने चाहिए और अगर यह बात हो जाती है तो इन्दौर में आपकी स्टेट खड़ी होगी।

हम स्वप्न-सृष्टि में रहनेवाले नहीं हैं

मुझे विश्वास है कि सरकार दान माँगेगी तो उसे जरूर मिलेगा। हमारा नगर अच्छा राज होगा, यह राज हमें ठीक ढंग से विकास की ओर ले जायगा तो सरकार को जनता जरूर दान देगी और एक विलक्षण हवा पैदा होगी। मैंने यह बात राजस्थान के गोकुल-भाई से पूछी। वे तो राजनैतिक पुरुष हैं। मेरे जैसे स्वप्न-सृष्टि में रहनेवाले नहीं हैं। उन्होंने भी कहा कि स्टेट को जनता जरूर दान देगी। मुमकिन है कि स्टेट को आधा दान मिले, पूरा नहीं। उन्होंने ऐसी बात कही तो हमें लगा कि हम जमीन पर ही हैं हवा में नहीं। लेकिन आधा मिला तो भी ऐसा मानना चाहिए कि यहाँ के कार्यकर्ता आधे ही विश्वसनीय हैं। आठ आने विश्वसनीय मैं अगर बनूँ, तो भी बहुत बड़ी ताकत मुझमें है ऐसा मैं मानूँगा। सोलह आने विश्वसनीय तो भगवान् ही है। लेकिन आठ आने विश्वसनीय हो, तो भी देश की ताकत बढ़ेगी और नैतिक आवाज बुलन्द होगी इसमें हमें कोई शक नहीं है। इसलिए सोलह आने विश्वास न भी हो आठ आने हो तो भी चलेगा, बशर्ते कि हम छोटे पैमाने पर काम करें।

दो आयाम : सर्वोदय-पात्र रखना और अदालत में न जाना

यहाँ हम कम-से-कम दो आयाम दें : सर्वोदय-पात्र रखना और

कोई न कोई चीज रखता है वह 'दाता' ही है। उस चीज का दान समाज को देना, अपनी वह शक्ति समाज को समर्पण करना हरएक का कर्तव्य है। बिल्कुल अदने-से-अदना आदमी गया-बीता, जिसके पास कुछ नहीं है ऐसे दीखनेवाले के पास भी बहुत कुछ भरा है।

प्रेम के आंसू

मैंने मिसाल दी। अस्पताल में बूढ़ा भाई पड़ा है गरीब है, दुःखी है भूमिहीन है संपत्तिहीन है बुद्धिहीन है। किसी प्रकार की उसके पास कोई चीज नहीं। ऐसे रोगी के लिए कैसे कहा जाय कि वह 'दाता' है। क्योंकि उसके पास कोई चीज देने की नहीं बल्कि उसे लेने को ही है। लेकिन उसके पास भी एक बहुत बड़ी चीज है जो उसने अपने हृदय में छिपाकर रखी है और खास लोगों के लिए ही उसे खोलता है। उसे देखने के लिए लोग अस्पताल में आते हैं। उस वार्ड में उसका लड़का भी उसे देखने आया। लड़के को देखते ही उसकी आँखों से आँसू बहने शुरू हो गये। दूसरा एक शख्स आया। पर उसे देखकर उसकी आंखें सूख ही रह गयीं। उसमें से पानी नहीं निकला। उसके पास बहुत बड़ी चीज थी देने की लेकिन वह केवल लड़के को ही देना चाहता है दूसरे को नहीं। वह 'दाता' है कोई दीन नहीं है। दीन नहीं उसके पास चीज है। दीन तो वह है जो मर गया उसे जलाना ही पड़ेगा। लेकिन जो जीवित है जिन्दा है वह कोई न कोई 'दाता' है। उसके पास चीज है प्रेम है उसके हृदय में। यद्यपि वह सब तरह से असमर्थ, दीन पंगु, लाचार, बना है; फिर भी उससे मिलने के लिए आनेवाले प्रत्येक व्यक्ति को वह एकदम भगवत्स्वरूप देखे और अपनी आँखों की धारा बहा कर वह प्रेम का दान दिया करे, तो उससे बढ़कर दान किसीने नहीं दिया ऐसा समाज को लगेगा। वह दुनिया को जीतेगा।

चैतन्य महाप्रभु के पास ऐसी कौन-सी चीज थी, जो दुनिया के पास नहीं थी? हम जब बंगाल पहुँचे तो वह कहानी सुनी कि चैतन्य महाप्रभु

करुणामूलक साम्य साम्य कहलाता है, अन्यथा साम्य के नाम पर झगड़ा होता है। मत्सर के जरिये साम्य नहीं होगा, बल्कि उससे कशमकश बढ़ेगी। उस पर एक भाई कहते हैं कि बाबा का कार्यक्रम तो दया का कार्यक्रम है। और हम दूसरों की दया पर निर्भर रहें गरीब लोग, दुःखी लोग दूसरों की दया पर निर्भर रहें, यह बड़ी हीन बात है दीन बात है। वह शख्स समझे ही नहीं कि बाबा क्या कह रहा था। उन्होंने यह समझा कि दया या करुणा ऐसा गुण है, जो किसीकी बपौती इस्टेट है। किसी बड़े श्रीमान् को दया और करुणा का हक है। उनके पास कैपिटल बहुत-सा है लेकिन करुणा का भी उन्हींके पास कैपिटल होना चाहिए और हो सकता है ऐसा लोग मानते हैं।

दुनिया में सारे 'हैव्स' हैं

अक्सर लोग कहते हैं कि दुनिया में कोई हैव्स (Haves) और और कोई हैव्स नाट (Haves not) याने कोई 'है चीजवाले' और कोई 'बिना चीज के' हैं। वाले और बिनावाले ऐसे दो भाग हैं—समाज में और उनके बीच कशमकश आदि बातें लोग करते हैं। जब हम सोचने लगे तो हमें भी ऐसा ही भास हुआ। लगभग १२ १५ साल पहले की बात कर रहा हूँ। धीरे धीरे ध्यान में आया कि दुनिया में जितने हैं—कुल-के-कुल हैव्स हैं वाले ही हैं। किसीके पास कोई चीज है तो किसीके पास को चीज। लेकिन हर मनुष्य 'वाला' है। कोई परिश्रम-शक्तिवाला है कोई श्रम-शक्ति से काम कर सकता है श्रम-शक्ति का दान दे सकता है कोई सम्पत्तिवाला है, कोई शिक्षण प्राप्त किया हुआ ज्ञानवाला इल्मवाला है और कोई जमीन का मालिक जमीनवाला है। हर शख्स

दान धर्म का रूप था वह बाबा के इस आन्दोलन में नहीं है। उन दिनों दान धर्म करनेवाला दाता घमंडी, अभिमानी होता तो लेनेवाला दीन।

छोटे लोग जाग रहे हैं

मैं कहना चाहता हूँ कि इसका परिणाम भारत पर यह हुआ है कि छोटे-छोटे लोग जाग गये हैं। हर जगह उनमें एक भावना पैदा हुई है कि हमारे पास एक चीज पड़ी है जो हम दूसरों को दे सकते हैं। यह मैं प्रत्यक्ष देख रहा हूँ। सिर्फ द्रवित होकर लोगों के पास पहुँचने की आवश्यकता है। जिनके पाँव को कभी धूलि लगी नहीं, उनको चरण धूलि कैसे मिलेगी? तू भगवान् की चरण-धूलि चाहता है तो जिनके पाँव को धूलि लगी ही नहीं उनकी सेवा में लगा रहता है, तो कैसे धूलि मिलेगी? इसलिए जिनके पाँव को धूलि लगती है, ऐसे सन्तों की सेवा कर, तो तुझे चरण-धूलि मिलेगी। जो हमारे स्वामी हैं उनके पास हम पहुँचते हैं तो बाकी के लोग सेवक होकर वहाँ दौड़े आयेंगे, लेकिन जो स्वामी हैं उन्हें हमको यह सिखाना होगा कि भाई, तुम तो हमारे लिए स्वामी हो पर तुम्हारे लिए दूसरे स्वामी हैं। हम तुम्हारी सेवा में आये हैं। तुमको दूसरों की सेवा में जाना चाहिए।

समाज पानी के समान होना चाहिए

जहाँ एक बड़ा मनुष्य छोटे मनुष्य के लिए दौड़ा गया वहाँ वह गैर हाजिर था घर में। क्योंकि वह छोटे आदमी को मदद पहुँचाने के लिए दौड़ा हुआ था। मैंने यह जो वर्णन किया वह काव्य नहीं है न अलौकिक लौकिक है बल्कि इस सृष्टि में होता है परमेश्वर की सृष्टि में हो रहा है। हम देखते हैं पानी और कुँआ। कुएँ से हम बाल्टीभर पानी लेते हैं तब क्या देखते हैं तमाशा। बाल्टी के आकार का गड्ढा और गड्ढा आप देखते हैं कुँए में? यदि एक बाल्टीभर पानी उसमें से निकाल लिया तो क्या उतने आकार का एक गड्ढा उस कुँए में पड़ता है? यह आप नहीं देखते। लेकिन गेहूँ के एक ढेर से आपने दो सेर गेहूँ निकाल लिया तो आप क्या तमाशा देखते हैं? उतना गड्ढा उसमें पड़ जाता

सामने पेड़ देखते, तो भगवान् श्रीकृष्ण नजर आते और उनकी आँखों से आँसू गिर पड़ते। उन्हें लगता—'सामने जो नीला-नीला आकाश दीख रहा है उसी रूप में भगवान् मुझसे मिलने के लिए आये हैं। जिस किसीको वे देखते, तो 'भगवान् मुझसे मिलने के लिए आया है' यों समझकर उनकी आँखें गीली हो उठतीं। उस शख्स के पास कोई चीज नहीं थी सिवा कि प्रेम। वह दुनिया में प्रेम लुटाता ही रहा। इससे बेहतर दान देनेवाला बंगाल को अभी तक कोई नहीं मिला। आज तक बंगाल याद करता है चैतन्य महाप्रभु को प्रेमावतार समझकर।

हम आपसे पूछना चाहते हैं कि ऐसा कौन आदमी है जिसकी नाक में से साँस चल रही है और उसके पास देने की चीज नहीं। जब मनुष्य को एहसास होता है कि मेरे पास देने की चीज है तब वह देता ही जायगा। इसकी वह फिक्र नहीं करेगा कि उसके पास जो चीज है उसकी कीमत क्या है?

गरीब मिल्कियत पटक दें

जब बाबा करुणा की बात करता है तब चन्द लोगों के लिए बात करता रहा है और वे उपकार करेंगे दूसरों पर, दूसरे उपकृत रहेंगे और वे दीन और हीन बनेंगे याचक बनेंगे। इस किस्म का कोई आन्दोलन बाबा ने नहीं उठाया। बल्कि यह ख्याल रखो कि बाबा को ६ लाख दानपत्र मिले हैं जिनके जरिये कोई ४४-४५ लाख एकड़ जमीन होती है। उस ६ लाख में से ५ लाख दानपत्र बिलकुल गरीब लोगों ने दिये हैं जिनके पास दो एकड़ तीन एकड़ चार एकड़ जमीन है। बाकी के १ लाख दानपत्र बड़ों के हैं। बाबा ने जगह-जगह कहा कि गरीब लोग अपनी मिल्कियत पटक देंगे तब दुनिया में ऐसी हवा पैदा होगी कि यह चीज कोई अपने सिर पर रखना नहीं चाहेगा। हर कोई कहेगा कि इस मिल्कियत को पटक दो नीचे। आज जब साइन्स का जमाना जोर कर रहा है तब कौन-सी ऐसी ताकत है दुनिया में, जो कि आम जनता की भावना को रोक सके। अतः समझना चाहिए कि पुराने जमाने का जो

—यह कौन है यह क्या है इस प्रकार की भावना चन्द्रिका नहीं करती। सबको समान रूप से वह ठंडक पहुँचाती है।

समाज में मुझसे भी कोई दुःखी है ?

यही सिखावनें हैं जिनके आधार पर हमने यह काम उठाया है। यहाँ जितने भी भाई बैठे हैं उनमें जो सबसे दुःखी हो उसे मेरे सामने लाओ और मैं उससे यह कहनेवाला हूँ कि तुझसे भी दुःखी एक आदमी दुनिया में है। तू उसे ढूँढ निकाल। तब तुझे तेरे दुःख की विस्मृति होगी और महान् आनन्द की वृद्धि होगी। बावजूद इसके कि तेरे शरीर में दुःख भरा है तेरा यह काम है कि तुझसे बढ़कर जो दुःखी है उसकी मदद के लिए दौड़ा चला जाय। मेरा काम है कि मैं उसके पास पहुँचूँ। इस तरह से जहाँ समाज बनेगा वहाँ देखते-देखते सौन्दर्य और आनन्द के सिवा कोई चीज मिलेगी ही नहीं।

सुख की राह

क्या ऐसा समाज बना सकते हैं ? हम कहते हैं जरूर बना सकते हैं क्योंकि दुःखी होकर कौन इन्सान जीवित रहना चाहता है ? सब कोई चाहते हैं 'सुख'। सब सुख के पीछे दौड़ रहे हैं। मैं कहता हूँ भाई सुख के पीछे क्यों दौड़ते हो सुख को साथ लेकर चलो न भाई। हाथ में पकड़ कर चलो। तुम उसके पीछे-पीछे दौड़ते हो तो वह और आगे दौड़ता है। इसलिए तुम्हारे उसके बीच में फासला रह जाता है। उसकी राह कौन-सी है ? 'परहित बस जिनके मन माहीं'। बिल्कुल सारा फार्मूला बता दिया तुलसीदासजी ने कि भाई परहित की बात सोचो। अगर परहित की सोचोगे तो सारे जितने 'पर' हैं वे तुम्हारे हित की सोचेंगे। सीधी-सी बात है मैं अपने सुख की बात सोचूँ। अपनी छोटी-सी अक्ल है इस छोटी सी अक्ल से मैं अपना भला सोचूँ तो सब लोग मेरा भला चाहेंगे। अपनी चिन्ता समाप्त करो तो दूसरे सारे तुम्हारी चिन्ता करेंगे। अगर तुम हमारी चिन्ता करोगे, तो हम तुम्हारी चिन्ता करेंगे।

है। उस गड्ढे को भरने की कोशिश अगर किसीने की, तो कोई मुट्ठीभर गेहूँ के दो-चार, वे उसमें अन्दर गिरने लगे, बाकी के वैसे के वैसे सभी अपनी जगह बैठे रहे। लेकिन पानी में ऐसा नहीं हुआ। पानी की हरएक बूँद-बूँद में जो प्रेम-शक्ति है, स्नेह है उसके कारण ज्यों गड्ढा होने की तैयारी हुई कि सब पानी की बूँदें उधर दौड़ गयीं और सतह बराबर कर ली। हुआ यह कि जहाँ एक बाल्टीभर पानी उठा लिया वहाँ थोड़ी-सी सतह नीचे गयी। गड्ढा नहीं पड़ा। इसके मानी क्या हैं? समाज होना चाहिए उस पानी के समान जो सतह पर रहेगा। किस तरह से रहेगा? जहाँ भी गड्ढा पड़ता है, वहाँ चारों ओर से पानी दौड़े आ रहा है और गड्ढा भरता है। आपको भान भी नहीं होता कि पानी दौड़ रहा है और गड्ढे को भरने का काम किया जा रहा है। ऐसा दीखेगा भी नहीं। जहाँ आपने बाल्टी उठायी, वह हो गया समान सतह। यह जो पानी का गुण है वह हमें सीखना चाहिए।

आज का समाज गेहूँ के ढेर के समान है। उसमें कुछ ऐसे दाने आते हैं गड्ढा पूरने के लिए लेकिन वे केवल चंद दाने आते हैं। बाकी के गेहूँ अपनी जगह पर बैठे हैं। आज का मानव-समाज इस तरह से बना है। लेकिन हम जो मानव-समाज बनाना है वह पानी की मिसाल का होगा। उससे बहुत सीखने को हमको मिलता है।

पानी प्यास बुझाना ही जानता है

ज्ञानेश्वर महाराज ने पानी का बहुत वर्णन किया है। गाय पानी पीने के लिए आयी, तो पानी जानता है उसकी प्यास बुझाना और कुछ नहीं जानता। और शेर आया पानी पीने के लिए, तो उसकी भी प्यास बुझाना ही जानता है। शेर का और गाय का बैर है। लेकिन दोनों प्राणियों का पानी पर प्यार है और दोनों पानी को चाहते हैं। इस प्रकार से जो करुणावान् होते हैं, वे कोई भेद नहीं करते हैं।

'मानुषें चक्रिकाम । हरिसी राया रंका ।
तैसा जो सर्वांसि । भूतीं सम ॥

'क्षय' की बीमारी के नाम से ही अनेक लोग डरते हैं। इसलिए संस्कृत में यह नहीं मानते कि इसे क्षय हुआ है। उसके स्थान पर कहा करते हैं कि इसे क्षय की भावना हुई है। इस रोग से मनुष्य पीड़ित होता है तो सबसे ज्यादा असर उसकी भावना पर होता है। यह असर निकल जाना चाहिए। करीब-करीब यही हालत मेथसी के रोगी की होती है। दरअसल टी॰ बी॰ का पेशंट यह बीमारी लाता है। बहुत थोड़े ऐसे व्यक्ति हैं जिनके फेफड़ों में पहले से ही इस रोग के जन्तु हैं। लेकिन बहुत सारे लोगों ने टी॰ बी॰ कमाया है।

बालकोबाजी की बीमारी

मेरा छोटा भाई बालकोबा अभी उरुळीकांचन में प्राकृतिक चिकित्सा का केन्द्र चलाता है। वह ब्रह्मचारी है। गांधीजी के पास रहता था। उस वक्त वह युवक बहुत कम सोता था और काम बहुत ज्यादा करता था। मेहनत का काम ज्यादा करता था इसलिए उसकी तबीयत खराब हो गयी। उसे टी॰ बी॰ हुआ। बारह साल से वह पड़ा था। उसने प्राकृतिक उपचार करवाया लेकिन रात-दिन गीता योगशास्त्र जैसे ग्रन्थ पढ़ता और बहुत ही प्रसन्न रहता था। बिल्कुल मस्त रहता था। जिस किसीने बालकोबा को उरुळी में देखा उनको मालूम है कि वह कैसा प्रसन्न रहता था। वह उस रोग से मुक्त हो गया। बारह साल की अवधि लगी। पूना के पास प्राकृतिक चिकित्सा का जो केन्द्र खुला उसमें पहले गांधीजी रहते थे और गांधीजी के हाथों से ही वहाँ प्राकृतिक उपचार, जिसे मैं नाम चिकित्सा कहता हूं शुरू हुआ। उस रोग से मुक्त होने के बाद धीरे-धीरे बालकोबा ने ठंडे पानी में नहाना शुरू किया। नहाना

क्योंकि ऋषि के पास देव आये। वे कहने लगे कि आपसे दान माँगने के लिए हम आये हैं। उन्होंने कहा कि हम तो सब कुछ दे ही चुके हैं अब हमारे पास क्या बचा? हमारे पास रुपया तो नहीं है। तो उन्होंने कहा आपके पास हड्डियाँ तो बची हैं। उन्हींकी हमको जरूरत है। आपके शरीर में गोश्त तो कुछ नहीं था उसकी हमको जरूरत थी। मगर वह है नहीं इसलिए हमको हड्डियों की जरूरत है। अरे भाई, हमारी हड्डियों से क्या करेगा? आपकी हड्डियों से हम बनायेंगे वज्र और वृत्रासुर राक्षस का हनन होगा।

देता है, वह देव, रखनेवाला राक्षस

इस तरह की कहानी सुनते हैं, तो आनन्द होता है। लेकिन जो सुनने में आनन्द आता है उससे बेहतर आनन्द करने में है। हमारे पास जो चीज है वह हम दूसरों को देते हैं तो देने से दिल को तसल्ली मिलती है। मेरी माँ कहती थी देखो 'देव' का मतलब होता है, जो दान देता है। जो देता है वह देव है और जो रखता है वह राक्षस है। यह बात इतनी सरलता से हमने ग्रहण की कि इसे हम भूल नहीं सकते। यही विचार हम दे रहे हैं। सबको देना है, इसलिए यह मत समझो कि एक को देना ही देना है और दूसरे को लेना ही लेना है।

हम ११ साल से जो बात कर रहे हैं वह लोग समझते नहीं हैं और कहते हैं कि यह दया का कार्यक्रम है इससे कुछ होने-जानेवाला नहीं है। हम पूछना चाहते हैं कि क्या इससे बेहतर तरीका इस काम के लिए कौन सा हो सकता है? एक तो कत्ल का तरीका हो सकता है दूसरा कानून का। कत्ल का तरीका न आप चाहते हैं न मैं चाहता हूँ। अब रही कानून की बात। आखिर पार्लमेंट कहाँ गया किसने आपके हाथ राज ५ ?

इन्दौर —प्रार्थना-प्रवचन
७-८-६१

नहीं होता। प्रकृति किसीको क्षमा नहीं करती। जरूरत से ज्यादा श्रम करने पर शिक्षा होती है। मैसे कहा जाय तो यह शिक्षा नहीं यह वरदान है। बीमारी की दुरुस्ती शुरू होती है। प्रकृति ने अन्दर से बगावत की इसलिए शरीर कमजोर हुआ। बीमारी तो शरीर में पहले ही हो गयी अब दुरुस्ती शुरू हो गयी है। इसलिए अब बाहर से मदद करो—खाने-पीने का नियमन करो तो जल्दी दुरुस्ती हो जायगी। यह बीमारी वरदान है। जैसे उल्टी हो गयी, तो वह भयानक चीज नहीं है क्योंकि उल्टी होने से राहत मिलती है। अगर उल्टी नहीं होती है तो तकलीफ होती है। एक भूदान-कार्यकर्ता ने बहुत ज्यादा काम किया। खाने-पीने की परवाह नहीं की। उसे क्षय हुआ। डाक्टर ने भी कहा कि तुमने हद से ज्यादा काम किया इसलिए यह रोग तुम्हें हुआ है। उसने प्राकृतिक इलाज किया और वह भी अब उससे मुक्त हो गया है।

समय का सदुपयोग कीजिये

अब आपको यहाँ ज्यादा दिन रहना होगा तो उस समय का आप उपयोग कीजिये। अब तक घर के काम से या और किसी काम से आपको फुरसत नहीं मिलती थी। अब यहाँ के समय का उपयोग आप कीजिये। यह समझ लीजिये कि यहाँ ईश्वर का ध्यान करने का मौका मिला है। मैं बीमार न होती, तो घर में रसोई का काम करती। जैसे हम लोगों को जेल में आराम था इसमें से कितने ही लोगों ने अध्ययन चिन्तन मनन और लिखने का काम किया। आप यह समझ लीजिये कि यह अस्पताल वाले आपके लिए जेल है। इसमें आप अध्ययन चिन्तन मनन कर सकती हैं। इन्दौरवालों से मैंने कहा है कि सब लोग नौ बजे सो जायँ। आरोग्य के लिए जल्दी सोना और जल्दी उठना लाभदायी है। अगर ये लोग जल्दी सोयेंगे, तो इस तरह का रोग नहीं होगा और फिर अस्पतालों की सेवा करनेवाले बेकार हो जायँगे। उनको खेती में लगाया जाय। मुख्य इसा रात में जल्दी सोना ये आरोग्य के नियम

शुरू किया। धूप में घूमना शुरू किया। उसे जब टी॰ बी॰ की भावना लागू हुई तब उसकी उम्र तीस साल की थी और बयालीस साल में उससे मुक्त हो गया। आज बाकलोवा की उम्र साठ साल की है।

प्रसन्नता से रोग मुक्ति

टी॰ बी॰ से मुक्त हुए अठारह साल हुए। अब वह बहुत ज्यादा काम करता है। बहुत थोड़े लोग ऐसे हैं, जो इतना काम करते हैं। धूप में टहलता है आहार पर नियमन किया है। बाकलोवा बिल्कुल प्रसन्न और मस्त रहता था। उसके चेहरे से कोई नहीं कह सकता था कि इसे 'क्षय' हुआ है। मुझे पूछा जाय कि चार साल वह पड़ा रहा था दवाई भी ज्यादा नहीं खायी प्राकृतिक इलाज किया, आपरेशन नहीं किया तो वह मुक्त कैसे हुआ? मैं कहूँगा कि वह प्रसन्न रहता था इसीलिए मुक्त हुआ। इसलिए अन्तःकरण में प्रसन्नता रखनी चाहिए।

डरने का कोई कारण नहीं है। वैसे तो उत्तम-से-उत्तम आरोग्यधाम भी भर जाता है। हम देह से अलग हैं हम अनेक देह धारण कर चुके। मगर अल्लाह नहीं चाहता है कि इसके आगे हम देह धारण करें तो उसके पास हम पहुँच जायगे और मुक्त हो सकते हैं। यह सारा तत्त्वज्ञान हमें हासिल हुआ है।

शहर की बहनें क्षय की शिकार

ज्यादातर शहरों की बहनों को क्षय की बीमारी होती है ऐसा दीखता है। घर में धुएँ के साथ काम करना पड़ता है। प्रसूति, बाल संगोपन, घर का काम ज्यादा चिन्ता और खुली हवा का न होना इन कारणों से बहनों को यह रोग होता है।

प्रकृति किसीको क्षमा नहीं करती

कुछ लोगों का कहना है कि हमें क्षयरोग इसलिए हुआ है कि हमने गत जन्म में पाप किया था। यह बात गलत है। कोई भी रोग पाप से

मजदूर-वर्ग हरिजन आदिवासी यह सब भेद भूल जाना चाहिए। भविष्य में मजदूरों का सिक्खों का भाव-सम्प्रदायों का मुसलिमों का प्रश्न आयेगा। पूरा काम हाथ में लेते हैं और सोचते हैं तो उनका सहयोग हासिल हो सकता है। मजदूरों की सेवा हरिजनों की सेवा, ऐसा टुकड़ा लेकर समाज में जाते हैं तो कोई नहीं पूछता। अब समग्र काम हाथ में लेकर काम करने का जमाना है। जो कुछ होगा सरकार की तरफ से। यह किसी एक जमात पर लागू नहीं होता बल्कि सारे समाज, गाँव और देश पर लागू होता है। यह बोझ सबके लिए बनती है। उस हालत में सिर्फ मजदूरों की समस्या लेकर अपने चिन्तन को मर्यादित करेंगे तो उन कार्यकर्ताओं के साथ टकराएंगे जिन्होंने मजदूरों का एक्सप्लॉयटेशन दूर करने का निश्चय कर लिया है।

आपको समुद्र बनना होगा

मजदूरों की कोई सभा वगैरह बनाने के बजाय मजदूरों की ओर ध्यान देनेवाली दृष्टि होनी चाहिए। अगर मजदूरों को कोई सताता है तो उसे बन्द करना चाहिए। मजदूरों के लिए काम करनेवाले यहाँ जो कार्यकर्ता हैं उनका ज्यादा हिस्सा मुझे चाहिए। आप सिर्फ मजदूरों की सेवा करते हैं। प्रसंग पर उनके लिए मर-मिटने का अवसर आने पर कोई तैयार नहीं होता। अगर आप केवल मजदूरों के लिए समय पर मर-मिटने को तैयार होंगे तो उनसे मजदूरों की प्रतिष्ठा बढ़ती है। अगर आपके कार्यकर्ता ऐसे होंगे और ट्रेनिंग की जरूरत होगी तो वह आश्रम में ही आयगी। इसलिए मैं यह सलाह नहीं दूँगा कि मजदूरों या सेवकों में काम करो बल्कि यह कहूँगा कि सबकी सेवा करो, तो आप समुद्र बन

है। रोग होने के बाद दुखी हवा में आते हैं, लेकिन पहले ही मर नहीं सकता है।

योगी बनोगे तो रोगी नहीं बनोगे

मैं हमेशा कहता हूँ कि अगर आप योगी बनते हैं तो रोगी नहीं बनेंगे। जहाँ जीवन में योग रहेगा वहाँ आरोग्य बना रहेगा। योगी बनना याने क्या करना ? समतोल आहार, उचित आराम, गाढ़ निद्रा उचित काम और किसी पर गुस्सा न करना। भगवान् का नाम है— उसका नाम योग है।

हम बहनेवाली आत्मा हैं

आपको देखकर मुझे आनन्द हो रहा है। क्योंकि अपने भाई की मुझे याद आती है। वह तो अब पुष्ट होकर मस्ती में काम कर रहा है। आप यह तय कर लीजिये और क्षय की भावना न होने दीजिये। हम हमेशा बहनेवाली आत्मा हैं हमारा क्षय होनेवाला नहीं है। भगवान् का नाम लें चित्त प्रसन्न रखें तो यहाँ से जाने के बाद आप पुरानी बहन नहीं रहेंगी आपका नया जन्म होगा। नया मानव आप बनेंगी और नया मानव बनने के लिए भगवान् ने आपको यह मौका दिया है, ऐसा मानकर इस समय का आप उपयोग कीजिये।

इन्दौर टी बी अस्पताल में

-६ ६

होगा। दूसरे ढंग से मसले हल करने चाहिए। यह नान-कापरेशन का तरीका होने से निगेटिव था इसलिए पिछड़ गया। गुजरात के सर्वोदयवादियों ने यह सुझाया कि वेतन में हम एक रुपया कम लें। हमारे कुछ खादिम-न्सेस हैं। प्रोटेस्ट के तौर पर एक रुपया हर माह अपने वेतन में कम करें। पचीस हजार नौकर हैं। सब इसमें शामिल हो सकते थे। तो हर महीने पचीस हजार रुपयों की बचत हो जाती थी। यह है सत्याग्रह का एक तरीका। पहले जो हथकण्डे थे उनमें संशोधन की जरूरत है। ऐसा कारगर तरीका हमें ढूँढ़ना होगा जिससे सामनेवाले को यह महसूस हो कि हम दोनों एक ही हैं। इतने की ही जरूरत है। इसलिए इस प्रकार ट्रेड यूनियनिज्म नहीं होना चाहिए, ऐसी मेरी राय है। न्यायकर खादी के क्षेत्र में १-१॥ रुपया वेतन कम पड़ता है ऐसा पता चल रहा है। सौ रुपयों से कम तो नहीं देना चाहिए। पंजाब का स्टैण्डर्ड ऊँचा है। उसे देखते हुए एक साल के बाद में कमसेकम को योग्य वेतन पर आना चाहिए, ऐसी हमारी राय है। उसमें फिर हमारी खादी कितनी महँगी होगी आदि बातें आती हैं। बिहार का स्टैण्डर्ड तो पंजाब से कम ही है। फिर भी वहाँ सौ रुपया वेतन माना गया है। उसके नीचे में तो हम नहीं आयेंगे। उसमें किसी तरह का कोई अड़ंगा लगाया तो वह ठीक नहीं है।

निर्माण-काम क्रान्तिकारी कैसे बने? निर्माण-काम के साथ-साथ अगर चित्त का निर्माण हो तो क्रांति-काम बनेगा।

सेवक लोकाधारित रहें

एक योजना है। आप सरकार की मदद लेते हैं। आप अंबर चलाते हैं, घानी उत्पादन करते हैं, दूकान चलाते हैं। क्या आप यह कर सकते हैं कि इन कामों में जो सेवक काम करते हैं उनको लोकाधारित रखें और बाकी सब मदद सरकार से लें? हमारे इतने सेवकों की तनख्वाह है वह तो लोकाधारित है। उनका बोझ सरकार पर नहीं पड़ेगा क्योंकि

जायेंगे नहीं तो नदी या नाला बने रहेंगे। नाला तो खैर गन्दा होता है। यह सब बनिये, लेकिन अगर नदी भी बन गये, तब भी आपको समुद्र में ही जाना पड़ेगा। आपको समुद्र बनना होगा और उसको बुझना होगा। इससे हम उन लोगों के साथ टकराते नहीं हैं।

देश के काम में क्षति न पहुँचे

ट्रेड यूनियन पुराने जमाने की चीज हो गयी। उसमें कुछ चीजें पुराने जमाने की बच रही हैं। अभी एक देशव्यापी हड़ताल हुई। उसे आर्डिनेंस से इल्-लीगल जाहिर किया गया। फिर भी वह हड़ताल पाँच दिन टिकी। अब तो पार्लियामेंट में बिल आया है कि इस प्रकार की हड़ताल का अधिकार इनको है ही नहीं। ट्रेड यूनियन कहीं भी अड़ंगा पैदा कर सकती है। जहाँ निर्माण की बहुत आवश्यकता है वहाँ अड़ंगा लगाने से काम रुकता है और देश को उससे क्षति पहुँचती है। बम्बई में रेलवे स्ट्राइक होती है तो वहाँ से कलकत्ता के कारखानों के लिए माल जाने का काम ही रुक जायगा।

यह काम देश के खिलाफ है। यह काम यह दिखाने के लिए करते हैं कि हमारी माँग वाजिब है; लेकिन इससे देश को तकलीफ होती है और यह चीज उत्तरोत्तर बढ़ती जाती है। जो डेमोक्रेसी है और जो संकट चारों ओर से घेरे हुए रहते हैं, उससे हरएक देश की सियासत सेन्सिटिव बनती जाती है। अब देखते-देखते कश्मीर का मसला इण्टरनेशनल बन गया। पहले तो हिन्दुस्तान तक ही सीमित था। अब तो पाकिस्तान पश्चिम एशिया अमेरिका सबका सम्बन्ध पहुँचता है किसी-न-किसी कारण। यह समस्या अब पहले से ज्यादा पेचीदा हुई। इस हालत में ट्रेड यूनियन का जो पुराना रिवाज है उसमें सुधार होना चाहिए।

सत्याग्रह का नया तरीका

गांधीजी के जमाने में जो सत्याग्रह होता था वह निगेटिव तरीका था। इस जमाने में वह पिछड़ गया है। इसलिए पॉजिटिव तरीका ढूँढ़ना

दान—भारत के हृदय को स्वीकार्य ३०

कश्मीर में विशेष दर्शन

मैं कश्मीर गया था। मुझे कोई अन्दाज नहीं था कि वहाँ जाने के बाद इस विचार का किस तरह स्वागत होगा। हमारे जाने के दो-तीन साल पहले ही वहाँ सरकार ने लोगों से बिना मुआवजे के जमीन छीन ली थी और दूसरे लोगों में बाँटी थी। यह सरकारी कार्यक्रम पूरा होने के बाद हम वहाँ पहुँचे। वहाँ २२ एकड़ का सीलिंग था फिर भी उस २२ एकड़ में से सैकड़ों लोगों ने हमें दान दिया। किसीने दो एकड़, किसीने चार एकड़ पाँच एकड़ तक जमीन का दान दिया है। भारत के हृदय को यह कार्यक्रम कितना स्वीकार्य है इसका सबसे बड़ा दर्शन हमने दक्षिण में किया। बिहार में भी ऐसा ही हुआ। वहाँ पैंतीस हजार गाँवों से दान मिला। कुल पचहत्तर हजार गाँव हैं। करीब आधे गाँवों से दान मिला। लोग पूछने लगे बिहार में जितनी दफा जितने लोग इस भूदान-आन्दोलन में गाँव-गाँव पहुँचे उसका दसवाँ हिस्सा भी उसके पहले किसी आन्दोलन में लोग घूमे नहीं थे। इसलिए वहाँ भी एक दर्शन हुआ; लेकिन कश्मीर का एक विशेष ही दर्शन था। वह इसलिए कि वहाँ सरकारी कार्यक्रम पूरा हो गया था। इसलिए बची हुई जमीन का टुकड़ा भी लोग देते यह एक आश्चर्य की बात थी। पहली यात्रा के बाद पंजाब के कुछ लोग हमारे साथ कश्मीर आये थे। वे देख रहे थे कि कश्मीर में रोज सभा में दस-बीस लोग शान्ति-सेना के लिए नाम दे रहे हैं भाई-बहनें सामने नाम दे रहे हैं। जमीन माँगी जा रही है और जमीन दी जा रही है। सिर्फ जम्मू में नहीं कश्मीरघाटी में भी यह हुआ। जम्मू में

यह काम आपके इख्तियार में है। इससे एकदम आपके काम में तेजी आयेगी। इतना अगर कर लें तो निर्माण क्रान्तिकारी हो गया। हमारा कार्यकर्ता जनता पर निर्भर है और जनता से जितना मिलेगा, उतना ही वह लेगा।

धंधे की दृष्टि न हो

कुछ लोग यह कहते हैं कि प्रोडक्शन होता है। उसमें कुछ मुनाफा होता है। उसमें सरकार वेतन देती है। यह तो धन्धा हो गया। ऐसा होता है तो बनिये भार खादी में घुस गया! इसमें अगर क्रान्तिकारिता है तो लोगों के हाथ यह काम रखा होना चाहिए। जो धन्धेवाला प्रयत्न है उसके आधार पर कुछ लोग रह सकते हैं लेकिन वह धन्धे के अन्तर्गत आता है। वह कातनेवाला एक है और उस पर इंटरेस्ट करनेवाला एक है तो वह लोक-सेवक नहीं है। ऐसे लोगों का वेतन लोगों के आधार पर मिले तो क्रान्तिकारी काम हो जायगा। हम ग्राम-स्वराज्य के लक्ष्य से निर्माण कर रहे हैं। सरकार यह काम बेकारों को मदद देने के ख्याल से करती है। इस वास्ते ग्राम-स्वराज्य के सेवक के नाते लोगों की तरफ से हमको मदद मिल रही है। इससे निर्माण-कार्य क्रान्तिकारी हो जाता है।

इन्दौर —ग्राम-कार्यकर्ता-शिविर में
९-८ ६

खेतों में समान पानी भर दिया है। आपके सारे भेद डूब गये हैं। इसलिए अलग-अलग मिल्कियत को पकड़े मत रहो।

मैंने माँगा उन्होंने दिया

हम वहाँ घर-घर जाते थे। कुछ मुसलमान बस्ती थी। उन्होंने दान की वर्षा करवायी। बहुत आफत में भी मैंने दान माँगा और उन्होंने दान दिया। मैंने उनको समझाया। आपके सारे खेत डूब गये हैं। आपको फिर से सबको बसाना है तो हरएक को अलग-अलग न बसाकर सबको एक करके बसाना चाहिए। ये सारी बात मैं उनको सुनाता था और वे कोम दान देते थे।

इन्दौर —प्रार्थना-प्रवचन से
९-८ ६

हिन्दू लोग ज्यादा रहते हैं—हिन्दू और सिक्ख। कश्मीरघाटी में मुसलमान लोग ज्यादा रहते हैं।

'तूफाने नूह'

जब हम कश्मीरघाटी में पहुँचे थे, तब एक बहुत बड़ा सैलाब वहाँ आया था। शायद अगर दो दिन और होते तो पूरी कश्मीरघाटी डूब जाती। इतना जोरदार सैलाब था। जहाँ हम हिमालय लाँघकर पहुँचे थे, वहाँ से महमूद गजनी को वापस लौटना पड़ा था। हिमालय की पीरपंजाल नाम की जो रेंज है, वहाँ तक वह पहुँचा था। वहाँ से ऊपर जाना पड़ता था। महमूद गजनी का बहुत सख्त मुकाबला वहाँ के लोगों ने किया। सामने बरफ से ढँका पहाड़ था। वहाँ हम भी दो-चार दिन रुके और फिर वह पहाड़ लाँघकर हम कश्मीरघाटी में गये। उस सैलाब को वहाँ के लोग 'तूफाने नूह' कहते थे।

बाबा खुद एक सैलाब है

नूह की जमीन में जो जोरदार तूफान हुआ उससे जल-प्रलय हुआ और पृथ्वी का हिस्सा जलमग्न हो गया। उससे सारे मानव मिट गये थे। ऐसी कहानी वहाँ के लोग सुनाते हैं। यहाँ मनु के नाम से इस कहानी का जिक्र किया जाता है। कश्मीरघाटी के लोगों से मैंने कहा : मेरे प्यारे भाइयो, तुम 'नूह' को कबूल करते हो कि 'तूफाने नूह' को ? तुम्हारे सामने यही सवाल है। पैगम्बर का नूह कहते हैं। वह कहते थे कि यह दुनिया फानी है, चंद दिनों की है। इसलिए प्रेम करो। आपके सामने एक मजहब पेश है। इसलिए आपस-आपस में प्रेम करो। लोग मुझसे कहते थे कि बाबा आया और सैलाब भी आया तो एक अपशकुन जैसा हुआ है। हमने कहा : बाबा खुद भी एक सैलाब है। तो उसके सामने दूसरे सैलाब की क्या कीमत है ? आपके प्रदेश में सैलाब आया है। वह कह रहा है कि *मिल्कियत मत रखो मिल्क दो यह मिल्कियत।* यह सैलाब सिखा रहा है। वह सबको समान बना रहा है। उसने सब

नहीं। उसमें से प्रेरणा ही मिलनेवाली है। अभी इन्दौर ने प्रगति की है। पंजाब के कार्यकर्ताओं को लगा कि यहाँ का प्रयोग बुनियादी है। यहाँ के कार्यकर्ता रोज इकट्ठे होकर चिन्तन और चर्चा करते हैं। रोज क्या काम हुआ, क्या काम करना है उसका विचार करते हैं। कहीं कुछ गलती हुई तो वह कैसे दुरुस्त की जाय, लोगों की क्या माँग है, आगे काम का क्या रूप होना चाहिए, उसके बारे में चर्चा होती है। अगर इस प्रकार यहाँ काम चलता रहा तो इंदौर नगरी सर्वोदय-विचार का Practising school हो सकती है। पंजाबवालों पर इसका बहुत असर हुआ है।

कार्य-शुद्धि तारक

हम अगर छोटा-सा फिर भी अच्छा काम करते हैं तो उसका असर दुनिया पर पड़ता है और अगर थोड़ी-सी बुराई करेंगे तो उसका भी असर उतना ही व्यापक होगा। इसलिए हमें चाहिए कि हम काम भले ही थोड़ा करें, लेकिन वह शुद्ध हो, उसमें मिलावट न हो। यह भी एक सोचने की बात है कि योगी जो कि सिद्धि के लिए प्रयत्न करता है वह सतत शुद्धि करता रहता है तब जाकर अनेक जन्मान्तरों में उसको सिद्धि प्राप्त होती है। अनेक जन्मान्तर के बाद सिद्धि! लेकिन शुद्धि तो हर रोज आज की आज इस प्रकार शुद्धि की प्रक्रिया जारी रहती है। ऐसे शुद्धि के अन्त में सिद्धि भी लाजिमी होती है। पूर्णता प्राप्त करने के लिए शुद्धि का कार्यक्रम जारी रखना पड़ेगा। हमारे काम में शुद्धि बहुत ही तारक वस्तु है। इसका ऐसा अर्थ नहीं कि हम काम का प्रमाण नहीं चाहते। हम काम का प्रमाण बढ़ाना जरूर चाहते हैं लेकिन उसको बढ़ाने की लगन में शुद्धि खो दी तो मामला ही बिगड़ जायगा।

शुद्धि के जरिये वृद्धि

हमने हजार सर्वोदय-पात्र और सारे सर्वोदय के काम करने के लिए ७५ कार्यकर्ताओं की माँग की है। उनके साथ देखरेख और व्यवस्था करनेवाले ५ आदमियों की और माँग की है और थोड़ी-थोड़ी मदद

कार्य में शुद्धि का खयाल • ३१

नगर छोटा, विचार बड़ा

इंदौर में आज जो हो रहा है वह विश्वव्यापक विचार से हो रहा है। इन्दौर वैसे है तो एक छोटा-सा नगर, लेकिन विचार छोटा नहीं है जिसकी बुनियाद पर यहाँ काम हो रहा है।

हमारी हर जमात से मुलाकात हुई है—पैसावालों की जमात, व्यापारियों की जमात सबने सहानुभूति प्रकट की है। मुझे उम्मीद है कि यहाँ पर एक ज्योति प्रकट होगी। फिर भी काम का हिसाब तो होगा ही।

इंदौर के काम से पंजाब के कार्यकर्ताओं को प्रेरणा

इन्दौर में जो काम हो रहा है वह एक विश्वजनीन भावना से हो रहा है। उसके आसार भी दीख रहे हैं। यहाँ जो काम होगा वह इन्दौर के लिए तो होगा ही उससे स्थूल फायदा होगा। वह तो होगा ही लेकिन उसके सूक्ष्म असर से ज्यादा ताकत पैदा होगी। यहाँ पंजाब के भाई आये हैं। उन्होंने चर्चा करके तय किया है कि जैसे बहुत-से अनुभवी कार्यकर्ताओं को एक साथ में लाकर इन्दौर को सर्वोदय-नगर बनाने का प्रयत्न हो रहा है वैसा प्रयत्न जालंधर शहर में किया जाय।

इंदौर अभ्यास का विद्यालय

पंजाब के मध्य में जालन्धर शहर बसा हुआ है। वहाँ पर सब जमातें और सब कमेटियाँ मौजूद हैं। इन्दौर में भी सब जमातें और सब कमेटियाँ हैं। जालंधर सब कमेटियों और सब जमातों का केन्द्र है। वहाँ पर उन्होंने मोरचा लगाने का तय किया है। मैं मोरचा शब्द इस्तेमाल करता हूँ। लेकिन यह मोरचा सर्वोदय का है वह सर्वप्रेममय है उससे भय का कोई कारण

एक आश्रम बनानेवाले हैं। वह आश्रम काम के बारे में विचार करने के लिए, शिविर के लिए, शारीरिक परिश्रम के लिए, कुछ संशोधन के लिए बने लेकिन अगर वह कार्यकर्ताओं के रहने और खाने का स्थान बन गया, तो वह एक मन्दिर हो जायगा। कार्यकर्ता को तो वह जिस मोहल्ले में काम करता हो वहीं स्थान मिलना चाहिए। रहना खाना आदि उसको उस मोहल्ले में ही मिलना चाहिए। कार्यकर्ता में साधुत्व के लक्षण होने चाहिए। साधु का लक्षण है कि उसको जहाँ स्थान मिल गया रह गया जो खाना मिल गया खा लिया; जो ओढ़ने के लिए मिल गया ओढ़ लिया। ये साधु के लक्षण हैं। कार्यकर्ता को चाहिए कि वह अलग-अलग जगह रहे और खाना पाये। आश्रम में अगर चर्चा विचार के लिए गये तो चर्चा-विचार कर के नाश्ता दे दिया तो माफ। लेकिन उसका रहना खाना आश्रम में नहीं होगा; वरना आश्रम के कारण वह अलग हो जायगा। आज मैं दावा करता हूँ कि इन्दौर के हर घर में मेरा हिस्सा है। इन्दौर के कुल घरों में से छठा हिस्सा मेरा है। उनकी सम्पत्ति का छठा हिस्सा मेरा है। हर घर में मेरा ठहरने का हक है ऐसा मेरा दावा है। लेकिन तुम्हारा अगर मैं यहाँ आया और आपने मुझको आश्रम में ठहराया तो खतम। उसका अर्थ तो यह हुआ कि केवल एक घर का हक मिला और शहर के छठे भाग के मकान खोये। ऐसा नहीं होना चाहिए।

हमको पानी की भाँति सबका प्रिय बनना है और लगाव रखना है कि हम जो काम करें उसमें शुद्धि का लगाव रखें। मैंने ७५-८ कार्यकर्ताओं की माँग की है लेकिन उतने न हों और कमसे कम १० कार्यकर्ता भी होंगे और काम की शुद्धि के लगाववाले होंगे, तो भी यहाँ क्रान्ति हो सकती और इन्दौर का काम बन सकता।

इन्दौर
१-८-६

—कार्यकर्ता-सम्मेलन

करनेवाले तो सैकड़ों और हजारों चाहिए। ये सब मिल भी जायें, लेकिन यह ध्यान रहे कि मैंने ७०-७५ सज्जन माँगे हैं। हम संख्या-वृद्धि पर उतना ध्यान नहीं देते, जितना कि शुद्धि पर। शुद्धि के जरिये वृद्धि होगी, तभी पूर्णता सधेगी। अगर शुद्धि के बिना वृद्धि आयेगी तो वह शाप से भी बुरी होगी। किसी आदमी का वजन बढ़ता ही जाय और उसकी रक्त-शुद्धि न हो तो वह जल्दी ही मर जायगा। उसकी वृद्धि का समाज को इतना ही फायदा मिलेगा कि वह जब मरेगा तो औरों को उठाने के लिए जो ४ ही आदमी लगते हैं लेकिन उसको उठाने के लिए ८ आदमी लगेंगे। इसलिए केवल वृद्धि ही हमारा लक्ष्य न हो। शुद्धि के साथ वृद्धि का लक्ष्य रहना चाहिए।

कार्यकर्ताओं की कसौटी

कार्यकर्ता ठीक से काम कर रहा है या नहीं उसकी कसौटी क्या? उसकी कसौटी है कि हमारे कार्यकर्ता को कितने घर ऐसे मिले हैं, जो कि उसको अत्यन्त प्रेम से खिलाते हैं। जैसे माँ अपने बेटे को प्रेम से खिलाती है और उसका इंतजार करती है उसी प्रकार उस घरवाले कार्यकर्ता का इंतजार करते हैं। अगर वह १ १२ दिन तक नहीं आया, तो वे उसकी तलाश करते हैं। इस प्रकार हम कितने घर के मेम्बर बनते हैं वह हमारी कसौटी होगी। हमारे दो-तीन कार्यकर्ता यहाँ साहित्य प्रचार करने के लिए आये थे। करीब पाँच महीना यहाँ रहे। हमने उनसे पूछा कि आपको ऐसे घर कितने मिले जो कि आपका प्रेम से इंतजार करते हों और आपको प्रेम से खिलाते हों? उन्होंने बताया कि ऐसे १२ घर मिले हैं। मैंने कहा कि अगर १२ घर मिले हैं, तो आप पास हैं। पाँच महीने में बारह तो १ वर्ष में करीब १ घर। अब १ घर के बच्चे माँ-बाप बने तो कितना व्यापक प्रेम-सम्पर्क प्राप्त हुआ!

आश्रम का स्वरूप

इस प्रकार नहीं हुआ तो कार्यकर्ताओं के लिए लज्जा है। हम यहाँ

एक आश्रम बनानेवाले हैं। वह आश्रम कार्य के बारे में विचार करने के लिए, शिविर के लिए, शारीरिक परिश्रम के लिए, कुछ संशोधन के लिए बने लेकिन अगर वह कार्यकर्ताओं के रहने और खाने का स्थान बन गया तो वह एक अनिष्ट हो जायगा। कार्यकर्ता को तो वह जिस मोहल्ले में काम करता हो वहीं स्थान मिलना चाहिए। रहना खाना आदि उसको उस मोहल्ले में ही मिलना चाहिए। कार्यकर्ता में ब्राह्मण के लक्षण होने चाहिए। ब्राह्मण का लक्षण है कि उसको जहाँ स्थान मिल गया सो गया; जो खाना मिल गया खा लिया; जो ओढ़ने के लिए मिल गया ओढ़ लिया। ये ब्राह्मण के लक्षण हैं। कार्यकर्ता को चाहिए कि वह अलग-अलग जगह रहे और खाना पा ले। आश्रम में अगर चर्चा विचार के लिए गये तो चर्चा-विचार कर ले नाश्ता दे दिया तो माफ। लेकिन उसका रहना खाना आश्रम में नहीं रहेगा; वरना आश्रम के कारण वह अलग हो जायगा। आज मैं दावा करता हूँ कि इन्दौर के हर घर में मेरा हिस्सा है। इन्दौर के कुल घरों में से छठा हिस्सा मेरा है। उनकी सम्पत्ति का छठा हिस्सा मेरा है। हर घर में मेरा ठहरने का हक है ऐसा मेरा दावा है। लेकिन दुबारा अगर मैं यहाँ आया और आपने मुझको आश्रम में ठहराया तो खतम। उसका अर्थ तो यह हुआ कि केवल एक घर का हक मिला और शहर के छठे भाग के मकान खोये। ऐसा नहीं होना चाहिए।

हमको पानी की भाँति सबका मित्र बनना है और खयाल रखना है कि हम जो काम करें उसमें शुद्धि का खयाल रहे। मैंने ७५-८० कार्यकर्ताओं की माँग की है, लेकिन उतने न हों और केवल १-५ कार्यकर्ता भी होंगे और कार्य की शुद्धि के खयालवाले होंगे तो भी यहाँ शान्ति हो सकती और इन्दौर का काम बन सकेगा।

इन्दौर
१-८-६०

—कार्यकर्ता-सम्मेलन

सेवा में समान दयाभाव हो

यहाँ आप जो काम कर रही हैं वह सेवा और दया का काम है। आजकल दुनियाभर में यह प्रथा है कि बच्चों की सेवा के काम में बहनों को भेजा जाय। बहनें हमेशा सेवा करती आयी हैं। वह मातृसेवा है। घर में माता सेवा करती है, तो समाज में भी मातृरूपिणी बनकर वह सेवा करे, ऐसा हम चाहते हैं। शान्त और नम्र रहकर सेवा करना स्त्रियों का खास काम है। इस हक को समाज ने मान लिया है। बहनों के लिए यह एक प्रतिष्ठा मिल गयी है कि जब से उनको यह काम मिला है अस्पताल में किसी प्रकार का भेदभाव करने का कारण नहीं रहा है। यहाँ तो प्रेम सेवा और दया है। उसका स्वागत समान भाव से करना है। जैसे सूर्य चन्द्र बारिश आसमान और हवा सबकी समान भाव से सेवा करते हैं, किसी प्रकार का फर्क नहीं करते, उसी प्रकार से इस दया के काम में समत्व का भी अभ्यास हो जाता है। स्त्रियाँ इतना काम कर सकती हैं। सेवा के काम के लिए यह जरूरी है कि दया भाव रहे।

दयाभाव विकसित हो

यह काम सरकार की ताकत के बाहर का है। लेकिन आजकल हमने सब काम सरकार को सौंप दिये हैं। आज दवाखाना खोलते हैं तो उसमें दयाभाव रखना यह कोई सरकार का काम नहीं। यह काम आपको करना चाहिए। जनता का दयाभाव जाग्रत होगा तो दवाखाना और दवा दोनों मिलकर काम होगा। दवा है लेकिन इन्तजाम नहीं है, तो इन्तजाम के अभाव में दवा ज्यादा काम नहीं कर सकती। जो आँसू

बढ़ाकर शान्त हो जायगी। दुःख देखते हैं लेकिन दुःख दूर करने का इन्तजाम नहीं। इसलिए उसे अमल में नहीं ला सकते हैं। दूसरे का दुःख देखकर आँखों में आँसू आते हैं। इसलिए दवाखाने का इन्तजाम तो है लेकिन दयाभाव विकसित नहीं हुआ है। इसलिए सेवा भी ठीक नहीं होती।

सेवा की अक्ल के साथ दिल में प्यार हो

अब लोगों को यह विश्वास होगा कि बच्चों के बीमार होने पर हम अस्पताल में भरती करेंगे, तो जितने प्यार से हम उनकी सेवा करते हैं, उतने ही प्यार से बल्कि उससे ज्यादा उनकी सेवा अस्पताल में होगी। तब अस्पताल का काम हुआ ऐसा मानना चाहिए। हमें सेवा की अक्ल नहीं है। लेकिन हमारे पास प्रेम है पर आसक्ति भी है। आपके पास आसक्ति नहीं है लेकिन सेवा की अक्ल है। लेकिन जितना प्रेम का विचार घरवालों के पास है उतना नर्सों के पास नहीं है। उनके पास सेवा का ज्ञान है आसक्ति नहीं है।

आसक्ति के कारण माँ बच्चे का नुकसान करती है

कभी-कभी इस आसक्ति के कारण बीमार बच्चे का माँ नुकसान करती है। बच्चा बीमार होता है। डाक्टर ने उसे कहा है कि तीन दिन उसे कुछ न खिलाइये सिर्फ गरम पानी पिलाइये। बच्चा दो दिन चुपचाप रहता है। दो दिन उसने कुछ माँगा नहीं। लेकिन तीसरे दिन उसने माँगा तो माँ ने आसक्ति के कारण कुछ दे दिया। बच्चे को इन्फ्लुएन्जा हो गया था, वह रोग बिगड़ गया। सन् १९१८ में एपिडेमिक हुआ था। उसमें लाख लाख लोग मर गये। उस इन्फ्लुएन्जा की बात मैं कर रहा हूँ। डाक्टर उस बच्चे से मिलने आया। डाक्टर बिगड़ गया। उसने कहा मैंने दवा दी थी। पानी का उपचार करने के लिए कहा था और उपवास से मैं इसे सुधारना चाहता था। अब आपने उसको खिलाकर बात बिगाड़ दी है। यह कहकर डाक्टर चला गया। दो घन्टे

के बाद लड़का मर गया। माँ उसकी शत्रु तो नहीं थी, लेकिन आसक्ति के कारण वह कमजोर बन गयी और उसने बच्चे की माँग पर उसे खिला दिया। आप जो काम करती हैं, उसमें आसक्ति नहीं है, सेवा है। अब उसके साथ-साथ प्रेम भी रहा, तो नर्सों का जय हो, ऐसा कहा जायगा।

प्रेम के अभाव में असावधानता

सेवा में अगर प्रेम कम रहा, तो सावधानता नहीं रहेगी, बेदरकारी होगी। जब हम वर्धा में थे, तब गाँव के अपढ़ किसान का एक लड़का बीमार हुआ। उसे हमने वर्धा के अस्पताल में रखा। किसान बेचारा गरीब था। उस लड़के को देखने के लिए मैं रोज पाँच मील चलकर जाता था। जब मैं मिलने जाता, तब अस्पताल के लोगों को लगता कि यह कोई इंपार्टेंट पेशेंट है। एक दफा मैं गया, तो नर्स पन्द्रह मिनट पहले लड़के को थर्मामीटर लगाकर चली गयी थी। मैंने लड़के का शरीर स्पर्श किया, तो पाया कि उसे बहुत ज्यादा टेंपरेचर है। लेकिन नर्स ने लिखा कि ९९ टेंपरेचर है। मैंने नर्स को बुलाकर पूछा, तो उसने कहा कि मैंने थर्मामीटर लगाकर देखा था। उसने आधा मिनट देखा होगा। वह हस्त-स्पर्श करती, तो क्या हो जाता! पेशेंट को क्या समाधान होता कि उसने मुझे देखा। लेकिन नर्स क्यों देखती! इसलिए उसका बुखार नापकर वह चली गयी। मैंने उसे फिर से बुखार नापने को कहा तो देखा कि लड़के को १ १ बुखार था। डाक्टरों को ज्यादा-से-ज्यादा उतावली अगर किसी काम की होती है, तो बीमार को देखने में और आराम से वे काम करते हैं टेनिस क्लब में। कम-से-कम समय में ज्यादा-से-ज्यादा बीमारों को देखते हैं। बिलकुल मास-प्रोडक्शन। इसलिए उनका काम यान्त्रिक हो जाता है।

कम प्रेम होने से यह काम नहीं बनेगा। लेकिन आसक्ति ज्यादा होने पर भी काम नहीं होता है। इसलिए आपको यह देखना होगा कि आपके पास सेवा का ज्ञान है, आसक्ति नहीं है। उसके साथ-साथ आप

बहुत प्यार रखेंगे तो आपके इस काम का सही उपयोग होगा। सरकार ज्यादा क्या करेगी? वह केवल बिल्डिंग खड़ी करने का इन्तजाम करती है। गीता उपनिषद् बाइबल कुरान धम्मपद ये हमें प्यार की भावना बढ़ाने में मदद देते हैं। हम उनका अध्ययन करें। उसीके आधार पर आप दया और प्रेम से काम करें।

सेवा से रोगी के मन में प्यार

हम जिस बीमार की सेवा करते हैं, उसकी बीमारी दुरुस्त होने में हमें काम है यह भास होगा तब प्रेमपूर्वक सेवा होगी। फ्लोरेन्स नाइटिंगल की एक कहानी मशहूर है। वह रात में लालटेन लेकर जाती थी और तन्मयता से सेवा करती थी। उसको सारे रोगी चाहते थे। ऐसा प्रेम आप दिखायेंगी तो आपके लिए भी रोगियों के मन में प्यार की भावना रहेगी, नहीं तो आपका ड्रेस देखकर ही उन्हें नफरत होगी। और लगेगा कि यह तो एक यंत्र है जिसके पास दया नहीं है। इनको बुखार नहीं आता है। हमारा बुखार देखकर इनको बुखार नहीं आता है। ये तो थर्मामीटर जैसी हैं। थर्मामीटर को बुखार नहीं आता है इसीलिए वह दूसरे का बुखार नापता है। रोगी जरा ज्यादा बोलता है। हमें प्यार से दो मिनट उसके साथ बात करनी चाहिए। वह ज्यादा बोलेगा तो यही कहेगा कि मुझे रात में नींद नहीं आयी सिर में ज्यादा दर्द था आदि आदि। फिर भी आप शांति से सुनते हैं तो मानसिक समाधान होता है। इस तरह दयाभाव और करुणाभाव इस काम की बुनियाद है। इस बुनियाद पर आपका काम होगा तो आपके पास सेवा का जो ज्ञान होगा वह शोभादायक होगा।

दूसरे की भी गंदगी और पाप सहन करें

हम सब एक आत्मा हैं इसका रोज अभ्यास होना चाहिए। गंदी से-गंदी बीमारी में भी हम प्यार से आलिंगन दें। यह ठीक है कि छूत न लगे, लेकिन छूत न लगे, इस मतलब से हम दूर रहेंगे तो उस रोगी को

दुरुस्त होगा। इसलिए धूल लगने की परवाह नहीं होनी चाहिए। ईसा ने कहा कि पड़ोसी पर प्यार करो। यह छोटी चीज नहीं है। उसने कहा कि जैसा अपने पर प्यार करते हो, वैसा पड़ोसी पर करो। हम अपने पर कितना प्यार करते हैं! हम गंदे होते हैं, अपने पापों के लिए हम अपने-आपको क्षमा करते हैं; लेकिन दूसरे के पाप के लिए और दूसरे की गंदगी के लिए हमारे मन में नफरत होती है। अपना पाप और अपनी गंदगी सहन होती है दूसरे का पाप और दूसरे की गंदगी सहन नहीं होती। इसलिए यह सारी बातें ख्याल में रखकर आप काम करेंगी, तो यह अस्पताल का मकान बाहर से जितना सुंदर है उतना ही सुंदर अन्दर से भी प्रेममय और क्षेमदायक होगा।

इन्दौर —परिचारिकाओं के बीच
१ ८ ६

इन चित्रों से बच्चों को बचाइये ३३

संस्कारी शिक्षिका बच्चों को संस्कार दें

यहाँ आते समय रास्ते में एक बहन कह रही थी कि वह बालवाड़ी चलाना चाहती है। हम इस विचार को पसन्द करते हैं। आप बच्चों को भगवान् का प्रतिनिधि समझें उन पर गुस्सा न करें। उनको तरीके से समझाया जाय तो वे सुधरते हैं। ज्ञान माता-पिताओं को देना है। इसके अलावा वे कुछ समय बालवाड़ी में आवें। यहाँ पर खुली हवा में रहें और यहाँ संस्कारी शिक्षिका आनन्द-विनोद में बच्चों पर कुछ संस्कार डाले यह मैं पसन्द करूँगा।

बच्चे पूछेंगे यह इश्तहार क्या है?

लेकिन शहरों में बड़े-बड़े इश्तहार लगे रहते हैं उनका बच्चों पर असर होता है। वे सहज ही पूछ बैठते हैं कि यह क्या है? बच्चों पर ज्यादा असर बाहर का रूप वह देखता है उसका होता है। खाने बैठता है और चिड़िया उड़ रही है तो उसका ध्यान फौरन चिड़ियों की तरफ जायगा। भूख लगी है खाना मीठा भी लग रहा है, फिर भी चिड़िया को उड़ते देखकर उसका ध्यान फौरन उसकी तरफ आकर्षित हो गया। वैसे ही बाहर यदि वह खराब भी स्वरूप देखता है तो उस ओर आकर्षित होता है। वह आपसे पूछेगा यह 'हनीमून' क्या है? यह किस किस चीज का है? उसके दिमाग पर देखने का असर होता है।

सर्वोदय-नगर के नक्शे की रेखा

इसलिए इन्दौर के नागरिकों को चाहिए कि वे इस बारे में सोचें। मकानवाले अपने मकान पर बड़े-बड़े अक्षरों में इश्तहार लगाने देते हैं

तरह-तरह की तस्वीरें बनाने देते हैं। उनके लिए उनको पैसे मिलते होंगे लेकिन यह पैसा विनाश करनेवाला पैसा है। वे अपने मकान पर चाहें तो 'ॐ' 'श्रीराम' या 'बिस्मिल्ला ह रहमनुर्रहीम' लिखवा सकते हैं। लेकिन इस प्रकार के गन्दे इश्तहार नहीं होने चाहिए। लोग हमसे सर्वोदय-नगर के नक्शे के बारे में सवाल पूछते हैं। उनके लिए यह एक पाठ रख रहा हूँ।

शहर में रहनेवालों की नजर तारों की ओर नहीं जाती। जो हमारी आँखों और चित्त के लिए पवित्र चीज है वह नजर ही नहीं आती। क्योंकि जहाँ देखो वहाँ आग ही आग लगी है उसमें सितारों की ओर नजर नहीं जाती।

दिमाग की स्वच्छता आवश्यक

यहाँ पर लोग व्यायाम कर रहे हैं यह देखने को अच्छा लगता है। बच्चे नियमित व्यायाम करना सीखें तो यह अच्छा ही होगा। शहरों में लोग रात में देर से सोते और देर से उठते हैं। रात को खराब चित्र देखते हैं, तो उसका खराब असर लेकर सोते हैं उससे दिमाग में खराब विचार रहते हैं। हम मुहल्लों की स्वच्छता की बात करते हैं। मुहल्ले की स्वच्छता रखनी चाहिए, लेकिन दिमाग की स्वच्छता भी रखनी चाहिए। दिमाग की स्वच्छता अत्यन्त आवश्यक है।

पुलिस परेड ग्राउण्ड इन्दौर
११-८-६

हाथों की महिमा सब धर्मशास्त्रों को मान्य है। पसीना बहाकर रोटी कमानी चाहिए, ऐसा उपदेश धर्म ग्रन्थों में मिलता है। तमिल भाषा में एक वचन मशहूर है जिसका अर्थ है जो मेहनत-मशक्कत करके जीता है वही जीता है। कन्नड़ में महान् सन्त और लिंगायतों के आचार्य श्री बसवण्णा का वचन है कि शरीर-परिश्रम करना ही कैलाश है। शैवों के लिए सर्वश्रेष्ठ स्थान कैलाश है, इसलिए उन्होंने कहा कि शरीर-परिश्रम ही कैलाश है—कायकवे कैलास।

मनु ने कहा है : सदा शुचिः कारुहस्तः'—काम करनेवाले के हाथ सदा ही पवित्र हैं। जो मेहनत-मशक्कत नहीं करते, उनके हाथ में अशुद्धि होती है उनको बार-बार धोने की जरूरत होती है।

शरीर-श्रम की प्रतिष्ठा घटने के कारण

ऐसा होते हुए भी आज दुनिया और भारत में भी शरीर-श्रम का स्थान गौण है। इसका कारण यह है कि आज प्रतिष्ठा सिर्फ पैसे में आ गयी है। यह कुछ दुनिया में हुआ है। हमारे देश में भी ऐसा हुआ। इसके अलावा और भी कई कारण हैं। हमारे यहाँ जाति-व्यवस्था थी। उसमें जिन लोगों को ऊँचा माना गया उन्होंने शरीर-श्रम को अपना काम नहीं माना। उन्होंने जिन कामों को अपनाया उन कामों की प्रतिष्ठा बढ़ी। इसके अलावा एक और कारण से भी ऐसा हुआ। वह कारण जिस ढंग से हमारे देश में अंग्रेजी शिक्षा आयी वह है। यहाँ वह केवल नौकरी प्राप्त कराने के लिए आयी। इंग्लैण्ड में भी अंग्रेजी शिक्षा है लेकिन वहाँ लोग शिक्षा पाकर व्यापार आदि क्षेत्रों में जाते हैं। यहाँ के मुताबिक केवल नौकरी के लिए वह नहीं दी जाती। यहाँ

वह नौकरी का साधन बनी। इस प्रकार वह एक निष्क्रिय विद्या बनकर आयी। फलतः शरीर-श्रम की प्रतिष्ठा घटी वह गौण बना।

शरीर-श्रम की प्रतिष्ठा दुनिया में घटने का एक कारण और है। भारत में घटने के तीन कारण हुए। दुनिया में घटने का कारण है—पैसे की प्रतिष्ठा। भारत में घटने का कारण पैसे की प्रतिष्ठा के अलावा जाति-व्यवहार और अंग्रेजी की निष्क्रिय विद्या।

जो चाहते हैं उनको शरीर-श्रम का मौका दें

हिन्दुस्तान में अगर दौलत बढ़ानी है तो लोगों के ध्यान में यह बात आनी चाहिए कि उसके लिए सब हाथों का सहयोग जरूरी है। सब हाथों के सहयोग के साथ इन तीन कारणों का निवारण होगा तभी जीवनमान ऊँचा उठेगा। हम भूमिदान माँगते हैं तो कहते हैं कि हमने जो जमीन अपने अधिकार में रखी है वह छोड़ देनी चाहिए, ताकि जो लोग शरीर-श्रम करना चाहते हैं उनको वह करने का मौका मिले। हम जो लोग शरीर-श्रम नहीं करते, वे अपनी जमीन शरीर-श्रम के लिए छोड़ दें। भूदान का काम इस प्रकार चला, तो मुझे आशा है कि वह आगे बढ़ेगा। इन्दौर में भी भूमि-मालिक होंगे। उनके पास जाकर यह विचार उनको समझायेंगे कि जो चीज हमारे काम की नहीं है वह बेकार हम पकड़कर न रखें। कोई भी अपनी लड़की को हमेशा घर में *रखना नहीं चाहता। उसी तरह भूमि-मालिक को ध्यान में आना चाहिए* कि जो जमीन वह खुदकाश्त नहीं करता वह दूसरों को शरीर-श्रम करने के लिए दे दे।

नागम कोआपरेटिव

देहात से शिकायत आयी है कि कुछ लोग यहाँ पर कोआपरेटिव करना चाहते हैं। जो खुद खेती नहीं करता लेकिन खेती की व्यवस्था और इन्तजाम करता है उसको किसान माना जाय, ऐसा कानून है। ऐसे लोग कोआपरेटिव कर, अपनी मालिकी कायम के लिए करके भूमि

दीनों को भूमिहीन रखने की सोचते हैं। मैं इस सम्बन्ध में उल्टा करता हूँ। पंजाब में यह आम बात है। पंजाबवालों को पता है कि वहाँ पर बहुत ज्यादा कोआपरेटिव बन गयी हैं। वहाँ कैसी कोआपरेटिव होती है! एक भूमि-मालिक अपनी जमीन भाई-भतीजों में बाँट देता है, उनके खाते कर देता है और फिर उनको कोआपरेटिव बना देता है। बिल्कुल बोगस न लगे इसलिए उसमें एकाध जमीनवाले मित्र को भी जोड़ देता है। इस प्रकार वह सीलिंग से तो बच ही जाता है इसके अलावा सरकार की मदद का अधिकारी बन जाता है। सरकार—मिनिस्टर देखते ही रह जाते हैं। उस पर पंजाबवाले दावा करते हैं कि कोआपरेटिव बनाने में वे अगुआ बन गये हैं और बाकी सब पिछड़ गये हैं। हमने ऐसी प्रकार की बात महाराष्ट्र में भी सुनी थी। इस प्रकार कोआपरेटिव बनाना ठीक नहीं। हम कानून से बच गये लेकिन इस प्रकार देश नहीं बच सकता। कानून का पूरा अर्थ लेना चाहिए और कोआपरेटिव उन लोगों की होनी चाहिए जो हाथों से मेहनत करना चाहते हैं। उसमें देखरेख के लिए दो-तीन आदमियों की आवश्यकता रहेगी। जो लोग ऐसा काम कर सकते हैं उनको पैसा काम दंगे और उनका सहयोग लेंगे। ऐसा करने से दोनों की प्रतिष्ठा बढ़ सकती है।

भूदान से दान और प्रेम की पुष्टि बढ़ी है

जमीन-मालिक को यह अहसास होना चाहिए कि मैंने नाहक जमीन पकड़ रखी थी। उसको छोड़कर मैंने शरीर-परिश्रम करनेवालों के लिए उसे खोल दिया है। इस प्रकार प्रेम से जमीन छोड़ने की अनेक घटनाएँ देशभर में घटी हैं। ऐसी बातें अगर आपको सुनाने बैठूँ तो एक महान् भाष्य बन जाय। कुछ लोग कुर्सी पर बैठकर अखबार पढ़ते हैं और भूदान के बारे में चाहे जैसा अभिप्राय प्रकट करते हैं। वे लोग देहातों में जाकर देखें तो पता चलेगा कि इस चक्र को लेकर दान और प्रेम की पुष्टि कितनी बढ़ी है।

भूदान-यज्ञ पर गंगामाई की कृपा

बिहार में एक भाई ने दान में गंगा के किनारे का एक खेत दे दिया। खेत की जमीन रेतीली थी। इत्तफाक से दान देने के बाद गंगा ने अपना प्रवाह बदला या ऐसा कुछ हुआ, जिसके कारण उस रेतीले खेत में मिट्टी आ गयी और खेत अच्छा बन गया। तो देनेवाले भाई की नीयत बदली। उसने तो माना था कि ठीक है, रेगिस्तान है दे डालो लेकिन वह रेगिस्तान से उत्तम जमीन बन गयी। उसने जमीन वापस लेने की सोची। उसको कहा गया कि भाई ऐसा क्या करते हो! यह तो गंगामाई की देन है और तुम अब वापस ले लेने की सोच रहे हो! इस पर उसने वापस लेने का विचार छोड़ दिया। तब से बिहार में बात चली कि भूदान-यज्ञ पर तो गंगामाई की और भगवान् की कृपा है। वे भूदान की जमीन को अच्छी बना देते हैं। बिहारी लोग भोले होते हैं। उन्होंने माना कि भूदान-यज्ञ पर गंगा की और भगवान् की कृपा है। मैं भी कुछ भोला हूँ। बिहारियों को दिया गया भोलापन मुझमें भी कुछ है। मुझे भी लगता है कि भूदान-यज्ञ पर भगवान् की कृपा है।

हम इन्दौर को सर्वोदय-नगर बनाने की सोच रहे हैं। हमने अपना मूल विचार भूदान-यज्ञ का छोड़ा नहीं है। हम-आप जानते हैं कि इन्दौर के आसपास के देहातों से आये हुए जमीन-मालिक यहाँ बैठे हैं। उनसे अगर जमीन माँगी जाय, तो जमीन जरूर मिल सकती है।

मकान-दान ठीक, तरीका प्रेम का हो

कुछ भाई कहते हैं कि शहर में मकानों की कमी है इसलिए मकान-दान मिलना चाहिए। लेकिन उसमें सवाल केवल तरीके का है। सामनेवाले के पास आप प्रेम से आदर से जायँ और वह करुणा से प्रेरित होकर मकान-दान दे, तो अच्छा ही है। अगर आपके पास अपनी आवश्यकता से अधिक मकान है और आपने मकान की आवश्यकता वाले को मकान दे दिया तो उसमें कुछ नहीं बिगड़ेगा उलटे कुछ

अच्छा ही होगा। दिल्ली में मैं शरणार्थियों को बसाने के लिए कुछ समय रहा था। तब मैंने देखा कि वहाँ बड़े-बड़े आलीशान मकान खाली पड़े हैं और उनको झाड़ू लगाने का सवाल है। उसके लिए खास पाँच-सात आदमी रखने पड़ते हैं। बहुत बड़ा मकान है और उसमें केवल दो ही आदमी रहते हैं। बाकी मकान खाली पड़ा है। उसमें आप किसी गरीब घरहीन सज्जन को बसायें तो वह अच्छा ही होगा। हाँ आपको आदमी को देखना—परखना होगा। देखना होगा कि उससे अपना दिल एक हो सकता है या नहीं। ऐसा देखने पर ऐसे किसी घरहीन सज्जन को बसा लेते हैं तो अच्छा ही होगा।

करुणा के अभाव में शक्ति की क्षीणता

कुछ लोगों का कहना है कि यह तो प्रेम की बात हुई। प्रेम से सभी यह बन सकता है लेकिन ऐसी प्रेमधारा है कहाँ? इसलिए जो कुछ भी हो यह कानून से ही। कानून के बिना कुछ नहीं होगा। जिस करुणा ने कभी भी दगा नहीं दिया उसको छोड़ देते हैं। इसलिए करुणा को छोड़कर और कानून की ओर देखते रहेंगे तो हमारी ताकत नहीं बन सकेगी। उससे हमारी ताकत क्षीण होगी।

जनता को चाहिए कि वह धरती का मसला, शान्ति का मसला, तालीम का मसला खुद हल करे। जगह-जगह लोग उठ खड़े हों और इन कामों को उठा लें। ऐसा करेंगे तो सरकार का काम घट जायगा और सरकार खुश भी होगी। उसको नाराज होने का कोई भी कारण नहीं। इससे उसकी शक्ति और समय बचेगा और वह बाकी कामों में अपना ध्यान दे सकेगी। लोगों की शक्ति और सरकार की शक्ति दोनों की शक्ति मिलकर शक्ति बढ़ती ही है।

हमारा मुख्य उद्देश्य हृदय-परिवर्तन

हमको भूमि लेनी चाहिए, मकान लेने चाहिए। लेकिन वह

यह करते समय ध्यान रखना चाहिए कि हमको जमीन से क्या करना है, मकान लेकर क्या करना है। क्या मकान हमारा उद्देश्य है? नहीं, हम तो समाज में करुणा बढ़ाना चाहते हैं। वह कैसे बढ़े उसका खयाल रखना होगा। बाकी जमीन मकान, मिल वगैरह गौण हैं। हमारी भिक्षा से किसीका हृदय-परिवर्तन हुआ, यही मुख्य वस्तु है। इसका खयाल रखना जरूरी है इतना ही मेरा कहना है। हृदय-परिवर्तन का खयाल मुख्य होना चाहिए। बाकी मकान-दानवाली बात गौण है महत्त्व नहीं। ● ● ●

लोक-हृदय बनकर लोगों की सेवा करना हमारा मुख्य काम

शान्ति-सेना का कार्यक्रम एकरूप नहीं हुआ है। भूदान-ग्रामदान आदि शान्ति-सेना के कार्यक्रम हैं। कार्यक्रम के सिलसिले में हम जो विचार पेश करते हैं उससे किसीके दिल में भय पैदा नहीं होना चाहिए। हमारी शान्ति-योजना की पूरक शान्ति-सेना है। इस शान्ति-सेना के काम-क्रम में सेवा ही प्रधान रहेगी। शान्ति-सैनिक रोज-रोज सेवा ही करेगा और उसके जरिये वह लोक-हृदय में घुल-मिल जायगा। जैसे शुकदेवजी के बारे में कहा गया है कि वे भूत-हृदय—मुनि थे। सबके प्राणिमात्र के हृदय-स्थान थे। तो हम कम-से-कम मानव-हृदय-स्थान तो बन जायँ। लोक-हृदय बनकर लोगों की सेवा करना हमारा मुख्य कार्यक्रम रहेगा।

आज की अवस्था में, जब कि मालिकों ने अपनी मालकियत नहीं छोड़ी है संपत्तिदान नहीं दिया है भूमि के ऊपर का अपना अनुराग नहीं छोड़ा है उस हालत में भी अगर उन पर आक्रमण होता है तो शान्ति-सैनिक उनके बचाव के लिए खड़ा हो जायगा और आवश्यक होने पर अपने प्राण भी दे देगा। लेकिन उनका बाल तक बाँका नहीं होने देगा। ऐसी प्रतिज्ञा हम करते हैं यह सुनकर एक भाई ने कहा कि क्या उसमें आप एक पक्ष में अपना जोर नहीं डाल रहे हैं! मेरा जवाब यह है कि दूसरे पक्ष में हम कभी के वजन डाल चुके हैं। भूदान ग्रामदान वगैरह कार्यक्रमों पर से स्पष्ट है कि हम गरीबों के पक्ष में हैं। अगर हमको निष्पक्ष बनना है, तो जो पक्ष हमको अपने से दूर समझता है और जिसके मन में हमारे बारे में डर है—और वह डर स्वाभाविक है—उस पक्ष में जोर डालना होगा।

निष्पक्ष भूमिका के लिए आवश्यक शर्त : शत्रु पर प्यार

ईसा ने कहा, दुश्मन पर प्यार करो। एक भाई ने विनोद में कहा कि ये गांधी के चेले दुश्मन पर ही प्यार करते हैं, लेकिन मित्रों पर प्यार नहीं करते। बिलकुल ठीक है। अगर प्यार करने में पक्षपात करना हो, तो मैं दुश्मन पर ही पक्षपात करूँगा। क्योंकि मित्र पर सहज प्यार है ही। मित्र के लिए खास ध्यान न रहा और परवाह न रही, तो भी उनके लिए तो सहज प्यार होता ही है। इसलिए दुश्मन पर सविशेष प्यार करूँगा यह हमारी प्रतिज्ञा है। जो हमें अकारण दूर मानता है उस पर प्यार करना हमारा फर्ज है। निष्पक्ष प्यार के लिए यह आवश्यक शर्त है कि शत्रु के लिए पक्षपात हो।

मित्रों पर प्यार करो यह फजूल आज्ञा है। जैसे पानी को कहा जाय कि नीचे की तरफ बहो, तो वह व्यर्थ आज्ञा होगी। नीचे की तरफ बहना उसका सहज धर्म है। वैसे ही मित्र पर प्यार सहज प्राप्त है। दुश्मन पर प्यार सहज प्राप्त नहीं होता। बल्कि दुःख की बात है कि दुश्मन के लिए सहज प्राप्त द्वेष ही है। उस हालत में उनके बारे में प्रेम का प्रकाश ज्यादा ही होना चाहिए, यह अहिंसा का एक विशेष दर्शन है।

गांधीजी की भूमिका

गांधीजी पर आक्षेप था कि वे मुसलमानों का अधिक पक्षपात करते थे। मैं आपको एक कहानी सुनाना चाहता हूँ जिससे आपको पता चलेगा कि गांधीजी कैसे थे। एक बार हम जा रहे थे, तो रास्ते में कुतुबमीनार आया। किसीने बताया और कहा कि यह कुतुबमीनार है देखने के लिए चलना है क्या? गांधीजी ने कहा : मैं उस पर पाँव नहीं रखता क्योंकि मैंने सुना है कि उसकी बुनियाद में हिंदू देवों की मूर्तियों को तोड़कर रखा गया है। गांधीजी क्या थे उसकी थोड़ी-सी झलक आपको इस पर से मिलेगी। वे अपने को परिपूर्ण सनातन हिंदू समझते थे। यहाँ तक कि मैं भी कभी-कभी उनसे मजाक करता था कि सनातन

हिंदुत्व का इतना आग्रह क्या ! लेकिन वे अपना आग्रह नहीं छोड़ते थे और कहते थे कि वह मुझे सहज प्राप्त है। मैं उसको सुधार सकता हूँ, लेकिन जो है, उसके लिए अभिमान है। फिर भी वे मुसलमान का पक्षपात करते थे ताकि सच्चा निष्पक्षपात न्याय हो सके। इसीलिए गांधीजी मुसलमानों का पक्ष करते थे, बावजूद इसके कि मुसलमान ने उनको अपना दुश्मन नंबर एक माना था। लेकिन अंत में उनकी शहादत और सहृदयता ने उनकी आँखें खोल दीं।

दूसरे पक्ष में ज्यादा वजन डालने से समतुला

अपने साथियों के प्रति तो सहज ही प्रेम होता है, इसलिए यह जरूरी है कि हमसे अलग माननेवाले के लिए विशेष प्रेम हो। अपने नजदीक की एक मिसाल दूँ। अण्णासाहब सहस्रबुद्धे ब्राह्मण हैं। ब्राह्मणों के लड़कों के लिए उनको सहज ही अनुराग है। लेकिन उनसे पूछना चाहिए कि उनको भंगियों के लिए पक्षपात है या नहीं ? उनका अंत्योदय की तरफ पक्षपात है या नहीं ? सर्वोदय यानी सबका उदय सबका भला। प्रथम जिस आदमी ने इस शब्द का प्रयोग किया था उसको मालूम भी नहीं था कि यह शब्द आज से हजारों साल पहले ठीक उसी अर्थ में प्रयोग किया जा चुका था। संस्कृत के पुराने ग्रंथ में 'सर्वोदय' शब्द का प्रयोग किया गया है और उसकी व्याख्या ठीक यही है। राग-द्वेषविहीन पुरुष को ध्यान में रखकर आचार्य समंतभद्र ने कहा है कि सर्वोदय-तीर्थ यह है : 'सर्वापदामन्तकरं निरन्तं सर्वोदयं तीर्थमिदं तवैव।

सर्वोदय शब्द इतना पुराना है। लेकिन जब यह पैदा हुआ तब अण्णासाहब ने सुझाया कि उसकी जगह अंत्योदय शब्द लिया जाय। अंत्योदय यानी आखिरी का उदय—पिछड़े हुओं का उदय। यह पक्षपात नहीं है तो क्या है ? लेकिन निष्पक्ष बनने के लिए जरूरी है सामनेवाले पक्ष में ज्यादा वजन डाला जाय। जिनके लिए अनुराग सहज प्राप्त है उनके लिए अनुराग रखने की जरूरत नहीं है। दूसरे पक्ष में ज्यादा वजन डालने से ही समतुला हो सकती।

माँ का अद्भुत जवाब

अपनी माँ का एक किस्सा याद आता है। मेरे पिताजी अपने घर में हमेशा बाहर के किसी न किसी एक लड़के को लाकर रख लेते थे। उस लड़के को ठीक घर के जैसा ही रखा जाता था। उसी प्रकार उसका खाना-पीना, अभ्यास आदि चलता। पिताजी को तो उसमें पुण्य प्राप्ति होती थी लेकिन सारी सेवा माँ को करनी पड़ती थी। घर में कभी कभी रोटी बच जाती, तो दोपहर की ठंडी रोटी पहले माँ ही खा लेती थी लेकिन उसके खाने के बाद जो बचता वह मुझे देती थी। उस लड़के को ताजी रोटी मिलती थी। उसको कभी ठण्डी रोटी नहीं दी जाती थी। मैं कभी-कभी माँ के साथ विनोद कर लेता था। वही एक मेरा विनोद स्थान था। मैं विनोद में कहता था कि अभी तेरा भेदभाव मिटा नहीं। मुझे दोपहर की रोटी देती है और उस लड़के को ताजी रोटी खिलाती हो। उस पर उसने जवाब दिया था! क्या जवाब दिया था! वाह रे वाह! उसने कहा कि वह मुझे भगवत्स्वरूप दीखता है और तू मुझे पुत्रस्वरूप दीखता है। तुममें मेरी आसक्ति पड़ी है तेरे लिए मेरे दिल में पक्षपात है। हाँ तू भी मुझे जब भगवत्स्वरूप दिखेगा तब यह भेदभाव नहीं करूँगी। तात्पर्य यह कि अहिंसा में क्षमा-वत्सलता होती है।

भगवान् भी पक्षपात करता है

रामदास ने भगवान् के बारे में लिखते हुए कहा है कि वह दयालु, दया करने में प्रवीण है। वह सबके लिए समान है फिर भी वह दुःखियों का पक्षपात करता है। वह साक्षी होते हुए भी पक्षपात करता है। भगवान् में यह पक्षपात समत्व होते हुए भी रहता है। हम उसका अनुकरण करना चाहें तो यही होगा कि जो लोग हमसे भिन्न हैं उनके लिए हमारे दिल में ज्यादा अनुराग रहे।

तुकाराम ने एक जगह लिखा है:

देह आणि देहसंबंधें निंदावीं।
दुरें भंडावीं भाव सर्वें॥

वह एक जबरदस्त प्रतिभावान् कवि था। उसके वाक्य दिल में नहीं लेकिन दिमाग में घुस जाते हैं। उसने लिखा है कि अपने देह और अपने देह से सम्बद्ध व्यक्तियों की निन्दा करनी चाहिए। दूसरों की वन्दना करनी चाहिए, श्वान-सूकर की भी वन्दना करनी चाहिए। जहाँ ज्यादा आसक्ति होती है उसे सन्तुलित करने के लिए ऐसा करना ही पड़ता है।

शंकराचार्य का युक्तिवाद

शंकराचार्य को किसीने पूछा कि इतनी सारी सृष्टि पर ये पेड़ पहाड़ आदि सामने पड़े हैं फिर भी आप मिथ्या-मिथ्या कहते हैं? शंकराचार्य ने जवाब दिया : अरे हाँ देखता हूँ, लेकिन जो अपक्वचित्त होते हैं वे इस संसार से ऐसे चिपके हैं ऐसी आसक्तिपूर्वक उसमें लगे हैं कि इस मायाजाल मोहजाल को ही सत्य-सत्य कहते हैं और मानते हैं। इसलिए निगमान्त याने वेदान्त ने कहा है कि यह मिथ्या है आप उसमें बुरी तरह फँसे हुए हैं और उसीको अपना स्वरूप समझते हैं। इसलिए कहा कि यह मिथ्या है लेकिन जिसका मन परिपक्व हो चुका है अपक्व नहीं रहा है पुरातन सुकृतों के परिणामस्वरूप जिसका मन परिपक्व हो चुका है। उस पुरुष के लिए तो यह श्रुति मिथ्या है, यह माया है, ऐसा नहीं कहती उनके लिए तो फिर से यह प्रबोध करती है कि तू ब्रह्म है यह सबका सब ब्रह्म है मिथ्या कहाँ से आये हो। यह सब ब्रह्म है। यह सत्कार, सगुण निर्गुण सभी को उसके पेट में डालकर ब्रह्ममय जाहिर करती है। एक बार प्रबोध किया कि यह सब मिथ्या है उसके बाद जब चित्त पक्व हो गया तो कहा कि तू ब्रह्म, सब ब्रह्म है सब ब्रह्ममय है यह न्याय है। अगर समत्व आना है तो अपने पक्ष से भिन्न पक्ष की तरफ पक्षपात करना होगा। यह अहिंसा का रहस्य है मर्म है।

इन्दौर
१२-८-६ —यार्यमित्र-प्रवचन

लोकशाही की सरकार का दान याने लोगों का दान

इन्दौर की सेवा करना हमारा धर्म है। जो भी हम करेंगे यह सब कुछ उसके लिए साधनस्वरूप समझकर करेंगे। यहाँ यह आश्रम बन रहा है उसके लिए सरकार ने दान जाहिर किया है। यह प्रथा पुरानी है। पहले जमाने में राजा अच्छी संस्थाओं को दान देते थे। पर यह लोकशाही की सरकार है, इसलिए इसकी तरफ से दान मिलता है तो वह सार्वजनिक दान होता है।

आश्रम के सहचारी भाव

इस आश्रम के सहचारी भाव अच्छे हैं। इसके नजदीक ही जेल और श्मशान है जिसे अपनी भाषा में स्मशान कहते हैं और एक छोटी सी गंगा बह रही है। यह सब देखकर साबरमती आश्रम का स्मरण होता है। वहाँ भी आश्रम के सामने स्मशान है। हम लोग वहाँ कभी-कभी नाश्ता करते थे तो स्मशान में जलती हुई चिता दीखती थी। वहाँ नजदीक नदी भी है और जेल भी है। यहाँ जो स्मशान है, वह ईसाइयों का है। इसमें आप जलती हुई चिता नहीं देखेंगे बहुत शांति दीखेगी। सामने जो जेल है उससे यह समझना चाहिए कि जब तक जेल है शासन-मुक्ति नहीं हो सकती। सामने जो नदी है वह है कृष्णगंगा जिसे यहाँ के लोग खान नदी कहते हैं। खान का मतलब है कहान याने कृष्ण और गंगा तो सब नदियों के साथ जुड़ी हुई है इसलिए मैंने कृष्णगंगा नाम दिया। यहाँ इन्दौर के ऊपर में सरस्वती नदी है और यह कृष्णगंगा। जहाँ जेल होती है वहाँ आबोहवा भी कुछ अच्छी होती है। ऐसा देखकर ही जेल के लिए स्थान ढूँढ़ते हैं। उस हिसाब से भी यह अच्छा ही है। लेकिन

एक खास बात जिसने हमारे साथियों का ध्यान खींचा, वह यह है कि यह इन्दौर के बिलकुल नजदीक है और इस नदी में गांधीजी की अस्थियाँ विसर्जित हुई थीं। वह एक आकर्षण रहा। उस पवित्र स्मरण का लाभ यहाँ जो भी काम करेंगे उनको मिलेगा।

विसर्जन के दो अर्थ

जब हमसे पूछा गया था कि इस आश्रम का नाम क्या रखेंगे, तो जो नाम सूझा, वह है 'विसर्जन आश्रम'। हिन्दुस्तान के किसी दूसरे आश्रम का नाम ऐसा नहीं है, इसलिए केवल इन्दौर का उल्लेख किये बिना 'विसर्जन आश्रम' नाम पत्र पर लिखकर डाला जाय तो भी पत्र ठीक मिल जायगा। ऐसी शक्ति इस आश्रम में आनी चाहिए कि सारे भारत में वह प्रसिद्ध हो। पुराने मूल्यों के विसर्जन के लिए यह आश्रम स्थापित किया गया है। विसर्जन का दूसरा यह अर्थ भी होता है—'विशेष सर्जन'। ऋग्वेद में शब्द आता है—'विशेष सर्जन' यानी नयी समाज रचना। पुराने मूल्यों का विसर्जन करना, पुराने मूल्य खतम करना और नये मूल्यों का सर्जन करना। दोनों रीति से अभावात्मक और भावात्मक उभय अर्थ होता है। यहाँ जो भी आयेंगे उनके ध्यान में यह आयेगा कि यहाँ हमें कोई वैभव नहीं खड़ा करना है। यह तो विसर्जनाश्रम है। यहाँ हम तैयार बैठे हैं जिस किसी दिन जरूरत पड़े, नदी नजदीक ही है, शरीर का विसर्जन करने के लिए। इसलिए यहाँ बहुत ज्यादा झंझट नहीं रहेगा।

व्यक्ति और समाज के धर्म-विचार में द्वैत न हो

इन दिनों अहिंसावाले भी संस्था के लिए संग्रह का समर्थन करते हैं। कहते हैं व्यक्ति के लिए संग्रह नहीं चाहिए। लेकिन संस्था के लिए संग्रह जरूरी है। इस विचार में व्यक्ति के लिए संग्रह जरूरी नहीं, संस्था के लिए जरूरी है। इस द्वैत विचार के कारण आज दुनिया में हिंसा चल रही है। दुनिया में व्यक्तिगत क्षेत्र में अहिंसा मान्य हुई है।

पुराने ज़माने में वह मान्य नहीं थी। लेकिन इस ज़माने में लोक-विचार इतना आगे बढ़ा है कि व्यक्ति के लिए अहिंसा का विचार स्वीकार किया गया है लेकिन समाज के लिए उसका करने में कहाँ तक वह समय होगी, यह कह नहीं सकते। हम हमेशा व्यक्तिगत और सामाजिक भेद समझकर धर्म का खयाल छोड़ देते हैं। विसर्जन आश्रम हमेशा सावधानी रखेगा कि सत्ता के लिए भी संग्रह नहीं हो सकता। समाज इतना व्यापक है कि उसके अन्दर घर भी रहेगा और संस्था भी। नदी में पानी रहेगा, किसी में नहीं रहेगा। ये घर और संस्था छोटी-छोटी कितियाँ हैं। उनमें पानी नहीं होगा उनके नीचे पानी होगा याने सम्पत्ति समाज में रहेगी, घरों में आश्रमों में नहीं रहेगी। इस ज़माने में लोग घरों में संग्रह का विचार मान्य नहीं करते लेकिन संस्था के लिए ज़्यादा संग्रह मान्य करते हैं। इसे 'विसर्जन आश्रम' रोकेगा।

इन्दौर के मकानों का छठा हिस्सा हमारा है

यहाँ चार-पाँच मकान हैं जो पुरानी के क़ायक हैं। ये मकान हमारे नहीं हैं। इन्दौर के जितने मकान हैं उनका छठा हिस्सा हमारा है। इसलिए आप जो यह चार-पाँच-छह मकान बना रहे हैं इसमें कोई सार नहीं। हम तो समझते हैं कि इन्दौर में जितने घर हैं उनमें छह घरों में से एक हमारा है और हर घर में अगर छह कमरे हैं तो एक कमरा हमारा है। हर छह में से एक चीज़ हमारी है। इसके लिए बड़ा सब की चरत्व है और प्रयत्न करना चाहिए। यह चीज़ समाज में बानेवाली है और समाज यह समझनेवाला ही है। बस सब करने की बात है।

यहाँ जो भाई रहेंगे वे ऐसे खयाल से नहीं रहेंगे कि यहाँ किसी प्रकार का मठ बनाना है। अपना स्थान तो इन्दौर है। यह आश्रम अपना स्थान नहीं है। यह तो इसलिए बनाया गया है कि इंदौर के जो सेवक यहाँ आयेंगे उनको तालीम देनी होगी। यह पराया स्थान है उनका अपना स्थान है और अपना स्थान इन्दौर में है। इस

तरह की भावना रखकर करुण सेवा के लिए ही यह आश्रम शुरू हो रहा है।

सौम्यता सत्य की कसौटी

इस आश्रम में पुराने मूल्यों का विसर्जन और नये मूल्यों का सर्जन होगा। यहाँ काम का जो तरीका रहेगा वह इन्दौर के लायक रहेगा। यह इन्दुपुर है चन्द्रपुर है इसलिए यहाँ शीतल और सौम्य प्रकाश होगा। हमारे काम का जो तरीका होगा वह शीतल होगा। शीतल प्रकाश होगा शीतल प्रकाश से काम बनेगा। इस जमाने में प्रखर प्रकाश से काम नहीं बनता। पुराना जमाना अब खत्म गया है। उनमें जितनी जिसके पास सत्य-शक्ति ज्यादा उतनी उसके पास सौम्यता ज्यादा होनी ही चाहिए। सत्यता कितनी है इसकी एक कसौटी यह होगी। जिसके व्यवहार में जितनी सौम्यता होगी उतना सत्य उसके पास होगा।

सत्य है, तो सौम्यतम बनकर आइये

प्रत्येक व्यक्ति मेरा पक्ष सत्य है मेरा पक्ष सत्य है ऐसा कहता है। हर कोई बोलता है 'मम सत्यम् मम सत्यम्'। वेद में 'मम सत्यम्' का अर्थ झगड़ा है। 'त्वां जना मम सत्येषु इन्द्र'। हे भगवन्, ये सारे लोग झगड़ा में तेरी मदद चाहते हैं। ये परस्पर विरोधी हैं। एक-दूसरे की मुकाबिला करनेवाले दो फरीक आमने-सामने खड़े होकर लड़ रहे हैं और दोनों भावना करते हैं "हे भगवन् तू मुझे मदद दे, क्योंकि मम सत्यम्।" यह भी प्रार्थना करता है और वह भी यही कहता है कि हे भगवन् तू हमें मदद दे। क्योंकि 'मम सत्यम्'। इस तरह हर कोई 'मम सत्यम्' कहता है। इसलिए वेदों में इसका नाम ही झगड़ा रखा है। सत्य का दावा हर कोई करता है। इंग्लैण्ड और जर्मनी की लड़ाई हुई थी। दोनों सत्य का दावा करते थे। लेकिन दोनों शस्त्र लेकर लड़ाई के लिए खड़े हुए, तो साबित हुआ कि दोनों के पास सत्य नहीं है। सत्य की

एक कसौटी होती है। जिसके पास सौम्यतम विचार-पद्धति है वहाँ सत्य है। अगर उन दोनों के पास सत्य होता, तो वे सौम्यतम बन जाते।

सनातनधर्म की मनु की व्याख्या

मनु ने एक विलक्षण अप्रतिम श्लोक कहा है : सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात् न ब्रूयात् सत्यम् अप्रियम्। प्रियं च नानृतं ब्रूयात् एष धर्मः सनातनः। सत्य बोलना चाहिए, प्रिय बोलना चाहिए, लेकिन प्रिय असत्य नहीं बोलना चाहिए। अप्रिय सत्य नहीं बोलना चाहिए। यही सनातनधर्म हिन्दुस्तान में प्रचलित है। इस तरह सत्य और प्रिय को जोड़कर एक तत्त्व बनता है। वही सत्य और अहिंसा होती है। गांधीजी कहते थे—सत्य और अहिंसा। सत्य की साधना अहिंसा से होगी और अहिंसा की साधना सत्य से। वही मनु कह रहा है। सत्य के साथ अप्रिय और प्रिय जोड़ रहा है। इसलिए यहाँ पुराने मूल्यों को खतम करना है और नये मूल्यों का सर्जन करना है। हमारी प्रक्रिया सौम्यतम होगी। जिसने यह न समझा उसको लोक-हृदय में प्रवेश नहीं मिलेगा। लोक-हृदय उसके लिए नहीं खुलेगा।

हमारे काम का सान्त्व एवं सौम्य प्रकाश हो

जिसके पास सत्य है उसके पास साम और सौम्य उपाय होगा। सौम्य उपाय से काम न बना तो सौम्यतर उपाय होना चाहिए। सौम्यतर उपाय से काम न बना तो सौम्यतम उपाय ढूँढ़ना चाहिए। आज हम क्या करते हैं? बच्चा नहीं समझता है तो माँ उसे समझाती है; समझाने पर भी नहीं समझता तो तमाचा मारती है। प्रिय शब्द कठोर शब्द और अन्त में तमाचा! प्रिय शब्द से काम नहीं बनता तो आखिर में रामबाण उपाय तमाचा है। ऐसी माँ की श्रद्धा है जो प्रेम से भरी है। वह समझती है कि बिलकुल आखिर में जो काम आयेगा वह यह है। इसे मराठी में 'रामबाण रत्न' कहते हैं। आजकल यही प्रक्रिया असरकारक भी मानी जाती है। लेकिन यह हिंसा की प्रक्रिया है। वे मानते

है कि पहले थोड़ा सौम्यता से काम लेना चाहिए। नहीं बना, तो उग्र उपाय ढूँढ़ना चाहिए। उससे भी नहीं बना तो उग्रतर उपाय ढूँढ़ना चाहिए और उससे भी नहीं बना तो उग्रतम उपाय ढूँढ़ना चाहिए। यह सत्याग्रह की प्रक्रिया होनी चाहिए, ऐसा कुछ लोग मानते हैं। लेकिन मेरी दृष्टि से सत्याग्रह ऐसा नहीं हो सकता। सत्याग्रह का चिन्तन करने का मेरा दावा यह है कि सौम्य उपाय से काम नहीं बना तो सौम्यतर उपाय ढूँढ़ना चाहिए और वह भी कारगर नहीं हुआ, तो सौम्यतम उपाय ढूँढ़ना चाहिए। इस तरह की प्रक्रिया से आप जायेंगे तो निश्चित ही इस जमाने में सफलता पायेंगे और जग जीतेंगे। दुनिया को दुःख से मुक्त करने में आप सफल होंगे। हमारे काम का चन्द्र के समान सौम्य प्रकाश होना चाहिए। यहाँ दुहरा काम होगा—पुराने मूल्यों का विसर्जन और नये मूल्यों का विशेष सर्जन।

यह हमारा घोंसला

हम यहाँ सेवा के लिए आते हैं और फिर चले जाते हैं। जैसे रात में घोंसले में पक्षी आते हैं और प्रातःकाल चले जाते हैं वैसे कार्यकर्ता भी यहाँ रात में आयेंगे सुबह चले जायेंगे। हमारा नाश्ता और खाना भी हम इन्दौर में हासिल करेंगे। रात में आयेंगे, प्रार्थना, ध्यान, चर्चा करेंगे कि आज क्या काम हुआ और कल क्या करना है। अध्ययन भी करेंगे। अगर नाश्ता करना ही हुआ तो व्यापारी से करेंगे। फिर भी हिसाब आदि काम के लिए दो-तीन आदमियों को यहाँ रहना होगा।

इसका सारा जिम्मा हमने यहाँ जो ट्रस्ट समिति बनायी है उसका नहीं होगा। वह ट्रस्ट समिति न सिर्फ आश्रम के लिए बनायी है बल्कि इन्दौर में और महेश्वर में जो काम हम करनेवाले हैं उसके लिए भी बनायी है। उस ट्रस्ट समिति में दादाभाई, देवेन्द्रकुमार और भाऊजी पटगे जो तीसरे और मुख्य हैं। इनमें एक बूढ़े हैं, दूसरे थोड़े जवान हैं और तीसरे बिल्कुल जवान हैं। ऐसे तीन जमातों के प्रतिनिधि मानकर हमने

के लिए है। यही एकम समिति काम करनेवाली है, ऐसा नहीं। दूसरे लोग इसकी मदद के लिए आयेंगे। कोई एक आयेगा, तो दो आयेंगे, उसके साथ वह एक जुड़ेगा तो कभी दस बनेगा कभी बीस। अगर वह चार के साथ जुड़ेगा याने चार लोग आयेंगे, तो चालीस होंगे। लेकिन दूसरा थोड़ा-सा मौका नहीं आयेगा, तो वह एक ही रहेगा। अगर आयेगा तो उससे मदद मिलेगी और एक की कीमत बढ़ेगी। एक खड़ा हुआ, तो दस होंगे और ताकत बढ़ेगी। दो खड़े होंगे, तो बीस होंगे। यह बराबर खयाल रखना होगा कि यह जो एकम समिति बनायी है उसका काम एक बनने का, निरहंकार बनने का और नम्र बनने का है और काम करने की शेष के लिए पाप और पुण्य की जिम्मेवारी इन्दौर के दूसरे कार्यकर्ताओं की होगी।

इन्दौर —आश्रम के उद्घाटन के अवसर पर
१५-८ ६

अपने इस देश को आजादी हासिल हुए तेरह साल हुए। यह देश बहुत पुराना है और यह पहले स्वराज्य के अनुभव भी कर चुका है। लेकिन अब दीर्घकालीन परतंत्रता के बाद हिंदुस्तान आजाद हुआ और पिछले हजार साल में भारत को जो मौका नहीं मिला था वह दुनिया की सेवा करने का अब मिला है। अपने यहाँ कहावत है, 'प्राप्तेषु षोडशे वर्षे पुत्रे मित्रवदाचरेत्।—पंद्रह साल पूरे हो जाने पर पुत्र के साथ मित्र के समान व्यवहार करना चाहिए। फिर वह पुत्र नहीं रहता, अपनी जिम्मेवारी खुद उठाता है और बाप उसकी मित्र की तरह मदद करता है। जैसे किसी संकटकाल में मित्र मदद करता है, वैसे ही बाप भी करता है। लेकिन पंद्रह साल के बाद वह पुत्र के पालन-पोषण की जिम्मेवारी नहीं उठायेगा। फिर पुत्र संकटों का सामना करने के लिए तैयार हो जायगा। आज दुनिया की हालत डावाँडोल है। सारी दुनिया भयग्रस्त है और भारत भी उसी तरह भयग्रस्त है। भारतमाता को इस छोटे-से बालक को बहुत ही जल्दी संकटों का सामना करना पड़ रहा है। अभी हिंदुस्तान और चीन के बीच एक सवाल खड़ा हुआ है और जब तक हमारी हस्ती इस पृथ्वी पर रहेगी तब तक हम दोनों भारत और चीन का एक-दूसरे के साथ संपर्क रहनेवाला है। जो इसके पहले नहीं था लेकिन अब उसे टाला नहीं जा सकता है चाहे तो उसका रूपान्तर दुश्मनी में किया जा सकता है और चाहे तो दोस्ती में। हिंदुस्तान को सावधान करने के लिए परमेश्वर ने बड़ी कृपा की है और यह मसला खड़ा किया है। इसलिए अब हम सबको सावधान होना चाहिए।

आज के सर्वंकष युद्ध

इन दिनों किसी भी देश की रक्षा सिर्फ सेना-बल से नहीं हो सकती।

के लिये हैं। यही शून्य समिति काम करनेवाली है, ऐसा नहीं। दूसरे लोग इनकी मदद के लिए आयेंगे। कोई एक आयेगा तो दो आयेंगे। उसके साथ यह शून्य जुड़ेगा, तो कभी दस बनेगा, कभी बीस। अगर यह चार के साथ जुड़ेगा यानी चार लोग आयेंगे तो चालीस होंगे। लेकिन दूसरा कोई नहीं आयेगा, तो यह शून्य ही रहेगा। अगर आयेगा तो उसको मदद मिलेगी और शून्य की कीमत बढ़ेगी। एक खड़ा हुआ, तो दस होंगे और ताकत बढ़ेगी। दो खड़े होंगे, तो बीस होंगे। यह बराबर ध्यान रखना होगा कि यह जो शून्य समिति बनायी है उसका काम शून्य बनने का निरहंकार बनने का और नम्र बनने का है और काम करने की, सब के लिए पाप और पुण्य की जिम्मेवारी इन्दौर के दूसरे कार्यकर्ताओं की होगी।

इन्दौर —आश्रम के उद्घाटन के अवसर पर
१५-८-६

गन्दे इश्तहार हटाइये

हमने देखा है कि इस शहर में रास्ते के दोनों तरफ बड़े-बड़े इश्तहार लगाये गये हैं जिनमें बिलकुल बेशर्म चित्र हैं। कहा जाता है कि उससे पैसा मिलता है, इसलिए घर और नगर-निगमवाले उनको कबूल करते हैं। यह हम-लोग पापमूल है। नौ साल तक मैं घूमता ही रहा। इसलिए किसी भी शहर में केवल एक दिन रहा उससे शहर का मुझे कुछ खास दर्शन नहीं हुआ। लेकिन इन्दौर में अधिक रहने का मौका मिला। यह सुन्दर सौम्य नगर है जिसमें सद्‌भावनावान् लोग रहते हैं। पाँच हफ्ते से इधर उधर घूमते हुए मैंने जगह-जगह गंदे इश्तहार देखे। अगर बच्चा आप से पूछे कि इस चित्र के मानी क्या है तो आप क्या जवाब देंगे? इतने बेशर्म चित्र हम कैसे सहन करते हैं? अगर हम इसी तरह करेंगे तो आजादी की रक्षा के लिए जो ताकत तनाव वैराग्यवृत्ति और कठोरता चाहिए, वह कैसे रहेगी? इससे प्रजा निर्वीर्य बनेगी। अगर जीवन को ऐसी ही आदत पड़ जाय तो देश की रक्षा सिर्फ सेना से होना नामुमकिन है। ऐसी हालत में अगर लड़ाई के मैदान में सेना थोड़ी-सी पीछे हटी इस तरह कभी-कभी हटना पड़ता है तो वहाँ पर वह पाँच कदम हटी हो तो इन्दौर में पचास मील पीछे हटी होगी। यहाँ के मजदूर गाव में भाग जायेंगे। सारे देश में डर पैदा होगा। जैसे शेयर बाजार में जरा-सी घटना से भाव बहुत ऊँचे-नीचे जाते हैं, वैसे ही लड़ाई के दिनों में हमारे दिलों की हालत बनेगी। डरपोक लोगों को बचाने का काम आधुनिक लड़ाइयों में सैनिक नहीं कर सकते हैं, इसलिए सबको अच्छी तरह से वैराग्यवान् जीवन की आदत डालनी पड़ेगी।

वैराग्य के साथ ऐश्वर्य

एक जमाना था जब इस देश में प्रखर वैराग्य था और उसी जमाने में देश ऐश्वर्य के शिखर पर था। जहाँ वैराग्य क्षीण होता है भोग-विलास बढ़ता है वहाँ ऐश्वर्य भी क्षीण होता है। व्यास भगवान् ने कहा है:

दुनिया सेना-बल की जरूरत महसूस करती है, लेकिन इसके अलावा जब नागरिकों और ग्रामीणों का बल बल देश के पीछे होता है, तभी देश मजबूत बनता है और अपनी रक्षा कर सकता है। इन दिनों की लड़ाइयाँ सर्वंकष व्यापक होती हैं छोटे-से पैमाने पर नहीं लड़ी जाती हैं। सन् १७५७ में प्लासी की लड़ाई में एक छोटे-से रण-मैदान में चार घंटे में कुछ हजारों की सेना लड़ी और उसका परिणाम यह हुआ कि कुछ-का-कुछ बंगाल और बिहार का कुछ हिस्सा कंपनी सरकार के हाथ में आ गया। दस-पाँच हजार लोगों ने वहाँ पर जो खेल खेला, उससे पाँच-सात करोड़ लोगों के नसीब का फैसला हुआ। सन् १८ ३ में असई की लड़ाई में एक तरफ ड्यूक आफ वेलिंग्टन और दौलतराव सिंधिया के बीच चंद घंटों में ही लड़ाई हुई। उसके परिणामस्वरूप मराठों का राज्य समाप्त हुआ जिसमें तीन करोड़ का समावेश था। इस तरह पुराने जमाने की लड़ाइयों में चंद घंटों में थोड़े-से लोग करोड़ों के नसीब का फैसला करते थे लेकिन अब जो लड़ाइयाँ होती हैं उनमें कुछ-न-कुछ ग्रामीण और नागरिकों को तैयार होना पड़ता है। सेना तो एक निमित्तमात्र होती है। कुछ थोड़ा-सा रोकने का काम करती है। जैसे मेरे सिर पर कोई लाठी मारता हो तो मैं अपना हाथ खड़ा करता हूँ ताकि प्रहार एकदम सिर पर न पड़े हाथ पर पड़े। इसी तरह सेना भी इतनी ही कोशिश करती है कि विरोधी हमले का प्रहार एकदम से आम जनता पर न हो। लेकिन जहाँ सेना लड़ती है उसी मैदान में ही लड़ाई नहीं लड़ी जाती। हवाई जहाज से बम गिराये जाते हैं तो कुछ-का-कुछ राष्ट्र रणभूमि बन जाता है। उसमें न स्त्री-पुरुषों का भेद रहता है न सिविलियनवालों और सिपाहियों का भेद रहता है। यह भेद भी नहीं रहता कि यह मनुष्य है और यह जानवर। इन लड़ाइयों में मनुष्यों के साथ जानवर भी खत्म होते हैं। बम गिरता है तो अस्पताल में पड़े हुए बीमार भी खतम होते हैं। जड़-चेतन का भी भेद नहीं रहता। बम गिरने से पेड़ भी खतम हो जाते हैं। इस तरह इन दिनों टोटल वार, संकुल युद्ध होते हैं जिसमें कुछ-न-कुछ लोग शामिल होते हैं।

'सुखार्थिनः कुतो विद्या विद्यार्थिनः कुतः सुखम्। सुख और विद्या दोनों साथ-साथ नहीं रहते। लेकिन अक्सर देखा गया है कि जो बाप बचपन में ठंडे पानी से नहाने का आदी था वह विद्या पाने के बाद सज्जन बन गया तो चाहता है कि हमारा बच्चा ठंडे पानी से न नहावे। ऐसे माता-पिता इस तरह सोचते हैं वे अपने बच्चों के दुश्मन होंगे। यदि माता-पिताओं ने अपने बच्चों को [illegible] की आदत डाली तो वे देश-रक्षा के लिए बिल्कुल असमर्थ साबित होंगे। इसलिए देश के लिए व्यायाम, कठोर परिश्रम की आवश्यकता है ताकि हम मजबूत बनें; हममें ठंड धूप, बारिश आदि सहन करने की आदत हो। सुबह से शाम तक शरीर को कसकर रखना चाहिए। अपनी इन्द्रियों आदि पर काबू पाने की निरन्तर कोशिश होनी चाहिए। सबको वीर्यवान् और समर्थ बनना होगा। यह राष्ट्र का कर्तव्य है।

बुनियादी चीज

आपके नगर में गंदे इश्तहारों की जगह अच्छे-अच्छे सुन्दर वचन लिखो— बिनु सतसंग बिबेक न होई। बैर न कर काहू सन कोई। राम प्रताप विषमता खोई॥ ऐसे वचन सबको पढ़ने को मिलेंगे तो सारा इन्दौर नगर एक स्कूल बनेगा। फिर बच्चा पिता से पूछेगा यह क्या है? पिता अच्छे-अच्छे उसे तालीम देगा। इस दिशा में नगर निगम और नागरिक काम करेंगे, तो इन्दौर सर्वोत्तम नगर बनेगा। देश की रक्षा के लिए, संस्कृति की रक्षा के लिए ये बिल्कुल बुनियादी चीजें हैं। हम यह नहीं करते हैं तो देश में सत्त्व नहीं रहेगा।

विसर्जन आश्रम

आज का दिन विचार-परिवर्तन का दिन है। आज हमें गलत धारणाओं को छोड़ना चाहिए। जाग्रत और सावधान रहना चाहिए। चारों ओर संकट के काले बादल छाये हैं। इस हालत में बहुत जरूरी है कि हमें एक और नेक बनना चाहिए। इस नगरी में आज जो अच्छे काम बने हैं।

रही है। इस अनुभव को ध्यान में रखकर बाबा बोल रहा है। नहीं तो *नहीं बोल सकता था।*

यहाँ का नगर-निगम ऐसी हिम्मत करे, लेकिन उसके पहले उसे निगम बनना होगा। *निगम याने निश्चयेन गमनम्। एक बात का निश्चय करना* होगा। यहाँ इतनी पार्टीबाजी है कि बाबा को भाषण भी दो-दो जगहों पर करना पड़ा है क्योंकि दोनों पार्टीवाले एक-दूसरे के पास नहीं आ सकते। ऐसे झगड़े रहेंगे, तो नगर का निगम कैसे बनेगा? वेद को निगम कहते हैं और शास्त्र को आगम। वेद को निगम इसलिए कहते हैं कि वह निश्चित *बात बोलता है। वैसा ही* उतनी ही होती है। आपने *म्युनिसिपैलिटी* का यह नाम दिया है, जो हमारे पूर्वजों ने साक्षात् वेद को दिया था। आपने यह नाम दिया है तो अब अच्छा काम भी करना होगा। पार्टियों के झगड़े खतम करने होंगे। पार्टीबाजी को खतम कर नगर-निगम अपना बजट जाहिर करता है और फिर उस पर लोगों की टीका सुनकर उसमें सुधार कर एकमति से मंजूर कर सबके सामने दान का पैमाना भी पेश करता है। तो क्या आप समझते हैं कि इन्दौर के लोग कुछ भी नहीं देंगे? 'हिम्मते मर्दां तो मददे खुदा।' यह इस जमाने का एक नया प्रयोग है। उसमें बहुत उत्साह आना चाहिए। लोगों ने दान नहीं दिया तो अध्यक्ष को ही कमाई का काम उठाना होगा। यह जरा करके तो देखो। बड़े पैमाने पर करके देखो तो राष्ट्र के सामने मिसाल पेश होगी। आप फिर कह सकेंगे कि हमने जो प्रयोग किया है वह उत्साहवर्धक है। इस तरह के प्रयोग करोगे तभी क्रान्ति होगी और एक नया जमाना आयेगा। क्रान्ति होने के जैसे नाम रखने से नहीं आती।

वानप्रस्थ आश्रम

दूसरा एक बहुत अच्छा काम आज यहाँ बना है। शायद हिन्दुस्तान में प्रथम बार ऐसा काम बना है जो इन्दौर के *लिए* गौरव की बात है।

दान मिलेगा उतने पर फायदा किया जायगा। आधा दान मिला, तो आधी ही सेवा होगी, पूरा मिला तो पूरी होगी। इस विचार पर एक भाई ने टीका की कि परमेश्वर की कृपा है बाबा के हृदय में राज नहीं है, यह अच्छा है। उसने यह भी लिखा कि बाबा को इतनी भी अक्ल नहीं है कि उनके संपत्ति-दान का क्या हुआ? जब उसका संपत्ति-दान भी नहीं चला, तो सरकार को दान कैसे मिलेगा? लेकिन मेरे विचार में जो खूबी है वह ध्यान में लेनी चाहिए। अभी विसर्जन आश्रम बना, तो चार-पाँच मकान दान में मिलने की बात चली। मैंने कहा कि इन्दौर में कितने मकान हैं, कुल-के-कुल मेरे हैं। उसमें से पाँच मकान तो मेरे हैं ही। मेरा इतना सारा हक एक तरफ रखकर आप मुझे चार-पाँच मकान क्या देते हो? इस प्रकार की मेरी माँग है, पर हमें मिला बहुत ही कम है। इसलिए वह भाई कहता है कि बाबा किस दुनिया में रहता है? वह हवा में ही उड़ता है।

मैंने अपना यह विचार बहुत गंभीरता से पेश किया है। एक राजनीतिज्ञ भाई ने कहा कि बाबा बिलकुल ही अव्यावहारिक है। वह जितना माँगेगा उससे आधे से ज्यादा नहीं मिलेगा। मैंने कहा कि अगर ऐसा हो तो मैं पूरा सफल हूँ। क्योंकि माँगनेवाले की योग्यता आधे से ज्यादा है ही नहीं। परन्तु राष्ट्र की जो सरकार होगी वह अपनी योग्यता के आधार पर माँगेगी। उस पर हम इतना अविश्वास क्यों करें? क्या बाबा की माँग और राष्ट्र की माँग एक है? बाबा तो आखिर एक व्यक्ति है। लोग उसे थोड़ा-थोड़ा देते हैं। क्योंकि टैक्स है इसलिए बहुत ज्यादा नहीं देते हैं। लेकिन कुछ टैक्स खतम किये जायँ और राष्ट्र की ओर से बजट पेश किया जाय, फिर भी नहीं मिलेगा, ऐसा मानना क्या ठीक बात है? इस तरह आत्मविश्वास खोने का कोई कारण नहीं है। बाबा की क्या योग्यता है? उसे अपनी योग्यता से ज्यादा ही मिलता है। एक मनुष्य कितना भी वैराग्यशाली और सद्गुणी क्यों न हो फिर भी उसे कितना मिलेगा? लोगों ने दिया है और उधर सरकार टैक्स के द्वारा ले

जल्द मरें और देश का सब काम हो क्योंकि ये काम नहीं करते हैं और पेन्शन पाते हैं। लेकिन जब ये वानप्रस्थ काम में लगेंगे तो समाज को उनसे मुफ्त ही सेवा मिलेगी, अनुभवी लोगों का लाभ समाज को मिलेगा और फिर समाज चाहेगा कि ये सौ साल जीयें। मैं आशा करता हूँ कि यह संस्था बढ़ेगी और आपको उसे बढ़ाना चाहिए। आपमें से हरएक को ऐसी योजना करनी होगी कि हम पचास साल के बाद धंधे से निवृत्त होकर सेवा प्रवृत्त होंगे। इन दिनों एक नया शब्द चला है, रिटायर होना। लेकिन हम कहते हैं कि रिटायर नहीं होना चाहिए, री-टायर होना है। नया टायर लगाना है। इससे मोटर जोरों से दौड़ेगी। इस नगर में इस तरह का सुंदर आरंभ हुआ है, जिसका उद्घाटन हमने किया है क्योंकि हम भी उसी जमात में शामिल हैं। हमें बहुत खुशी हुई है।

इन्दौर —प्रार्थना-प्रवचन
१५-८-६

यह घटना है सर्वोदय वानप्रस्थ-मंडल की स्थापना। उसकी एक कमेटी बनी है जिसमें वजनदार वानप्रस्थ हैं जो नौकरी-निवृत्त होने पर सेवा करेंगे। उनके लिए जनता कहेगी युग-युग जीओ, शतं जीव शरदः शतम्। वानप्रस्थ याने बूढ़ों के लिए नव-जीवन। इन दिनों हम लोग जीवन का हिसाब ही नहीं करते। पचास साल पूरे हुए, तो हम मानते हैं कि बहुत हुए। फिर 'वंस सायड आफ़ फिफ्टी' कहा जाता है और साठ के बाद तो मरने का वीसा (visa) ही मिल गया ऐसा माना जाता है। लेकिन वानप्रस्थ का अर्थ है कि हम सौ साल जीयेंगे। 'जिजीविषेत् शतं समाः' यह जो उद्घोष इस देश में हुआ था वह कितना सुन्दर और उत्साहवर्धक है। हम काम करते-करते सौ साल जीने की इच्छा करेंगे ऐसा उपनिषद् कहता है। उसने यह भी कहा है कि अदीन होकर सौ साल जीयेंगे। सौ साल तक हम आयुष्मान् रहेंगे। वानप्रस्थ मंडल बनने से उन लोगों को नया जीवन नया उत्साह मिलेगा। वे लोग साहित्य-प्रचार, सर्वोदय-पात्र का प्रचार आदि करेंगे और नगर-निगम के पीछे लगे रहेंगे कि आपने वादे किये हैं तो उन्हें पूरा कीजिये। उसमें अच्छे न्यायाधीश, प्रोफेसर आदि हैं जिनकी सेवा का मुख्य लाभ इन्दौर को मिलेगा। इंदौर में वानप्रस्थ मण्डल का आरंभ हुआ इसलिए हम बधाई देते हैं। इससे अच्छा आदर्श उपस्थित होगा और वे लोग सौ साल जीयेंगे।

रिटायर नहीं री-टायर

हमने जीवन का एक हिसाब बनाया है। आप पचास साल जीते हैं तो हर साल का आधा नंबर मिलेगा। इसलिए पचास साल जीने से पचीस ही नम्बर मिलेंगे। इससे आप फेल हो जायेंगे। उसके बाद पचहत्तर साल तक हर साल का एक नंबर मिलेगा। पचहत्तर साल जीयें तो पचास नंबर मिलेंगे। उसके आगे के पचीस साल में हर साल के दो नंबर मिलेंगे। इस तरह सौ साल के सौ नंबर। यह जीवन का हिसाब है। सरकार वानप्रस्थों को पेन्शन देती है तो समाज की ऐसी इच्छा होगी कि ये लोग

हो सकता है और पत्नी ज्यादा अक्लवाली हो, तो पति का काम है कि वह पत्नी की बात सुने। स्विट्जरलैण्ड की बहनें वोट का हक चाहती ही नहीं हैं। वे कहती हैं कि यह झंझट हमें नहीं चाहिए। राजनीति मोटी अक्ल का काम है। हमारे हाथ में बारीक अक्लवाला काम है। इसलिए वे वोट का हक माँगती ही नहीं।

इन्दौर —राजस्थान समग्र सेवा संघ में

१६ ८ ६

अक्सर हम न्याय की बात करते हैं लेकिन वह ठीक नहीं है। हम न्याय नहीं कर सकते, हमें तो समाधान करना चाहिए। हेतु, क्रिया और परिणाम तीनों देखकर न्याय देना होता है। किसीके काम का हेतु हम नहीं जान सकते इसलिए न्याय देना ईश्वर का ऐकान्तिक [illegible] है—विशेष कार्य है। हमें तो दोनों पक्षों का समाधान करना चाहिए। 'साम्ये समाधानम्'। आज तो अदालत न्याय की ही भाषा बना है। अतएव जिस किसी वक्त जिस किसीका समाधान जिस चीज से होता हो वह किया जाय। छोटे-छोटे बच्चे संतोषपूर्वक माता-पिता की आज्ञा का पालन करते हैं। माता-पिता बेखटके आज्ञा देते हैं तो उस कुटुम्ब में समाधान रहता है। लेकिन लड़के जवान हो जायें और माता-पिता वृद्ध हो गये हों तो माता पिता थोड़ी सलाह देते हैं और लड़के सब काम करते हैं इससे दोनों का समाधान हो जाता है। यहाँ पर यदि आप लोकशाही का तत्त्व दाखिल करेंगे तो खतरनाक साबित होगा। लोकशाही अगर अच्छी है, तो उस जगह अच्छी है। यहाँ पर खतरनाक है तो खतरे के बीच उसके अन्दर पड़े हैं। लोकशाही न्याय की बात करती है लेकिन न्याय नहीं दे पाती। न्याय तो एक ही होगा समाधान अनेक होंगे। इसलिए न्याय ईश्वर का 'रिज़र्व्ड सब्जेक्ट' सुरक्षित विषय माना जाय। बाइबिल में कहा है—"जज नाट दो दैट यू बी नाट बी जज्ड"। आज के जमाने का समाधान क्या है हमें यह देखना चाहिए। अगर समाधान है तो समता की कोई जरूरत नहीं है। अगर दरअसल ताज् बनाने में मुझे समाधान है, तो ताज् बनाना मेरा काम है। यह स्वामी-सेवक-भक्ति या वात्सल्य-भक्ति मानी जा सकती है। किसी पत्नी का समाधान पति की बात मानने में

हिंदू हों, तो भी हिंदुओं के लिए पक्षपात न करें। आपकी भाषा चाहे हिंदी, गुजराती, मराठी हो, तो भी सार्वजनिक सेवा में आप भाषा का पक्षपात न करें। आप व्यक्तिगत तौर पर किसी पक्ष के साथ सहानुभूति रखते हों, तो भी जहां तक सेवा का ताल्लुक है, आप किसी भी पक्ष के लिए अनुराग नहीं रख सकते। इस तरह आपकी अपनी सेवा में पक्षमुक्ति का आदर्श छिपा हुआ है।

इन दिनों लोकशाही में पक्षों की आवश्यकता मानी जाती है। लेकिन उसे मानते हुए भी उन्होंने तय किया है कि बहुत-सी बातों में पक्षों का विचार न किया जाय। राष्ट्रपति पक्षमुक्त होना ही चाहिए, चाहे मूल में वह किसी पक्ष का भले न हो। न्यायाधीश, सरकारी कर्मचारी, सेना के सैनिक, सरकारी कर्मचारियों के अफसर आदि सब पक्षमुक्त होने चाहिए। [illegible] हर कार्य में पक्षमुक्ति की आवश्यकता मानी गयी है। डाक्टर पक्षयुक्त विचार नहीं कर सकता। वह यह नहीं मान सकता कि फलाना बीमार अपनी पार्टी का है इसलिए उसकी तरफ ज्यादा ध्यान देना चाहिए और दूसरा बीमार अपनी पार्टी का नहीं है इसलिए उसकी तरफ कम ध्यान देना चाहिए।

किसी भी पक्ष का ज़रा दबाव आप सहन न करें

हमारे पक्षमुक्त समाज के प्रथम सेवक जो बनेंगे वे बनेंगे। लेकिन आप सरकार से तनख्वाह पाते हैं इसलिए आपको हमारा काम करना है। किसी भी पक्ष का किसी दबाव आपको सहन नहीं करना चाहिए। इन दिनों पार्टी की तरफ से सरकारी नौकरों पर बड़ा दबाव डाला जाता है और उनसे काम करवाने की कोशिश की जाती है। इसे आपको टाल सकना चाहिए। आपको कहना चाहिए कि हम किसी पक्ष के नहीं हैं। व्यक्तिगत तौर से हो हमारी सहानुभूति एक की तरफ हो, लेकिन हम किसीका दबाव सहन नहीं करेंगे। इतनी निर्भयता ऐसे लोगों में आनी चाहिए। यह एक अच्छा लक्षण हो जाता है।

हम और आप दूर होते हुए भी पास हैं

दीखने में आप और मैं बिल्कुल दो सिरों पर हैं। आप अनेक बंधनों से जकड़े हुए और मैं सब बंधनों से मुक्त होकर घूम रहा हूँ। किसी संस्था का भी मैं सदस्य नहीं हूँ या दूसरे किसी भी बंधन में नहीं पड़ा हूँ। एक इंसान के नाते इंसान की सेवा के लिए निकल पड़ा हूँ, इसलिए ऐसा लगेगा कि मैं उत्तर ध्रुव पर और आप दक्षिण ध्रुव पर हैं। फिर भी हम इकट्ठे होते हैं। कभी दो ध्रुव भी इकट्ठा हो सकते हैं।

व्यापक पक्षमुक्त समाज

एक बात में आप मेरे नजदीक हैं। मैं चाहता हूँ, पक्षमुक्त समाज का निर्माण। लोग मुझसे पूछते हैं कि पक्षमुक्त समाज कौन बनायेगा? ऐसे कितने सेवक बने हैं जो पक्षमुक्त हैं? सारे भारत में व्यापक कमसे कम हजार ही सेवक हैं। फिर पक्षमुक्त समाज कैसे बनेगा? हमारी जमात इतनी छोटी नहीं है जितनी आपने मान रखी है। वह एक छोटी जमात है, जो भूदान खादी ग्रामोद्योग नयी तालीम आदि से संबंध रखती है। वह ठीक है लेकिन हमारा पक्षमुक्त समाज बहुत बड़ा है। जिनको हमने अपना माना उनमें आपकी गिनती है। पचपन लाख सरकारी नौकर और पाँच लाख मिलिटरी यानी साठ लाख का परिवार पक्षमुक्त समाज है। आज यहाँ पर कांग्रेस का राज है कल नहीं भी हो सकता है। दूसरी किसी पार्टी का राज आ सकता है जैसे केरल में आया था। लेकिन सरकारी सेवक वर्ग तो कायम ही रहता है। वह सारे समाज की सेवा का काम करता है। जो काम सरकारी तंत्र से होता है वह आपके ही जिम्मे है। आपको आदेश है कि आप किसी भी पक्ष के लिए पक्षपात न करें—चाहे आप

अफसरों के घर की बहनें इस काम में आयें

आपको एक बहुत बड़ी समाज-सेवा का मौका मिला है उसका आप इस्तेमाल करें। आप अपने कुटुम्ब की बहनों को मुक्त सेवा के लिए मुक्त करें। सरकारी नौकरों की पत्नियाँ समाज-सेवा के लिए दो-तीन घंटा अवश्य दें। जो पदधारी हैं उनका समाज पर भार होता है। लेकिन वे नौकरी निवृत्त बनने के बाद सेवा प्रवृत्त बनेंगे तो समाज पर उनका भार नहीं रहेगा। वैसे ही आपके घर की बहनें समाज-सेवा करेंगी तो सेवकों की एक बहुत बड़ी जमात खड़ी होगी। आप जहाँ नहीं पहुँच सकते हैं, वहाँ पर वे बहनें पहुँचेंगी। किसी घर के अन्दर आपका प्रवेश नहीं हो सकता है लेकिन आपकी पत्नी का होगा। वह बिल्कुल घर के अन्दर जायगी प्यार से बात करेगी आसपास की खबरें वहाँ पहुँचायेगी और जनता की हालत क्या है वह आपको सुनायेगी। यह एक बहुत बड़ी ताकत देश में पड़ी है जो खड़ी होनी चाहिए। बहनों को इस काम के लिए चालना दी जाय तो उनकी जिन्दगी में रस उत्साह आयेगा। उन्हें लगेगा कि हमारे पति काम करते हैं, तो हम भी कुछ ऐसा काम कर रही हैं जो पति नहीं कर सकते। इन्दौर को सर्वोदय-नगर बनाना है उसमें आपकी पत्नियाँ मदद दे सकती हैं।

मुझे अपने परिवार का सदस्य सम्मलित मान दीजिये

मैं चाहता हूँ कि देश की गरीबी की तरफ ध्यान रखकर समाज में शान्ति का काम करने के लिए एक सेवक-दल त्यागी में से तैयार हो तो फिर सरकार को गोली चलाने का मौका ही नहीं मिलेगा। वहीं गोली चले तो गोली और पत्थर दोनों के बीच खड़े रहनेवाले और हर समय सेवा करनेवाले सैनिकों का एक सेवक-दल खड़ा करने के लिए मैं आपसे सम्पत्ति दान चाहता हूँ। आपके पैसे के पैसे पर मेरी नजर नहीं है। आप अपने घर में जो खर्च करते हैं उसमें मुझे भी शामिल करें। आपके परिवार में सात व्यक्ति हैं तो मुझे आठवाँ समझें और अपने खर्च का

काम में प्रामाणिकता, नियमितता हो, ढील न हो!

दूसरी अपेक्षा आपसे यह की जाती है कि आप जो भी नौकरी कर रहे हैं, उसमें प्रामाणिकता, नियमितता पर पूरा ध्यान रखें। अक्सर हम लोगों को आदत है कि आफिस ग्यारह बजे खुलता हो तो हम साढ़े ग्यारह बजे जाते हैं और उसमें कुछ भी नहीं मानते। बीच में आधे घण्टे की छुट्टी हो, तो दस-पाँच मिनट और छुट्टी ले लेते हैं, शाम समय कुछ जल्दी चले जाते हैं। इस तरह छह घण्टे की नौकरी में मुश्किल से चार घण्टा काम बनता है ऐसा जाननेवाले कहते हैं। मैं तो कभी किसी आफिस में नहीं गया। इसलिए मुझे कोई व्यक्तिगत अनुभव नहीं। लेकिन हिन्दुस्तानियों का इतना ढीला स्वभाव है कि अंग्रेजों के राज में उनका रोब था, इसलिए ज्यादा अनुशासन था। स्वराज्य आने के बाद हमारी सरकार ने एक खूबसूरती का काम कर लिया। जिन्हें कभी छुट्टी नहीं मिलती थी उन्हें भी छुट्टी दे दी। पोस्टल सर्विस को रविवार की छुट्टी देने की कल्पना कभी किसीने नहीं की, लेकिन हमने यह काम कर लिया। यह एक प्रतीक है। पोस्टमैन से ज्यादा काम लिया जाय, ऐसा मैं नहीं चाहता; लेकिन यह कहना चाहता हूँ कि एक दिन की छुट्टी दी या उसके मानी हुए कि स्वराज्य के काम में ढील पड़ सकती है। सात दिन में एक दिन छुट्टी पड़ सकती है। फिर यह पोस्टमैन सोचेगा कि किसी दूर के गाँव में जाना है एक ही पत्र है बारिश हो रही है, तो अगले दिन ले जायेंगे या पत्र महत्त्व का नहीं दीखा तो परसों डालेंगे। एक पत्र पहुँचाने के लिए बारिश में पाँच-छह मील जाने में वह निरी मूर्खता समझेगा और अपनी अक्ल चलायेगा। यह कोई सेन्स आफ ड्यूटी कर्तव्य-बुद्धि नहीं है। यह ढील हममें पहले से थी। यह राष्ट्रीय दुर्गुण है। इसे हटाना होगा। आपके काम में बिलकुल नियमितता का गुण हो और नीति और विवेक का पूरा खयाल हो। आपकी ऑनेस्टी निष्पाप सौम्य हो।

ऊँची दीवारों के पीछे ४०

जेल का हमारा अनुभव

कैदी भाइयों के साथ हमारे दिल में सहज सहानुभूति है क्योंकि हमने भी जेल में अंग्रेज सरकार की कृपा से कुछ समय बिताया है। हमें जेल का अनुभव अच्छा मिला है। अगरचे दूसरे अनेक कार्यकर्ताओं ने हमसे दुगुना तिगुना समय जेल में काटा है लेकिन हमने चार दफा मिलकर कुल पाँच साल जेल में बिताये हैं और जगह-जगह की जेल भी देखी हैं।

हम सब छोटे-बड़े कोई-न-कोई अपराध करते हैं और अपराधी के नाते ही परमेश्वर के सामने पेश होनेवाले हैं। हममें से कोई भी ऐसा नहीं जो कि सम्पूर्ण निर्दोषी बनकर परमेश्वर के सामने जायगा। हरएक को उसके सामने क्षमा-याचना करनी ही पड़ेगी। हममें से हरएक के हाथ कुछ-न-कुछ अपराध हुए होंगे। लेकिन समाज ने कुछ मोटे-मोटे नियम बनाये हैं। उनको तोड़नेवाला जेल जाता है उसे सजा मिलती है।

आज की एकांगी नीति

पर ऐसे अपराध हैं जो छोटे नहीं, बल्कि बहुत बड़े हैं; लेकिन समाज में उनकी गिनती अपराधों में नहीं होती। जब उनके लिए लोकमत तैयार हो जायगा तो उन अपराधों के लिए भी सजा मिलेगी। ज्यादा सम्पत्ति रखनेवाला एक तरह से गुनहगार है और चोर दूसरी तरह से। आज समाज में चोर को सजा दी जाती है लेकिन ज्यादा सम्पत्ति रखनेवालों को नहीं दी जाती। फिर भी सरकार की तरफ से कोशिश होती है कि टैक्स के रूप में सम्पत्तिवाले की सम्पत्ति का अधिक से अधिक हिस्सा हासिल किया जाय। आज कानून को समाज बनाता

आठवाँ हिस्सा उसका समझकर हमें हमेशा देते रहें। हम आपके घर में प्रवेश करना चाहते हैं, आपके उद्योग या व्यापार में नहीं। आज आपके घर में सात प्राणी हैं और कल भगवान् की कृपा से और एक नारायण मूर्ति आ गया तो हमें खुशी होगी कि हमारा कुटुम्ब बढ़ गया फिर हम नवें बन गये और नवाँ हिस्सा भी माँगेंगे। आपके घर की जो हालत है उसमें मैं समाज का प्रतिनिधि बनकर आना चाहता हूँ। मेरा प्रवेश मंगलदायी होगा या नुकसानदेह यह आप ही सोच लीजिये। समाज के घर में आने से बरकत होगी या नहीं होगी इस पर आप सोच लीजिये और इहलोक-परलोक की बात न सोचकर समाज हित के लक्ष्य से व्यक्तिगत तौर पर सम्पत्ति-दान दें। आपमें से प्रत्येक व्यक्ति व्यक्ति के नाते इस पर सोचे। हृदय-परिवर्तन, विचार-परिवर्तन, जीवन-परिवर्तन यह हमारा उद्देश्य है।

इन्दौर
१६ ८ ६

शान्ति-सेना से सर्वोदय-विचार प्रतिष्ठित

कोई भी जमात बढ़ती है उसकी ताकत बढ़ती है तो अक्सर उस जमात के विषय में शंका और कभी-कभी मत्सर भी पैदा होता है। लेकिन शान्ति-सेना का जहाँ तक ताल्लुक है तो इस काम के लिए और इस जमात के लिए आज हिन्दुस्तान में सबका आशीर्वाद हासिल है। इसका कोई डर या इसके लिए किसीके मन में मत्सर भाव पैदा हो ऐसी हालत नहीं है। क्योंकि यह जमात सियासी ताकत चाहनेवाली नहीं है बल्कि पक्ष-मुक्त होकर काम करनेवाली है और इसका रवैया किसी प्रकार का झगड़ा बढ़ाने में मदद करनेवाला नहीं है बल्कि देश की अन्दरूनी शान्ति में मदद देनेवाला है। अगर शान्ति-सैनिक कारगर होते हैं तो अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में भी सरकार और जनता की ताकत बढ़नेवाली है। इसलिए अन्तर्राष्ट्रीय दृष्टि से भी इसका स्वागत है और राष्ट्रीय दृष्टि से तो है ही। यह जमात सेना को खत्म करेगी या समाज को सेना-मुक्त कर सकेगी, यह कह नहीं सकते। ऐसी तात्त्विक चर्चा में उतरने से विचार भेद पैदा हो सकते हैं लेकिन यह काम करे तो किसीका नुकसान नहीं है उसका लाभ ही है यह बात हिन्दुस्तान में सर्वमान्य हो गयी है।

शान्ति-सेना के लिए सर्वमान्यता

इसके अलावा किसी क्षेत्र में जब दो-चार जमातों का प्रवेश होता है तब वहाँ पे दो-चार जमात एक उद्देश्य से आयी हों तो भी 'प्रोसेस' भिन्न होते हैं इसलिए कशमकश होना सम्भव है। पर बात भी यहाँ नहीं है। 'यह एक ऐसा सासन है जो आपका ही है। यहाँ हम प्रवेश नहीं कर सकते हैं' ऐसा मुस्लिम पार्टियों ने माना है। वे पार्टियाँ शान्ति

उसमें चोरी के समान ही संग्रहखोरी गुनाह माना जायगा। आज की एकांगी नीति के बदले फिर सर्वांगी नीति चलेगी। यह जल्दी ही होनेवाला है। लेकिन आज समाज ने जो मोटे-मोटे नियम बनाये हैं उनका पालन भी करना चाहिए नहीं तो समाज-व्यवस्था में बाधा आती है। इसीलिए जेल बनते हैं।

जेल को आश्रम जैसा बनाया जाय

जेल में कैदियों को तकलीफ हो, ऐसी कानून की इच्छा नहीं रहती। बल्कि उन्हें खाना-कपड़ा मिले, बीमारी में उनके लिए इन्तजाम हो अगर वे पढ़ना नहीं जानते हैं तो उन्हें पढ़ाया जाय, उन्हें कुछ रोजगार भी सिखाया जाय, इस तरह की कोशिश चलती है। इस तरह जेल को जीवन-सुधार का स्थान बनाने की सरकार की इच्छा है। उम्मीद है कि धीरे-धीरे जेल का स्वरूप आश्रम जैसा होगा। दोनों में यही फर्क रहेगा कि आश्रम के लोग बाहर जा-आ सकेंगे और जेलवाले एक मुद्दत तक नहीं जा सकेंगे। बाकी जेल को आश्रम जैसा बनाया जाय जिससे कि उसमें रहनेवाले सेवक बनकर समाज की सेवा करें और बाहर वे समाज-सेवक बनकर आयेंगे।

इन्दौर —जेल में कैदियों के बीच
१६-८-६

शान्ति-सेना सर्वोदय-कार्य को गति देगी

शान्ति-सेना का कार्यक्रम एक स्वतन्त्र और नया कार्यक्रम न होते हुए भी अपने दूसरे कार्यक्रमों के बचाव का ही कार्यक्रम है। आज की हालत में भी यदि किसीके प्राण खतरे में हैं तो उसे बचाने के लिए हम कूद पड़ेंगे। हम यह नहीं कहेंगे कि 'जब तक अशान्ति के कारण हैं, तब तक हिंसा होगी ही इसका हम क्या कर सकते हैं!' इस प्रकार न कहते हुए हम बीच में पड़ेंगे और दूसरों के प्राण बचायेंगे। हमें पाँच हजार ग्रामदान मिले हैं। लेकिन हम चाहते हैं कि पाँच लाख ग्रामदान हो जायँ। यह तब होगा जब हमारा विचार जनता को हृदयंगम होगा और जनता यह महसूस करेगी कि यह विचार उसके हित का है। जनता को इसमें अपना हित महसूस कराने में मदद होगी जब हमारी यह प्रतिष्ठा होगी कि आज की हालत में भी ये लोग सबके प्राणों की रक्षा करनेवाले हैं। इसलिए आपके दूसरे प्रोग्रामों को बढ़ाने की दृष्टि से भी शान्ति-सेना का काम जरूरी है।

हमारे हाथ में अभिक्रम नहीं है

शान्ति-सेना के अभिक्रम तथा मर्यादाओं के बारे में सवाल पूछा गया। आज अभिक्रम तो अशान्तिवालों के हाथ में है, हमारे हाथ में नहीं है। हमारे हाथ में अनुक्रम यानी पीछे का क्रम है। अभिक्रम ही हमारे हाथ आये, यह तब बनेगा, जब हिन्दुस्तान में एक क्षेत्र में ही सही, हमारा साम्राज्य होगा। यानी ऐसा हो कि उस क्षेत्र में कुल जनता हमारा विचार मानती हो और कहाँ अशान्ति पैदा हो सकती है, यह सब हमें मालूम हो। जब तक यह नहीं बनता है, तब तक हमारे हाथ में अभिक्रम नहीं आयेगा। आज तो अनुक्रम ही हमारे हाथ में है। लेकिन अनुक्रम में भी हमारा काम सफल होगा। जैसे असम में शान्ति-सैनिकों के लिए काफी काम पड़ा है और कुछ थोड़ी आग बुझाने का काम वे कर सकते हैं। होना यह चाहिए कि सारे भारत में से सौ-दो सौ उत्तम मनुष्य असम

सेना का जिम्मा नहीं उठा सकती हैं क्योंकि अशान्ति पैदा करने में अक्सर पार्टियों का हिस्सा रहता है। इसलिए यह क्षेत्र उनके लिए नहीं है। मौके पर व्यक्तिगत तौर पर पार्टीवाले कुछ काम कर सकते हैं—अपनी जान की बाजी लगा सकते हैं और उसमें कामयाब भी हो सकते हैं लेकिन पार्टी के तौर पर कोई पार्टी यह काम उठाने में असमर्थ है। आपके लिए यह एक रिजर्व्ड क्षेत्र है। सबके आशीर्वाद के साथ आपके लिए मान्यता भी हासिल हुई है।

सर्वोदय की प्रतिष्ठा

इतना आशीर्वाद और विचारों की अविरोधता आपके किसी दूसरे प्रोग्राम के लिए नहीं है। भूदान के लिए भी नहीं है। भूदान में जमीन के छोटे-छोटे टुकड़े होंगे उत्पादन नहीं बढ़ेगा आदि आक्षेप उठाये गये थे। ग्रामदान में मिल्कियत मिटती है तो छोटे टुकड़ेवाला आक्षेप नहीं करता है लेकिन यह अव्यवहार्य है नुकसानदेह है ऐसे आक्षेप उठाये गये थे। आपके दूसरे प्रोग्रामों के बारे में भी देश में मतभेद हैं। उनसे समस्या हल होगी ऐसा सब नहीं मानते हैं। लेकिन शान्ति-सेना का प्रोग्राम ऐसा है कि इसके लिए सम्पूर्ण लोकमत आपके साथ है। इसलिए हम इसको बढ़ावा देते हैं और इसमें अपनी ताकत लगाते हैं तो सर्वोदय-विचार की प्रतिष्ठा बढ़ती है। हमने जमीन बाँटी है तो कुछ प्रतिष्ठा पायी है। अम्बर चरखा निकला और उसका कुछ प्रचार हुआ। यद्यपि हम उससे समाधानकारक हल नहीं कर पाये हैं, लेकिन फिर भी उससे हमारी कुछ प्रतिष्ठा बढ़ी है। लोगों ने माना कि ये लोग दकियानूस नहीं हैं विज्ञान का भी सहारा लेते हैं। विकेन्द्रित योजना होनी चाहिए ग्राम स्वावलम्बी बनना चाहिए इत्यादि आपके जो विचार हैं, वे भी आज प्रतिष्ठित हुए हैं। ये जो दो-तीन प्रतिष्ठाएँ आपको मिली हैं वे हमारी ताकत देखते हुए कम नहीं मानी जायँगी। लेकिन उनसे जितनी प्रतिष्ठा हुई उससे बहुत ज्यादा प्रतिष्ठा सर्वोदय-विचार को तब होगी जब शान्ति-सेना का काम चलेगा।

जिन कारणों से अशान्ति पैदा होती है उन सब कारणों का निराकरण करने की ताकत हममें नहीं है। अभी पंजाब में झगड़ा चल रहा है, उसका मूल कारण मिटा सकने की शक्ति हममें नहीं है। चुनाव के समय विभिन्न पार्टियाँ एक-दूसरे के खासकर राज्यकर्ताओं के खिलाफ बोलकर कटुता पैदा करती हैं। जो पार्टियाँ जानती हैं कि उनका राज्य नहीं आनेवाला है, वे भी कटुता पैदा करती हैं। इसलिए चुनाव के समय पार्टीवाले जितनी कटुता पैदा कर सकते हैं करेंगे। उन लोगों का ढंग नमरीसा होता है। इस हालत में हम क्या कर सकते हैं? हम पंजाब का मसला हल करेंगे और वहाँ शान्ति होगी यह ताकत हममें नहीं है, इसलिए वह समस्या जारी रहेगी और हमें बीच में पड़कर मार खाना होगा। कुछ मसले ऐसे हो सकते हैं जिनमें सर्व-सेवा-संघ कुछ सोचकर अपने सुझाव पेश करे, जिसका असर सरकार और दूसरी पार्टियों पर भी हो सकता है। ऐसे मसलों को टालना नहीं चाहिए। लेकिन बहुत कठिन मसलों में हम कुछ नहीं कर पायेंगे यह भी समझना चाहिए।

प्रशिक्षण-योजना

शान्ति-सैनिकों के प्रशिक्षण के विषय में दो राय हो सकती हैं। कोई छोटे शिविरों की बात करता है तो कोई तीन या छह महीने के कोर्स की। दोनों की जरूरत है। विद्यालय की तालीम की भी और शिविरों की भी। सुव्यवस्थित अध्ययन की योजना हो तो कुछ सजे हुए कार्यकर्ता निकल सकेंगे। दस-पन्द्रह दिन की अल्पकालीन तालीम भी देनी पड़ती है। उसमें कार्यकर्ताओं की परख भी होती है और क्षेत्र में भेजने योग्य कौन है इसका पता चलता है। जो योग्य साबित नहीं होते, उन्हें अयोग्य ठहराकर निष्कासित नहीं करेंगे बल्कि विद्यालय में अधिक तालीम के लिए भेजेंगे। हमारे कुछ कार्यकर्ता बहुत पक्के हैं जिन्हें विद्यालय में जाने की जरूरत नहीं है फिर भी वे छोटे शिविरों में शामिल हों तो एक डिसिप्लिन बनेगी। सब छोटे-बड़े कार्यकर्ता शिविर में से गुजरे हैं यह होगा तो उसका अच्छा असर होगा।

पहुँचकर काम करना शुरू कर दें। शान्ति-सेना में हुक्म आते ही लोग फौरन उस स्थान पर पहुँच जायँ, इसका ध्यान लोगों को होगा तो फिर कामयाबी मिली। न मिली तो भी कोई हर्ज नहीं। जो-जो लोग फौरन पहुँच गये इस चीज का भी बहुत बड़ा असर होगा और लोगों को महसूस होगा कि शान्ति-सेना प्रत्यक्ष है।

चम्बल-क्षेत्र में ताकत लगानी चाहिए

चम्बल-क्षेत्र में डाकुओं ने अभिक्रम कर दिया। हमारे हाथ में अब अनुक्रम ही है। समस्या बनी ही है। वहाँ दो-दो सौ शान्ति-सैनिक पहुँच कर रचनात्मक काम करें तो शान्ति-सेना के लिए वह एक क्षेत्र पड़ा ही है। अगर वैसा हम नहीं करेंगे तो यही होगा कि हमने एक काम शुरू किया और छोड़ दिया। यानी शुरू करते ही भाग गये। हनुमानजी ने लंका में आग लगा दी और चले आये। आगे का काम रामजी ने किया। हम शान्ति की आग लगा दें, चिनगारी पैदा करें और उसके बाद उसे पुष्ट करने का काम न कर सकें, तो परिपोष करने की ताकत हममें नहीं है ऐसा कहा जायगा। इसलिए वह क्षेत्र आपके लिए खुला पड़ा है, वहाँ ताकत लगानी चाहिए।

मौका न खाइये

परमेश्वर की कृपा से आपके लिए और क्षेत्र खुलनेवाले हैं। इसलिए अब दूसरे कामों में थोड़ा अन्तराय—बाधा आये तो भी परवाह न करते हुए शान्ति-सेना के काम को बढ़ावा देना चाहिए और अपने-अपने स्थान की भक्ति रखते हुए भी आसक्ति छोड़कर शान्ति-सेना में शक्ति लगानी चाहिए। कवि ने कहा है 'देयर इज ए टाइड इन दी अफेयर्स ऑफ मैन'। जीवन में कभी-कभी ज्वार आता है! शक्ति नहीं लगाते हैं, तो मौका खायेंगे।

हमारी मर्यादाएँ

शान्ति-सेना की मर्यादाओं का जहाँ तक ताल्लुक है वे सीमित हैं।

इन्दौर में जो प्रयोग किया जा रहा है वह शायद इसके पहले कहीं नहीं हुआ था। ऐसे शहरों में जहाँ कहीं विशेष नेता पहुँचते वहाँ स्वाभाविक तौर पर कुछ जागृति रहती और कुछ काम होते थे। पं. मदनमोहन मालवीय के कारण काशी में, लोकमान्य तिलक के कारण पूना में और महात्मा गांधी के कारण अहमदाबाद में कुछ काम हुए। लेकिन वह एक विशेष स्थिति मानी जायगी। किसी व्यक्ति के प्रभाव के परिणामस्वरूप कुछ शहरों में और कहीं कुछ विशिष्ट संस्थाओं के जरिये कुछ आन्दोलन चले। सारे शहर में उसका व्यापक असर होता था लेकिन जीवन के एक अंश का ही सम्बन्ध उसमें रहता था। समग्र जीवन से सम्बन्ध रखकर एकाध शहर में प्रयोग करने की बात जब चली तो हमने बैंगलोर का नाम लिया। वहाँ पर कुछ काम चल रहा है लेकिन वह बहुत बड़ा शहर है। वहाँ दूसरे ही ढंग से काम होनेवाला है। वहाँ एक आश्रम बना है कुछ लोग शान्ति-सेना का काम करते हैं। अशान्ति के मौके पर उन्होंने कुछ काम किया है पर सुव्यवस्थित शान्ति-सेना अभी तक नहीं बनी। काशी में कुछ काम किया जा रहा है वह आरम्भमात्र है। इस दृष्टि से इन्दौर का प्रयोग शुद्ध रचना का ही प्रयोग माना जायगा। इसीलिए भिन्न-भिन्न पक्षों का नैतिक असर होता है जो सर्वमान्य है और जिनमें पक्षभेद की गुंजाइश बहुत कम है ऐसे काम हाथ में लेकर हम आगे बढ़ना चाहते हैं। इसीलिए सफाई का काम हमने लिया और अशोभनीय इश्तहारों को हटाकर उन स्थानों का सुशोभन और सद्विचारों से अंकित किया जाय, यह विचार हमने तय किया। इस प्रकार के और भी विचार किये जायेंगे।

शान्ति-सेना विद्यालय की बहुत ही जरूरत है। प्रशिक्षण-काल छह महीने, एक साल या डेढ़ साल का जो भी आप ठीक समझें, बनायें। विद्यालय के साथ प्रैक्टिसिंग स्कूल होना चाहिए यानी काम के साथ विद्यालय जुड़ा है, ऐसा होना चाहिए। वाराणसी में शान्ति-सेना विद्यालय खुले, तो वाराणसी को सर्वोदय नगर बनाने का काम उसको उठाना होगा। विद्यार्थी तालीम पाते हैं और साथ-साथ नगर में काम भी करते हैं, ऐसा होना चाहिए। फिर आप लम्बी तालीम देंगे, तो कार्यकर्ता तालीम पाते हुए भी देश के काम में आयेंगे। तालीम पाने के बाद वे देश के काम में आयें यह विचार ठीक नहीं है। इसलिए तालीम में सिर्फ 'थिओरिटिकल' हिस्सा नहीं रहेगा बल्कि 'प्रैक्टिकल' भी रहेगा।

शान्ति-सेना का संगठन

जिला, प्रदेश और अखिल भारतीय स्तरों के फंक्शन्स—कार्य अलग-अलग होंगे। मौके पर फौरन पहुँचना है, तो यह सारा कार्य जिलेवालों को अपनी अक्ल से करना होगा। असल काम का संगठन जिले के तौर पर या प्रादेशिक तौर पर होगा। शान्ति-सेना का साहित्य सबके पास पहुँचाना, सब की शंकाओं का समुचित उत्तर देना, रेफरेन्स का काम करना और जिले के काम की जानकारी कुल प्रदेश में पहुँचाना आदि कार्य प्रदेश को करना होगा। अखिल भारतीय स्तर पर एक सर्वसामान्य मार्ग-दर्शन करनेवाली जमात रहे और जहाँ-जहाँ वजनदार शब्द की जरूरत है वहाँ उस शब्द का उच्चारण उसके द्वारा हो। यह कार्य शान्ति-सेना-मण्डल करे। इन लोगों ने मत जाहिर किया है, मार्गदर्शन दिया है, उससे देश में विचारों में स्पष्टता आयी है, लोगों को भरोसा बना—ऐसा होना चाहिए। जहाँ-जहाँ अखिल भारतीय स्तर पर काम की जाँच करनी होगी, वह काम भी मण्डल को करना होगा।

इन्दौर —शान्ति-सेना मण्डल में
१०-८-६

नहीं है कि हम सदस्य रहेंगे। काम नहीं होता है तो सिर्फ देखते रहेंगे, बल्कि हम तो हर जगह दौड़े जायेंगे। लेकिन कोशिश हमारी यह होगी कि जल्द-से-जल्द यह काम अपने कन्धे से उतरे और दूसरे उसे उठावें। दूसरों के मजबूत कन्धों पर यह काम डालने की कोशिश हमारी होनी चाहिए। इस तरह हमें स्थानिक प्रयत्न से काम करना होगा। हमारा सिर्फ उपकार होगा। उत्तम कुशलता निरहंकारिता नम्रता जागरूकता और सतत प्रयत्नशीलता की जरूरत है।

समता में विवेक

जहाँ अनेक कार्यकर्ता इकट्ठे होते हैं वहाँ उनका सह-चित्त कैसे हो यह एक समस्या है। परस्पर मनोमालिन्य दुर्भाव, गलतफहमी, क्लेश आदि जो पैदा होते हैं वह न हो यह देखना होगा। अक्सर जब कोई झंझट खड़ी होती है तो हमारे चित्त की कमी के कारण। इसका उपाय चित्तवृत्ति-निरोध और चित्तवृत्ति शोधन ही है। इसके साथ-साथ एक बाहरी आयोजन भी हो सकता है। लोगों को यह ख्याल छोड़ देना होगा कि हम सारे बराबरी के हैं। हम आत्मना तो बराबरी के हैं लेकिन देह इन्द्रिय बुद्धि मन से बराबरी के नहीं हैं। आत्मना हम सब मानवों के ही नहीं बल्कि प्राणिमात्र के सबके भी बराबरी के हैं, यह दूसरी बात है। लेकिन देह मन और बुद्धि से देखा जाय तो हममें अन्तर है। हममें अलग-अलग बुद्धिवाले और अलग अलग शक्तिवाले भावनावाले लोग हैं। जो अधिक शक्तिवाले भावनावाले और अधिक विकसित हैं वे हममें श्रेष्ठ हैं इस बात को हमें समझना चाहिए। लेकिन इसका कोई विचार किये बिना आजकल हम ऐसी बात करते हैं कि हम सब बराबरी के हैं। इसमें अविवेक है। अभी जिस दृष्टि से समता का ख्याल कर रहे हैं वह गलत है। अध्यात्म से यह ठीक है।

स्वामी और सेवक की भूमिका

कभी कभी एक स्वामी होता है और दूसरा सेवक। सेवक को हमेशा

इन्दौर को परमधाम मानकर बाहर से कार्यकर्ता आयें

यहाँ पर हमने एक आश्रम बनाया है जिसका नाम विसर्जन आश्रम रखा है। यह एक नवीन आरम्भ है। यहाँ पर अनेक कार्यकर्ताओं को इकट्ठा किया जायगा। उसमें दो बातें ध्यान में रखनी होंगी। बाहर से जो कार्यकर्ता त्यागपूर्वक यहाँ आयेंगे उनको यहाँ आने में काफी त्याग करना पड़ेगा। अपने-अपने स्थान का उन्हें मोह छोड़ना होगा। वहाँ पर जो कार्य शुरू हुए हैं उनका त्याग करना होगा और अपरिचित स्थान में रहने से होनेवाली तकलीफें कबूल करनी होंगी। फिर भी अगर उन्हींके आधार पर काम खड़ा किया जाय तो इन्दौर की अपनी शक्ति बढ़ाने में कठिनाई होगी। जो कार्यकर्ता बाहर से आयेंगे उन्हें साफ कह दिया जाय कि उनको लौटना नहीं है। वे इन्दौर को परमधाम मानकर आयें— 'यद् गत्वा न निवर्तन्ते तद् धाम परमं मम।' इस तरह त्याग कर आनेवाले कार्यकर्ताओं को यहाँ बुलाया जाय जो सारे शहर को व्याप्त कर सकेंगे।

यहाँ पर काम करते समय और भी बातें सोचने की हैं जिनका आपकी चित्त-वृत्ति के साथ सम्बन्ध है। हमें निरन्तर काम करना होगा और पूरा का-पूरा श्रेय यहाँ के लोगों को मिले ऐसी निरहंकारिता से काम करना होगा। हम पीछे रहेंगे और यहाँवाले आगे रहेंगे इतनी ही बात नहीं है। हम आगे आयेंगे तो उन्हें साथ लेकर आयेंगे और यहाँ उसके परिणाममें जो सम्बन्ध है यहाँ सारी जिम्मेवारी यहाँ के नागरिक उठा रहे हैं और उन्हें यह भास हो रहा है कि सारा काम उन्होंने ही किया है ऐसा होना चाहिए। आपका तो उपकार होना चाहिए। उपकार याने अस्वकार्य गौण रूप से मदद। आपको उपकार के मूल अर्थ में यह काम करना है आधुनिक अर्थ में नहीं। उपकार का कोई अभिमान मन में न रहे। यहाँ के लोग काम कर रहे हैं और हम उन्हें गौण मदद कर रहे हैं ऐसा आपको लगना चाहिए। इसका मतलब यह

और वैसा हम सोचेंगे। इसीको सवानुमति कहते हैं। सर्वसम्मति और सर्वानुमति में कुछ अन्तर है। सर्वसम्मति हुई, तो सर्वोत्तम काम होगा। लेकिन हमेशा सर्वसम्मति नहीं होगी कुछ विमत रहेगा। उस विमत को पेश करने के बाद हम छोड़ देंगे और सर्वानुमति करेंगे। इसके लिए वातावरण खड़ा करना होगा। उसमें हमें किसी भावुक या अधिकारी की बात माननी होगी।

पारस्परिक अनुराग

यहाँ शासन शब्द का इस्तेमाल किया है। यह चीज तब हो सकती है, जब पारस्परिक अनुराग हो। जैसे शिवाजी और उनके साथियों या पैगम्बर और उनके पहले खलीफाओं में था। ईसा के प्रथम शिष्यों में था। ईसा के मरने के बाद उनके शिष्यों ने इस तरह कम्यून बनाये। उसमें सर्व-परित्याग करके वे रहते थे। उनमें जैसा पारस्परिक अनुराग था वैसा हममें होना चाहिए। हम अपने मुख्य व्यक्ति को सहज भाव से मानते हैं। हमने स्वेच्छा से यह स्थिति कबूल की है। मैंने आपको दो बातें कहीं स्थानीय आमिक्रम को मौका मिलना चाहिए और काम करनेवाले सेवकों में अन्योन्य अनुरागयुक्त तरतम भावबाली योजना बननी चाहिए। बड़े भाई की बात हमें माननी चाहिए, ऐसी छोटे भाई की भूमिका होनी चाहिए।

पैसे के साथ पिशाच

पैसे के साथ कुछ बातें आती हैं। हम नहीं चाहते कि आपके पास बहुत ज्यादा पैसा इकट्ठा हो। जहाँ पैसा आया वहाँ बैठ गया। जगह जगह काम में लग गया। फिर भी कुछ पैसा आपके पास आयेगा। इन दिनों विशेषतः जहाँ पैसा आता है वहाँ और भी बातें उपस्थित होती हैं। जिनका उपस्थित होना जरूरी नहीं है फिर भी होती है। यह एक दाक्षिण्य का कारण है। हम दरिद्री हैं इसलिए हमारे मन में कुछ भाव आते हैं। हममें से कुछ भाई खादी कमीशन में गये कुछ मंत्रियों में गये कुछ और

अपनी भूमिका पहचाननी चाहिए और स्वामी की सेवा में निरत रहना चाहिए। स्वामी को यह समझना चाहिए कि सेवक वास्तवतः मेरी बराबरी का है इसलिए जैसे मैं अपने सगे भाई या मित्र के साथ बरतता हूँ, वैसे इसके साथ बरतना चाहिए। उसके मन में यह नहीं होना चाहिए कि यह सेवक है और मैं स्वामी हूँ। इसकी बाबत योजना बनायी जा सकती है। मिलिटरी में कुछ ऐसी बातें होती हैं। वहाँ जनरल कमांडर, कैप्टन आदि होते हैं। जब मैंने कहा कि मैं सुप्रीम कमांडर हूँ, तो यह विचार एक बॉम्ब-शेल के जैसा लगा और हमारे साथी तीव्रता से उस पर सोचने लगे। क्योंकि मैंने अपने नाम से ही यह बात कही थी। *शासन-मुक्ति, कर्तृत्व-विभाजन आदि शब्दों की खोज करनेवाला स्वयं* खुद सुप्रीम कमांडर होने का दावा करता है, यह बात अनेक लोगों की समझ में नहीं आयी। लेकिन शांति-सेना में वैसे ही विभाग होंगे जैसे हिंसात्मक सेना में होते हैं। सोचने की बात है कि इसमें एक प्रकार का विरोध-सा भासता है। जब हमारे साथियों ने इस प्रकार के आक्षेप उठाये तो हमें अच्छा लगा।

आयुक्त अधिकारी की बात माननी होगी

हमारा सर्वोदय-नगर बनाने का जो काम चल रहा है वह शांति-सेना का चारित्रिक, भावात्मक पहलू है। इसलिए यहाँ हम चुनाव नहीं करेंगे बल्कि नियुक्ति ही करेंगे। हम नियुक्त और आयुक्त भी करेंगे। आयोग शब्द पुराना है। हम जिसकी नियुक्ति करेंगे उसके लिए आस्था, निष्ठा आवश्यक है। अपने कार्य के लिए, विचार के लिए निष्ठा होनी ही चाहिए, लेकिन उस व्यक्ति के लिए भी निष्ठा होना अपना कर्तव्य है यह कार्यकर्ताओं को समझना चाहिए। इसके अभाव में समूह में सेवा कार्य करना मुमकिन नहीं होगा। वहाँ विचार ही करना है कि आप काम का विभाजन कर सकें। वहाँ परस्पर विचार-विमर्श अवश्य करें, लेकिन अन्त में निर्णय किसी नियुक्त या आयुक्त पर सौंपना ही पड़ेगा

नहीं पड़ता या कम रहता है। हम त्यागी होने पर भी परस्पर अनुरागी न बनें, तो त्याग निंदित साबित होगा। व्यक्तिशः भले ही हमारी निंदा हो। उससे समाज का कोई खास नुकसान नहीं होगा। लेकिन त्यागत्व ही निंदित हो, तो समाज का बहुत नुकसान होगा जैसा इन दिनों हो रहा है। वैराग्य, त्याग, संन्यास आदि की निंदा इन दिनों की जाती है। बड़े बड़े लोग भी वैसा करते हैं। रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने कहा है कि वैराग्य हमारा साधन नहीं है। लोकमान्य तिलक ने संन्यास का निषेध किया और दूसरे कइयों ने त्याग को निंदित किया तो कइयों ने त्याग, वैराग्य, संन्यास आदि परम महान् तत्त्वों को निंदित किया। इससे बढ़कर समाज का दूसरा नुकसान नहीं हो सकता है। इसलिए हमारे व्यवहार से त्याग निंदित न हो, यह हमें देखना चाहिए और एक-दूसरे के साथ ठीक व्यवहार करना चाहिए।

त्यागी के मानी पूर्णतया पराश्रित

गृहस्थों से हमें ज्यादा नम्र बनना चाहिए। इसलिए कि हम परि पूर्णतया पराश्रित हैं। त्यागी का मतलब है, पूर्णतया पराश्रित। मेरे हरी की चिन्ता दूसरों को करनी पड़ती है। मेरे निवास की भी चिन्ता दूसरों को करनी पड़ती है। मेरे त्याग का मतलब वास्तव में दूसरों का त्याग है। उन्हें ही मेरे लिए आयोजन, चिन्ता और त्याग करना पड़ता है। मैं अपनी चिन्ता अपने सिर पर उठाता तो जितनी कर सकता उससे बहुत ज्यादा चिन्ता लोग मेरे लिए करते हैं। इस तरह त्यागी का मतलब है पूर्णतया पराश्रित व्यक्ति।

हम बोलते भी हैं कि हम सर्वजनाधारित होंगे। इस तरह हम निष्ठा से सर्वजनाधारित बनने की बात करते हैं, आत्माधारित बनने की बात नहीं करते हैं। हम नम्र नहीं बनेंगे तो नमकहराम बन जायेंगे। हम सबका नमक खाते हैं। एक नौकर एक मालिक का नमक खाता है, तो उसके सामने नम्र बनता है। हम सर्वजनाधारित लोग हरएक का

स्थानों में गये। उनका सांसारिक जीवन हमसे कुछ अधिक निश्चिन्त है, तो हमें खुशी होने के बजाय मत्सर होता है। वास्तव में हमें खुशी होनी चाहिए। एक परिवार के पाँच भाइयों में से एक को अच्छी नौकरी लगी, तो दूसरे भाइयों को या माँ को मत्सर नहीं मालूम होता, बल्कि यह लगता है कि हममें से एक की निश्चिन्त व्यवस्था हुई, यह अच्छा ही है। ऐसा लगने के बजाय हममें से एक क्यों निश्चिन्त है, यह विचार हम लोगों के मन में आता है। यह हीन विचार है और आश्चर्य है कि यह हीन विचार होते हुए भी श्रेष्ठ विचार माना जाता है। यह हीन ही माना जाय तो कम-से-कम बुद्धि में भ्रम नहीं होगा। इससे कोई काम नहीं बन सकेगा। यह बात ध्यान में रखने का मौका अब आया है। पैसा आये, तो उसके साथ विलास न आये। मत्सर वह आता है। लेकिन हम सावधानी से रहें जिससे कि वह न आ सके।

त्याग की निंदा से समाज का नुकसान

त्यागाहंकार बहुत बड़ा अहंकार होता है। हममें से बहुत से लोग त्यागी होते हैं। भोगी यहाँ पर आयेंगे कहाँ? क्योंकि यहाँ भोग का अवकाश ही नहीं है। उनके क्षेत्र दूसरे हैं। इस क्षेत्र में भोगियों का प्रवेश ही नहीं है, इसमें त्यागी ही आते हैं। लेकिन त्यागियों को अभिमान होता है और उसके कारण एक त्यागी का दूसरे त्यागी से बनता नहीं। एक ब्रह्मचारी का दूसरे ब्रह्मचारी से बनता नहीं। एक संन्यासी का दूसरे संन्यासी से और एक योगी का दूसरे योगी से बनता नहीं है। एक गृहस्थाश्रमी का दूसरे गृहस्थाश्रमी से फिर भी चाहे बने या न बने लेकिन बनने की कई मिसालें हैं। लेकिन त्यागियों का एक-दूसरे से बना हो, ऐसी मिसालें अक्सर नहीं मिलती हैं। गृहस्थाश्रमी लोग त्यागी न होने के कारण उनमें त्यागाभिमान प्रवेश नहीं करता है, इसलिए वे उतने अंश में सुरक्षित रहते हैं। जितने अंश में वे भोगपरायण रहते हैं उतने अंश में खतरे में रहते हैं। त्यागाभिमान में बहुत बड़ा खतरा है। यह बातों पर

एक जमाने में हिन्दुस्तान में लोग नगरों और ग्रामों के बाहर जंगलों के नजदीक आश्रम आदि की स्थापना करते थे—विद्यार्थियों को तालीम और नागरिकों की तालीम के लिए, खासकर आध्यात्मिक शिक्षण के लिए। आश्रम जंगलों के नजदीक रहते थे। वहाँ जाकर जो भाई काम करते थे, वे वानप्रस्थ कहलाते थे। साधारणतया हमारे यहाँ जो अनुभव आये उन अनुभवों के आधार पर एक सुन्दर सामाजिक रचना हमारे पूर्वजों ने की जिससे कि संयम की मात्रा हमेशा जीवन में कायम रहे और मनुष्य का जीवन उत्तरोत्तर विकसित हो, तमोहीन न हो।

वृद्धों से आशा

जैसे-जैसे मनुष्य वृद्ध होता जाता है वैसे-वैसे कुछ शारीरिक कमजोरियाँ आती हैं। बीमारी आने की तो कोई जरूरत नहीं है। यह जरूरी नहीं कि मनुष्य बूढ़ा हो तो बीमारी होनी चाहिए। इन दोनों का कोई सम्बन्ध नहीं है। अच्छा आरोग्यवान् वृद्ध पुरुष हो सकता है और बीमारी होती है तो जीवन के कुछ दोष के कारण होती है। वृद्धावस्था में शरीर कुछ कमजोर होना लाजिमी है। आरोग्य के साथ शरीर कुछ कमजोर हो सकता है। लेकिन शरीर की कमजोरी के साथ अगर बुद्धि की कमजोरी आयी तो समझना चाहिए कि कहीं-न-कहीं बहुत बड़ी गलती हमने की है, हमारा जीवन जीने का तरीका कुछ गलत हुआ है। अगर जीवन जीने का सही तरीका बने, तो बुढ़ापे में उत्तरोत्तर ज्ञान-शक्ति, ध्यान-शक्ति, चिन्तन-शक्ति बढ़नी चाहिए, घटनी नहीं चाहिए और वृद्ध पुरुष जवानों के लिए बहुत बड़ा आकर्षण-स्थान बनना चाहिए। एक रेफरेन्स बुक जिसमें जितने भी अनुभव हम पाते हैं उन अनुभवों को

नम्र बनेंगे, तो हमें हरएक के सामने सिर झुकाना होगा। हमारी नम्रता व्यापक होनी चाहिए, क्योंकि हमने सबका आधार लिया है। नौकर को एक मालिक का ही आधार होता है, इसलिए वह उसीके सामने नम्र बनता है। हमें सबके सामने नम्र बनना चाहिए। दृष्टि-शोधन के लिए यह जरूरी है।

हमारे यश अपयश के साथ सर्वव्यापक यश अपयश

हमारा यह प्रयोग दूसरों के लिए मार्गदर्शक होनेवाला है। इसके यश से सबको बल मिलेगा और इसके अपयश से सबकी कुछ निराशा भी हो सकती है। हमारे दूसरे साथी जो दूसरी जगहों पर काम करते हैं, वे सोचेंगे कि बाबा ने इन्दौर का नाम लिया और यहाँ पर मनुष्यों को बुलाया। बाबा खुद यहाँ एक महीना रहा। इतना सब होने पर भी अगर यहाँ अपयश आता है, तो वह अपयश का सिक्का सब पर ठोका जायगा। कुछ साथियों के चित्त पर यह अपयश अंकित होगा। फिर भी कुछ साथी उत्साह से आगे बढ़ेंगे और सोचेंगे कि बाबा ने कम प्रयोग किये हैं, तो हम ज्यादा करेंगे। लेकिन अक्सर साथियों के चित्त कमजोर पड़ेंगे, इसलिए हमारे यश और अपयश के कारण सर्वव्यापक यश या अपयश जुड़ा हुआ है। इसका ख्याल हमें करना होगा।

इन्दौर —कार्यकर्ताओं से
१०-८-'६०

की चीजों पर जो भार दिया जा रहा है, उसके बजाय साइन्स पर भार दिया जा सकता है। क्या गणित विद्या सिखाना आवश्यक है? वह जीवन में सिखायी जा सकती है। साइंस का जीवन में प्रवेश होगा, सिनेमा आदि पर नियन्त्रण होगा, समाज में लोकमत होगा, तो आज जो गृहस्थाश्रम का पैमाना ४ साल का है (यह करीब १८ से ५८ साल भी अगर हम मान तो चालीस साल का पैमाना होता है।) यह हम २५ से लेकर ४५ तक का बना सकते हैं। यह २ साल का हो सकता है। ऐसा होने से जन-संख्या की वृद्धि भी उतनी मात्रा में कम हो जायगी। यह उपाय हम कर सकते हैं।

गृहस्थाश्रम की प्रतिष्ठा

मैं सोचता हूँ कि क्या कारण है कि अच्छे माता-पिता के पुत्र अच्छे नहीं निकलते, उनके गुणों का विस्तार नहीं होता। बहुत बड़े-बड़े पुरुषों के पुत्र कुछ अनुकूल नहीं दीखते। हम कार्यकर्ताओं में और छोटे-छोटे लोगों में भी देखते हैं कि बाप है किसी गुण का और पुत्र निकला किसी गुण का। असल में ऐसा नहीं होना चाहिए। परम्परागत उनके जो कुछ गुण होते हैं वे बच्चे को मिलने चाहिए; उन गुणों की कुछ वृद्धि होनी चाहिए। लेकिन होता क्या है? एक आदमी गया तो उसकी जगह लेने के लिए दूसरा नहीं मिलता। कहीं तक यह लगता है कि फलाना आदमी गया, तो एक शून्यता मालूम हुई और उसकी पूर्ति नहीं हुई। यह इसलिए होता है कि गृहस्थाश्रम प्रतिष्ठित नहीं है। उसकी अगर प्रतिष्ठा होती और ठीक-ठीक गृहस्थाश्रम होता तो गृहस्थ का धर्म और कर्तव्य है कि वह अपनी सन्तान—पुत्र और कन्याएं समाज के लिए योग्य बनाकर दे। यह एक धर्म-कार्य, समाज-सेवा कार्य है और उसका एक प्रतिष्ठित आधार है। इस दृष्टि से देखा जाय, तो गृहस्थाश्रम के जरिए उत्तरोत्तर गुण-वृद्धि हो सकती है। 'पुत्रं अनुशिष्टं लोक्यमाहुः'—अनुशिष्ट पुत्र समाज को अर्पण करते हैं तो पिता को पारमार्थिक गति भी अच्छी मिलती है। [illegible]

जानकारी हमें गुरुओं के पास जाकर लेनी चाहिए। इसलिए हमारे यहाँ ज्ञान-प्रक्रिया का जहाँ वर्णन आया है, वहाँ 'सर्वं गुरूपसेवया' कहा है। जो गुरुओं का आश्रय करते हैं या गुरुओं की सेवा करते हैं उनको ज्ञान मिलता है। गुरु तो ज्ञान के भण्डार हैं। यह आस्था गुरुओं के लिए हमारी संस्कृति में थी।

गलत तरीकों का उपयोग

इन दिनों हिन्दुस्तान की जनसंख्या कुछ बढ़ रही है। अब आबादी बढ़ना कुछ भय पैदा करता है। लेकिन संयम का उतना भय नहीं है। मनुष्य अगर विलासरत रहा, उसका जीवन भोगमय रहा तो उसमें क्षीणता आती है, चिन्तन-शक्ति में क्षीणता आती है और मानव-जीवन निस्सार बनता है, यह शोचनीय विषय है। लेकिन आबादी भी अगर बढ़ती चली जाए तो जमीन का टुकड़ा भी कम पड़ेगा और जीवन मुश्किल हो जायगा। इसलिए इन दिनों कोशिश होती है कि भोग-साधन भोग-वासना तो भले ही कायम रहे लेकिन बाहरी कुछ आयोजन ऐसे हों जिनसे संतान की संख्या न बढ़े। ऐसे बाह्य आयोजनों का बहुत ज्यादा बोलबाला है खासकर शहरों में। कुछ देहातों में भी जा रहा है। यह हम एक बहुत ही बड़ी चीज करने जा रहे हैं जिसका नैतिक आध्यात्मिक और सामाजिक असर क्या होगा इसका हमको ख्याल नहीं है। सरकार की ओर से उत्तेजन दिया जा रहा है। यह आध्यात्मिक नैतिक और सामाजिक दृष्टि से भी खतरनाक तरीका है।

संयम की मात्रा में वृद्धि

जीवन में संयम की मात्रा बढ़े इसकी कोशिश होनी चाहिए। निरन्तर संयम की ओर समाज का झुकाव रहे। यह कतई मुश्किल चीज नहीं है। जो लोग अपने जीवन में संयम नहीं रख सकते हैं वे अपने आपको असमर्थ मानते हैं। "उनके गृहस्थ जीवन में क्या संयम का नियम नहीं हो सकता ? आहार के सुधार का नियम नहीं हो सकता ? इन सब

अपना अनुभव एक श्लोक में बता दिया : 'न जातु कामः कामानाम् उपभोगेन शाम्यति। हविषा कृष्णवर्त्मेव भूय एवाभिवर्धते।' कामों के उपभोग से कामशक्ति कम नहीं होती। घी से जैसे अग्नि बढ़ती है वैसे वह बढ़ती चली जाती है। भले शक्ति घट जाय इच्छा बढ़ती ही रहती है। इसलिए उसको तोड़ना ही होता है। वैवस्वत स्वायंभुव मनु की कहानी तुलसीदासजी ने रामायण में दी है कि 'माथ बढ़े मन'— उसका बुढ़ापा आया लेकिन विषय-वासना मिटी नहीं। मनु की भी वासना नहीं मिटी। उसने क्या किया? 'राज्य सुतहि दीन्हा।' राज्य अपने पुत्र को सौंप दिया और 'बरबस गमन बन कीन्हा।' वन में जबरदस्ती से प्रवेश किया। यह तुलसी-रामायण का शब्द है। इस तरह से अपने ऊपर अपनी इन्द्रियों पर, मन पर जबरदस्ती करने का अधिकार पुरुष को होता है उसका उपयोग किया और वन में चले गये। सारांश यह कि विषय-वासना ऐसे ही छूटेगी और उसमें से हम छूटेंगे ऐसा मानना बिल्कुल ही गलत है।

विषय-वासना की एक मर्यादा होनी चाहिए। इसके लिए जब लोकमत होता है, तब वह होता है। और जिन्होंने यह वानप्रस्थाश्रम की कल्पना निकाली उन्होंने इस विषय में लोकमत बनाया था। लेकिन वह लोकमत आज टूट गया वानप्रस्थाश्रम खतम हो गया। गृहस्थाश्रम की प्रतिष्ठा गयी। ब्रह्मचर्य की क्या प्रतिष्ठा है यह तो इन्दौर में दीवारों पर लगे हुए इश्तहारों से जाहिर होता है। इस तरह से न गृहस्थ-धर्म न वानप्रस्थ-धर्म न ब्रह्मचर्य है। ऐसी हालत में जो समाज रहता है वह कैसे आगे बढ़ेगा? यह सोचनीय बात है। इसलिए वानप्रस्थ की प्रतिष्ठा करनी चाहिए।

मित्र को दीक्षा

मेरे मन में यह विचार पचीस-तीस साल से चल रहा है। कुछ मित्रों को मैंने दीक्षित भी बनाया है। अपने एक मित्र की कहानी आपको

सन्तान निर्मित होने से पिता का उद्धार नहीं होता। अनुरूप पुत्र होने पर उद्धार होता है। आज तो बहुत बड़े अच्छे-अच्छे मनुष्यों के पुत्र बेकाम हैं, बेकार हैं। माता-पिता के गुणों की ओर दृष्टि नहीं करते। यह इसलिए होता है कि आज गृहस्थाश्रम की कोई प्रतिष्ठा नहीं है। गृहस्थाश्रम एक व्यवस्थित आश्रम है उसका मान नहीं है। उपनिषदों ने गृहस्थों का वर्णन किया है : 'कुटुम्बे शुचौ देशे। स्वाध्यायमधीयानः'—कुटुम्ब में पवित्र स्थान बनाया हुआ है और वहाँ स्वाध्याय कर रहे हैं और अपने पुत्रों और समाज को धार्मिक बनाते हैं—'धार्मिकान् विदधत्'। अहिंसक सर्वभूतानि यह कथन है। सबको धार्मिक बनाना यह गृहस्थ का एक कर्तव्य माना गया है। अन्यथा गृहस्थाश्रम का उपयोग ही क्या?

गृहस्थाश्रम का विधिपूर्वक विसर्जन

अगर यह माना जाय कि बड़े-बड़े नेता सेवा-कार्य करते हैं लेकिन पुत्र-उत्पत्ति होने के बाद काम की गति आगे नहीं बढ़ती है तो एक एक्सीडेण्ट हो गया। माने गृहस्थाश्रम धर्म-भावना कर्तव्य-भावना नहीं थी ऐसा उसका अर्थ होगा। यह नहीं होना चाहिए। हमारे सामने एक आदर्श होना चाहिए कि इतने-इतने वर्षों के बाद हम गृहस्थाश्रम से निवृत्त होंगे। जैसे विधिपूर्वक गृहस्थाश्रम का स्वीकार करते हैं वैसे ही विधिपूर्वक गृहस्थाश्रम का विसर्जन होना चाहिए। उससे विषय-वासना से मुक्त होते हैं गृहस्थी की चिन्ता से मुक्त होते हैं। सारी चीजें घर के बाल-बच्चों पर सौंप दो।

विषय-वासना को काटना पड़ता है

विषय-वासना से मुक्ति सहज ही मिलेगी ऐसे भ्रम में जो रहता है, वह स्वयं अपनी कब्र खोदता है, ऐसा महाराजा ययाति ने कहा है। वे बूढ़े हो गये थे लेकिन वासना-तृप्ति नहीं हुई थी। इसलिए उन्होंने अपने बच्चे से जवानी माँगी। बच्चे ने दे दी। जवान होकर बुढ़ापा भोग भोगा लेकिन फिर भी उनकी तृप्ति नहीं हुई। फिर महाराज ययाति ने

वह प्रोफेसर १५ २ सालों से गणित सिखाते गये, इसलिए एक यन्त्र बन गये। हमारा पहला ही पीरियड गणित का होता था। भोजन करने के बाद क्लास होता था। प्राचीनकाल में तो प्रातःकाल में विद्या सिखायी जाती थी। लेकिन अब तो खा-पीकर विद्या सिखायी जाती है। इसलिए उनको नींद आती थी। एक दिन मैंने एक सवाल पूछ लिया। सुनते ही वे चौकन्ना हो गये। उन्होंने कहा कि ऐसा सवाल तो मुझे अब तक किसीने नहीं पूछा था। इसका जवाब मैं कल दूँगा। प्रामाणिकता से उन्होंने सुनाया कि तुम समझते होगे कि मैं बहुत जागृति के साथ सिखाता हूँ लेकिन ऐसा नहीं है। सिखाते-सिखाते मुझे नींद आती है। इतने सालों से मुझे इतनी आदत हो गयी कि मैं नींद में भी गणित सिखाता रहा। लेकिन अभी आपने जो सवाल पूछा उसका जवाब मैं कल दूँगा। सारांश, आदत से विकास नहीं होता।

पराक्रम के नये-नये क्षेत्र

कितने उत्साह से ऋषि गृहस्थाश्रम का स्वीकार कर रहे हैं। याने विधिपूर्वक, विद्या समाप्त करके गुरु के पास से आज्ञा लेकर अब वह गृहस्थाश्रम में प्रवेश करनेवाला है। इसका एक सूक्त है 'ममाग्ने वर्चो विहवेष्वस्तु —हे अग्ने संग्रामों में, युद्धों में मैं यशस्वी होऊँ। गृहस्थाश्रम को युद्ध-क्षेत्र मानता है। वयं त्वेन्धानास्तन्वं पुषेम —तेरी सेवा करते हुए हे अग्निदेव हम अपने शरीर को परिपुष्ट बनायेंगे। 'त्वया ध्यक्षेण पृतना जयेम'—तेरी अध्यक्षता में सेनाओं को जीतेंगे। और फिर कहता है—'मह्यं नमन्तां प्रदिशश्चतस्रः'—ये चारों दिशाएँ मेरे सामने झुकेंगी। ऐसी हिम्मत वह कर रहा है। नये-नये शास्त्रों में, विद्या के नये-नये क्षेत्रों में जाऊँगा और विजय प्राप्त करूँगा ऐसी हिम्मत के साथ वह गृहस्थाश्रम में प्रवेश करता है। कालिदास ने लिखा है :

> 'शैशवेऽभ्यस्तविद्यानां यौवने विषयैषिणाम्।
> वार्धके मुनिवृत्तीनां योगेनान्ते तनुत्यजाम्॥

पछताता हूँ। मेरे मित्र ने जाहिर किया कि हम पति-पत्नी वानप्रस्थ बनेंगे और विषय-वासना से मुक्त रहेंगे। उन्होंने अपना अनुभव बताया कि यह चीज कठिन है। कोशिश करने पर भी कभी-कभी वासनाएँ उमड़ती हैं। *मैंने कहा, आपकी श्रद्धा पाठ और विधि पर तो होगी!* उन्होंने 'हाँ' कहा। विधिपूर्वक गृहस्थाश्रम की जो दीक्षा ली थी विधिपूर्वक ही उसका विसर्जन करना चाहिए—अनेक लोगों की उपस्थिति में। अनेक लोगों को बुलाया गया और मंत्रयुक्त विधि से गृहस्थाश्रम का विसर्जन किया गया। उसके बाद उन्हें कुछ शान्ति मिली।

विज्ञान की मदद

अनेक लोगों को लगता है कि वे सर्वोदयी साइंस के दुश्मन होंगे लेकिन अगर आज साइंस पर किसीका हक है, तो वह सर्वोदयवालों का ही है। इसके बजाय हिंसा में माननेवाले लोगों के हाथ में साइंस आ जाय तो दुनिया का खात्मा ही हो जाय। इसलिए अहिंसा के साथ *साइंस का जुड़ना बहुत ही जरूरी है। मेरी जितनी श्रद्धा अहिंसा पर है* उतनी ही साइंस पर है। साइंस ज्ञान देता है हरएक विषय का। यह क्या चीज है, ब्रह्मचर्य क्या चीज है, यह साइंस बताकर, अच्छी तरह से समझायेगा। इस तरह से अगर शास्त्रीय दृष्टि और उपयोग होगा तो वासना पर अंकुश रखना सहज बात हो जायगी। फिर जीवन का जो आनंद है उसका जैसे-जैसे अनुभव आयेगा वैसे-वैसे इसका ख्याल मनुष्य को आयेगा और एक सुन्दर अवस्था बनेगी। उसके बाद हमें वानप्रस्थ सेवक मिलेंगे।

आदत से विकास का अभाव

इसलिए पूर्वजों की योजना यह थी कि जहाँ थोड़ी अवस्था कम हुई, वहाँ भोग छोड़ देने चाहिए। फिर उससे ऊपर के आश्रम में जाना चाहिए ताकि नये अनुभव आयें। एक हमारे प्रोफेसर थे। वे हमें गणित सिखाते थे। गणित की तो कोई टेक्स्ट बुक होती नहीं बदलती नहीं है।

इस ज़माने में बहनों के लिए एक बात सोचने की है। आजकल अक्सर कहा जाता है कि समाज में सन्तान की आवश्यकता कम है इसलिए सन्तति-नियमन करो। यह बात सही है। ऐसी हालत में आज बहनों को सोचना चाहिए कि वह तो एक बहुत बड़ा काम करती थीं— सन्तान-निर्मिति का जिसमें पुरुष का जो हिस्सा होता है उससे सौगुना हिस्सा स्त्रियों का होता है। इसमें कुछ भी आनन्द नहीं है ऐसी बात नहीं है लेकिन फिर भी काफी कष्ट भोगना पड़ता है। उस कष्ट को ही आनन्द मानकर बहनें उठा लेती हैं। गर्भारम्भ से लेकर लगभग समाप्ति तक की चिन्ता बहन ही करती हैं। घर में सारा काम बहनों को ही उठाना पड़ता है। इसमें कोई माने कि बहनों का बड़ा सुख-लाभ होता है तो यह गलत है।

माँ का वैराग्य

मैं अपनी माँ का अनुभव कहता हूँ। बचपन में मुझमें वैराग्य लक्षण दीख पड़ते थे। माँ कहती थी कि मैं पुरुष होती तो दिखा देती कि आखिर वैराग्य कैसा होता है! उसमें वैराग्य की मात्रा बहुत थी लेकिन वह वैराग्य उस रूप में प्रकट नहीं होता था जिस रूप में पुरुष का वैराग्य प्रकट होता है। उसका वैराग्य घर के अन्दर दब जाता था। माँ का वह वाक्य मुझे बार-बार याद आता है।

अब बहनों को सोचना है कि इतना कठिन कार्य का जिम्मा हम उठाती हैं फिर भी सन्तान की अगर समाज को जरूरत नहीं है तो हम ऐसा काम क्यों उठायें! हम अपने त्याग को दूसरी दिशा में ले जायें। बहनों का जीवन त्यागमय होता है। भले ही वे संसार-मग्न हों लेकिन

—बचपन में विद्या का अध्ययन किया था और युवावस्था में पराक्रम के विषय में आगे क्षेत्र में पहुँचने की हिम्मत थी थी। तो नये-नये विषय सीख लेना है। जीवन के क्षेत्र नये-नये पड़े हैं, उनको सीख लेना है। वह गृहस्थाश्रमी ऐसे पराक्रम के प्रांगण में कूद पड़ता है और फिर वह मन्त्र-विधि धारण करता है और बुढ़ापा आने पर फिर विसर्जन करता है। वह गृहस्थाश्रम का त्याग रोग से नहीं योग से करता है।

इन्दौर में चिनगारी

इस तरह से जब गृहस्थाश्रम आदि धर्मों की प्रतिष्ठा होती है, तो वानप्रस्थ की भी प्रतिष्ठा होगी। ऐसे वानप्रस्थ-सेवकों की इन्दौर में कमी क्यों होनी चाहिए! उन्होंने काफी काम किया है बच्चों के लिए। उन्हें चाहिए कि अब वे सारा घर का भार बच्चों पर सौंपें और ग्राम की सेवा करें। लेकिन आज मुश्किल से तीस-चालीस लोग मिलते हैं सेवा के लिए। बाकी के लोग सरकार की नौकरी में जाते हैं। समाज की सेवा के लिए वानप्रस्थों की जरूरत है। यहाँ के नौकरी-निवृत्त लोगों ने अब यह मान्य किया है। वे सेवा-प्राप्त हुए और नौकरी-निवृत्त हुए। उन्होंने अपना एक निश्चय कर लिया और वानप्रस्थ-मंडल बनाया। सेवा भी शुरू की। मैं आशा करता हूँ कि जो चिनगारी यहाँ पैदा हुई है वह सब दूर फैलेगी और तेजस्वी बनती जायगी।

इन्दौर —प्रार्थना-प्रवचन
१४-८-६

से बची जाय। इस तरह अशान्ति के मौके पर अपने स्थान की शान्ति का जिम्मा भी बहनें उठायें यह हम उनसे आशा करते हैं। बिना संयम के यह सम्भव नहीं है। हम अपने शरीर पर विकारों का हमला नहीं होने देंगी जीवन में संयम रखेंगी ऐसी दृढ़ प्रतिज्ञा किये बिना बहनें स्थानिक शान्ति का जिम्मा उठा नहीं सकतीं।

ब्रह्मचर्य-साधना

सर्वोदय-पात्र का काम एक मध्यम सेवा करने से किया जा सकता है। लेकिन अपने स्थान की शान्ति का जिम्मा उठाने की बात ब्रह्मचर्य साधना से आती है। दक्षिण अफ्रीका में गांधीजी के मन में ब्रह्मचर्य की कल्पना कैसे आयी इसकी तरफ ध्यान देना होगा। सन् १८९७ में उनका ब्रह्मचर्य की ओर जोरदार झुकाव था। लेकिन उन्होंने सन् १९०७ में आखिरी तौर पर ब्रह्मचर्य की प्रतिज्ञा की। इस बार के समय उन्होंने बखार में जख्मी सिपाहियों की सेवा का काम उठाया था। उस समय उन्होंने सोचा कि इधर मैं अपना परिवार बढ़ाता रहूँ और उधर सेवा का जिम्मा लूँ ये दो बातें एक साथ नहीं बन सकतीं। इसलिए ब्रह्मचर्य की प्रतिज्ञा लेनी होगी। लेकिन आखिरी निश्चय करने में काफी समय लगा। इस वृत्ति का परिपोष बहनों में होना चाहिए। लेकिन इस विषय में कोई सोचता ही नहीं है। आज के लोग इतना गहरा चिन्तन करते हैं कि फिर बीच से क्या होगा इस पर सोचते ही नहीं हैं। समाज के सामने दुनियावी चीजें नहीं रखते हैं जिससे वे चीजें आँखों से ओझल हो जाती हैं। इस विषय में मुझे यह जाहिर करने में संकोच नहीं है कि गुजरात की कन्याओं में इस विषय में ज्यादा जागृति है। इसका दुनियावी कारण यह भी हो सकता है कि जैन धर्म का गुजरात पर बहुत असर पड़ा। आधुनिक युग में गांधीजी का प्रभाव भी एक कारण हो सकता है।

चित्त-शुद्धि और दृष्टि-शुद्धि

अभी हमने सुना यहाँ कि अहमदाबाद नागपुर जैसे शहरों से

गांधीजी ने तो बहनों के लिए 'त्यागमूर्ति' शब्द इस्तेमाल किया था, वो मुझे जँच गया है। थोड़ी-सी भोगपरायण बहनों को छोड़ दीजिए, लेकिन जो घर में काम कर रही हैं उन सबका जीवन त्यागमय ही होता है। इतना त्याग वह करती हैं फिर भी समाज सोचता है कि ज्यादा सन्तान की जरूरत नहीं है। इसलिए यह बात बहनों के ध्यान में आनी चाहिए कि हम ऐसे व्यर्थ प्रवास में न पड़गी जिसकी समाज को जरूरत नहीं है। समाज को ज्यादा सन्तान नहीं चाहिए तो हम त्यागमय संयमी जीवन बितायेंगी। भोग में क्यों पड़ना चाहिए? भोग में पड़कर दूसरे तरीके से सन्तान-निरोध करने की बात बिलकुल बेमतलब की बात है।

संयम और समाज-सेवा की प्रेरणा

समाज को जब संतान की जरूरत नहीं है तो बहनों को सूझना चाहिए कि हम सीधी आत्मविद्या के आधार पर समाज-सेवा करेंगी जिससे हमारे त्याग का बेहतर फल मिलेगा। पवनार में हम कुओं खोदते थे, तो पहले मुलायम मिट्टी आयी जिसमें मामूली औजारों से काम चला। फिर पत्थर आया तो सूक्ष्म औजार इस्तेमाल करने पड़े। इसके बाद चट्टान आयी तो सुरंग की जरूरत पड़ी। हम उत्तरोत्तर गहराई में जाते हैं तो सूक्ष्म, सूक्ष्मतर जाना ही पड़ता है। नहीं तो पानी कैसे मिलेगा? जिस स्तर में भूदान-आन्दोलन शुरू हुआ उसमें यदि हम गहरे नहीं जाते हैं तो पानी नहीं मिलेगा। पानी की खोज के लिए सूक्ष्मतम औजारों की जरूरत रहती है। इस तरह जो बहनें गृहस्थाश्रमी बन चुकी हैं उन्हें संयम की प्रेरणा हो और जो क्वारी हैं, उन्हें आत्मविद्या के आधार पर समाज-सेवा की प्रेरणा हो। यह दोहरी प्रेरणा होगी तब शान्ति-सेना की शक्ति प्रकट होगी। संयम के अभाव में शान्ति-सेना का काम सम्भव नहीं। जिस बहन ने शान्ति-सेना का काम उठाया है, वह भी अपने बच्चे को स्तन-पान करा रही है, इतने ही में फोन आया कि कहीं दंगा हुआ है। उस हालत में यह नामुमकिन है कि वह वहाँ

पर पातिव्रत्य-रक्षा की जिम्मेवारी है। लफंगों को रोकना स्थूल कार्य है। बहनों का मुख्य कार्य समाज में पातिव्रत्य-रक्षा का हो। यह काम बहनें करें, तो समाज बचेगा। अन्यथा उत्तरोत्तर गर्त में जायगा। फिर हम कितनी भी कोशिश करें तो भी शान्ति नहीं रह सकेगी।

असम की घटना

असम में बंगालियों के खिलाफ भावना है। उसमें यह सुना कि स्त्रियों पर भी अत्याचार हुए। मैं सोचता रहा कि इसकी क्या जरूरत थी? बंगालियों को हटाना उनको कत्ल करना भी समझ में आता है लेकिन स्त्रियों पर अत्याचार क्यों होने चाहिए? विचार से कभी अत्याचार नहीं होते। वहाँ विचार नहीं था पशु-वृत्ति प्रकट हो रही थी। लेकिन असम की बहनों में इसके लिए अन्दर से क्षोभ क्यों नहीं पैदा होना चाहिए? बंगाली बहनें हमसे अलग हैं ऐसा क्यों महसूस होना चाहिए? असम की बहनों में अन्दर से इसके खिलाफ आवाज नहीं उठती है क्योंकि बहनों को घर में फँसाया गया है। पुरुष अपने भोग के लिए उन्हें इस्तेमाल करते हैं। इसलिए उनके मन में ऐसी चीजों का प्रतिकार करने के लिए तीव्र भावना नहीं पैदा होती है।

बहनों का खास काम शान्ति-रक्षा और शील-रक्षा

सारे भारत में शान्ति-सेना का काम फैलाने का जिम्मा बहनें उठायें। वे जगह-जगह घूमें और विचार समझायें। बहनों को ही इस आन्दोलन को उठा लेना चाहिए। मुझे यह सुनने में शर्म मालूम हुई कि अहमदाबाद में पढ़ी-लिखी बहनें अकेली नहीं जा सकतीं। उनके माता-पिताओं को खतरा मालूम होता है। पढ़ी-लिखी बहनों में ही इतना भय रहे और उन्हें उठायें यह सारा असभ्य मालूम होता है। बहनों में यह भावना पैदा होनी चाहिए कि इसका प्रतिकार करती हुई हम मर-मिटेंगी। शान्ति-रक्षा और शील-रक्षा बहनों का खास काम है। दोनों मिली-जुली चीजें हैं। केवल शान्ति-रक्षा से काम नहीं होगा।

शिकायत आती है कि लड़के लड़कियों के पीछे लगते हैं। इसके कई कारण हैं। सिनेमा और गन्दा साहित्य भी इसके कारण हैं। शादी की उम्र बढ़ती जा रही है आगे क्या करना, यह किसीको सूझता नहीं है। इस पर जब मैंने सोचा, तो ध्यान में आया कि कभी यह नौबत न आ जाय जब कि लड़कियों को सड़क पर ही बैठने का प्रसंग आये, उस समय मैं यह पसंद करूँगा कि उन्हें खत्म किये जायँ। मेरा शस्त्रों पर विश्वास नहीं है। अन्दरूनी आत्मशक्ति पर ही विश्वास है। लड़कियाँ सावधान रहें, आकर्षक वेश न हो, दृष्टि में वैराग्य हो, चंचलता न हो तो सामनेवाले की हिम्मत न होगी कि वह अतिप्रसंग करे। लेकिन फिर भी ऐसा प्रसंग आये, तो लड़कियाँ खंजर भी रख सकती हैं। पर ये सारे ऊपर-ऊपर के उपाय हैं। अन्दर के उपाय तो चित्त-शुद्धि, नजर की शुद्धि का है। यह ब्रह्मविद्या के बिना सम्भव नहीं। ब्रह्मविद्या के मानी विद्वान् बनना नहीं है। बहनों को सोचना चाहिए कि अपना कर्तव्य क्या है। अपना शरीर किस काम के लिए है। सन्तान-निर्मिति को कर्तव्य माना जाय तो उसमें सुख आनन्द थोड़ा होता है और दुःख अधिक। माँ को नौ महीने तक बच्चे को पेट में रखना पड़ता है। उसमें जो जर्जर होता है वह मेरे लिए तो असह्य है। मैं सोचता हूँ कि मैं अगर बहन होता और मुझे दो बच्चे होते तो भूदान-आन्दोलन सम्भव न होता। हम अपने शरीर का पावित्र्य नहीं गँवाने देंगे ऐसी तीव्र भावना बहनों में पैदा होनी चाहिए। अविवाहित और विवाहित दोनों किस्म की बहनों में यह भावना पैदा होनी चाहिए।

'पावित्र्य-रक्षा' मुख्य काम

इन्दौर में गन्दे चित्रों के खिलाफ आवाज उठाने का काम बहनों को ही करना चाहिए। यह सब मैं इसलिए बोल रहा हूँ कि समाज की जड़ उखड़ती जा रही है। जहाँ सारे तरुणों का चित्त केवल विषय-वासना में होगा वहाँ समाज की बुनियाद ही उखड़ जायगी। इसलिए बहनों

शब्दरूप स्मृति का असर

जिन आकर्षणों के कारण हमने इन्दौर शहर चुना, उनमें एक बहुत बड़ा आकर्षण देवी अहिल्याबाई का नाम है। आज उनकी पावन स्मृति में कुछ कहने का मौका मिल रहा है, इससे मुझे बहुत खुशी हो रही है। ये स्मृतियाँ किस तरह असर करती हैं, इसका कोई व्यवस्थित वर्णन नहीं किया जा सकता। इन स्मृतियों का मनुष्य के चित्त पर बहुत गहरा असर रहता है, यह दुनिया और मेरा अपना भी विशेष अनुभव है। मैं इन स्मृतियों में इतना तन्मय हो जाता हूँ कि उससे अपने को अलग नहीं कर पाता, स्व-चित्त को भूल जाता हूँ। जब कभी महापुरुषों के स्मरण का प्रसंग आता है, मैं अपने शरीर से उठकर उनके शरीर में दाखिल हो जाता हूँ। 'चित्तस्य परशरीरावेशः'—चित्त परशरीर में आविष्ट होता है, इसकी एक प्रक्रिया योगशास्त्र में बतायी गयी है। मैं तो वह प्रक्रिया नहीं करता, फिर भी मेरा चित्त उनके शरीर में प्रविष्ट हो जाता है। इन महापुरुषों के हृदय में शब्द द्वारा चित्त प्रविष्ट होता है। अक्सर मानव कुछ चिह्न खड़े करता है, मन्दिर, मूर्तियाँ आदि बनायी जाती हैं, उन सबका कुछ-न-कुछ असर तो होता ही है, लेकिन शब्दरूप स्मृति का असर सबसे ज्यादा होता है।

रामनामनिष्ठ स्त्री राज्यकर्ता

हमने बचपन में कवि मोरोपन्त का एक वचन पढ़ा था :

देवि अहिल्याबाई झालीस जगत्त्रयांत तूं धन्या।
न न्यायधर्मनिरता अन्या कलिमाजी ऐकिली कुणी कन्या।

यह शब्द एक जादू का-सा असर करता है। इसके प्रकाश में जब मैं

शान्ति और शील-रक्षा का दोहरा विचार लेकर बहनें घूमेंगी तो व्यापक सहानुभूति मिलेगी। यहाँ पर हमने गन्दे चित्रों को मिटाने का काम उठाया है। कुछ लोग कहते हैं कि बात तो ठीक है, लेकिन होगा कैसे! जैसे पुराने लोग मानते थे कि इस कलियुग में तो यह सब होगा ही, वैसे ये आधुनिक लोग भी मानते हैं। लेकिन मैं कहना चाहता हूँ कि हममें यह भावना पैदा होनी चाहिए कि हम उन चित्रों को मिटा देंगे, इसके लिए सत्याग्रह करेंगे, जेल भी जायेंगे।

प्रश्न : हम बहनें सम्पूर्ण त्याग नहीं कर सकती हैं, तो वे क्या करें?

उत्तर : बहनें त्याग करती ही हैं। उनके जीवन में त्याग ही त्याग है। ऐसी थोड़ी ही बहनें हो सकती हैं, जो भोग-विलास प्रेमी होती हैं। वे बहनें गृहस्थ बनती हैं तो भी संयम की दृष्टि प्रधान रखकर शरीर का दुरुपयोग नहीं करने देना चाहिए। इन दिनों सन्तति-नियमन के कृत्रिम उपायों की बात बहनों पर दया करने की दृष्टि से की जाती है। इसके मानी है कि उन पर आक्रमण तो जारी ही रहता है। इस तरह के आक्रमण से बहनें लाचारी से बच रही हैं, यह ठीक नहीं है। गृहस्थ-धर्म की भी एक प्रतिष्ठा होती है। उस प्रतिष्ठा की रक्षा के लिए बहनों को आगे आना चाहिए। शील-रक्षा के कार्य के लिए घर छोड़ने की जरूरत नहीं है। अपनी जगह पर ही रहकर काम कर सकती हैं। मैं अब तक शान्ति-रक्षा की ही बात करता था, लेकिन आज मुझे एकाएक दूसरी बात शील-रक्षा की भी सूझी। अकेला शान्ति-रक्षा का कार्यक्रम कमजोर है। शान्ति-रक्षा और शील-रक्षा दोनों मिलकर पूरा कार्यक्रम होता है, जिसे बहनों को उठाना चाहिए।

इन्दौर —शान्ति-सैनिक बहनों से

१-८-६

अहिल्याबाई के युग में

जो स्त्रियाँ निवृत्तिनिष्ठ होती हैं वे राज्य-कारोबार भी अच्छा सकेंगी, यह खयाल अक्सर नहीं किया जा सकता है। यह प्रयोग मराठों ने किया और अहिल्याबाई के हाथ में राज्य-सूत्र सौंपा। उसने बहुत अच्छी तरह राज्य चलाया। उस जमाने में महादजी सिंधिया थे, जिन्होंने पराक्रम और योजना-शक्ति से उत्तर हिन्दुस्तान पर कब्जा कर लिया था। उधर दक्षिण में हैदरअली था जो बहुत पराक्रमी था। पूना में माधवराव पेशवा और नाना फडनवीस थे, जिन्होंने अपने-अपने ढंग का बहुत बड़ा पराक्रम किया था। वह ऐसा जमाना था जब भारत में अंग्रेजों का अच्छी तरह प्रवेश हो चुका था। ड्यूक आफ वेलिंग्टन जैसे सेनापतियों ने हिन्दुस्तान में आकर मैदान फतह कर लिया था। ऐसे जमाने में एक महिला के हाथ में राज्य की पूरा आयी और उसने उसे अच्छी तरह निभाया और साथ-साथ धर्मनिष्ठा और निवृत्ति-परायणता कायम रखी।

अद्वितीय व्यापक दृष्टि

भारत में हम जहाँ-जहाँ घूमे वहाँ-वहाँ अहिल्याबाई की कीर्ति दूसरे प्रान्तवालों से सुनी जिसका हम पर बहुत असर रहा। वैद्यनाथधाम से जगन्नाथपुरी जानेवाले रास्ते पर जब हम जा रहे थे तो लोगों ने सुनाया कि इसी रास्ते से चैतन्य महाप्रभु जगन्नाथपुरी गये थे और यह रास्ता देवी अहिल्याबाई ने बनाया था। हम सोचते रहे कि देवी को जो भी पैसा मिला होगा वह इस होल्कर-राज्य से ही। उस पैसे का उपयोग उन्हें बंगाल और उड़ीसा प्रान्तों में करने की इच्छा हुई और उनकी प्रजा ने उसमें अपना सब तरह से भला माना। प्रजा ने यह नहीं सोचा कि अपने प्रान्त का पैसा दूसरे प्रान्तों में क्यों खर्च किया जा रहा है! न लोगों की तरफ से ऐसी कोई शिकायत आयी न अहिल्याबाई के मन में ऐसी कोई बात आयी। उस जमाने की यह व्यापक दृष्टि अद्वितीय थी।

मारत का इतिहास देखता हूँ इन्दौर राज्य का इतिहास देखता हूँ तो मुझे लगता है कि कवि ने यह जो जाहिर किया है वह अतिशयोक्ति नहीं है। अहिल्यादेवी वास्तव में न्यायधर्मनिरता थीं। हिन्दुस्तान के इतिहास में यह एक बड़ा प्रयोग था कि राज्य-कारोबार की धुरा एक उपासनापरायण धर्मनिष्ठ स्त्री के हाथ में आयी। सारे भारत के इतिहास में इसे एक विचित्र प्रयोग कहा जायगा। वैसे राज्य करनेवाली रानियाँ हिन्दुस्तान में अनेक हुई, दुनियाभर में हुई, तलवार चलानेवाली वीरांगनाएँ भी दुनियाभर में हुई, जो निःसंदिग्ध भक्तिपरायण महापुरुष की कोटि में शिरोमणि मानी जा सकेंगी ऐसी महिलाएँ भी हो चुकी हैं।

'पंचकन्या' का नया रूप

जब मैं कश्मीर में यात्रा कर रहा था, उस समय एक स्त्री का नाम सारे कश्मीर में हिन्दू और मुसलमान दोनों के मुँह से सतत सुनता था। पहले मैं उस नाम को नहीं जानता था। घर-घर में जिसका नाम मशहूर हो उसका मुझे पता न हो, यह आश्चर्य और दुःख की बात थी। कश्मीर में पाँच सौ साल पहले एक महायोगिनी हुई। वहाँ पर बहुत ज्यादा ठंड पड़ती है, फिर भी वह नग्न रहती थी। वह शैव विचार की थी। उस वक्त कश्मीरवासी में मुसलमानों का प्रवेश नहीं हुआ था। वह बाद में हुआ। उस महायोगिनी के वचनों का असर आज तक हिन्दू और मुसलमान दोनों समाजों पर है। कश्मीर की एक सभा में मैंने कहा कि यहाँ पर दो नाम चलते हैं—एक लल्ला और दूसरा अल्ला। उस महायोगिनी का नाम लल्ला था। वहाँ के सब लोगों के मन में उसके लिए बड़ा आदर है। तब से मैं पाँच कन्याओं के नाम गिनता हूँ। जिन योगिनियों का भक्तशिरोमणि स्त्रियों का असर सारे भारत पर है उनके नामों की सूची में जमा करता हूँ—लल्ला, मीरा, मुक्ता, अक्का और आंडाल। लल्ला कश्मीर की, मीरा राजस्थान और गुजरात की, मुक्ता महाराष्ट्र की, अक्का कर्नाटक की और आंडाल तमिलनाड की। यह नया जप मैंने शुरू किया है।

छूट गया है। इस तरह ईश्वर के बल पर भी क्या यहाँ की बहनें नहीं जगेंगी? सर्वोदय-नगर बनाने में अपना पूरा हिस्सा नहीं देंगी? मैं मानता हूँ कि यह नामुमकिन है। यहाँ की बहनों से मैं बहुत आशा करता हूँ। मैं चाहता हूँ कि सारे भारत की स्त्रियों को शान्ति-रक्षा और शील-रक्षा का काम करना चाहिए। इस समय भारत में चरित्र-भ्रंश का कितना आयोजन हो रहा है! उसका विरोध और प्रतिकार अगर बहनें नहीं करेंगी तो फिर परमेश्वर ही भारत को बचाये, ऐसा कहने की नौबत आयेगी।

शहरों की जो दशा है, वह अत्यन्त खतरनाक है। पढ़ी-लिखी लड़कियाँ शहर के रास्तों पर घूमती हैं तो लड़के उनके पीछे भागते हैं, यह क्या बात है? यह जो शील-भ्रंश हो रहा है, जिसमें ब्रह्मचर्य की प्रतिष्ठा ही गिर रही है उसका विरोध करने के लिए बहनों को सामने आना चाहिए। माताओं को समझना चाहिए कि अगर देश का आधार शील पर नहीं रहा तो देश टिक नहीं सकता। शिवाजी महाराज की सुप्रसिद्ध कहानी है। उनके एक सरदार ने लड़ाई जीती और एक यवनी को वे शिवाजी महाराज के पास ले आये। शिवाजी महाराज ने उसकी तरफ देखकर कहा "है माँ, अगर मेरी माता तेरे जैसी सुन्दर होती तो मैं भी सुन्दर होता।" यह कहकर उन्होंने उसे आदरपूर्वक विदा किया। ऐसी संस्कृति जिस देश में पली उस देश में इतना चारित्र्य-भ्रंश हो और लोग देखते रहें, यह कैसे हो सकता है?

हम कहाँ जा रहे हैं?

मैं इन्दौर आकर इतना दुःखी हुआ कि उसका वर्णन नहीं कर सकता। यहाँ पर दीवारों पर इतने गंदे चित्र देखे कि जिनके स्मरण मात्र से आँखों में आँसू आ जाते हैं। माता-पिता इन चित्रों का सेवन सहन करते हैं? इसके पहले भी आज तक मुझे किसी शहर में घूमने का मौका नहीं मिला इसलिए शहर की हालत को मैं नहीं जानता था।

शस्त्र-बल की अपेक्षा प्रेम और धर्म बल से सच्ची विजय

हम पंजाब गये तो वहाँ हमने वह स्थान देखा, जहाँ से सिकन्दर वापस लौटा था। वह पंजाब और भारत को जीतने आया था लेकिन उसकी सेना ने आगे बढ़ने से इनकार किया। इसलिए उसे वापस लौटना पड़ा। सिकन्दर जीतने आया, लेकिन हारकर लौटा; क्योंकि वह शस्त्र लेकर आया था। उसी पंजाब में नामदेव महाराष्ट्र से सेवा करने गया पंजाब जीतने नहीं। उसने पंजाब को जीत लिया। वह पंजाब में पन्द्रह साल रहा। नामदेव गुरु नानक से दो सौ साल पहले हुए थे। जब नानक पैदा हुए तब नामदेव के भजन पंजाब में घर-घर चलते थे। उसे विठ्ठल प्यारे विठ्ठल —इस तरह विठ्ठल के भजन वह टूटी-फूटी पंजाबी में गाता था। हम नामदेव का स्थान देखने गये तो वहाँ पर झगड़े चल रहे थे। वह हमें अच्छा नहीं लगा। झगड़नेवाले दोनों पक्षों ने हमें लिखकर दिया कि हमारा फैसला वे मंजूर करेंगे तो हमने फैसला दिया और झगड़ा मिटा। नामदेव के भजन पंजाब में इतने लोकप्रिय थे कि गुरु अर्जुन ने गुरुवाणी का संग्रह करते समय उसमें नामदेव के भजन भी रखे। इस तरह गुरु-ग्रन्थ साहिब में नामदेव को स्थान मिला। इतना आदर उसके लिए था। सिकन्दर पंजाब को जीतने आया लेकिन हारकर गया। नामदेव सेवा करने आया और जीतकर गया। शस्त्र-बल से दुनिया को जीतने के प्रयास बहुतों ने किये हैं लेकिन प्रेम से धर्मशक्ति से दुनिया पर जिनका असर पड़ा उनमें ऐसी महात्मायें उस कोटि की थीं जिन्होंने भारत के सब प्रान्तों को धर्म बुद्धि और प्रेम से जीत लिया।

इन्दौर में स्त्री-शक्ति जगाने के लिए सघन इंधन

इन्दौर में इस आशा से आया था कि यहाँ स्त्री-शक्ति जगे। स्त्री शक्ति जगाने के लिए यहाँ सघन इंधन पड़ा है। ऐसी महात्मायें का स्मरण तो इन्दौर के साथ जुड़ा ही है और अब कस्तूरबा ट्रस्टवालों ने यहीं पर कस्तूरबा-ग्राम बसाया है। कस्तूरबा का स्मरण भी इंदौर के साथ

करते हैं। इस तरह भूमि को माता की उपमा दी है। इस मातृत्व पर आज खतरा हो रहा है और हम सब चुपचाप उसे सहन कर रहे हैं। मैं नहीं जानता कि इससे प्रगति की राह कैसे खुली रहेगी ! चाहे पचास 'फाइव इयर प्लान्स' चलते हों तो भी कुछ काम नहीं होगा। केवल भौतिक उन्नति से देश ऊँचा नहीं उठता है। जब शील ऊँचा उठता है तब देश उन्नति करता है।

आज देवी अहिल्याबाई के पुण्य स्मरण में यहाँ की तमाम बहनें व माताएँ प्रतिज्ञा करें कि शान्ति और शील-रक्षा के लिए हम प्रयत्नशील रहेंगी। पुरुषगण माताओं को इस प्रतिज्ञा में मदद करें, जिससे कि भारत में फिर से धर्म का उत्थान हो।

धर्म-संस्थापना

इस देश में अभी तक धर्म बना ही नहीं था। केवल श्रद्धा—दीप बनी थी। ऐसा धर्म नहीं बना जिसके विरोध में जाने की किसीको इच्छा न हो। मकान बनानेवाला शहर जंगल में बनाता है। वह हिम्मत ही नहीं करता कि दूसरे किसी जगह में मकान बनाया जाय। पहले कई प्रयोग हुए होंगे। दूसरे जगह में मकान बनाये गये होंगे और जब वे नहीं टिके होंगे तब सिद्धान्त बना होगा कि शहर जंगल में ही मकान बनाना चाहिए और उस पर सबकी श्रद्धा पैठी है। इस तरह न सत्य-निष्ठा मान्य है न अहिंसा निष्ठा मान्य है। लोग कहते हैं कि व्यापार में झूठ पर सत्य ठीक है और जमाने भर पर बारीक है। हमेशा सत्य ठीक ही है ऐसा नहीं कहा जाता। सब क्षेत्र में अहिंसा के लिए ऐसा निष्ठा के विश्वास पैदा होना अभी बाकी है। इसलिए अभी धर्म-संस्थापना होना बाकी है। आज तक का तरह-तरह के धर्म बने वे धर्म नहीं कहलाये हैं। कहा जाता है कि बहुत करके सत्य अहिंसा लाभदायी हैं लेकिन वे कभी-न-कभी ही लाभदायी हैं और उस पर नहीं चले तो नुकसान हानि होगी। ऐसी निष्ठा और विश्वास मानव के हृदय में अभी तक प्रतिष्ठित नहीं हुआ है। आज

यहाँ जो मैंने देखा, उससे मेरा हृदय बहुत ही व्याकुल हुआ। तब से मेरे ध्यान में आया कि स्त्रियों को शान्ति-रक्षा और शील-रक्षा का दुहरा काम करना होगा। उसके बिना संस्कृति नहीं टिकेगी। मनु महाराज ने स्मृति में स्त्रियों के लिए कितना आदर बताया है: 'उपाध्यायान् दशाचार्यः आचार्याणां शतं पिता। सहस्रं तु पितॄन् माता गौरवेणातिरिच्यते।' दस उपाध्याय के बराबर एक आचार्य होता है क्योंकि उपाध्याय केवल मन्त्र ही पढ़ाते हैं अर्थ नहीं जानते। आचार्य अर्थ जानते हैं। सौ आचार्यों की बराबरी एक पिता करता है और हजार पिताओं से भी एक माता का गौरव बड़ा है। इतना महान् ग्रन्थ इस भूमि में प्रकट हुआ। जहाँ की संस्कृति में स्त्रियों के लिए इतना आदर था वहाँ पर ऐसे गन्दे चित्र खुलेआम दिखाये जायँ और लड़कों के दिमाग इतने विषय-वासना से भरे हुए हों कि कन्याओं के पीछे लगने में ही उन्हें पुरुषार्थ मालूम होता हो, यह कितनी शोचनीय और लज्जाजनक बात है। आप जरा सोचिये कि हम कहाँ जा रहे हैं!

मातृत्व पर प्रहार

हमें इस हालत को रोकना होगा। आपकी पचास राजनैतिक पार्टियाँ आज क्या कर रही हैं! किसीको परवाह ही नहीं है कि शील-रक्षा हो। जिस भारत में स्त्रियों के लिए इतना आदर है कि 'स्त्री अधिक सूक्ष्म बुद्धिवाली होती है पुरुषों से उदार होती है, क्योंकि पुरुष परमेश्वर की आराधना भक्ति और वात्सल्य में कम पड़ता है। जो माता होती है वह पुरुष का दुःख जानती है। किसीको प्यास लगती है तो वह जानती है। किसीको पीड़ा होती है तो जानती है और अपना मन हमेशा भगवान् की भक्ति में लगा रखती है।" ऐसा ऋग्वेद में स्त्री का वर्णन किया गया है। वेद को हमारे यहाँ मातृस्थान कहा है। ज्ञानदेव ने लिखा है: 'माझी श्रुति वाढुलि माउली।' श्रुति के जैसी माता नहीं है जो दुनिया को अहित से बचाती है और हित में प्रवृत्त

प्रज्ञा को क्षीण न बनाइये ४६

(ता १ अगस्त ६ को प विनोबाजी से इन्दौर संभाग के विकास खण्ड के सब अधिकारी मिले। उनको संबोधन करने के पश्चात् बाबा से जो प्रश्नोत्तर हुए वे इस प्रकार हैं। प्रश्न परिवार-नियोजन के बारे में किया गया था।)

प्रश्न : सरकार की परिवार-नियोजन योजना के बारे में आपके क्या विचार हैं ?

विज्ञान से स्पष्ट ज्ञान

उत्तर : इस विषय के आध्यात्मिक पहलू हैं, नैतिक और सामाजिक असर हैं। विविध पहलू हैं, बहुत ही गम्भीर विषय है। इसलिए उसका अधिकार मैं सर्वसामान्य लोगों को नहीं दूँगा। चिन्तन करनेवालों का काम है इस विषय का चिन्तन करना। परिवार-नियोजन का मतलब है—आत्मसंयम। अपने पर काबू रखना। यह चीज नामुमकिन नहीं। साइंस के जमाने में पहले से ज्यादा आसान होनी चाहिए। उस विषय का स्वरूप क्या है, परिवार का उद्देश्य क्या है, ब्रह्मचर्य की साधना क्या होती है, उसमें कौन-सी शक्ति भरी है, इन सब चीजों का साइंस के जमाने में प्रज्ञा को अधिक स्पष्ट ज्ञान होगा, जितना पहले कभी नहीं था, उतना होगा।

फैमिली प्लानिंग आध्यात्मिक दृष्टि से इस प्रकार कर सकते हैं कि हमें दो से अधिक बच्चे नहीं चाहिए। ऐसा सोचकर मनुष्य अपने जीवन में संयम का योग्य आयोजन कर सकता है—यह है एक तरीका। दूसरा तरीका यह है कि अपने पर काबू रखने की जरूरत नहीं। रख भी नहीं सकते, इसलिए कृत्रिम उपायों से संयम कर। याने भोग भी जाय, लेकिन

हिन्दू, मुसलमान आदि धर्मों के आचार्यों ने धर्म समझाने की कोशिश की तो, फिर भी वह सफल नहीं हुई है। अब विज्ञान का जमाना आया है तो सारी दुनिया को अध्यात्म का आधार लेना होगा और धार्मिकता खतम करनी होगी। विज्ञान के जमाने में राजनीति और धार्मिक धर्म को छोड़ना होगा और आध्यात्मिकता को स्वीकार करना होगा। इसका मौका अब आया है। सबको इस पर सोचना चाहिए। इसका मुख्यारम्भ शांति-रक्षा और पुष्टि-रक्षा के कार्य से होगा। हम अगर इस काम को उठायेंगे तो फिर पचासों मसले हल करने की शक्ति भगवान् हमें देगा।

इन्दौर —अहिल्यादेवी के उत्सव पर
१ ८ ६

नियमित करके संतान को रोक लिया और उस शक्ति का दूसरी तरफ जो उपयोग हो सकता था, उसके बजाय उसे विषय-उपभोग में लगा दिया। विषय-वासना का जो अंकुश रहता था वह नहीं रहा। संतान निर्मिति, संतान को तालीम देना, उसके साथ बैठना, बोलना, सोना इससे अंकुश रह सकता है। आजकल यहाँ तक होता है कि मुझे 'किबुत्स' वालों ने सुनाया, वहाँ पर बच्चे पति-पत्नी से अलग किये जाते हैं। बच्चा पैदा होते ही उसे दूसरी जगह रख दिया। उसे दूध पिलाने के लिए माता आयगी। इसके सिवा बच्चे के साथ दूसरा कुछ ताल्लुक नहीं रहता है। नतीजा यह होगा कि घर में पति-पत्नी ही रहेंगे, दूसरे कोई नहीं रहेंगे। उनके साथ उनका बच्चा रहता, तो बच्चे के लालन-पालन में उनको संतोष होता, संयम रखने में उन्हें मदद मिलती। पति पत्नी एक कोठरी में हैं, उनके साथ उनका बच्चा सोता है, उस बच्चे के लिए प्रेम, चिन्ता, लालन-पालन रहता। दोनों माता-पिता उसे गोद में लेते हैं, प्यार करते हैं, इससे उनके चित्त पर अंकुश रहता। एक नारायण अपने घर में पैदा हुए। शास्त्रकार लिखते हैं, वह नारायण 'नरकात् त्रायते'—यह जो बेटा पैदा हुआ, वह बाप को नरक से बचायेगा।

संतुलन अत्यावश्यक

हमारे एक मित्र थे, रोजमर्रा बीड़ी फूँकनेवाले। जानते थे, बीड़ी फूँकना अच्छा नहीं। जब उनको बच्चा पैदा हुआ, तब उन्होंने बीड़ी पीना छोड़ दिया, यह समझकर कि अब इसको गलत आदत लगेगी। इतनी फिक्र रखनेवाले बाप इन दिनों नहीं होते। उस लड़के ने उस बाप को व्यसन से मुक्त किया। इसी तरह माता-पिता के साथ यदि लड़का कोठरी में सोया हुआ है, तो उनको अपने चित्त पर अंकुश रखने के लिए कृत्रिम उपायों से जो मदद मिल सकती है, उससे ज्यादा मदद मिल सकती है। बच्चे को दूसरी जगह रखने से माता-पिता अकेले रह जाते हैं। इसमें बहुत खतरा है। उसका बहुत बड़ा आध्यात्मिक पहलू है। पति-पत्नी

फसल न आये इस प्रकार की योजना। मान लीजिये कोई किसान महज आनन्द के लिए गर्मी के दिनों में बीज बोने के लिए निकला। यह देखकर कि बारिश के दिन नहीं हैं, मई महीने की जोरदार गर्मी है उसमें फसल नहीं उगेगी इस पर भी बीज बोकर क्या उसने अक्ल का काम किया? आप कहेंगे कि यह निहायत बेहद है। अगर एक मामूली बीज बे-मौसम में बोया जाता है, तो उसे आप बेहद मानते हैं, फिर जिस शक्ति से मनुष्य निर्माण होता है उस शक्ति को अगर आप बेहद खर्चते हैं तो कितना बड़ा गुनाह है कितनी मूर्खता है! यह सब समझने और समझाने की बात है।

प्रज्ञा की प्रभा, ब्रह्मचर्य का तेल

इसमें एक ऐसी शक्ति है कि उसको ऊपर उठाया जा सकता है। जैसे दीपक या लालटेन की प्रभा होती है। उसके लिए नीचे से तेल सप्लाई होता है तभी उसकी प्रभा बढ़ती, ज्योति अच्छी तरह से चमकती है उसका प्रकाश अच्छी तरह से पड़ता है, क्योंकि नीचे से बराबर तेल सप्लाई होता रहता है। मनुष्य के लिए ब्रह्मचर्य तेल है और प्रज्ञा की प्रभा बुद्धिमत्ता यह उसका प्रकाश है। ब्रह्मचर्य के तेल की सप्लाई उसे बराबर मिलती रहे तो बुद्धिमत्ता तेजस्वी होती है; वह न रही, तो बुद्धि ही कमजोर पड़ जाती है बुद्धि की प्रतिभा कम होती है।

निर्माण शक्ति का दुरुपयोग

कृत्रिम उपायों के इस्तेमाल से सिर्फ सन्तान ही नहीं रुकेगी बुद्धिमत्ता भी रुकेगी। यह बात समझने की जरूरत है। उसके परिणाम-स्वरूप दोनों की (पति-पत्नी की) बुद्धिमत्ता क्षीण होगी। दोनों संतुलन खो बैठेंगे और निस्तेज बनेंगे। वह जो विकसित पदार्थ है जिसे हम बीज कहते हैं उसीसे वाल्मीकि जैसे महाकवि पैदा हुए महावीर हनुमान् उसीमें से निकले। प्रतिभावान् पुरुष और तपस्विनी उसीमें से निकले। उस निर्माण-शक्ति का मनुष्य दुरुपयोग करता है। श्रीमान् संस्था

याने पाबीस साल तक सन्तान-उत्पत्ति की मर्यादा है। उसके बदले २५ साल की उम्र में शादी हो और ४५ साल की अवस्था में गृहस्थाश्रम से निवृत्त होकर वानप्रस्थ हो जायें तो २५ से ४५ तक २ साल का पैमाना हो जायगा। इससे पैमाना थोड़ा कम हो गया। इतना कम होने से सन्तान का भी थोड़ा-बहुत जो नियमन होना चाहिए, वह होगा तो काम भी मिलेगा और आध्यात्मिक शक्तियाँ भी मिलेंगी।

मिट्टी समर्थ

बहुत ही गम्भीर रूप से सोचने का विषय है इसलिए मैंने आपके सामने यह विषय खोलकर रखा। जिस मिट्टी से जन्तु प्राणी पैदा होते हैं उनका भार वहन करने में वह मिट्टी असमर्थ होगी यह मुमकिन नहीं है। इसलिए यह भय रखने की कोई आवश्यकता नहीं है कि उतना पोषण मिलेगा या नहीं। एक सिद्धान्त मैं आपके सामने रख रहा हूँ, बशर्ते कि उस मिट्टी से हम जो सारा लेते हैं वह वापस दे दें। आज हम वह सारा वापस देते नहीं। मल-मूत्र पेड़ों में इतनी शक्तियाँ होती हैं वह वापस मिट्टी में पहुँच जायें, हमारी सारी हड्डियाँ वगैरह मिट्टी में पहुँच जायें। मिट्टी में से हड्डी पैदा हुई, उसे हम गंगा में जाकर बहाते हैं। जानवर मिट्टी से पैदा होते हैं उनकी हड्डी और खाद भी मिट्टी में वापस मिल जाय, इस तरह मिट्टी को सब वापस मिल जाय तो मैं आपसे कहना चाहता हूँ कि जितने प्राणी मिट्टी में से पैदा हुए, उन सबका पोषण करने के लिए मिट्टी बिलकुल समर्थ है। यह मेरे लिए एक axiomatic है यानी स्वयंसिद्ध बात है।

पराक्रम और पुरुषार्थ की प्रेरणा हैं

इस दुनिया में परमेश्वर है सारा इन्तजाम उसके हाथ में है उसकी चिन्ता उसे है। जब वह चाहेगा कि एक हद के बाद सन्तान ज्यादा न बढ़े तो वह आपको संयम की सद्बुद्धि देगा। इसलिए मैं इन चिन्ता

संतान उत्पन्न न हो ऐसी व्यवस्था करके विषय-वासना में व्यस्त रहेंगे तो उनके दिमागों का कोई संतुलन नहीं रहेगा। उस हालत में वह तेजोहीन बनेगा। सन्तान कम होगी तो लाभ होगा यह मानकर वे लोग उसे उत्तेजन देंगे। लेकिन सिर्फ संतान ही उत्पन्न नहीं होगी, ज्ञान-तन्तु क्षीण होंगे प्रज्ञा कम होगी प्रज्ञा कम पड़ेगी तेजस्विता कम होगी।

ऐसी हालत मे फिर यह कोई जरूरी नहीं कि पति-पत्नी का ही समागम हो। बिल्कुल शुद्ध बोल रहा हूँ आप लोगों के सामने। जब कि आपने ऐसी व्यवस्था कर ली कि संतान की उत्पत्ति न हो, तो फिर क्या वजह है कि उसी पति-पत्नी का समागम हो। अन्य पति-पत्नी के साथ समागम क्यों न हो! इसके सिवा कोई वजह नहीं कि आरोग्य में हानि पहुँचे। ~ तो ऐसा आयगा। इस मसले पर जरा सोचा जाय तो पता चलेगा कि कितना गहरा मसला है। यह लोग सोचते नहीं।

तीन पहलू

नीति कितनी गिरेगी अध्यात्म कितना खोयेंगे, बुद्धि की प्रभा कितनी कम होगी यह नहीं सोचा और यह भी नहीं सोचा कि इसका एक सामाजिक पहलू है। उधर चीन से आपका मुकाबला होने जा रहा है। यहाँ तो ये लोग सन्तान-उत्पत्ति को उत्तेजन दे रहे हैं। बिल्कुल एक बाहरी चीज मैं बोल रहा हूँ। वह सन्तान को उत्तेजन दे रहा है, इसका नतीजा क्या होगा यह सोचते नहीं। इस विषय का एक आध्यात्मिक पहलू है एक सामाजिक पहलू है और एक नैतिक पहलू है।

चार आश्रमों की योग्य योजना

यह सब सोचते हुए हमारे ध्यान मे आयेगा कि हमारे पूर्वजों ने जो योजना बनायी थी वह ठीक थी—ब्रह्मचर्याश्रम गृहस्थाश्रम वानप्रस्थाश्रम और संन्यासाश्रम। अगर ऐसी मर्यादा हम बनाते हैं तो उससे हमें लाभ होगा। आज तो शादी होती है १८ साल में और ५८ साल की अवस्था

बाने बाईस साल तक सन्तान-उत्पत्ति की मर्यादा है। उसके बदले २५ साल की उम्र में शादी हो और ४५ साल की अवस्था में गृहस्थाश्रम से निवृत्त होकर वानप्रस्थ हो जायें, तो २५ से ४५ तक २ साल का पैमाना हो जायगा। इससे पैमाना थोड़ा कम हो गया। इतना कम होने से सन्तान का भी थोड़ा-बहुत तो नियमन होना चाहिए, वह होगा तो काम भी मिलेगा और आध्यात्मिक शक्तियाँ भी मिलेंगी।

मिट्टी समर्थ

बहुत ही गम्भीर रूप से सोचने का विषय है इसलिए मैंने आपके सामने यह विषय खोलकर रखा। जिस मिट्टी से जन्तु प्राणी पैदा होते हैं उनका भार वहन करने में वह मिट्टी असमर्थ होगी यह मुमकिन नहीं है। इसलिए यह भय रखने की कोई आवश्यकता नहीं है कि उतना पोषण मिलेगा या नहीं। एक सिद्धान्त मैं आपके सामने रख रहा हूँ क्योंकि उस मिट्टी से हम जो खाद लेते हैं वह वापस दे दें। आज हम वह खाद वापस देते नहीं। मल-मूत्र पेड़ों में इतनी शक्तियाँ होती हैं वह वापस मिट्टी में पहुँच जायें, हमारी सारी हड्डियाँ वगैरह मिट्टी में पहुँच जायें। मिट्टी में से हड्डी पैदा हुई उसे हम गंगा में नाहक बहाते हैं। जानवर मिट्टी से पैदा होते हैं उनकी हड्डी और खाद भी मिट्टी में वापस मिल जाय, इस तरह मिट्टी को सब वापस मिल जाय तो मैं आपसे कहना चाहता हूँ कि जितने प्राणी मिट्टी में से पैदा हुए, उन सबका पोषण करने के लिए मिट्टी बिलकुल समर्थ है। यह मेरे लिए एक axiomatic है यानी स्वयंसिद्ध बात है।

पराक्रम और पुरुषार्थ की प्रेरणा हैं

इस दुनिया में परमेश्वर है, सारा इन्तजाम उसके हाथ में है उसकी चिन्ता उसे है। जब वह चाहेगा कि एक हद के बाद सन्तान ज्यादा न बने तो वह आपको संयम की सद्बुद्धि देगा। इसलिए मैं इन दिनों

सादी-सी बात कहता हूँ कि इन्दौर की दीवारें साफ करो। दीवारों पर जो गन्दे चित्र और इश्तहार लगाये हुए हैं वे किसलिए हैं? क्या वे लाजिमी हैं? साइंस के जमाने के लिए यह जरूरी बात है? दिमाग को बिगाड़नेवाली यह सब चीजें साफ करो। लिटरेचर से ज्यादा साइन्स और मैथेमेटिक्स सिखाओ। नाहक लिटरेचर सिखाते हो, उसे कम करो। लिटरेचर सिखाना है, तो सर्वोत्तम साहित्य सिखाओ। तुलसी रामायण सिखाओ, ज्ञानेश्वरी सिखाओ। यह अच्छा साहित्य है। लोगों को संयम की तरफ ले जाने के लिए जो वातावरण चाहिए, वह वातावरण तैयार करो तथा पुरुषार्थ सिखाओ। अक्सर यह होता है कि जिन मानवों में पराक्रम कम, पुरुषार्थ की प्रेरणा कम होती है उनकी औलाद बढ़ती है। अमीरों के बेटों की संख्या कम है और गरीबों की ज्यादा है। जानवरों में देखना हो तो शेर की सन्तान कम और बकरी की ज्यादा है। कीड़े-मकोड़े एक-एक साल में दुगुना और चौगुना बढ़ते हैं। बच्चों को तालीम का अच्छा इन्तजाम करके देना चाहिए। उनको *संस्कार अच्छे मिलने चाहिए।*

मनु ने लिखा है शास्त्र-वाक्य है—'पुत्रं अनुशिष्टं लोक्यमाहुः' उत्तम पुत्र पिता के लिए परलोक में काम आता है। पुत्र-निर्माण का काम एक समाज-सेवा का काम है। आप अच्छे पुत्र समाज को देंगे, तो वह समाज की सेवा होगी। सब निर्माण-कार्यों में पुत्र-निर्माण से बढ़कर श्रेष्ठ निर्माण कार्य दुनिया में नहीं है। उस तरफ ध्यान न देते हुए माता-पिता भोग-वासना में लिप्त रहे, तो बुद्धि से बच्चे इतने नालायक बनेंगे कि किसी प्रकार का पराक्रम पुरुषार्थ नहीं कर सकेंगे। माता-पिता के लिए भी यह चीज लाभ की नहीं है। उनके हाथों से भी पराक्रम नहीं होगा। जीवन में तेजस्विता नहीं रहेगी। इसलिए मैं इस प्रकार से समझाया करता हूँ कि आपकी यह योजना खतरनाक है अपने देश के लिए ही नहीं मानवमात्र के लिए।

गम्भीर गुनाह

आत्मा बाहर प्रकट होना चाहती है उस हालत में आप उसे वहीं खतम कर देते हैं। आपने एक बड़े आदमी की हत्या की और दूसरी ओर एक छोटे बच्चे की हत्या की। इसमें गुनाह ज्यादा कहाँ हुआ? बच्चा पैदा होने पर उसका घात करते हैं और गर्भ में घात करते हैं। उपरोक्त ऐसा जाय तो आप मूक में प्रहार करते हैं। जीवात्मा आगे आना चाहता है आप उसे आगे आने नहीं देते, वहीं रोकते हैं। बाहर आने के लिए आत्मा कोशिश करती है और आप उसे रोकते हैं। यह ज्यादा गंभीर अपराध है।

इन्दौर
१-८-६

भाषा का एक प्रकार

एक ज्योतिषी था। उसके पास एक भाई अपना भविष्य पूछने गया। ज्योतिषी ने बताया : आपके कुल रिश्तेदार आपके जीते-जी मर जायँगे। सुनकर वह बहुत दुःखी हुआ। गुस्सा भी आया उसे कि ऐसी बात भाग्य बोलता है। फिर वह दूसरे के पास गया। दूसरे ज्योतिषी ने उसे बताया : आपका नसीब बहुत अच्छा है। बहुत-बहुत लम्बी आयु है आपकी। अर्थ तो वही हुआ, भाषा दूसरी है। उससे दूसरा असर होता है।

आस्तिक बनें

मैं हमेशा कहता हूँ कि नहींवाली बात मत बोलो। बोलो, नकार मत बोलो। अभी तक काम के लिए जिन्होंने नाम नहीं दिये हैं, वे इसलिए नहीं दिये गये हैं कि कल देनेवाले हैं, वे आगे देनेवाले हैं। अपने मन में मैं हिसाब लगाता हूँ कि इन लोगों में मरनेवाले कितने हैं। तो हिसाब आता है कि कुछ मरनेवाले हैं। कोई कारण नहीं है कि आज जो नहीं मरे हैं, वे कल मरनेवाले नहीं हैं। मरने के लिए अगर सेंट-परसेंट हैं तो इस जीवनदायी कार्यक्रम के लिए लोग क्यों नहीं नाम देंगे! इसलिए हम यह मस्त रहते हैं, आनन्द में रहते हैं। इस काम के लिए कोई आये या न आये, पर हम नहीं सोचेंगे कि बीज बोया गया है वह जाया नहीं जायगा। 'अस्ति इत्येव आलम्ब्य' उपनिषद् ने आज्ञा दी— भगवान है। यह है इतनी ही उपलब्धि होनी चाहिए। पर वह कैसे है, कैसे दीखते हैं यह आज तो नहीं दीखता; लेकिन भगवान् का साक्षात्कार कभी-न-कभी सम्पन्न होगा। कभी-न-कभी दर्शन होगा इतना पक्का

होना चाहिए। इसीको आस्तिक कहते हैं। आस्तिक याने सब लोग अच्छा काम करनेवाले ही हैं, यह विश्वास।

'साहिब मिले सबूरी में'

कुछ लोग उत्साह से हमसे कहते हैं कि आप इश्तहार हटाने के लिए हमें आदेश दीजिये। आप एक दफा इजाजत दे दो तो हम दौड़े जायेंगे और निकालकर फेंक देंगे। हमने कहा : आपकी तीव्रता हम महसूस करते हैं। हमें भी उतनी तीव्रता है। घनश्यामदास कोठिया ने कहा है कि अंग्रेजी के साइनबोर्ड हटायें। लेकिन उस कार्यक्रम के लिए जितनी लोकमान्यता चाहिए उससे ज्यादा इस कार्यक्रम को मिलेगी। फिर भी हमें सब्र रखनी चाहिए। 'साहिब मिले सबूरी में'—साहिब अवश्य मिलेंगे अगर सब्र रखो ऐसा कबीर कहते हैं। कुरान में आता है—सब्र रखनेवाले को खुशखबरी सुनाओ। एक-दूसरे को सत्य समझाते जाओ। सब्र रखो और सत्य बोला करो। वबशीर साबिरीन 'तवासौ बिलहक्क व तवासौ बिस्सब्र' यह इस्लाम का सार है। तात्पर्य, हम सब्र से काम करना चाहते हैं।

सिर गरम दिमाग ठंडा

आप जानते हैं कि हम ऐसे ही भाप को खोल देते हैं तो कहीं ताकत पैदा नहीं होती। इंजन में अगर हम भाप को रोकते हैं तो भाप की ताकत पैदा होती है। इसलिए अपनी तीव्रता को रोकने की कोशिश होनी चाहिए। मेरे अन्दर अग्नि तीव्र है, सुलग रही है। अगर अग्नि सुलगी न होती, तो यह भूदान कभी का थक गया होता और रुक जाता। दिल के अन्दर अग्नि होनी चाहिए और दिमाग में ठंडक, तब काम बनता है। बाहर से सब्र होनी चाहिए। उसके साथ-साथ समझना और समझाना चाहिए। हम समझाते रहें। मनुष्य समझता है तो उसका जीवन-परिवर्तन होगा; फिर वह खुद बदल गया तो हमारी जगह पर खड़ा होगा और काम करेगा।

सब्र के साथ तीव्र गति से काम

हमारे पीछे यमराज लगा है। वह बहुत जोरों से दौड़े आ रहा है। समय की कीमत ज्यादा है। थोड़े समय में ही हमें सब काम करना है पर सब्र नहीं खोना है। उसके साथ कुछ धार तेज होनी चाहिए। कहीं भी धार तेज नहीं होती, तो जवान चिढ़ जाते हैं। भाई, ठीक है चिढ़ो। इससे क्या काम हो। हमारी मन्द गति है, लेकिन हमारा उपयोग औजार के तौर पर कीजिये। जवानों को मंद गति से चिढ़ होती है, लेकिन कई दफा ऐसा होता है कि जवानों को जितनी उतावली होती है, उससे कई गुना अधिक उतावली बूढ़ों को होती है, क्योंकि मरण—मृत्यु उनके सामने है। लेकिन कभी-कभी जवान भी उठ जाते हैं, इसलिए ऐसा हम निश्चित नहीं कह सकते। परन्तु अक्सर अपेक्षा रहती है कि जवानों के जीवन ज्यादा चलेंगे, बूढ़े जल्दी मरेंगे। हम तो समझते हैं कि हमें पासपोर्ट मिल चुका है।

अनेक जन्मों के परिणामस्वरूप यह नरदेह प्राप्त हुआ है। बार-बार नहीं मिलता। लोग मुझे चार मोक्ष मानें लेकिन मैं मानता हूँ कि यह जन्म बार-बार नहीं मिलता। बहुत पुण्य से यह जन्म मिला है। इसलिए बहुत ज्यादा तीव्रता होनी चाहिए। एक मुसलमान भाई ने मुझे कहा कि आप हिन्दू लोग अनेक जन्म और पुनर्जन्म की बात करते हैं। इस जन्म में काम नहीं होगा तो अगले जन्म में होगा ऐसा विश्वास रखते हैं इससे तुम सुस्त बन जाते हो। हममें वह नहीं है क्योंकि हमारा ऐसा विश्वास नहीं है। इसलिए हमें ज्यादा उतावली होती है कि मरने के अन्दर कुछ काम करना ही है। लेकिन मैं कहता हूँ कि हिन्दू के पीछे भी उतावली है क्योंकि अगला जन्म कौनसा मिलेगा, इसका भरोसा उसे नहीं है।

हमारे हाथ में त्रिशूल

इन चीजों को जवान लोग ज्यादा नहीं मानते इसलिए हम तीनों

न बच्चों को प्रेरणा नहीं मिलेगी। उनको यह कहने से उत्साह आता है कि भाई साइंस जोर से आ रहा है इसलिए कम-से-कम जल्दी नहीं करोगे तो ऊपर से आफत आयेगी, गिरेगी। अप्पासाहब पटवर्धन मुझे कहते थे कि भाई, धमकाकर सत्कार्य क्यों करवाते हो? यह कहो कि यह काम अच्छा है इसलिए करो। इसमें कल्याण है, ऐसा कहो। न करोगे तो इहलोक में विनाश होगा और परलोक में अकल्याण होगा। जितनी सब बातें हैं, उतनी सब मैं कह देता हूँ। किसी शस्त्र का किसी पर परिणाम होता है किसीका दूसरे पर। हम तीनों शस्त्रों को इस्तेमाल करते हैं, तो त्रिफल होता है। हमारे हाथ में त्रिशूल है। जिसके हाथ में एक ही हथियार है वह एक ही आजमाये। हमारे हाथ में तीन हथियार हैं। यह जल्दी करने की जरूरी इसलिए है कि जमाना जोरों से बदल रहा है साइंस जोरे आ रहा है। ये मोटरें दौड़ती हैं, ये गाड़ियाँ दौड़ती हैं इसलिए सोचना चाहिए कि हम जो कुछ काम करेंगे उसके पीछे मर्यादा है समय की मर्यादा है इसलिए जल्दी काम करना चाहिए ठीक काम करना चाहिए।

दुनिया में अच्छाई का असर

आज भी प्रेरणा एकाकी नहीं होती है वह चारों ओर से होती है। इसलिए यहाँ जो कुछ होता है उसका सारी दुनिया पर असर होता है। सारी दुनिया में जो अच्छाई है उसका असर यहाँ होता है और यहाँ के काम का असर सारी दुनिया में होता है। नहीं तो कोई वजह नहीं है कि जर्मनी में आन्दोलन चले 'मिस ए मील'। हम रोज तीन दफा खाते हैं तो ७ दिन में २१ दफा खाना हुआ। उसमें से २ खाने खाओ और एक खाना छोड़ दो। एक खाना खाने से जो बचेगा वह भूदान आन्दोलन की मदद में बैंगलोर भेजा जायगा। थोड़े लोगों ने ही यह काम किया। लेकिन कहाँ जर्मनी और कहाँ बैंगलोर! उन्होंने भारत के गरीबों के लिए यह काम करने का तय किया। सोचा कि नैतिक मूल्यों

के आधार पर भारत में आन्दोलन चल रहा है, तो हम भी उसमें मस्त हैं।

एक खाना छोड़ें

क्या इन्दौरवाले 'मिस ए मील' नहीं चला सकते हैं? यहाँ राम-नवमी, कृष्णाष्टमी, पर्युषण पर्व संवत्सरी, रोजे, सोमवार, गुरुवार, एकादशी और श्रावण महीने में उपवास होते हैं। जहाँ इतने उपवास होते हैं वहाँ एक हफ्ते में एक खाना नहीं छोड़ सकते? एक खाना हम कम करें, तो एक भावना पैदा होगी। कुल इन्दौर में अगर यह होता है, तो सामूहिक इच्छा-शक्ति पैदा होगी। यह इस जमाने की माँग है। मुझे केवल खाना है। आपसे छिप कर मैं केवल खाऊँ, तो अच्छा नहीं लगता है। इसलिए दूसरे को खिलाकर हम खायें। संपत्ति का भी अकेले उपभोग करना अच्छा नहीं लगता है। इसलिए संपत्ति का वितरण हो। पूँजी-वादी बनकर सारी संपत्ति अपने पास ही न रखें। सामूहिक सहजीवन की भूख इस जमाने में है। इसलिए सहज मेरे मन में यह विचार आया कि आपके सामने मैं 'मिस ए मील' की यह बात रखूँ।

तप से स्वच्छता आयेगी

सर्वोदय-पात्र का भी एक तरीका है। वह यहाँ चलेगा ही। मुट्ठी-भर अनाज हम रोज डालते हैं। वह दान का सामर्थ्य है। लेकिन उसके साथ तप भी होना चाहिए। तो यह सवाल आता है—'मिस ए मील' का। हफ्ते में एक खाना छोड़िये। आरोग्य सुधरेगा और निरामय आरोग्य बनेगा। यहाँ धार्मिक संस्कार हैं ही—जैसा उपवास चलता है—उन संस्कारों का नव-संस्करण होता है। इन्दौर के नागरिक यह तप करते हैं तो बहुत बड़ी बात होगी। इससे जो भावना बनेगी वह बहुत मजबूत होगी। थोड़ा-सा सहन करना पड़ेगा लेकिन उससे बड़ी भावना बनेगी और एक ताकत पैदा होगी। 'तपसा किल्बिषं हन्ति'—तप से पाप

ग्रस होते हैं। तप में पापक्षयकारी शक्ति है। कुछ मानसिक अशुद्धियाँ होंगी, तो तप से स्वच्छता आयेगी।

देश की इच्छा-शक्ति जाग्रत कैसे होगी ?

हममें धार्मिक तौर से तपस्या की आदत नहीं हुई। उसकी कीमत आज बहुत है। गांधीजी ने तपस्या का यह विचार निकाला। हमें पहले मालूम नहीं था। उन्होंने कहा 'ट्वेन्टी फोर अवर्स फास्ट'। सारा देश फास्ट करे। उन्होंने यह कहा कि कल शाम को पाँच बजे खाया तो दूसरे दिन शाम को पाँच बजे खायेंगे। पूरा चौबीस घण्टे का उपवास हो गया। यह हमें मालूम नहीं था। हमने यहाँ डेढ़ दिन का उपवास माना है। यहाँ ऐसा ही रिवाज है। माने एक पूरा दिन खाना छोड़ना। सुबह का दोपहर का और रात का खाना—एक दिन न खाना और दूसरे दिन भी सुबह का नाश्ता नहीं करना। दोपहर का खाना खाना। लेकिन गांधीजी ने देश को एक तालीम दी—देशव्यापी उपवास हो। इस विषय में वे हमसे बात भी करते थे और उन्होंने हमें लिखा भी कि देश की इच्छा-शक्ति कैसे जाग्रत होती है। वे कहा करते थे कि ये उपवास देश के सब लोगों ने किये होते तो स्वराज्य एक हफ्ते के अन्दर मिल जाता। यह उपवास जाहिर किया तो थोड़े लोगों ने ही किया। हर बच्चा बूढ़ा भाई-बहन उपवास करते तो हमारा पराक्रम क लिए असहयोग जाहिर होता और इतने सीधे साधन से स्वराज्य प्राप्त होता है यह पता चलता।

धर्म के स्वल्प आचरण से महान् पुण्य

मैं इन्दौर को सुझाना चाहता हूँ—उससे छोटा खाना है सुबह का नाश्ता। यह दो खाने का होता होगा। इन्दौर के कुछ लोग यह खाना छोड़ते हैं सप्ताह में एक दिन। लेकिन इसमें सारा दारोमदार सबकी इच्छा-शक्ति पर निर्भर है। अगर इन्दौर में ऐसा होता है तो कितनी बड़ी ताकत बनती है। गाँव-गाँव में यह बात फैलेगी कि इन्दौर के लोगों ने

उत्साह में एक आना छोड़ा है। यह हमारी इच्छामात्र से ही बनता है तो परमेश्वर की जरूरत ही क्यों होती? उसकी जगह हम बैठ जाते। हमने इच्छा की कि इन्दौर में यह काम बने जैसे Let there be light and there was light यानी सारा काम हो ही गया। संकल्प करने की जरूरत नहीं। 'प्र' कहा या प्रकाश हो गया। इस तरह हम कुछ बोलें और आप फौरन कर दें तो ईश्वर की जगह हमने ले ली, ऐसा होगा। इसलिए हम मानते हैं कि इतना तो नहीं होगा। जितना होगा उतना कीजिये। इसका स्वल्प आचरण होता है, तो 'स्वल्पमप्यस्य धर्मस्य त्रायते महतो भयात्'—धर्म के स्वल्प आचरण से भी अपार पुण्य मिलता है।

सबको खुशी

इस काम के लिए जैनों का आशीर्वाद मुझे जरूर हासिल होगा। इसमें मैं एक आना तो छोड़ता ही। फिर वैष्णव भी क्यों नाराज होंगे? निमुक्त है एक उपवास करो। वे कहेंगे अच्छी बात बताती। मुसलमान भी खुश होने चाहिए, क्योंकि वे रोजा रखते हैं। इसलिए अनुकूलता का वातावरण पूरा-पूरा है। सवाल यह है कि इससे जो बचेगा उसका विनियोग क्या किया जायगा? इस तरह पृच्छा होगी कि क्या इसका विनियोग गलत तो नहीं होगा? हमें यह सोचना चाहिए कि इसका उपयोग जो भी हो अच्छा ही होगा। लेकिन हम इतना तप अवश्य करायें।

पक्ष दान और तप

सर्वोदय-पात्र में हम अनाज डालते हैं तो उसमें दान की महिमा होगी। अब हम सब मिलकर तप करें। यह ज्यादा तो नहीं जायगा, लेकिन इतना काम होता है, तो तपस्या की महिमा होगी। अगर हम पन्द्रह मिनट रोज सफाई का काम करें तो श्रम का काम होगा। श्रम,

दान और तप हमारा चलेगा। यज्ञ का मतलब है, सृष्टि में हमारे जीवन के कारण जो दोष निर्माण होते हैं उसे हम शुद्ध करें। दान का मतलब है, हमारे कारण सृष्टि का जो क्षय होता है उस क्षय की पूर्ति हम करें। तप का मतलब है आन्तरिक और बाह्य शक्ति का जो क्षय होता है—अशुद्धि होती है उसकी शुद्धि करें। मन, इन्द्रिय और शरीर का क्षय होता है और अशुद्धि होती है इसलिए तप करना चाहिए। यज्ञ दान और तप, ये तीनों जरूरी हैं। गीता प्रवचन के सत्रहवें अध्याय में आप पढ़ेंगे—यज्ञ दान और तप ये तीनों जुड़ जाते हैं तो काम होता है।

इन्दौर —प्रार्थना प्रवचन

११ ८ ६

भूदान और सर्वोदय का रिसर्च कार्य

आज यहाँ पर इन्दौर में जो कुछ सोचा और किया जायगा, वह भूदान और सर्वोदय का एक रिसर्च कार्य गिना जायगा। उसी दृष्टि से इस काम की तरफ सबको देखना चाहिए। रिसर्च वर्क के बिना नयी खोजें नहीं होतीं। हमें जो कुछ सूझता गया हम लोगों के सामने रखते गये। लेकिन कई बातें ऐसी हैं जिनकी खोज होने की जरूरत है। खोज भी एक शक्ति है जिससे मनुष्य खोज कर सकता है। कोई ऐसा कार्य हाथ में लेकर ५-६ लोग उसमें लगें। वह जब तक हम नहीं करते तब तक हमारी बुद्धि ही मन्द रहनेवाली है। हमारे विचार कुण्ठित होंगे। दो-तीन लोग दो-तीन प्रश्न देश में खड़े कर देंगे और उन प्रश्नों में उलझन के सिवा कुछ फल का होगा नहीं। रिसर्च के प्रयोग के अभाव में हम अपने जमाने के लायक अपटुडेट—अप-टु-डेट—नहीं बनेंगे। देखते ही देखते पिछड़ जायेंगे। हमारे पहले के व्यवहार और आज के व्यवहार में फर्क हो जायेंगे। इन ८९ सालों में हम कहाँ-के कहाँ चले गये हैं। दुनिया में भी आगे बढ़े हैं हिन्दुस्तान में भी आगे बढ़े हैं इसलिए संशोधन की जरूरत है। हमने कुछ संशोधन किया था। खेती में भी कुछ काम किया था। कांचन-मुक्ति भी की थी और इससे ही यह बात सूझी थी। ऐसी किसी शक्ति की राह देखते थे कि अचानक इशारा मिला और काम किया।

अब जमाना ऐसा आया है कि शहरों की उपेक्षा करके गाँव में काम करने से सफलता नहीं मिलेगी। गाँव में जरूर काम करना होगा और हम करते भी आये हैं। लेकिन शहरों की उपेक्षा से मतलब यह

होगा कि जहाँ दिमाग बनता है वहाँ हमारा कण्ट्रोल नहीं। यह अलग बात है कि शहरों पर ही गाँव के दिमाग का असर पड़े। मैं वह जमाना लाना चाहता हूँ, लेकिन जब तक वह जमाना नहीं आता तब तक शहर का असर देहात पर और देश पर पड़ता रहेगा। इसलिए शहरों का कब्जा हमें लेना होगा।

हमारे एक विचार की पकड़ में शहर को रखना होगा। इसलिए प्रयोग के तौर पर हमने इन्दौर का नाम लिया है। यहाँ क्या काम किया है? चित्र पोंछ रहे हैं। देवेन्द्र ने यह काम शुरू किया है। पुराने चित्र *पोंछना और नये वचन लिखना। इस काम में बहुत उत्साह है।* बहनों को बच्चों को बहुत उत्साह आया है; क्योंकि यह ऐसा कार्यक्रम है जिसमें मूवमेण्ट होता है हलचल दीखती है। और यह ठीक दिशा में है। इसमें जो वेस्टेड इण्टरेस्ट होंगे उनके लिए थोड़ा सोचना पड़ेगा। लेकिन उन लोगों का भी काम की योग्यता के विषय में उज्र नहीं होगा। अब सर्वोदय में यह कार्यक्रम हो सकता है।

कार्यकर्ता अपने लिए न पकायें

मैंने गुजरात में प्रवेश करते समय कहा था कि आपकी पकड़ में कोई एक शहर हो। मैंने सुझाया था कि बड़ौदा, सूरत, अहमदाबाद इन तीनों में से एक शहर हो सकता है। इसके लिए स्वतन्त्र कार्यक्रम होने चाहिए। १ ४ कार्यकर्ता काम करें और लोगों के घर खायें। १ ४ आदमी को बड़ौदा, अहमदाबाद, सूरत खिला सकता है। वे लोग वहाँ खाना खायेंगे। गीता में एक वचन है 'यज्ञशिष्टाशिनः सन्तो मुच्यन्ते सर्वकिल्बिषैः। भुञ्जते ते त्वघं पापा ये पचन्त्यात्मकारणात्'—वे पापी हैं जो पाप खाते हैं और जो अपने लिए पकाते हैं। अपने लिए यानी अपने परिवार के लिए। इससे अधिक कठिन शाप और क्या हो सकता है? भगवान् की जबान से यह शाप हो है। इसलिए हम अपने लिए नहीं पकायेंगे दूसरों के लिए पकाया हुआ हम खायेंगे और दूसरों के घर में खायेंगे। दूसरों के बने-बनाये घर में रहेंगे।

और अलग दिल नहीं बनाता, चूर कर बनाये हुए दिल में वह सुख से रहता है। हमारे कार्यकर्ता भी कभी इधर या कभी उधर पर मैं मुक्त न रहेंगे।

समाज और आश्रम

कार्यकर्ता सब इकट्ठे होते हैं। जो कुछ जानकारी हासिल हुई, सब-की-सब कही जाती है। थोड़ी-सी भगवान् की प्रार्थना भी की जाती है। मोहल्ले में क्या-क्या हुआ, इसकी भी जानकारी लेते हैं और नयी हिदायतें देते हैं। ऐसा करने से हम सतत प्रयोगशील रहेंगे। बोध गया में समन्वय आश्रम बनाया। वहाँ के प्रधान लोग—कॉलेज के लड़के आश्रम में खेती का काम करते हैं। उनको खेती के लिए सरकार की परीक्षा में इनाम मिला है। इतना अच्छा काम उन्होंने किया। फिर भी बोधगया शहर में जिसमें कि पाँच हजार से भी कम बस्ती होगी, उस पर आश्रम का असर नहीं है। वहाँ आश्रम में चोरियाँ तक होती हैं। मैंने कहा पकड़ हुई तो प्रसाद के तौर पर चोरी क्यों नहीं! लेकिन हमारे लोगों को यह अव्यवहार्य कार्यक्रम मालूम होता है। अगर यह कार्यक्रम अव्यवहार्य है तो क्या बनेगा! तीन एकड़ जमीन के आप मालिक हैं। जैसे अनेक मालिक होते हैं जो अपने-आपके लिए कमाते और पकाते हैं और आप खाते हैं। हम अपने लिए नहीं कमाते, सबके लिए कमाते हैं ऐसा लोगों को मालूम होना चाहिए। उनको एहसास होना चाहिए कि यह हमारा आश्रम है। इसकी रक्षा हमको करनी है। वहाँ हमारे लिए खेती होती है। ऐसा होगा तो वहाँ चोरी नहीं होगी। जो कुछ अन्न पका वह बाँट दिया तो चोरी की बात कहाँ रही!

लेटेस्ट अवस्था और आश्रम

हमने लेटेस्ट आश्रम बनाया वह हमारी आखिरी अवस्था है, उसका नाम रखा है विसर्जन आश्रम। जान-बूझकर विसर्जन नाम रखा है। विसर्जन यानी आश्रमों का संस्थाओं का विसर्जन करो। ऐसी बात

अक्सर बोलते हैं कि संस्था में लोग झगड़ते हैं, इसलिए संस्था को विसर्जित करो। हमने विसर्जन की ही संस्था बनायी और कह दिया कि तालीम के लिए यह स्थान है। आश्रम के लिए या बीमार के लिए ज्यादा उपयोगी नहीं है। दो-तीन मनुष्य उसमें रह सकते हैं वे गाँवों के लिए सर्वो का प्रयोग करें और बाकी के सेवकों को इन्दौर के घरों में रहना होगा। इन्दौर के घरों में जाना होगा। हमने यह जो जाहिर किया वह हमारी आखिरी मंजिल है। हमने कई वर्षों तक काम किया है। जहाँ-जहाँ श्रम किया बहुत सारा समय स्वावलम्बन का ही होता था। स्वावलम्बन से ताकत बनती है शरीर अच्छा बनता है आध्यात्मिक शक्तियाँ कुछ हद तक विकसित होती हैं। इसलिए जब शरीर-परिश्रम हो और ग्राम का आधार लेकर मसले हल करने हों, तो हमारे मसले ऐसे होने चाहिए, जिनके बारे में कतई विरोध न हो।

प्रयोग के प्रोग्राम

यदि आप १ सर्वोदय-पात्र नियमित चलाते रहें तो आज के जमाने में आपको साल भर में १ मिलेंगे। लेकिन अगर हमें १ इकट्ठा ही करने हैं तो छोटे-मोटे देनेवाले तीस आदमी चुनकर हम तीन दिन में यह हासिल कर सकते हैं। लेकिन सर्वोदय पात्र का जो क्रम है उससे हमें एक आधार मिलेगा। वैसे यह भी बहुत छोटी सी चीज है। उसका मुख्य उपयोग तो हमें हर घर में प्रवेश करने और हर व्यक्ति से सम्पर्क करने का मौका मिलता है। कल हमने कहा कि एक समय का खाना छोड़ दो—मिल न मील। अगर यह आन्दोलन चला तो एक भावना निर्माण होती है। ऐसी कई बातें हमें सूझ सकती हैं। इनको हम सामूहिक रूप दे सकते। व्यक्तिगत तौर पर लोग कई प्रकार का फाका करते हैं। पर्युषण करते हैं लेकिन उसकी सामूहिक कीमत नहीं होती है। सामूहिक कीमत में लगाने की कोशिश करते हैं तो लोगों पर आक्रमण होता है। लेकिन आक्रमण न हो और सामूहिक प्रेरणा मिले ऐसा काम

काम हम चुन सकते हैं। एक गाँव में उत्सव का आयोजन किया। सिर्फ उत्सवों का आयोजन और फिर उसका कार्यक्रम बनाया। सालों के लिए आपको ५ उत्सव मिलेंगे। कुछ राष्ट्रीय उत्सव कुछ धार्मिक उत्सव इत्यादि। ७ उत्सव आपको मिलेंगे। अनेक महापुरुषों के नाम से भी उत्सव मिलेंगे। गुजरात और तामिलनाड में टैगोर का उत्सव होता है वैसे अनेक आधुनिक अच्छे पुरुषों का उत्सव करें। ऐसे उत्सवों से एकता बनती है। आधुनिक १   २ महापुरुषों का उत्सव कर सकते हैं और पुराने धर्म-पुरुषों का भी उत्सव कर सकते हैं। उत्सव सारे शहर को व्याप्त कर एक, ऐसा आयोजन हो सकता है। उत्सवों का व्यवस्थित ढंग से आयोजन करके ताकत हासिल कर सकते हैं। सारे शहर के लिए हम उत्सव करना चाहते हैं तो उसमें दिक्कत नहीं होगी। उस निमित्त से लोक-सम्पर्क करके हम लोगों से काम करवायेंगे। अपने उत्सव में फलाना काम है ऐसा हम कहेंगे। यह सारी चीजें कुछ शिक्षण की कुछ सामाजिक उत्थान की, कुछ धार्मिक शान्ति की कुछ आध्यात्मिक प्रेरणा देनेवाली और कुछ नगर की हद तक सीमित होनेवाली होंगी। यहाँ पर सुनाया गया है कि २२ नं वार्ड में वेश्यायें रहती हैं और शराब है। इन्दौर नगर में यह अजीब-सी बात लगती है इसके लिए आन्दोलन उठाना पड़ेगा। उसके लिए आध्यात्मिक धार्मिक सामाजिक सब शक्तियाँ हमें मिलेंगी। हरएक समाज पेचीदा होता ही है। कोई भी समाज लीजिये। कार्ल मार्क्स ने कह दिया कि कुछ मूल्य अर्थमूलक होते हैं आर्थिक के सारे ऊपर-ऊपर के होते हैं। हम यह नहीं मानते। किसी भी मसले में अर्थशास्त्र आवश्यक ही। दीवारवाले चित्र में वस्तुओं के समाज में, शराब में सर्वोदयाधीन समाज आयेगा। कुछ लोगों के लिए कुछ सवाल करना पड़ेगा उनकी हालत देखनी पड़ेगी सोचना पड़ेगा और उस सोचने में उस बुद्धि का विकास होता है।

स्वाधीन सरकार के हाथ में न हो तो कहीं पर तो उसका प्रयोग करना होगा। छोटे-छोटे म्युनिसिपैलिटी बनाये जायें छोटे-छोटे स्कूल

बनायें। गाँव के लोगों में उसकी प्रतिष्ठा बढ़ायें। अच्छे दो-चार मनुष्य बैठायें। ऐसे दो-तीन स्कूल अच्छी तरह चले और उनका बोलबाला हुआ, तो शहर में तालीम आबाद करने का आन्दोलन शुरू हुआ। इस तरह जीवन के अनेक पहलू होते हैं। सारे देश में काम करने की दृष्टि से गत [illegible] में हमने भूदान-आन्दोलन चलाया, सारे देश में पहले प्राप्ति की प्राप्ति की। विसर्जन भी देरी से किया और सारे देश के लिए प्रयोग किया। हमारे काम का गुणाकार बड़ा आना चाहिए। गुणाकार तब बड़ा आता है जब गुण्य और गुणक दो में से एक बड़ा होता है। इन्दौर में ग्रामदान सम्पत्ति-दान का काम करेंगे ऐसा नहीं; पर इन्दौर की कुल-की-कुल धाराएँ लेकर काम करेंगे, तो हमारा गुणाकार बड़ा आयेगा। इसका मतलब यह होता है कि हमारी बुद्धि के लिए बड़ा क्षेत्र खुल जाता है। इस लिहाज से मैं सोचता हूँ कि आपको एक शहर चुनना होगा।

त्रिविध कार्य—करने के, कराने के, होने के

बाराभाई अपना काम करते थे सरगुजा में—ग्रामदान विस्तार का। वहाँ वे खादी का काम करते थे। उनको लगता है कि यह काम करते हैं तो गरीबों की मदद हो सकेगी उनकी हमदर्दी प्राप्त हो सकती है। अच्छा है काम। पर मैंने कहा कि यह काम तो कराने का है करने का नहीं। गुजरात के लोगों को मैंने पत्र लिखा कि कुछ काम कराने के होते हैं कुछ काम करने के होते हैं और कुछ काम होते ही हैं। जहाँ शान्ति की बात आती है शान्ति होने की है। बहुत मशहूर पत्र है। सारे हिन्दुस्तान में फैल गया वह। सभी बातें करने या कराने की नहीं होतीं। यह काम भी करने का नहीं है नहीं तो हमारी गाड़ी रुक जायगी। सारी कमीशनवाले बनें। अगर हम यह काम करेंगे तो उनका कमीशन कौन करेगा ? यह कहा था उनको बात जँची। आप ये इन्दौर आये तो एक शुरुआत हो गयी। इन्दौर का काम होगा तो मध्यप्रदेश का [illegible]

कि हमारी तरफ से यह प्रयोग हो रहा है। आरम्भ में दूसरे प्रान्त से भी कार्यकर्ता आये। गुजरात, महाराष्ट्र और राजस्थान से कार्यकर्ता आये। बिहार से भी आये। बिहार कितना भी दूर हो वहाँ के कार्यकर्ता सब जगह आते हैं। पन्द्रह दिन के लिए एक कैम्प बनाया गया। हम भी यहाँ महीनाभर डेरा डालकर बैठ गये। ताकत बढ़ाने के भी तरीके होते हैं। उन तरीकों से एक दफा ताकत बनायी तो उसके आगे और भी ताकत यहाँ बढ़ेगी। इससे लाभ होगा तो कुल प्रान्तों को लाभ होगा। दूसरे प्रान्तों को भी लाभ होगा। इस तरह यहाँ लाभ होता है तो दूसरे प्रान्तों से यहाँ कार्यकर्ता आयेंगे तो उनको भी लाभ होगा। यह इन्दौर शहर प्रैक्टिसिंग स्कूल और मानो बनेगा विसर्जन-आश्रम।

इन्दौर
११-८ ६

क्षमा-याचना

आज हम इन्दौर से विदा ले रहे हैं। यहाँ पर यह आखिरी आम सभा है। ११ दिन के बाद यहाँ से हम जा रहे हैं। इससे आगे सात दिन कस्तूरबाग्राम में बितायेंगे, जो इन्दौर का ही एक हिस्सा माना जायगा। इस तरह सवा महीने से भी ज्यादा समय हमारा यहाँ बीता। इससे हमें बड़ी खुशी हुई। हमें यह नहीं लगा कि हमने नाहक इतना समय दिया। यहाँ पर हमें नया ज्ञान मिला। इस तरह हम किसी नगर में नहीं रहे थे। हमारा दिमाग और दिल हमेशा खुला रहता है और जहाँ से जो भी सीखने लायक हो वह सीखने की तमन्ना रहती है। इस दृष्टि से यहाँ हमें बहुत कुछ सूझा है। यहाँ पर हमने कुल मिलाकर ११५ से ज्यादा व्याख्यान दिये। बचपन से आज तक बोलता ही रहा हूँ। इस तरह जो मनुष्य सतत बोलता रहता है उसके मन में पूर्ण सद्भावना होने पर भी उसके मुँह से ऐसे कुछ शब्द निकल सकते हैं जिनका किसीको सदमा पहुँचे। उसके लिए मैं उन सबकी क्षमा माँग लेता हूँ जिनके दिलों को मेरे शब्द चुभे होंगे। उन्हें क्षमा करनी ही चाहिए, क्योंकि वे सोचेंगे तो उन्हें पता चलेगा कि इसने जो कहा है इसमें उसका कोई निजी स्वार्थ या द्वेष नहीं है उसने प्रेम से ही कहा है। साधारणतः मेरे शब्दों पर मेरा काबू रहता है। मुझे शब्दों का ज्ञान भी पर्याप्त है। मैं शब्दशास्त्र अच्छी तरह जानता हूँ। बावजूद इसके मेरे शब्दों से किसीको ठेस पहुँची होगी, इसलिए मैं यहाँ पर सबकी क्षमा माँगना उचित समझता हूँ।

भीरुता से हिंसा की वृद्धि

उतावलेपन रजोगुण से अहिंसा नहीं बढ़ती। धीरज के अभाव में

हिंसा पनपती है इसलिए यद्यपि मैं बहुत उग्र कार्यक्रम बना सकता हूँ, बनाना जानता हूँ लेकिन नहीं बनाता। जैसे किसी इंजीनियर के रास्ता बनाने पर लोगों को भान नहीं होता कि हम ऊँचे चढ़ रहे हैं। पहाड़ के लिए सोपान-मार्ग बनाने पर धीरे-धीरे आगे बढ़ना होता है। यहाँ पर हमने एक दिन योगासन देखे। उसमें 'धीरे धीरे धीरे' यह शब्द इतनी दफा बोला गया कि उसका हम पर बड़ा असर हुआ। गीता में कहा है कि 'शनैः शनैः उपरमेत्'—उपरति धीरे-धीरे होनी चाहिए, तो पक्की होती है कच्ची नहीं रहती। सुव्यवस्थित ढंग से काम करने से गिरने का डर नहीं रहता। हम धीरे-धीरे आगे बढ़ें। इसलिए मैंने छोटे-छोटे कार्यक्रम बनाये हैं। और भी धीरे-धीरे चलनेवाले कार्यक्रम रख सकते हैं, जिसमें सबकी सहानुभूति और सहयोग हासिल करना होता है। सर्वोदय में यह एक बहुत बड़ी बात है। यह हम करते हैं तो आगे का काम आसान होगा।

सर्वोदय-नगर में पार्टी-पॉलिटिक्स न हो

इस दृष्टि से मैंने यहाँ के नगर-निगम को सुझाया कि उनका कारो-बार पक्ष-मुक्त चले। यह बात सब पार्टियों ने पसन्द की। लेकिन यहाँ पर कांग्रेस की तरफ से कहा गया कि हमें समाजवादियों से अनुकूलता मिले तो अच्छा होगा। आज कांग्रेस के अध्यक्ष संजीव रेड्डी हमसे मिले थे। उनसे हमने कहा कि इन्दौर नगर-निगम में पक्ष-मुक्तता का काम चले ऐसा मेरा सुझाव है। उसके बिना इन्दौर का सर्वोदयनगर बनना सम्भव नहीं। उन्होंने फौरन कबूल किया और कहा कि आन्ध्र में हम ऐसा ही करते हैं। वहाँ पर निगम पंचायत आदि के चुनावों में कांग्रेस मेन खड़े होते हैं परन्तु पार्टी की तरफ से नहीं व्यक्तिगत नाते खड़े रहते हैं और उसे हम बहुत पसन्द करते हैं। उसके बिना हिन्दुस्तान में हम बढ़ेंगे। उसके बाद उन्होंने यहाँ की प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष से कहा कि यह होना चाहिए। इस काम के लिए समाजवादियों की सम्मति

और आशीर्वाद मिल गया है इसलिए इन्दौर में यह काम जरूर बनना चाहिए। फिर सारे स्टेट पर लागू हो सकता है। इसके आधार पर हम सब प्रकार के विचार भेदों से मुक्त हो सकते हैं।

हमारे अहंकारों का विसर्जन

मैंने इसका नाम विसर्जन-आश्रम रखा है। इसमें हमारे अहंकारों का विसर्जन होना चाहिए। हम सबको यह भान होना चाहिए कि अपने जीवन में से अहंकार को हटाना होगा। बहुत दफा मनुष्य को भ्रम होता है कि अहंकार नहीं होगा तो काम भी नहीं होगा। काम को खड़ा करने के लिए अहंकार जरूरी है लेकिन मेरा विचार हमेशा सूक्ष्म रहता है। हम अहंकार को छोड़ देते हैं तो काम के साथ एकरूप हो जाते हैं। फिर हमारी समाधि लगती है। समाधि का अर्थ यह कि हम अपने ध्येय और कर्म के साथ इतने एकरूप हो जाते हैं कि अहंकार नष्ट हो जाता है। इसलिए प्रवाहरूप से जो कर्म हमारे पास आता है, उसे करना चाहिए। अहंकार से नहीं करना चाहिए। गीता में कहा है 'प्रवाहपतितं कर्म कुर्वन् नाप्नोति किल्बिषम्'। सामाजिक प्रवाह में अपना अहंकार रखे बिना मनुष्य काम करता है तो उसमें मनुष्य को दोष नहीं लगता। हम प्रवाह-पतित होकर काम को उठायें और अहंकार को हटायें, तो कर्म से शुद्धि होगी। उसमें दोष नहीं आयेगा।

इन्दौर पर अकारण स्नेह

यहाँ पर मुझे इतनी सहानुभूति मिली है उसके मूल में यही बात है कि एक शख्स आपके शहर में आया और उसने आप पर नाहक प्रेम, अकारण स्नेह किया। स्नेह के लिए कोई कारण नहीं था। इस स्थान से मेरा पैतृक सम्बन्ध कभी नहीं रहा है। न यहाँ मेरा घर है न और कोई है। मैंने सपना देखा जिसमें मुझे इन्दौर दिखायी दिया। कवि कहता है 'ख्वाब में सैर करता हूँ' दिन ही में ख्वाब में सैर करता हूँ। इस तरह अकारण स्नेह करनेवाला एक मनुष्य यहाँ आया तो

स्नेह मिल गया लेकिन फिर भी आपकी रात अँधेरे में ही बीतती जा रही है क्योंकि आप बटन दबाना नहीं जानते। इसलिए स्नेह और प्रेम-शक्ति भी कुण्ठित होती है। अन्योन्य विश्वास में सबसे बड़ी ताकत है। लेकिन आज दुनिया में विश्वास कम दीखता है यद्यपि प्रेम काफी है। मैंने देखा है कि जो पति-पत्नी एक-दूसरे पर प्रेम करते हैं जिन्दगीभर साथ रहते हैं उन्हें बच्चे भी होते हैं उनमें भी अन्योन्य विश्वास नहीं है। उनके मन में संशय रह गया है। ऐसी पचासों मिसालें मैंने देखी हैं। एकाधक से कहिये या हेतुपूर्वक कहिये इस व्यवहार से मैं अलग रहा हूँ। जिन्होंने यह व्यवहार किया है वे अपने मसले मेरे सामने रखते हैं और कहते हैं कि बाबा हमारी बीबी से हमारा नहीं बनता है, क्या करें। बीबी कहती है कि पति हम पर अत्याचार करता है मन में संशय रखता है। इस तरह मैंने पचासों मिसालें देखी हैं कि बरसों तक साथ में रहने पर भी पति-पत्नी को एक-दूसरे के दिल में क्या-क्या चल रहा है इसका पता नहीं रहता। अन्योन्य विश्वास नहीं है।

विश्वास-शक्ति बढ़े

प्रेम से स्नेह ज्यादा गाढ़ा होता है। प्रेम सर्वसामान्य है। स्नेह में अनुराग भरा हुआ रहता है। वह आसक्ति के करीब-करीब पहुँचता है। एक कदम आगे बढ़े तो आसक्ति बन जायगा। मैंने दुनिया में प्रेम बहुत देखा है स्नेह भी काफी देखा है लेकिन विश्वास नहीं दिखाई देता। यही बात मैं अपने साथियों में देखता हूँ। कार्यकर्ताओं में भी देखता हूँ आश्रमवासियों में भी देखता हूँ। उनमें विश्वास की कमी है। इसलिए मैंने एक श्लोक बनाया है 'वेदान्तो विज्ञानं विश्वासश्चेति शक्तयः तिस्रः। यासां स्थैर्ये नित्यं शांतिसमृद्धिर्भविष्यतो जगति ॥' अगर आप दुनिया में शांति और समृद्धि चाहते हैं तो आपको तीन चीजें पक्की करनी चाहिए। पहली है वेदान्त जिसमें सुस्पष्टित मजहबों का अन्त होता है और मनुष्य के चित्त में स्थित स्थानिक आध्यात्मिकता स्थिर होती है।

दूसरी बात है विज्ञान, जो मनुष्यों को जोड़ता है और तीसरी बात है विश्वास। राजनीति में अन्योन्य विश्वास दाखिल हो जाय तो उसका रूपान्तर लोकनीति में हो जायगा। यह मेरा एक अप्रतिम श्लोक है जो इस जमाने के लिए है। मैंने कार्यकर्ताओं में भी देखा है कि स्नेह काफी है लेकिन विश्वास की कमी है। बिजली तो आयी है लेकिन बटन नहीं दबाया जाता है। आप बटन दबायेंगे, तो प्रकाश मिलेगा। नहीं दबायेंगे तो प्रेम पड़ा रहेगा, लेकिन उसकी अनुभूति नहीं होगी। उसके लिए तो अन्योन्य विश्वास चाहिए। परमात्मा करें और आपको यह विश्वास का दान दें, यही कामना करके मैं समाप्त करता हूँ।

विसर्जन आश्रम इन्दौर —प्रार्थना-प्रवचन
२१-८ ६

आज मैं इन्दौर छोड़कर नहीं उसे हृदय में रखकर जाऊँगा। आपमें से कई लोग मेरे साथी बन गये हैं। जब तात्यासाहब सरवटे ने मुझे लिखा कि "मैं अपना जीवन आपके काम में लगाना चाहता हूँ, मैं बूढ़ा हूँ मुझमें ज्यादा शक्ति नहीं परन्तु जो है वह मैं इस काम में लगाना चाहता हूँ। सर्वोदय-विचार के अध्ययन और काम में ही मैं अपना सारा जीवन अर्पण करना चाहता हूँ।' तब मैंने समझा कि इन्दौर सर्वोदय-नगर बनने का संकल्प कर चुका है। कार्यों ने मुझसे कहा, बहनों ने भी कहा कि हम काम करेंगी। वे सब कर रहे हैं। अब यहाँ सहानुभूति का प्याला भर गया है। जब उस वृद्ध पुरुष (तात्या साहब सरवटे) की आँखों में आँसू आये तब मैंने कहा कि इन्दौर सर्वोदय-नगर बने। वे बोले कि मैं भी चाहता हूँ कि इन्दौर वैसा ही बने। इन्दौर की सेवा में मेरा सारा जीवन बीता है। इन्दौर की आध्यात्मिक और भौतिक उन्नति की राह खुल जायगी तो मुझे अत्यन्त खुशी होगी। इस तरह कहकर जब उन्होंने अपना जीवन समर्पण किया और यह भी चाहा कि इन्दौर में उनके जितने साथी हैं उन पर जितना असर डाला जा सकता है वे डालेंगे। तब मुझे लगा कि यह एक बहुत बड़ी चीज लेकर मैं यहाँ से जाऊँगा। यह कोई एक व्यक्ति की नहीं बल्कि सारे इन्दौर का हृदय प्रकट हो चुका है। उसकी यह एक पहचान है निशानी है।

आपकी जिम्मेवारी

मैंने आप सबका पूरा प्रेम पाया है दुनिया में जहाँ भी जाऊँगा आपका गुणगान करता रहूँगा और कहूँगा कि इन्दौर के लोग कलाकार

काम में लगे हुए हैं। उन्होंने भेद-भाव मिटाने का निश्चय किया है। अपना कुछ-न-कुछ समय नगर की ऐसी सेवा में, जिससे आध्यात्मिक मूल्यों की प्रतिष्ठा होगी दे रहे हैं। यह लोभ की पोल आवाज न हो, प्रेम आवाज हो। यह आपकी जिम्मेवारी है। मैं पार्टी धर्म, भाषा आदि के भेदों को नहीं मानता हूँ। मैं मानवता को ही मानता हूँ और मित्र के नाते सबकी तरफ देखता हूँ। फिर आप चाहें किसी भी पार्टी, धर्म या पंथ के हों। मैं चाहता हूँ कि कुल इन्दौर नगरी सर्वोदय मित्र-मंडल बने। इसकी हम कोशिश करें। वैसे सार्वजनिक काम में कुछ मतभेद तो होते ही हैं, लेकिन हम कोई ऐसा काम न करें जिससे इन्दौर की प्रतिष्ठा को धक्का लगे। यहाँ पर सारे चौदह हजार सर्वोदय-पात्र रखे गये हैं वे स्थिर होने चाहिए। हमारा यह संकल्प होना चाहिए कि धीरे-धीरे इन्दौर के हर घर में सर्वोदय-पात्र की स्थापना होगी और सुव्यवस्थित रूप से हर व्यक्ति विनोबा को टैक्स दे रहा है ऐसी स्थिति हम पैदा करेंगे।

इन्दौर
१२-८-[illegible]

—पांची बाबा में

साधु पुरुष के जागने का समय

रात की आखिर की दस घड़ी याने चार घंटे पहले उठकर भगवान् का भजन, अध्ययन, अध्यापन करना चाहिए। नरसी मेहता ने गाया है—'रात रहे ज्यारे पाछली खट् घड़ी साधुपुरुषने सुई न रहेवुं'—पिछली छह घटिका बाकी रहे तब साधु पुरुष को सोना नहीं चाहिए। छह घटिका याने ढाई घंटे। साढ़े तीन से छह यह समय होगा। तमिलनाड में पळ्ळीकुळम् में चार घंटे का परवाना था। नरसी मेहता ने ढाई घंटे का परवाना दिया। यह छोटी-सी बात दीखती है, लेकिन सिनेमा, मोह-विकार खतम करने हैं तो हमें यह आदत डालनी होगी।

नियमित यात्रा का महत्त्व

बाबा की यात्रा अखंड चलती है। ठंड हो, गरमी हो या वर्षा हो—तीनों मौसम में पहाड़ पर, जंगल में या रेगिस्तान में चलती ही रहती है। इसका राज क्या है? इसका राज है ब्रह्मचर्य, नियमित आहार-विहार और निद्रा में भी नियमितता। बाबा रात को आठ बजे सोते हैं और तीन बजे उठते हैं। पूरी निद्रा मिलती है तो बुद्धि तेजस्वी होती है, काम बहुत होता है और थकान नहीं लगती। इतना सोते हुए भी अगर आराम की जरूरत पड़े तो दिन में वे बीच-बीच में कर लेते हैं। इस प्रकार का सब नियमन किया है। किस वक्त खाना इसका भी नियमन, किस वक्त सोना इसका भी नियमन, किस वक्त चलना, किस वक्त उठना, इसका नियमन है। इस प्रकार जीवन में नियमन रखा जाय तो आरोग्य रहता है, उत्साह रहता है। और इसलिए ही हमारी अखंड यात्रा चलती है।

शास्त्रों का अध्ययन, सत्संग, भजन आदि के लिए जगह-जगह मंडल हों। इन दिनों अध्ययन का महत्त्व लोगों के जीवन में कम हुआ है। अध्ययनशीलता का गुण होना बहुत जरूरी है। उसके द्वारा ही नये-नये काम सूझते हैं। इसलिए अध्ययन-वर्ग स्थापन करना, यह भी सर्वोदय-नगर का एक कार्यक्रम है।

सर्वोदय-नगरी के विविध कार्यक्रम

इन्दौर में बारह-तेरह हजार सर्वोदय-पात्र रखे गये हैं। यहाँ सब लोगों ने मिलकर प्रयत्न किया है यह एक बड़ी बात है। यहाँ सत्तर अस्सी हजार घर हैं। इसका मतलब यह हुआ कि यहाँ और भी गुंजाइश है। हर घर में सर्वोदय-पात्र हो यह भी एक कार्यक्रम है। यह सचमुच एक शिक्षण है। सफाई का काम तो किया ही है। अब का यह कार्यक्रम करना है और कराना है। दीवाल साफ हो जाय, यह करना है। दीवाल साफ करने के लिए जिसकी दीवाल पर चित्र लगाये गये हैं, उनको समझाया जाय। फिर सम्पत्ति-दान का भी एक कार्यक्रम है। एक घर में एक सेवक शामिल किया जाय और उसका हिस्सा दें। माना कि एक घर में दस मनुष्य हैं तो ग्यारहवाँ समझकर उसको अपना हिस्सा देना है। हर मनुष्य की शक्ति सार्वजनिक सेवा में लगेगी। इसके बाद प्राणिमात्र पर दया, वेश्याओं का उद्धार, यह भी एक कार्यक्रम है। ऐसे सोचते चले जायँ तो कितने ही कार्यक्रम हमारे पास हैं। बच्चों का कार्यक्रम लें तो गरीबों के बच्चों के लिए क्या करना है? उनके बच्चों को पढ़ाना कुछ उद्योग की व्यवस्था करना ऐसी योजनाएँ भी हो सकती हैं। कुछ व्यायाम-शालाएँ भी होंगी। योगासन का भी कार्यक्रम हो सकता है। सब घर के सब बच्चों को प्राणायाम का ज्ञान होना चाहिए। कैसे बैठना यह भी उनको नहीं आता है। ऐसे ढंग से बैठते हैं कि शरीर थक जाता है और चिन्तन नहीं हो सकता। खाने का ढंग भी उनको बताया जाय। बहनों को रसोई कैसे पकायी जाय यह भी बताया जाय ताकि आहार में से पोषण कम न हो। ऐसे एक-एक कार्यक्रम हम दे सकते हैं। नौकरों को रोजगार के बदले अनाज दिया जाय, यह भी कार्यक्रम हो सकता है। इस तरह एक विशाल विश्वरूप दर्शन हो जाता है।

गम्भीर अध्ययन आवश्यक

अध्ययन के लिए पुस्तकें हों। उनमें सर्वोदय-विचार की पुस्तकें हों। भगवद्गीता और ऐसी पुस्तकों पर भी अध्ययन होना चाहिए

जिसमें गांधीजी के सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक पहलुओं के विचार हों। इसके अलावा जो आध्यात्मिक साहित्य है, उसका भी अध्ययन होना चाहिए। पहले के जमाने व आज के जमाने में अध्यात्म का विचार अलग दृष्टि से होता है। अध्यात्म के विचार भी आज के विचार के संदर्भ में पेश किये जाते हैं तो अच्छी मदद होती है। गीता के अलावा जिनका हरएक मनन करते हैं ऐसी पुस्तकें रखनी चाहिए। इसलिए पुराने ग्रन्थों का अध्ययन हो। रामायण आदि किताबें मिलती हैं, जिन्हें देखकर समझना होता है; लेकिन उनसे शास्त्रीय अध्ययन होगा, काल्पनिक उपासना होगी। उपासना अच्छी है। लेकिन पुराने जमानेवालों ने वह उपासना काल्पनिक की थी और इससे अध्यात्म-ज्ञान की गति कुंठित होती है। ऐसी जो आध्यात्मिक पुस्तकें प्रकट हुई हैं उनका अध्ययन हो—जैसे कि मंगल प्रभात, जीवन शोधन। ऐसी पुस्तकों का अध्ययन होना चाहिए। बिलकुल आखिरी पुस्तक जो हमने लिखी है 'गीताई चिंतनिका', उसका अध्ययन होना चाहिए। वह मराठी में है, हिन्दी में हो सकती है। यहाँ मराठीभाषी हैं वे इस पुस्तक पर चिन्तन करें।

हर नागरिक सर्वोदय-कार्यकर्ता

इन्दौर में हर नागरिक इसका कार्यकर्ता हो। धंधा भले ही अपना करें, लेकिन प्रामाणिकता और सच्चाई से करें और बचे हुए समय में इन्दौर का काम करें तो सब-के-सब नागरिक सर्वोदय के कार्यकर्ता हो जायेंगे। उन सबमें अध्यात्म के अध्ययन-अध्यापन की प्रवृत्ति हो और ऐसे आश्रम बनें, जिसमें अच्छे प्रकार का अध्ययन-अध्यापन हो। शंकर, रामानुज का रवैया यहाँ चले। मत की निष्ठा रखकर अध्ययन-अध्यापन हो। सर्वोदय-विचार की व्यापक परम्परा यहाँ चलनी चाहिए। इस दृष्टि से विसर्जन-आश्रम का उपयोग हो सकता है।

इन्दौर
१५-८-'६०

—विसर्जन-आश्रम के कार्यकर्ताओं के बीच

(कस्तूरबाग्राम से विनोबाजी तीन दिन थोड़े समय के लिए विसर्जन आश्रम जाते थे।)

प्रेम-चिह्न

हमने सोचा कि यहां आश्रम बनाया है तो उसकी कुछ सेवा भी करनी चाहिए। इसलिए तीन बार हम यहाँ आये। विचार संकल्प होता है। अब हमारा आगे यहाँ आने का सम्भव नहीं लगता। यहां आकर हमने जो काम किया वह केवल चिह्न बनाने के लिए, एक प्रेम चिह्न के तौर पर किया। तीन-तीन घन्टे हमारे उसमें दिये। काम तो बहुत थोड़ा हुआ है लेकिन वह हमने अपने समाधान के लिए किया।

इसलिए इस आश्रम का नाम ही हमने चिन्तन आश्रम रखा है। हमने कहा कि यहाँ हम भगवान के लिए आयेंगे पर यह मोर्चा हमारा नहीं है। हमारा मोर्चा शहर में है। सारा कर्मक्षेत्र वहीं है। यहाँ हम आयेंगे, तो एकान्त चिन्तन के लिए आत्म-परीक्षण के लिए। इसलिए हमारा स्थान है और इन्दौरवालों का यह स्थान है। इस तरह अन्योन्य सम्बन्ध होगा। यह सिर्फ इसीको लागू नहीं है, सारे समाज को लागू है। व्यक्ति समाज की सेवा करेगा समाज व्यक्ति की। इस तरह अन्योन्य सेवा करनेवाला समाज बने। वैसा ही यह आश्रम बने।

हम सीमित नहीं बनेंगे

यहाँ लोग प्रेम और श्रद्धा से आयेंगे। उनका यह आश्रयस्थान बने। यह बात अलग है कि जब तक सारे समाज का परिवर्तन नहीं होगा तब तक पूर्ण रूप से हमारा समाधान नहीं होगा। लेकिन उसमें उतावली नहीं होनी चाहिए। मैं वनस्पति का बगीचा देखने गया था। वहाँ पेड़ों से ज्यादा जड़ी-बूटी देखी। हम कोशिश तो करेंगे पेड़ साफ रखने की लेकिन वनस्पति का उपयोग किये बिना ही पेड़ साफ रहें, तो अच्छा। यह वनस्पति तोड़ने का काम हम नहीं करेंगे। इस तरह हम अपने मूल सिद्धान्त नहीं छोड़ेंगे। अपने नजदीक जितने लोग आते हैं और आयेंगे कोई ज्यादा नजदीक आयेगा कोई कुछ दूर रहेगा, लेकिन सबका संग्रह करेंगे। सारे समाज का समावेश हम अपने में करेंगे। तभी आप आगे बढ़ेंगे अन्यथा हम सीमित बनेंगे छोटे बनेंगे। किसी छोटी जाति की तरह हम सीमित बन जायेंगे। पहले तो बहुधा उसूल के लिए जाति बना लेते हैं फिर दूसरी जाति के साथ सम्बन्ध नहीं रखते अन्त में उसीमें जकड़ जाते हैं। हिन्दुस्तान के खून में यह आदत है छोटी-छोटी जमात बनाने की। उसीका आधार लेकर अलग-अलग पार्टियाँ बनाते हैं जमातें बनाते हैं। इस तरह कई छोटी-छोटी जमातें राजनैतिक दल और साम्प्रदायिक स्थान बनाते हैं। हमें ऐसी छोटी जमात नहीं [illegible]नी है।

प्रेमयुक्त अल्पदान का स्वीकार

इसके अलावा लोगों से दान भी ले सकते हैं। दान में कोई हद नहीं हो सकती। जिसके पास सिर्फ हड्डी बची थी उसके पास भी हड्डी माँगने के लिए गये थे—वृत्रासुर का हनन करने के लिए। दधीचि ऋषि की यह कहानी मशहूर है। दधीचि ने कहा : मेरे पास जो कुछ था, वह सब कुछ मैंने दे दिया। अब हड्डी बची है, उसे माँगने के लिए आये हो तो मुझे बहुत खुशी है। इस तरह उन्होंने देह का खुशी से विसर्जन किया। त्याग की कोई सीमा नहीं, कोई मर्यादा नहीं। लेकिन जैसे मधुमक्खी फूल को धक्का दिये बिना उसमें से मधु ले लेती है, उसी तरह हमें दाताओं से दान लेना है। ऐसा अगर होगा है, तो वे स्वयं आपको ज्यादा दान देंगे। हम उनसे कहें कि यह दान बहुत थोड़ा है, तो ज्यादती होगी। उनके सामने एकदम साम्य की बात मत रखो। भले ही उन्होंने थोड़ा दिया हो। अगर उनका दान बिलकुल अशोभनीय हो, अत्यन्त अल्प हो, तो ऐसे दान का आप स्वीकार मत कीजिये। बाकी जहाँ प्रेम से थोड़ा दिया हो, तो आप उसे प्रेम से ले लीजिये। उससे आपका प्रवेश उनके घर में हो जायगा। इस दृष्टि से हमें धीरे धीरे आगे बढ़ना है।

कस्तूरबाग्राम (इन्दौर) —विसर्जन-आश्रम में प्रवचन
१९-८-'६०

इन्दौर एक आदर्श नगर हो ५३

सुख-प्राप्ति की कुंजी

मनुष्य खुद सुखी बने और अपना परिवार भी सुखी बने, ऐसी कोशिश करता है। यह सिलसिला चलता आया है, लेकिन अनुभव यह आया है कि किसीका आज तक समाधान नहीं हुआ। समाज में सन्तुलन नहीं आया। मुश्किल से थोड़े लोगों को सुख प्राप्ति होती होगी। ताज्जुब की बात है कि सुख-प्राप्ति की कोशिश होती है और दुःख प्राप्त होता है। हमने नाम तो लिया है बम्बई का और कदम हमारे बढ़ रहे हैं आगरा की तरफ। इच्छा कुछ है और कोशिश कुछ और हो रही है। इसलिए कहाँ और क्या गलती हो रही है! बस ही हमने बच्चों को सिखाया 'परहित बस जिनके मन माहीं तिन कहुँ दुर्लभ कछु नाहीं'। जो लोग दूसरों को सुख मिले दूसरों का हित हो यह चाहते हैं उनको सुख मिलता है। उनको किसी प्रकार की कमी नहीं रहती। यह कुंजी गोसाईंजी ने हमें दी और अनुभव भी यही आता है। अपनी छाया के पीछे हम दौड़ेंगे तो छाया हमारे पीछे नहीं आयेगी। इसके बदले हम उसके पीछे न लगें तो वह हमारे पीछे आयेगी। उसी तरह हम अपने सुख की कोशिश करेंगे तो सुख दूर रहेगा। यही है कुंजी यह है राज। यह न्याय आप लोगों के सुख को लागू है। जो न्याय आपको लागू है वही न्याय समाज को लागू है। आपको अपने सुख की चिन्ता न होनी चाहिए, वैसे ही एक जाति को अपनी चिन्ता नहीं होनी चाहिए। एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति के सुख के लिए कोशिश करती है, एक समाज दूसरे समाज के हित की और सुख की कोशिश करता है ऐसा होना चाहिए ऐसी हवा बननी चाहिए।

अपने से नीचे की ओर दृष्टि

आज कुछ मध्यम श्रेणी के कर्मचारी हमसे मिले। उन्होंने पाँच-छह बातें हमारे सामने रखीं। उन्होंने एक सहकारी समिति बनायी है। इस तरह से अपना समाज सुखी हो इसकी कोशिश उन्होंने की है। उन्होंने हमसे सलाह माँगी। हमने कहा इससे आपकी प्रतिष्ठा नहीं होगी। आपको अपने मित्रों के सुख के लिए कुछ कोशिश करनी होगी। नहीं तो आप छोटे पड़ेंगे दूसरे की सहानुभूति माँगने पर भी आपको नहीं मिलेगी। इसके साथ-साथ आपको विशेष प्रयत्न करना चाहिए। मध्यम श्रेणी के चार हजार वर्कर्स हैं। सौ रुपये के ऊपर जिनको तनख्वाह मिलती है वे मध्यम श्रेणी के माने जाते हैं। मैंने उनको सुझाया कि आपसे भी जो नीचे की श्रेणी के लोग हैं उनके सुख के लिए आपको कोशिश करनी चाहिए। आपको सौ रुपये तनख्वाह मिलती है तो एक परसेण्ट दान आप दे सकते हैं। यहाँ जो भंगी समाज है, उससे गिरा हुआ दूसरा समाज नहीं है। दरिद्रता के ख्याल से दूसरा समाज और नीचे हो सकता है लेकिन वह भी काफी दरिद्री है। इतनी ही बात है कि सामाजिक ख्याल से यह सबसे घृणित और सबसे नीचा माना जाता है। उनके लिए संपत्ति-दान दीजिये। इन्दौर के भंगियों की उन्नति के लिए आपको कोशिश करनी चाहिए। उनके दुःख में आप मदद देंगे तो वे आपके लिए मर मिटेंगे और आपकी भी उन्नति होगी। उसके लिए क्या-क्या किया जाय? यह सोचकर भंगी समाज की सेवा का काम आप उठा लीजिये।

एक अप्पा बाकी गप्पा

मैं हमेशा कहता हूँ आप अपने को कोई हरिजन सेवक कहता है तो उसमें एक है अप्पा और बाकी है गप्पा। एक ही सज्जन ऐसा है जो रात-दिन उन्हींकी चिन्ता करता है। सर्वोदय का सज्जन होने के नाते वे भूमिदान का भी काम करते हैं। ऐसा नहीं होना चाहिए, यह बात भी

सुख-प्राप्ति की कुंजी

मनुष्य खुद सुखी बने और अपना परिवार भी सुखी बने ऐसी कोशिश करता है। यह सिलसिला चलता आया है लेकिन अनुभव यह आया है कि किसीका आज तक समाधान नहीं हुआ। समाज में सन्तुलन नहीं आया। मुश्किल से थोड़े लोगों को सुख-प्राप्ति होती होगी। ताज्जुब की बात है कि सुख-प्राप्ति की कोशिश होती है और दुःख प्राप्त होता है। हमने नाम तो लिया है बम्बई का और कदम हमारे बढ़ रहे हैं आगरा की तरफ। इच्छा कुछ है और कोशिश कुछ और हो रही है। इसलिए कहीं और क्या गलती हो रही है? पहले ही हमने बच्चों को सिखाया परहित बस जिनके मन माहीं तिन कहुँ दुर्लभ कछु नाहीं। जो लोग दूसरों को सुख मिले दूसरों का हित हो यह सोचते हैं उनको सुख मिलता है। उनको किसी प्रकार की कमी नहीं रहती। यह कुंजी गोसाईजी ने हमें दी और अनुभव भी यही आता है। अपनी छाया के पीछे हम दौड़ेंगे तो छाया हमारे पीछे नहीं आयेगी। इसके बदले हम उसके पीछे न भागेंगे तो वह हमारे पीछे आयेगी। इसी तरह हम अपने सुख की कोशिश करेंगे तो सुख दूर रहेगा। यही है कुंजी, यह है राज। यह न्याय आप लोगों के सुख को लागू है। जो न्याय आपको लागू है वही न्याय समाज को लागू है। आपको अपने सुख की चिन्ता न होनी चाहिए वैसे ही एक जाति को अपनी चिन्ता नहीं होनी चाहिए। एक जाति दूसरी जाति के सुख के लिए कोशिश करती है एक समाज दूसरे समाज के हित की और सुख की कोशिश करता है, ऐसा होना चाहिए ऐसी दृष्टि रखनी चाहिए।

अपने से नीचे की ओर दृष्टि

आज कुछ मध्यम श्रेणी के कर्मचारी हमसे मिले। उन्होंने पाँच-छह बातें हमारे सामने रखीं। उन्होंने एक सहकारी समिति बनायी है। इस तरह से अपना समाज सुखी हो इसकी कोशिश उन्होंने की है। उन्होंने हमसे सलाह माँगी। हमने कहा इससे आपकी प्रतिष्ठा नहीं होगी। आपको अपने मित्रों के सुख के लिए कुछ कोशिश करनी होगी। नहीं तो आप छोटे पड़ेंगे दूसरे की सहानुभूति माँगने पर भी आपको नहीं मिलेगी। इसके साथ-साथ आपको विशेष प्रयत्न करना चाहिए। मध्यम श्रेणी के चार हजार वर्कर्स हैं। सौ रुपये के ऊपर जिनको तनख्वाह मिलती है वे मध्यम श्रेणी के माने जाते हैं। मैंने उनको सुझाया कि आपसे भी जो नीचे की श्रेणी के लोग हैं उनके सुख के लिए आपको कोशिश करनी चाहिए। आपको सौ रुपये तनख्वाह मिलती है तो एक परसेण्ट दान आप दे सकते हैं। यहाँ जो भंगी समाज है उससे गिरा हुआ दूसरा समाज नहीं है। हरिजनों के समाज से दूसरा समाज और नीचे हो सकता है लेकिन वह भी काफी दरिद्री है। इतनी ही बात है कि सामाजिक ख्याल से वह सबसे पतित और सबसे नीचा माना जाता है। उनके लिए संपत्ति-दान दीजिये। हमाल के भाइयों की उन्नति के लिए आपको कोशिश करनी चाहिए। उनके दुःख में आप मदद देंगे तो वे आपके लिए मर मिटेंगे और आपकी भी उन्नति होगी। उनके लिए क्या-क्या किया जाय? यह सोचकर भंगी समाज की सेवा का काम आप उठा लीजिये।

एक अच्छा बाकी गन्दा

मैं हमेशा कहता हूँ अगर अपने को कोई हरिजन सेवक कहता है तो उसमें एक है अच्छा और बाकी है गन्दा। एक ही शख्स ऐसा है जो रात दिन उपयोगी सेवा करता है। सवर्णों का शख्स होने के नाते वे भूमिदान का भी काम करते हैं। ऐसा नहीं होना चाहिए यह बात भी

करते हैं लेकिन रात-दिन चिन्ता फिक्र, तड़प उनके मन में यही है कि भंगियों की मुक्ति कैसे हो? इस काम के लिए क्या हिन्दुस्तान में और क्या महाराष्ट्र में अप्पा ही एक ऐसा शख्स है, लेकिन वे थके हुए नहीं हैं, सर्वोदय के साथ जुड़े हुए हैं।

मैं आपको सुझाना चाहता हूँ कि आपको एक रुपये में एक पैसा डोनेशन के रूप में देना चाहिए। अगर आपकी सारी समाज यह काम करती है और उससे नीचेवाला जो समाज है, जिस समाज के लिए अप्पा कोशिश कर रहे हैं तो इसके बाद जो प्राप्ति होनेवाली है वह जरूर होगी। आज होता यह है कि मेरे पास जो पानी है वह मैं आगे ढकेल दूँ, तो ऊपर का पानी मेरे पास आ ही जाता है। इसी तरह नदियाँ बहती हैं। लेकिन परिणाम की अपेक्षा नहीं करनी चाहिए। जैसे गीता में कहा, 'कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु'। मैं आशा करता हूँ कि इन्दौर में वे लोग जरूर काम करेंगे।

मेरी दृष्टि इंदौर पर

मैं चाहता हूँ कि इंदौर नमूने का शहर बने। इंदौर पर आप जितना जोर लगा सकें लगाइये। एकाग्र होकर यहीं काम कीजिये, फिर इंदौर दूसरे शहरों को राह दिखायेगा और इसके आगे तो मैं अज्ञात यात्रा में जा रहा हूँ। कुछ मूर्ख लोगों ने यह छापा है कि इसके आगे बाबा का अज्ञातवास चलेगा। कुछ लोगों ने हम पत्र भी लिखे हैं कि हमारे लिए आपके अज्ञातवास में जगह रखिये। अज्ञातवास के मानी हमेशा एक ही स्थान पर रहना। लेकिन हमारा तो अज्ञातचार होगा, अज्ञात यात्रा होगी और इसके आगे किसी प्रकार का कोई कदम शेष है ऐसा मैंने नहीं माना है। मनुष्य के जीवन में एक हद होती है। मेरे लिए वह हो गयी है। अब कोई कर्तव्य शेष नहीं रहा। हो सकता है कि इंदौर के आसपास ही पाँच-पचास मील में घूमता रहूँ और मुमकिन है कि हजारों मील दूर भी चला जाऊँ। लेकिन मैं आशा नहीं करता कि मैं बंबई में जाऊँगा।

मेरी नजर तो इंदौर पर ही रहेगी। छोटे-छोटे पैमाने पर हम जो काम करते हैं उनका अच्छा असर होता है। अगर यहाँ काम अच्छा हुआ, अगर यहाँ काम अच्छा बना तो मुझे हिम्मत आयेगी और फिर मैं कलकत्ता और बंबई जाऊँगा। आज मैं वहाँ जाऊँगा यह कहने की हिम्मत नहीं करता। जब तक मुझे आदेश नहीं मिलता तब तक मैं कोई कदम नहीं उठाता। काशी इंदौर, बड़ौदा जैसे शहरों में आप सर्वोदय-समाज बनाइये। मैं यह देखूँगा कि इंदौर सर्वोदय-नगर बन रहा है तब मैं आगे बढ़ूँगा।

माचल (इंदौर) —प्रार्थना प्रवचन
१-८-६

अब मैं आपका मेहमान नहीं हूँ, बल्कि आपके शहर का ही एक साथी हूँ। जब मैं यहाँ से गया तब वापस आने का नहीं सोचा था; लेकिन कुछ कार्यक्रम ऐसा बना, यहाँ के साथियों का आग्रह भी रहा और मुझे भी लगा कि मैं अब लम्बी मुसाफिरी पर निकल रहा हूँ, तो फिर से एक दफा आकर प्रेमी जनों से मिलूँ और विदा लेकर आगे बढ़ूँ यह अच्छा होगा।

अनेक संस्कृतियों का संगम

अब मैं यहाँ से अलग जा रहा हूँ तो आप क्या यह समझते हैं कि इन्दौर के साथ मेरा ताल्लुक कम होगा? कुछ मानसिक सम्बन्ध कम हो जायगा? मैं आपके प्रेम से बँधा हुआ हूँ। मालूम नहीं कि किस कारण से लेकिन मैंने यहाँ बहुत ताकत पायी है। मुझे लगा है कि इस शहर में आध्यात्मिक शक्ति भरी है। ऐसा कभी-कभी होता है कि लोगों को अपने में पड़ी हुई शक्ति का एहसास नहीं होता लेकिन जो कि द्रष्टा हैं साक्षीरूपेण देखने के आदी हैं उनको उसका एहसास होता है भान होता है। आपको भी धीरे-धीरे इसका भान होगा। कई पुरुष ऐसे निकले कई स्त्रियाँ ऐसी निकलीं जिन्होंने मेरे कुछ-न-कुछ व्याख्यान सुने। फिर कुछ भाई ऐसे ४॥ बजे से होनेवाले व्याख्यान से लेकर शाम तक जो व्याख्यान होते थे तब तक के कुल-के-कुल व्याख्यान सुने ऐसे भी लोग यहाँ मौजूद हैं। यह बात छोटी नहीं बहुत बड़ी है। इन्दौर में आप देख सकते हैं कि यहाँ अनेक जमातें अत्यन्त प्रेम से मिल-जुलकर रहती हैं।

यह एक तरह से एक प्रयाग है—इन्दौर। अनेक संस्कृतियों का संगम-स्थान है। राजस्थानी संस्कृति यहाँ है मालवे की अपनी संस्कृति है

हिन्दी संस्कृति मध्य-प्रदेश की यहाँ मौजूद है, गुजराती संस्कृति यहाँ है, मराठी संस्कृति यहाँ है सिन्धी भाई भी यहाँ आ चुके हैं और सिक्खों का गुरुद्वारा भी यहाँ है। इस तरह अनेक कौमें यहाँ हैं और ठीक ही है क्योंकि 'कली नर्मदा स्मृता'। कलियुग में नर्मदा प्रधान है गंगा प्रधान नहीं है। गंगा पुराने युग में प्रधान थी लेकिन जब आर्यों की बस्ती दक्षिण की तरफ चली गयी तो लोगों ने सोचा कि गंगा को पवित्र हम मानते हैं तो दक्षिण भारतवासियों को गंगा बहुत दूर पड़ेगी इसलिए कोई मध्यवर्ती नदी चाहिए, जिससे कि सबका आकर्षण हो सके। तब तय किया कि इसके आगे गंगा का स्थान हम नर्मदा को देंगे।

शंकर को नर्मदा-तट पर गुरुस्थान

शंकराचार्य नर्मदा के किनारे आये। उनका गुरुस्थान ओंकारेश्वर में था। उनके गुरु गोविन्द भगवत्पाद का आश्रम वहाँ था और उस आश्रम में ध्यान के बाद शंकराचार्य को ब्रह्मविद्या का अनुभव हुआ। वे वहाँ तीन साल या चार साल रहे इसका निश्चय नहीं है; पर तीन या चार साल वे वहाँ रहे और ८ वर्ष की उम्र में उन्होंने शायद नर्मदा छोड़कर काशी की ओर प्रस्थान किया। वहाँ पर तीन-चार साल रह करके भाष्य लिखे और १६ साल लगातार वे भारत में घूमते रहे—अपने विचारों के प्रचार के लिए। बत्तीस साल की अवस्था में वे निजधाम गये—ऐसी उनकी कहानी है। निजधाम गये तो हिमालय में बैठ गये। उन्होंने नर्मदा के किनारे आकर ब्रह्मदर्शन पायी और उनका मानसिक समाधान हुआ। इसका जिक्र उन्होंने नर्मदाष्टक में किया है। गंभीर ढंग से बाणभट शैली में वर्णन किया है। उसमें उन्होंने अपने गुरु का नाम छिपाया है। इन दिनों यह होता है कि मिस्टर-फलाना लोग अपनी आत्म कथाएँ लिखा करते हैं और वे उसमें अपनी छोटी-छोटी बातें भी लोगों के सामने रखा करते हैं; लेकिन प्राचीन पुराने लोगों को अपनी छोटी छोटी बातें भी कहने की आदत नहीं थी। वे इतने तन्मय

का विचार ही करते थे। अपने जन्म का और अपने संसार का सांसारिक जीवन का माता पिता का, गुरु का नाम लेते नहीं थे, ऐसी आदत उनकी थी। तो शंकराचार्य ने नर्मदाष्टक में यह लिखा है : गतं तदैव मे भयं त्वदंबु वीक्षितं यदा —जब मैंने तेरा पानी देखा, तो मेरा भय दूर हो गया। देखते ही भय चला गया। यह एक आत्ममय शैली है कहने की कि नर्मदा के किनारे गुरु-कृपा हुई और ब्रह्मज्ञान मिला।

नर्मदा में जीवितावस्था में ही मुक्ति

इस तरह नर्मदा के किनारे हिन्दुस्तान के कुल यात्री आते थे, आज भी आते हैं। परिक्रमा का सिलसिला आज भी जारी है। व्यवस्था ठीक है नर्मदा की कृपा से अच्छी व्यवस्था हो जाती है। जगह-जगह से सारे हिन्दुस्तान के यात्री यहाँ आते थे क्योंकि यह हिन्दुस्तान का मध्यस्थान था, उनके लिए आदरणीय स्थान था। इसलिए यह स्वाभाविक ही है कि जहाँ नर्मदा का परिसर आ गया वहाँ नर्मदा-परिसर में हिन्दुस्तान के यात्रियों का आना जारी है। शंकराचार्य ने नर्मदास्तोत्र में काशी यानी गंगा की तुलना करते हुए कहा कि गंगा में मुक्ति मिलती है काशी में मरने के बाद लेकिन नर्मदा में जीते जी ही मुक्ति मिलती है। एक गोते में ही भव-मुक्ति। यहाँ तक कि गोता भी लगाने की जरूरत नहीं। तेरे पानी का दर्शन होते ही मेरा भव खतम हो गया। यहाँ तो उसके दर्शन से उसके स्नान से ही मुक्ति मिलती है और गंगा में गोता लगाया करो जब भगवान् मरने की ध्वनि सुनेगा तो कृपा करके मुक्त करेगा।

संगम-स्थान में संकुचित भावना का अभाव

नर्मदा के किनारे सारे भारत का एक संगम-स्थान था जो पहले पुराने जमाने में प्रयाग और काशी में था। उसके बाद के जमाने में यहाँ था। इतना व्यापक नाम दे दिया एक गाँव को— अपराधक्षमस्वा च भक्तो मोक्ष महेश्वर। इस तरह एक राजधानी को भगवान् का नाम दे दिया— महेश्वर करके। हिन्दुस्तान के लिए आधार नर्मदा का किनारा था।

निर्माण करेगा, दर को सेवा करेगा और दर-कार्य के जरिये समाज की सेवा करेगा। लेकिन जिनको दर-कतव्य नहीं रहा ऐसे लोग काम-वासना और आर्थिक कष्टों से मुक्ति पाकर—वानप्रस्थ-वृत्ति धारण करके चन्द दिन बितायें और उसके बाद संन्यास-आश्रम में आत्मचिंतन में लगें। आज तो हिन्दुओं को सिर्फ हिन्दुत्व का अभिमान रह गया है लेकिन यह रचना और उसकी जो दृष्टि है, वह स्वीकार नहीं है। यह अगर होता तो इन्दौर जैसे शहर में हजार-पाँच सौ कार्यकर्ता तो स्वाभाविक ही मिलने चाहिए। जब अनुभवी और जिनका विकार-शमन हो चुका है, जो प्यार, करुणा और निर्लिप्त भाव से समाज की सेवा कर सकें ऐसे कार्यकर्ताओं की कमी कभी महसूस होनी ही नहीं चाहिए ऐसी योजना हिन्दू-धर्म ने बनायी।

अब मुझे कहने में बड़ी खुशी होती है कि ऐसे वानप्रस्थ मण्डल की स्थापना यहाँ हुई। यह मैं एक बहुत बड़ी बात मानता हूँ और जवानों से भी मेरी याचना है कि आप गृहस्थाश्रम करो लेकिन ऐसे ढंग से करो कि एक हद के बाद उसमें से हमको मुक्त होना है। अपना जन्म मुक्ति के लिए है बन्धन के लिए नहीं।

मानव-शरीर मुक्ति के लिए

मानव-शरीर मुक्ति के लिए है। जिस किसीने इस शरीर में आकर केवल भोग में ही जीवन बिताया उसने मानव-जीवन का महत्त्व महसूस नहीं किया। यह मुक्ति के लिए है, यह भोग के लिए—बन्धन के लिए नहीं है। यह ठीक है कि देह के लिए भोग की जरूरत होती है तो देह को भोग दे दें लेकिन जैसे हम एक मकान को किराया देते हैं उसी तरह हम देह को किराया देंगे। हिन्दू धर्म ने उसकी योजना इतनी भव्य बनायी है कि उस पर तो मैं बिल्कुल आसक्त हूँ। मुझे अगर कोई कहे कि हिन्दू-धर्म का अभिमान तुझे किस कारण से है, तो मैं कहूँगा कि उसकी जो आश्रम-व्यवस्था है वह मेरे लिए हिन्दू-धर्म का सबसे श्रेष्ठ अभिमान-स्थान है। इससे बढ़कर श्रेष्ठतर योजना समाज के लिए हो ही नहीं सकती। जहाँ समाज

ईसाई लन्दन से आया। कहता था कि लन्दन के जो लोग मुझसे मिले, वे पूछते थे कि इन्दौर में क्या हो रहा है! हमको इन्दौर से सीखने को कुछ मिलेगा! वहाँ कौन पैटर्न बनाया जा रहा है? इन्दौरी का क्या पैटर्न बनेगा इन्दौर में? बाबा ने अभी तक जो प्रयोग किये हैं, वे देहाती क्षेत्र के प्रयोग थे और उनकी अपनी कीमत थी लेकिन उसमें से हमको ज्यादा लेने का नहीं था; क्योंकि वह ग्राम-रचना इंग्लैण्ड जैसे देशों में नहीं है। लेकिन अगर इन्दौर में कोई चीज बनती है तब तो वह हम ले सकते हैं यहाँ पर। इस तरह से 'बात अब तो फैल गयी जाने सब कोई'। इस वास्ते अब बहुत जिम्मेदारी आप पर आती है। मैं उम्मीद करता हूँ कि परमेश्वर आपको वैसा बल देगा।

इन्दौर मन्दिर में जूता लेकर जाना मना है

एक बात मैंने बार-बार कही है। अलग में भी जिसका जुम्मरिवाम दीख पड़ा है—वह है पार्टी पालिटिक्स। अब ठीक है कि पार्टियाँ हैं पालिटिक्स है सब कुछ है लेकिन कुछ काम तो ऐसे होने चाहिए, जिसमें हम पार्टी का ख्याल न करें। मान लीजिये यहाँ कालेज को आग लग जाय तो आपका पा ी प्राब्लेम हो जायगा वह! आग बुझाने के काम में क्या आप पार्टी का ख्याल करेंगे? इसलिए कुछ काम तो दुनिया में ऐसे होने चाहिए, जिसमें हम पार्टी का ख्याल नहीं करते। अगर ऐसा कुछ काम न रहा और ऐसा कि हर काम में हमने पार्टी के ख्याल से ही इन्तजाम किया तब तो हिन्दुस्तान में कोई सेवा-कार्य नहीं बनेगा। परस्पर द्वेष बढ़ेगा और द्वेष बढ़ा तो हिन्दुस्तान बिलकुल ही कमजोर पड़ेगा। क्योंकि इतना बड़ा देश अगर द्वेष का आश्रय लेगा तो बहुत ही कमजोर पड़ेगा और अगर वह प्रेम से एक बनेगा तो इतने बड़े देश को कुछ करना ही नहीं पड़ेगा। सारी दुनिया को जीतने के लिए, प्रेम से जीतने के लिए, उसकी एकता ही काफी होगी। इसलिए मैं अर्ज करता हूँ आपसे कि पार्टियाँ हाती हैं दुनियाभर में हिन्दुस्तान में भी हैं, लेकिन यहाँ पर मगर

जो काम हमने उठाया है उसमें किसी प्रकार की पार्टी का लगाव भी नहीं करना चाहिए। बल्कि मैंने उपमा दी कि यह जो सर्वोदय का काम है, यह एक उत्तम मन्दिर है और उस मन्दिर में जूते निकालकर आना चाहिए—मन्दिर में जूतों के साथ नहीं आ सकते। पार्टी पॉलिटिक्स जूता है अपना-अपना अलग-अलग जूता होता है तो वे जूते बाहर रखकर यहाँ काम करना चाहिए और फिर काम खतम होने के बाद वह जूता पहन लें मुझे कोई उज्र नहीं है। लेकिन उस काम में जब तक आप हैं वह जूता बाहर रहना चाहिए। इतना करेंगे तो बहुत काम आगे बढ़ेंगे। अभी ढेबरभाई आये रेड्डी भी आये थे दोनों कांग्रेस के मुखिया। उनसे मैंने बात की। यह तो हम कतई गलत मानते हैं कि निगम में पार्टी पॉलिटिक्स चले। इसे हम बिल्कुल हानिकारक मानते हैं। ऐसा हरगिज नहीं होना चाहिए, ऐसा मुझे कहकर वे चले गये।

होल्कर कॉलेज इन्दौर —प्रार्थना-प्रवचन
१८-९-६

फिल्म वितरकों से ५५.

ता. २८ सितम्बर ६ को कुछ फिल्म-वितरक और प्रदर्शन-कर्ता बाबा से मिले। उन्होंने बाबा को बताया कि आज समाज में जो अश्लील चित्रों के लिए कोई रुचि नहीं रह गयी है। थियेटर खाली पड़े रहते हैं। सिनेमा-मालिकों को नुकसान होता है। फिल्मों और विज्ञापन के चित्रों के बारे में ऊपर से ही सेंसर हो जाय, तो काम सरल हो जाय। वितरक पहले से ही चित्र खरीद लेते हैं और उनके पोस्टर्स भी बन जाते हैं। अनुबन्ध के कारण हम उनसे बँधे रहते हैं। इसलिए जब फिल्म और पोस्टर्स आते हैं, तो हमें इनका प्रदर्शन करना ही पड़ता है। न करें, तो वितरक हम पर मुकदमा चला सकता है।

इसका उत्तर देते हुए बाबा ने कहा : मैं समझा, फिल्मों का और चित्रों का भी सेंसर ऊपर से हो। इस सम्बन्ध में मैं ऊपरवालों से बात कर लूँगा। पिछले दिनों इन्दौर में जो बातें हुईं, वे दिल्लीवालों के पास पहुँच गयी हैं।

जहाँ तक इन्दौर का सम्बन्ध है, इसे हम प्रैक्टिसिंग स्कूल बनाना चाहते हैं। यहाँ गन्दे पोस्टरों के स्थान पर जहाँ-तहाँ नीति-वाक्य लिखे हों। पोस्टरों को हटाने का अधिकार कलेक्टर को है। अतः हम यहाँ एक कमेटी कायम करेंगे, जो कलेक्टर से गन्दे पोस्टरों पर रोक लगाने का अनुरोध करेगी।

मैं अश्लील शब्द का नहीं, अशोभनीय शब्द का प्रयोग कर रहा हूँ। अश्लीलता का अर्थ देशकाल की दृष्टि से बदलता रहता है। संस्कृत-साहित्य में अनेक बातें ऐसी हैं, जिन्हें वर्तमान समाज के लिए अश्लील नहीं कह सकते, अशोभनीय कह सकते हैं। ऐसे जो अशोभनीय चित्र हों, उन्हें हमें कम-से-कम बच्चों का खयाल रखते हुए हटा देना चाहिए।

यह कैसी अजीब बात है कि ऊपर से ही सब कुछ हो। मैं आपको इन्सान मानता हूँ। नागरिक को नागरिक मानता हूँ। आपको गधे बनाना नहीं चाहता। गधे पर जो कुछ भी लाद दिया जाय वह कुछ बोल नहीं सकता। इनकार नहीं कर सकता। मगर इन्सान तो इनकार कर सकता है। मैं इस सम्बन्ध में प्राइम-मिनिस्टर से लेकर आप सबको नोटिस दे देना चाहता हूँ। इन्दौरवालों से खास आशा रखता हूँ, क्योंकि यहाँ कुछ कल्चर (संस्कार) है।

अंग्रेजी और हिन्दी फिल्मों में मैं कोई फर्क नहीं करता। उनका उपयोग करना या न करना हमारे हाथ की बात है। अमेरिका के इतिहास में एक मनोरंजक घटना है। वे इंग्लैण्ड की चाय नहीं चाहते थे। तब अमेरिका स्वतन्त्र नहीं हुआ था। फिर भी जब चाय लेकर इंग्लैण्ड का जहाज बोस्टन के बन्दरगाह में पहुँचा तो वह सारी चाय समुद्र में फेंक दी गयी। मेरा पहला विचार तो वाल-पोस्टर्स के खिलाफ है।

अशोभनीय पोस्टर्स सिनेमा-गृह पर भी न लगें—न भीतर, न बाहर। शोभनीय पोस्टर्स केवल अहाते के भीतर लगायें। अशोभनीय चित्रों के विरुद्ध सत्याग्रह होगा। परन्तु बगैर पूर्वसूचना के कोई चित्र नहीं हटाया जायगा। इस सम्बन्ध में जो समिति बनी है, उसमें आपके वितरक और सिनेमा-मालिकों के प्रतिनिधि हैं ही। जरूरत हो तो इनकी संख्या और भी बढ़ा दी जाय और इस समिति के निर्णय के बगैर किसी चित्र को हाथ न लगायें। फिर निर्णय हो जाने के बाद उसके अमल की मुद्दत भी होगी। इस बीच यदि सिनेमा-मालिक ने चित्र नहीं हटाया तो उसे यह समिति हटा देगी।

इस प्रश्न के बारे में सारे भारत में उत्सुकता पैदा हो गयी है। यदि इन्दौर में ये अशोभनीय चित्र हट गये तो सारे भारत में हटने लगते। उदाहरणार्थ पूना के भाइयों ने पूछा है कि इन्दौर में यह काम किस प्रकार हो रहा है।

सिनेमा-मालिकों ने बाबा को आश्वासन दिया कि इन्दौर में इस

विषय में उनकी तरफ से बाबा को पूरा सहयोग मिलेगा। अशोभनीय चित्र नहीं लगेंगे।

बाबा ने कहा : "सहयोग तो अन्यत्र भी मिलेगा। परन्तु श्लील और अश्लील की भाँति शोभनीय और अशोभनीय के बारे में मतभेद हो सकता है। इसके लिए यह समिति है और इस समिति में और मेरे बीच में ही मतभेद हुआ तो हम आपस में समझ लेंगे। अगर कुछ नहीं होगा तो सत्याग्रह काम करेगा ही।"

इस प्रश्न के बारे में मेरे विचार स्पष्ट हैं। इस कार्य में यदि मैं शासन या आप लोगों की तरफ से ढील-पोल देखूँगा तो इस पर आखिर मारक सत्याग्रह भी शुरू हो सकता है चाहे उसके जो भी परिणाम हों। मैं छुट्टा रहने के बजाय जेल में रहना पसन्द करूँगा। इस तरह तक गन्दे सस्ता महों को रोकने की मैंने कोशिश की है। अगर यह सत्याग्रह में शुरू करूँगा। सत्याग्रह की मेरी मानसिक तैयारी हो चुकी है। अगर आप स्वयं ही गंदे पोस्टर्स हटाने का निर्णय कर लें तो अच्छा ही है; नहीं तो सत्याग्रह होगा। आपको ये पोस्टर्स पसन्द हों, तो भले ही अपने घरों में लगाइये। नागरिकों की आँखों पर आक्रमण करने का किसीको अधिकार नहीं है। मकान की दीवाल का बाहरी हिस्सा नागरिक (सार्वजनिक) जीवन से सम्बन्ध रखता है।

होलकर महाविद्यालय इन्दौर
२८-५-६

—चित्रपट-वितरक और मालिकों से

इस जमाने का प्रेरक और तारक विचार

सर्वव्यापी विचार

सर्वोदय-विचार सिर्फ हिन्दुस्तान को ही नहीं बल्कि दुनिया को लागू होता है। वह सिर्फ देहातों को ही नहीं, शहरों को भी लागू होता है। इतने दिन हमने शहरों की तरफ ज्यादा ध्यान नहीं दिया था। भूमि के मालिक शहरों में भी रहते हैं लेकिन पहले गाँव में जो भूमि-मालिक हैं उनके पास हम पहुँचे। अब एक हवा तैयार हो गयी है। भूमि के मालिक शहरों में हैं इसलिए शहरों को टालना हम नहीं चाहते थे।

हमने बैंगलोर में जाहिर किया था कि हर नगर सर्वोदय-नगर बने। तभी से वह मांग शुरू हुई। लेकिन इसका आरम्भ अभी तक कहीं नहीं हुआ था। इस वक्त कश्मीर के बाद इन्दौर में हम पहुँचे और सोचा कि हिन्दुस्तान के बीच में रहकर इस विचार को हम विकसित करेंगे। इन्दौर में जो अनुभव हुआ उससे हमारा विश्वास बहुत मजबूत हुआ कि अब शहर भी सर्वोदय-विचार का स्वागत करने के लिए तैयार हैं। उसके बाद यहाँ आते हुए रास्ते में छिन्दवाड़ा और जबलपुर आना हुआ। हमारा ख्याल था कि छिन्दवाड़ा में सर्वोदय-विचार का कोई खास स्वागत नहीं होगा। लेकिन वहाँ जो हमने देखा उससे हमारा उत्साह और अधिक बढ़ा। दिनभर तो लोग आते ही रहे लेकिन वहीं बाजार में जो काम में जुटे थे, वे सब सर्वोदय विचार सुनने के लिए उपस्थित थे। हमने इसकी अपेक्षा नहीं की थी। इसी तरह से जबलपुर, पीपरिया आदि में उत्साहवर्धक अनुभव रहा। इन पर से जो देखा वह यह है कि शहरों में सर्वोदय विचार का हार्दिक स्वागत होता है।

सर्वोदय की प्रतिष्ठा

सर्वोदय-विचार के लिए आशा रखने का एक कारण यह है कि भूदान का जो काम हुआ, उससे यह विचार समझ में आ सकता है। इस विचार की प्रतिष्ठा भूदान के कारण हुई। दूसरा कारण अम्बर चरखा निकला। लोग मानते थे कि ये लोग दकियानूस हैं, विज्ञान के साथ इनका कोई वास्ता नहीं, प्रेम नहीं। लेकिन जब से अंबर निकला, लोगों के ध्यान में आया कि ऐसा नहीं है, बल्कि वैज्ञानिक ढंग से काम करने का ये लोग स्वागत करते हैं। तीसरा कारण यह भी हुआ कि हम लोगों ने लगातार कहा सात-आठ साल तो हम बोलते ही रहे और उसके परिणामस्वरूप आज कम्युनिटी प्रोजेक्ट आपके साथ सहयोग करने के लिए तैयार बैठा है। जहाँ-जहाँ ग्रामदानी गाँव बने हैं वहाँ-वहाँ सरकार कम्युनिटी प्रोजेक्ट खोलती है। चौथी बात यह है कि राजस्थान में सत्ता का विकेन्द्रीकरण हुआ है। जगह-जगह पंचायतराज स्थापन हुआ है। दूसरे प्रान्तों में भी यह होने जा रहा है। यह भी हमारे विचार का ही एक असर है। उसके बाद शान्ति-सेना का विचार हमने चलाया। उसका असर देश के नेताओं पर हुआ है और शान्ति-सेना की आवश्यकता आज सभी पार्टियों के नेता महसूस करते हैं। इस विचार के कारण सर्वोदय-विचार को प्रतिष्ठा प्राप्त हुई। बड़े-बड़े लोग भी शान्ति-सेना के बारे में हमसे पूछते हैं। यह एक प्रतिष्ठा है। इसके बाद एक विशेष बात भिंड मुरैना में बनी। उसने यह दिखा दिया कि अहिंसा में हृदय परिवर्तन की शक्ति पड़ी है। जहाँ-जहाँ यह विचार पहुँचेगा वहाँ-वहाँ इसका शुभ परिणाम होगा। उसके कारण इस विचार को एक प्रतिष्ठा मिली।

सर्वोदय-विचार व्यापक

आज हम देखते हैं कि लोकशाही सुरक्षित नहीं है। अभी नेपाल में यह घटना हुई। एक डेमोक्रेसी थी उसे खतम कर दिया। उधर

उधर अफ्रीका से लेकर इधर नेपाल तक एक-एक देश मिलिटरी के या डिक्टेटर के हाथ में जा रहा है। उसकी तरफ मैं आपका ध्यान दिलाता हूँ। यह बात अच्छा है कि हिन्दुस्तान को यह डर नहीं है। लेकिन हमेशा के लिए यह डर नहीं है, ऐसा नहीं। जिस ढंग से हम जा रहे हैं पार्टियों के झगड़े पार्टियों के अन्दर-अन्दर के झगड़े भ्रष्टाचार यह सारा जो चल रहा है, उस हालत में जरा लोकमत पर पकड़ ढीली हो जाय तो डिक्टेटर शाही आने में कोई मुश्किल नहीं है। ऐसी हालत में केवल सर्वोदय-विचार ही तारक है यह भावना घरों में पैदा करनी है!

नित्य नया तत्त्व

अभी हमने देखा कि रीवाँ सतना और मिर्जापुर में भूदान माँगा गया तो लोगों ने काफी जमीन दी। बीच-बीच में सुस्ती आ जाती है। जैसे देह बीच-बीच मे सुस्ताता है। उसे चालना देने के लिए बीच-बीच में कुछ ऐसे काम उसके सामने हम रखते हैं तो उसे प्रेरणा मिलती है। एक सभा में मैंने कहा कि दस साल पहले हम जहा से यहीं आज हैं। मतलब, दस साल पहले एक ही भूदान की मीटिंग होती थी और आज दस साल के बाद भी करीब-करीब एक ही मीटिंग होती है। शायद और दो-तीन होती होंगी। लेकिन वह करीब-करीब नहीं के बराबर ही है। अगर हम लोगों के पास जाते हैं जगह-जगह मीटिंगें करते हैं तो आज भी लोग दान देने के लिए तैयार हैं। अभी मैहर में हम ११ सौ एकड़ जमीन मिली और २ हजार एकड़ जमीन वहाँ बँटी भी। लेकिन किसीको धक्का नहीं लगा। आदत पड़ जाती है। ठंड के दिनों में प्रथम शरीर का ठंड महसूस होती है लेकिन आठ-दस दिन के बाद शरीर आदी हो जाता है। वैसे लोक-मन को भी कोई नित्य नया तत्त्व मिले तो वह जाग्रत रहता है।

सद्विचार के साथ ईश्वर की करुणा

भूदान का काम न छोड़ते हुए अन्य कार्यक्रम जारी रखने चाहिए।

भूदान मांगते रहना चाहिए। कश्मीर में भूदान का विचार मैं न ले जाता तो कुछ भी काम न कर पाता। उसके साथ-साथ और कई प्रकार के काम वहाँ हुए। वहाँ के लोगों ने मीटिंग में यह कहा कि आप ही पहले शख्स हैं, जो यहाँ से सही-सलामत जा रहे हैं सबका प्रेम हासिल करके जा रहे हैं। यहाँ बैरिस्टर जिन्ना गांधीजी और नेहरू तीनों गये थे। लेकिन तीनों को किसी-न-किसीका विरोध सहन करना पड़ा। आज भी मुझे वहाँ का प्रेम याद आता है। मुझे आश्चर्य होता है कि वहाँ प्लेबिसाइट विचार के जो लोग हैं, उनके साथ मैंने बहुत सब विचार रखकर बात की। मैंने हरएक जमात के सामने साफ विचार रखे। अगर भूदान का वातावरण या भूदान का विचार मैं वहाँ न ले जाता तो यह न होता। हमें समझना चाहिए कि ईश्वर की करुणा अच्छे विचार के साथ हमेशा होती है।

तारक तत्त्व

शहर के हृदय के साथ हमारा ऐसा हार्दिक सम्बन्ध जुड़ना चाहिए ताकि लोग यह महसूस करें कि यह तारक शक्ति आयी है। अभी दिल्ली में आइंस्टाइन के उत्सव के लिए एक सन्देश मैंने भेजा। उसमें यह लिखा कि इस जमाने में दो बड़े पाश्चात्य व्यक्ति हो गये—कार्ल मार्क्स और आइंस्टाइन। दोनों में प्रेरक तत्त्व हैं लेकिन तारक तत्त्व आइंस्टाइन में है। वह तारक तत्त्व सर्वोदय-विचार में है, ऐसा लोग महसूस करें। हर व्यक्ति के साथ सम्बन्ध होना चाहिए और उसको पसन्द हो ऐसा काम हमें उठाना चाहिए।

स्त्री-शक्ति और वानप्रस्थ की शक्ति

सर्वोदय-विचार से हम करुणामूलक साम्य लाना चाहते हैं। करुणा के बिना मत्सर के तरीके से जो आयेगा वह साम्य नहीं होगा और आज की दुनिया में वह सफल भी नहीं। जो मनुष्य जितनी मदद करता है उतनी मदद हम लें। इसलिए मैंने दूसरी शक्ति जगाने की बात की और

यह है वानप्रस्थ की शक्ति। इसका अनुभव हमें इन्दौर में आया और जबलपुर में भी। यह काम हो सकता है ऐसा दीखा। यह ऐसी चीज है कि आप एक स्वतन्त्र शक्ति खड़ी करेंगे। वह आध्यात्मिक शक्ति होगी। स्त्री-शक्ति के साथ वानप्रस्थ की शक्ति जगाना यह शहर का मुख्य कार्य क्रम हो। इसके अलावा विद्यार्थी शिक्षक, प्रोफेसर, व्यापारी, वकील, डाक्टर आदि अलग-अलग तबकों से हमें संपर्क रखना चाहिए और इन लोग हासिल करना चाहिए। यह खयाल गलत है कि विद्यार्थियों में इन दिनों उच्छृंखलता आयी है। मुझ पर ऐसा असर नहीं है। उन्हें तालीम गलत दी जा रही है और इधर जो हवा बिगड़ी है उसका कारण विश्व-युद्ध है। विश्व-युद्ध-नीति के सम्बन्ध में जो विचार हुआ वह बहुत खतरनाक है। मुझे पूरा विश्वास है कि आपके क्रान्ति के काम में जवान मदद देंगे।

पहला प्रयोग

इन्दौर में इस काम का थोड़ा-सा दर्शन हो रहा है। अब उसमें प्रचार-शक्ति में, प्रेम में और इंतजाम में हमारी शक्ति कम है इसका अनुभव आ रहा है। लेकिन अच्छा है यह पहला ही प्रयोग है। सेवा-भावी लोग रोज दिनभर काम करते हैं और फिर एक साथ मिलते हैं, चिन्तन करते हैं यह दृश्य इन्दौर में ही प्रथम दीख रहा है।

शहरों की पकड़ न छोड़ें

मैं चाहता हूँ कि शहर का व्यापारी वर्ग यह विचार करे कि हम उसी हैं। शहर के हर तबकों का हमें स्पर्श करना है। सफाई वगैरह जो शुरू का काम है, उसीसे हम आरम्भ करें। हमारे विचार का प्रचार इस तरह होना चाहिए कि शहर के लोगों को हम चैन नहीं लेने देते। सब इस काम में बहुत उत्साह से लगे हैं ऐसा दृश्य दीखना चाहिए। अब तक तो हम देहात में ही ज्यादा काम करते थे। लेकिन मैंने सोचा कि हम शहर की पकड़ छोड़ देते हैं तो वहाँ का वातावरण हम दूसरे के

हाथ में दे देते हैं। फिर बिगाड़नेवाले वातावरण बिगाड़ते हैं और हमारे काम पर उसका असर होता है। इसलिए शहर में काम करना अत्यन्त आवश्यक है।

बापू का सपना

सर्व-सेवा-संघ ने पोस्टर का काम उठाया है। सर्व-सेवा-संघ तारक और प्रेरक शक्ति है इसका भान लोगों को कराना है। लोगों को यह भान हो जाय कि यह तो अपना मातृस्थान है यह होगा तो बापू का लोक-सेवक संघ का सपना साकार होगा। जाहिर तौर पर उसीके नाम से हम यश लेंगे। हमारे अपयश से सर्व-सेवा-संघ को अयशस्वी नहीं करेंगे। हमारे यश से उसे यशस्वी करेंगे।

बेंगलोर, काशी इन्दौर—ऐसे शहर नमूने के बनें। एक-एक प्रान्त में ऐसा एक-एक शहर ले सकते हैं। हरएक शहर में ऐसे ४ ५ काबिल कार्यकर्ता हों और साथ साथ नये लोग भी शहर में खड़े हो जायँ। अगर इन्दौर में काम होता है तो वहाँ से बाहर सेवक भेज सकते हैं। याने इन्दौर एक प्रैक्टिसिंग स्कूल होगा।

काशी —कार्यकर्ताओं से
१६ १२ ६

वैचारिक साहित्य

सह-जीवन और सह अध्ययन : एक प्रयोग

सन् ६ के प्रारम्भ में साधना केन्द्र काशी में श्री दादा धर्माधिकारी के मार्ग-दर्शन में एक सह-अध्ययन-शिविर का आयोजन हुआ था। इस शिविर में सह-जीवन और सह-चिन्तन का जो अनुभव मिला, उसकी एक झाँकी इन पृष्ठों में देखने को मिलेगी। इसमें शिविर के श्रीगणेश और समारोप के भाषणों के अतिरिक्त दादा और मार्जरी बहन का जीवन परिचय और उनके तथा शंकररावजी देव के प्रवचनों के सारांश भी दिये गये हैं। पृष्ठ ११२ मूल्य .८५।

अहिंसक क्रान्ति की प्रक्रिया

यह सन् '६ में साधना-केन्द्र काशी में आयोजित कार्यकर्ता-शिविर में दिये गये श्री दादा धर्माधिकारी के प्रवचनों का संकलन है। आज के सन्दर्भ में अहिंसक क्रान्ति का स्थान क्या है और उसे सफल बनाने के लिए कौन-कौन से उपाय एवं कार्यक्रम अपनाने होंगे इस विषय पर अपनी अनूठी व्याख्यान-शैली में दादा ने इस पुस्तक में जो प्रकाश डाला है वह करुणामूलक साम्ययोग-प्रधान अहिंसक क्रान्ति के प्रत्येक अनुयायी के लिए मननीय है। पृष्ठ संख्या लगभग ५   मूल्य लगभग ५   ।

विश्व शान्ति क्या संभव है ?

आज चारों ओर से शान्ति की आवाज आ रही है। श्री कैथलीन लान्सडेल ने प्रस्तुत पुस्तक में शान्ति की समस्या पर गंभीर विचार किया है। मूल्य १ ९५।

अहिंसात्मक प्रतिरोध

श्री सेसिल ई. हिनशा के Nonviolent Resistance का यह हिन्दी अनुवाद शान्ति विचारकों के लिए अत्यन्त प्रेरणादायक है। मूल्य ५ ।

●

सर्वोदय तथा भूदान-साहित्य

गीता प्रवचन १ २५, सजिल्द १ ५
लोकनीति २
मोहब्बत का पैगाम ९ ५
शान्ति-सेना ५
शुचिता से आत्मदर्शन ४
जय जगत् ५
सर्वोदय-पात्र २५
अप्रेमनीय पोरसर्वे • १
समग्र ग्राम-सेवा की ओर (दो खंड) १ ५
,, ,, (तीसरा खंड) २ •
नयी तालीम ५
गाँव-आन्दोलन क्यों ? १.५
स्थायी समाज-व्यवस्था २.५
सर्वोदय-दर्शन १
बाबा की नजर से लोकनीति ५
सत्य की खोज १ ०
राज-धर्म १५
लोक-स्वराज्य ५
हमारा राष्ट्रीय शिक्षण ५ १
शिक्षा में अहिंसक क्रांति १
नक्षत्रों की छाया में १ ५
मेरी विदेश-यात्रा १२
गुजरात के महाराज २
महादेवभाई की डायरी (१ भाग) ५

अन्तिम झाँकी १ ५
अफ्रीका में गांधी १ •
चरखा संघ का इतिहास १ •
कपास १ ५
गो-सेवा की विचारधारा ५
साम्यवाद से सर्वोदय की ओर १०
एशियाई समाजवाद १ ५
लोकतान्त्रिक समाजवाद १ ५
गांधी और विश्वशान्ति १
चम्बल के बीहड़ों में २ ५
मानवता की नवरचना १ ५
चलो चलें मंगरौठ ७५
धरतीमाता की गोद में • ७५
नगर-स्वराज्य २५
सर्वोदय-विचार ७५
शोषण-मुक्ति और नवसमाज • ६२
कुष्ठ-सेवा १ २५
पैसा भी क्या चीना ! (उपन्यास) २
मधुमेह ७५
लोकयान ५
सामूहिक प्रार्थना २५
विदेशों में शांति के प्रयोग ७५
कंतक पेशी हुई मनरमी ७
कोरापुट में ग्राम विकास का एक प्रयोग २